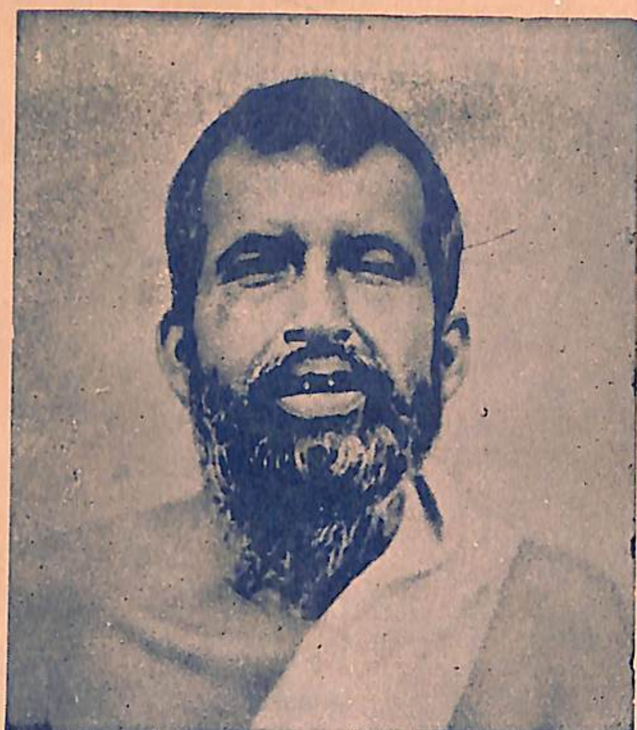


ॐ नमो भगवते रामकृष्णाय

सपार्षद

श्रीरामकृष्णरत्नस्तोत्रमाला

(अनुवाद सहित १०८ स्तोत्र)

रामकृष्ण-शिवानन्द आश्रम

बारासात



सपार्षद

श्रीरामकृष्णरत्नस्तोत्रमाला

(अनुवाद सहित १०८ स्तोत्रों का ग्रन्थ)

●

स्तोत्र ग्रन्थ की साधारण सूची—

श्री श्रीरामकृष्ण के सम्बन्ध में : ४० स्तोत्र

श्री श्री माँ शारदा देवी के सम्बन्ध में : २८ स्तोत्र

स्वामी विवेकानन्द के सम्बन्ध में : १७ स्तोत्र

श्री श्रीरामकृष्ण के अन्तर्गत पार्षदों के सम्बन्ध में 'प्रणाम' सहित : १६ स्तोत्र

गुरु, गंगा, गणेश प्रभृति देवता एवं देवियों के सम्बन्ध में : ७ स्तोत्र

●

रामकृष्ण - शिवानन्द आश्रम

बारासत

प्रकाशक और संकलनकर्ता :
सम्पादक, रामकृष्ण-शिवानन्द आश्रम
पोस्ट, वारासत, २४ परगना।

अनुवादक : डॉ० मोहन चन्द्र मिश्र
पी० जी० टी० (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय
मुगलसराय

इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण आय वारासत रामकृष्ण-शिवानन्द आश्रम में श्री श्री ठाकुर की सेवा में व्यय होगी।

प्रथम संस्करण :
दीपावली : नवम्बर, १९८२

मुद्रक :
सन्तोष कुमार उपाध्याय
नया संसार प्रेस
भदैनी, वाराणसी (उ० प्र०)

मूल्य : बारह रुपया।

प्रकाशक एवं संकलनकर्ता का निवेदन

श्री भगवान् की असीम कृपा से दीर्घदिनों से संकल्पित यह स्तोत्र ग्रन्थ नाना विघ्न-बाधाओं का अतिक्रम कर वर्तमान् में विराट् आकार में प्रकाशित हुआ। इस स्तोत्र ग्रन्थ में--श्री श्रीरामकृष्ण देव के ४० स्तोत्र, श्री श्री माँ शारदा देवी के २८ स्तोत्र, स्वामी विवेकानन्द के सम्बन्ध में १७ स्तोत्र, श्री श्री ठाकुर के अन्तरंग पार्षदों के सम्बन्ध में प्रणाम सहित १६ स्तोत्र एवं गुरु, गंगा, गणेश आदि के सम्बन्ध में ७ स्तोत्र, इस प्रकार १०८ स्तोत्र सन्निविष्ट हैं।

इस संकलन में स्वामी विवेकानन्द, स्वामी अभेदानन्द, स्वामी रामकृष्णानन्द, स्वामी शारदानन्द, स्वामी त्रिगुणातीतानन्द---इन श्रीरामकृष्ण देव के पाँच अंतरंग पार्षदों का एवं स्वामी विरजानन्द आदि श्रीरामकृष्ण संघ के अनेक संन्यासियों के स्तोत्र संकलित हैं। अर्थ समझने में सुविधा हो इसलिये हर स्तोत्र के नीचे उसका हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है।

इस ग्रन्थ में प्रकाशित स्तोत्र समूह केवल उद्दिष्ट देवता की महिमा अथवा दिव्य गुणावली के व्याख्यान ही नहीं हैं, उसके साथ उनकी दिव्यलीला और उदार भावधारा भी परम श्रद्धा के साथ अत्यन्त सुललित भाषा में वर्णित हुई है। फलतः यह स्तोत्र ग्रन्थ सूत्राकार में छन्दबद्ध भाव में देवभाषा में रचित सपार्षद श्री रामकृष्ण देव के लीलामृत ग्रंथ के रूप में परिणत हुआ है। इस दृष्टि से यह ग्रन्थ श्रीरामकृष्ण साहित्य में एक नवीन श्रृंखला के रूप में स्वीकृत होगा, ऐसी आशा है।

विगत कई वर्षों से इस ग्रन्थ के संकलन में हम लोगों ने बहुतों से नाना प्रकार की सहायता प्राप्त की है एवं उससे अपने को कृतार्थ भी समझा है। उनमें से प्रत्येक को हमारा आन्तरिक धन्यवाद है। विशेषकर 'उद्बोधन' के स्वत्वाधिकारियों ने अपनी पत्रिका में प्रकाशित कतिपय स्तोत्रों को प्रकाशित

करने की अनुमति देकर हमें अनुगृहीत किया है। 'विवेकानन्द सोसाइटी' के स्वत्वाधिकारियों ने स्वामी जी द्वारा रचित संस्कृत स्तोत्रों को सानुवाद प्रकाशित करने की हम लोगों की प्रार्थना पूर्ण कर इस ग्रन्थ को समृद्ध किया है। उसी प्रकार 'वेदान्तमठ' के स्वत्वाधिकारियों ने स्वामी अभेदानन्द द्वारा विरचित तीन स्तोत्रों को सानुवाद प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान कर हमें हमेशा के लिए ऋणी बना दिया है। इन तीन प्रतिष्ठानों के प्रति हम विशेष रूप से कृतज्ञ हैं।

श्रीरामकृष्णसंघ के कतिपय प्रवीण संन्यासियों से हम लोगों ने इस ग्रन्थ के लिए स्तोत्र आदि संग्रहित किए हैं एवं और भी कुछ संन्यासियों द्वारा रचित विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित कुछ स्तोत्रादि भी इस ग्रन्थ में सन्निवेशित हुए हैं। इसके लिए हम लोगों ने प्रत्येक स्तोत्र के साथ रचयिता का नाम उल्लेख कर उनके प्रति आन्तरिक धन्यवाद और स्वीकृति ज्ञापित किया है।

भारत के विभिन्न प्रान्तों के स्वर्गीय एवं जीवित अनेक पण्डितों ने इस ग्रन्थ के लिए स्तोत्रों की रचना की है। उनके अमूल्य अवदान को स्वीकार कर हम उन सभी के प्रति आन्तरिक धन्यवाद दे रहे हैं।

"सपार्षदश्रीरामकृष्णरत्नस्तोत्रमाला" नामक संस्कृत ग्रन्थ के बंगला अनुवाद के हिन्दी अनुवादक डॉ० मोहनचन्द्र मिश्र को भी मैं हार्दिक धन्यवाद प्रदान करता हूँ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में हम लोग दि इउरेका प्रिण्टिग वर्क्स (प्रा०) लिमिटेड वाराणसी के स्वत्वाधिकारी काशी निवासी श्री विश्वनाथ दत्त जिन्होंने अपने स्वर्गीय पिता हरिपद दत्त महोदय की पुण्य स्मृति में इस ग्रन्थ का मुद्रण व्यय वहन करके हम लोगों को बहुत ही उपकृत किया है। उनके लिए हम आन्तरिक धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

विशेष सावधानी करने पर भी विभिन्न कारणों से ग्रन्थ में कुछ मुद्रणगत अशुद्धियां हो गई हैं; जिनका हमें दुःख है।

स्तवस्तुति पाठ पूजांग के अन्तर्गत और भक्ति-वर्धक है। वर्तमान स्तोत्र ग्रन्थ श्री श्रीरामकृष्णदेव के प्रति भक्ति और अनुराग बढ़ाने में सहायक होगा इसी

आशा से इसका प्रकाशन किया गया है। मुद्रण आदि सभी प्रयोजनीय द्रव्यों में असम्भावित मूल्य वृद्धि के कारण वृहत् ग्रन्थ के प्रकाशन में मूल्य अधिक होने पर भी अनुरागी पाठकों की बात याद करके ही प्रचार में सहायक हो इस हिसाब से ग्रन्थ का मूल्य जन-साधारण की पहुँच के अन्तर्गत ही रखा गया है।

यह भक्तिवर्धक "रत्नस्तोत्रमाला" ग्रन्थ भक्तों के द्वारा आदरपूर्वक ग्रहण किया जाएगा। यही आशा लेकर, इसके पाठ से भक्तों का हृदय भक्ति से आप्लावित हो यह प्रार्थना श्रीरामकृष्णदेव के चरणों में करके यह ग्रन्थ उन्हीं को निवेदित है।

दीपावली, १९८२ विनीत :

रामकृष्ण शिवानन्द आश्रम **प्रकाशक और संकलनकर्त्ता**

वारासत

सूची

श्रीरामकृष्णप्रणामः*

स्वामिविवेकानन्दविरचितः

ॐ स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे।
अवतारवरिष्ठाय रामकृष्णाय ते नमः॥

ॐ धर्म के प्रतिष्ठाता, सर्वधर्मस्वरूप तथा सारे अवतारों में श्रेष्ठ रामकृष्ण आपको नमस्कार है।

* श्रीस्वामिविवेकानन्दविरचित 'श्री रामकृष्णप्रणामः' तथा 'श्री रामकृष्ण-स्तोत्रम्' १, २, ३ संख्यक विवेकानन्द-सोसइटी के सम्पादक की अनुमति से "वीरवाणी" से गृहीत—प्रकाशक।

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम् (१)

स्वामिविवेकानन्दविरचितम्

ॐ ह्रीं ऋतं त्वमचलो गुणजित् गुणेड्यो
नक्तन्दिवं सकरुणं तव पादपद्मम् ।
मोहंकषं बहुकृतं न भजे यतोऽहम्
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥ १ ॥
भक्तिर्भगश्च भजनं भवभेदकारि
गच्छन्त्यलं सुविपुलं गमनाय तत्वम् ।
वक्त्रोद्धृतन्तु हृदि मे न च भाति किञ्चित्
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥ २ ॥
तेजस्तरन्ति तरसा त्वयि तृप्ततृष्णा
रागे कृते ऋतपथे त्वयि रामकृष्णे !
मर्त्यामृतं तव पदं मरणोर्मिनाशं
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं, तुम सत्य, अचल, त्रिगुणजयी तथा दिव्य गुणों के द्वारा वन्दनीय हो। क्योंकि मैं तुम्हारे मोहभंजक पूजनीय चरणकमलों का व्याकुल भावसे दिन-रात भजन नहीं करता। अतः हे दीनबन्धु, तुम ही मेरे एक मात्र आश्रय हो ॥१॥

संसारविनाशी, मुक्तिलाभ के उपाय-स्वरूप, भक्ति तथा वैराग्य आदि तथा उपासना की सहायता से मनुष्य अत्यन्त महत् ब्रह्म-तत्त्व में पहुँच सकता है; परन्तु ऐसे वाक्य मेरे मुख से उच्चारित होने पर भी अन्तर में कुछ भी प्रकाशित नहीं होता है। अतः हे दीनबन्धु, तुम ही मेरे एकमात्र आश्रय हो ॥ २ ॥

हे रामकृष्ण, सत्य के पथस्वरूप तुम में आन्तरिक अनुराग होने से मनुष्य तुम्हें ही पाकर पूर्णकाम हो जाता है तथा वह अतिशीघ्र ही रजोगुण का अतिक्रमण कर जाता है। मृत्युरूप संसार-तरंग समूल विनाश करने वाले तुम्हारे चरण-कमल इस संसार में अमृत-स्वरूप हैं। अतः हे दीनबन्धु, तुम ही मेरे आश्रय हो ॥ ३ ॥

कृत्यं करोति कलुषं कुहकान्तकारि
ष्णान्तं शिवं सुविमलं तव नाम नाथ !
यस्मादहं त्वशरणो जगदेकगम्य
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥ ४ ॥

स्वामिविवेकानन्दविरचितम् श्रीरामकृष्णस्तोत्रम् (१) समाप्तम्



श्रीरामकृष्णस्तोत्रम् (२)

स्वामिविवेकानन्दविरचितम्

आचण्डालाप्रतिहतरयो यस्य प्रेमप्रवाहो
लोकातीतोऽप्यहह न जहौ लोककल्याणमार्गम् ।
त्रैलोक्येऽप्यप्रतिममहिमा जानकीप्राणबन्धो
भक्त्या ज्ञानं वृतवरवपुः सीतया यो हि रामः ॥ १ ॥
स्तब्धीकृत्य प्रलयकलितमाहवोत्थं महान्तं

हे प्रभो, तुम्हारा माया विदूरण करने वाला मंगलमय अति पवित्र, अन्तिम भाग में 'ष्ण' अक्षरयुक्त (रामकृष्ण) नाम पाप को पुण्य में परिणत करता है। तुम संसार के एकमात्र आश्रय हो। क्योंकि मैं निराश्रय हूँ, अतः हे दीनबन्धु तुम ही मेरे एक मात्र आश्रय हो ॥ ४ ॥

स्वामी विवेकानन्द विरचित श्रीरामकृष्ण स्तोत्र (१) समाप्त हुआ।



जिनका प्रेमस्रोत ऐसा प्रबल है कि चाण्डालादि तक अप्रतिहत वेग से प्रवाहित होता है। अहा ! जिन्होंने अमानव हो कर भी लोगों के मंगल साधन के मार्ग का परित्याग नहीं किया था, जिनकी महिमा त्रिभुवन में अनुपम है तथा जो सीता के प्राण-स्वरूप रामचन्द्र थे, जिनका ज्ञानरूप श्रेष्ठ श्री रामतनु भक्तिरूपिणी श्रीसीता के द्वारा आवृत्त है ॥ १ ॥

हित्वा रात्रिं प्रकृतिसहजामन्धतामिस्रमिश्राम् ।
गीतं शान्तं मधुरमपि यः सिंहनादं जगर्ज
सोऽयं जातः प्रथितपुरुषो रामकृष्णस्त्विदानीम् ॥ २ ॥
नरदेव देव जय जय नरदेव

शक्तिसमुद्रसमुत्थतरंगं दर्शितप्रेमविजृम्भितरंगम् ।
संशयराक्षसनाशमहास्त्रम् यामि गुरुं शरणं भववैद्यम् ॥
नरदेव देव जय जय नरदेव ॥ ३ ॥

अद्वयतत्वसमाहितचित्तं, प्रोज्ज्वलभक्तिपटावृतवृत्तम्,
कर्मकलेवरमद्भुतचेष्टं यामि गुरुं शरणं भववैद्यम् ॥
नरदेव देव जय जय नरदेव ॥ ४ ॥

स्वामिविवेकानन्दविरचितम् श्रीरामकृष्णस्तोत्रम् (२) समाप्तम्



जिन्होंने श्रीकृष्ण रूप में प्रलय सदृश अति भयानक युद्ध-कोलाहल को स्तब्ध करके तथा स्वाभाविक घोर प्रगाढ़ अन्धकार से परिपूर्ण अज्ञान-रजनी के अन्धकार को विदीर्ण करके सिंहनाद के साथ शान्त तथा मधुर गीताशास्त्र का उपदेश दिया था, वे प्रख्यात पुरुष ही अब रामकृष्णरूप में अवतीर्ण हुए हैं ।।२।।

हे नररूपधारी देवता, हे देव, हे नरदेव तुम्हारी जय हो, जय हो । जो महाशक्तिरूप समुद्र से उठे हुये तरंग स्वरूप है, जो प्रेम की लीला दिखाने वाले हैं जो संशय-राक्षस के विनाश के लिये महान अस्त्र स्वरूप हैं उन्हीं संसार-रोग के चिकित्सक गुरु का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ । हे नररूपधारी देवता, हे देव, हे नरदेव, तुम्हारी जय हो, जय हो ।। ३ ।।

जिनका चित्त अद्वैत तत्त्व में समाहित है, जिनका चरित्र अति उज्ज्वल भक्तिरूपी वस्त्र के द्वारा आवृत्त है, जिनका जीवन लोककल्याण कार्य में नियुक्त है, जिनकी कार्यावली अपूर्व है, मैं उन भवरोग के वैद्यरूप श्रीगुरु का आश्रय ग्रहण करता हूँ । हे नरदेव, हे देव, हे नरदेव, तुम्हारी जय हो, जय हो ।। ४ ।।

स्वामी विवेकानन्द विरचित श्रीरामकृष्ण स्तोत्र (२) समाप्त हुआ ।



श्रीरामकृष्णस्तोत्रम् (३)

स्वामिविवेकानन्दविरचितम्

सामाख्याद्यैर्गीतिसुमधुरैर्मेघगम्भीरघोषै-
र्यज्ञध्वान-ध्वनित गगनैर्ब्राह्मणैर्ज्ञातवेदैः।
वेदान्ताख्यैः सुविहितमखोद्भिन्न-मोहान्धकारैः
स्तुतो गीतो य इह सततं तं भजे रामकृष्णम् ॥ १ ॥

स्वामीविवेकानन्दविरचितम् श्रीरामकृष्णस्तोत्रम् (३) समाप्तम्



श्रीरामकृष्णप्रशस्तिः *

स्वामिविवेकानन्दविरचिता

क्षीणाः स्म दीनाः सकरुणा जल्पन्ति मूढ़ा जनाः
नास्तिक्यन्त्विदन्तु अहह देहात्मवादातुराः।

जो वेदतत्त्वज्ञ ब्राह्मणवर्ग यज्ञस्थल में मन्त्रोच्चारण द्वारा आकाश वायु को मुखरित करते थे, विधिपूर्वक यज्ञ सम्पादन करने के फलस्वरूप जिनके शुद्ध हृदय से वेदान्तवाक्यों द्वारा भ्रम तथा अज्ञान का अन्धकार दूरीभूत हो जाता था, वे मेघ के समान गम्भीर सुमधुर स्वर से सामवेद आदि गान करके जिनकी स्तुति करते थे तथा जिनकी महिमा का कीर्तन करते थे—मैं सदा उन श्रीराम कृष्ण का भजन करता हूँ ॥ १ ॥

स्वामी विवेकानन्द विरचित श्रीरामकृष्ण स्तोत्र (३) समाप्त हुआ।

देह को ही जो लोग आत्मा समझते हैं, वे कातर होकर करुण भाव से कहते हैं—हम लोग क्षीण तथा दीन हैं, यही नास्तिकता का भाव है। जब हम

---

* स्वामी जी की पत्रावली प्रथम भाग स्वामी रामकृष्णानन्दजी को लिखित–१०१ संख्यक पत्र से गृहीत है—प्रकाशक।

प्राप्ताः स्म वीरा गतभया अभयं प्रतिष्ठां यदा
आस्तिक्यन्त्विदन्तु चिनुमो रामकृष्णदासा वयम् ॥ १ ॥
पीत्वा पीत्वा परमपीयूषं वीतसंसाररागाः
हित्वा हित्वा सकलकलहप्रापिणीं स्वार्थसिद्धिम् ।
ध्यात्वा ध्यात्वा श्रीगुरुचरणं सर्वकल्याणरूपं
नत्वा नत्वा सकलभुवनं पातुमामन्त्रयामः ॥ २ ॥
प्राप्तं यद्वै त्वनादिनिधिनं वेदोदधिं मथित्वा
दत्तं यस्य प्रकरणे हरिहर ब्रह्मादिदेवैर्बलम् ।
पूर्णं यत्तु प्राणसारैर्भौमनारायणानां
रामकृष्णस्तनुं धत्ते तत्पूर्णपात्रमिदं भोः ॥ ३ ॥

स्वामिविवेकानन्दविरचिता श्रीरामकृष्णप्रशस्तिः समाप्ता



अभयपद में अवस्थित हैं तब हम भयशून्य तथा वीर होंगे । यही आस्तिक्य भाव है । हम रामकृष्ण के दास हैं ॥ १ ॥

संसार में आसक्ति-रहित होकर समस्त कलहों का मूल स्वार्थसिद्धि त्याग कर, परमामृत का पान करते-करते सर्व कल्याण-स्वरूप-श्रीगुरु-चरण का ध्यान करके समस्त पृथ्वी को प्रणाम करके, उन्हें इस अमृत का पान करने के लिए हम पुकारते हैं ॥ २ ॥

अनादि अनन्त वेदरूप समुद्र का मंथन करके जो (अमृत) प्राप्त हुआ है, जिनको ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओं ने शक्ति दी है, जो पार्थिव नारायण अर्थात् श्रीभगवान् के अवतारों की प्राणशक्ति से पूर्ण हैं, उसी अमृत के पूर्णपात्र रूप में श्रीरामकृष्ण ने देह धारण किया है ॥ ३ ॥

स्वामी विवेकानंद विरचित 'श्रीरामकृष्णप्रशस्ति' समाप्त हुआ ।



जगद्गुरुश्रीरामकृष्णस्तोत्रम् *

स्वामिअभेदानन्दविरचितम्

ॐ नमो भगवते रामकृष्णाय

लोकनाथश्चिदाकारो राजमानः स्वधामनि ।
कलिकल्मषमग्नानामुत्तारण-चिकिर्षया ॥
मायाशक्तिं समाश्रित्य योऽवतीर्णो महीतले ।
नमोऽस्तु रामकृष्णाय तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥
सद्ब्राह्मणकुले जातो दिव्यदेहं समाश्रितः ।
बाल्ये यो दिव्यभावेन वयस्यैः सह मोदयन् ॥
विरक्तो यौवने तीव्रं मायापाश-विवर्जितः ।
नित्यमुक्त-स्वभावोऽपि लोकानुग्रहकामतः ॥ २ ॥
लोकानामेव शिक्षार्थं तपस्तप्त्वा सुदुस्तरम् ।
निद्राशनं परित्यज्य वर्षाणां द्व्यधिकान् दश ॥

जो त्रिलोक के नाथ हैं, जो चैतन्य-स्वरूप हैं, जो अपने लोक में निरन्तर विराजमान रहते हैं, वे कलिकाल के कलुष में निमग्न जीवों का उद्धार करने के लिए मायाशक्ति का आश्रय लेकर संसार में अवतीर्ण हुए हैं (नररूप में वे हरयुग में संसार में आते हैं), वैसे जगद्गुरु रामकृष्ण देव को प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

सद्ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न, दिव्य-देहधारी, बाल्यवन्धुओं में प्रेमलीला करने वाले, यौवन में ही तीव्र वैराग्यवान, मायापाशविवर्जित और नित्यमुक्त होते हुए भी जो लोगों का कल्याण करने वाले हैं ॥ २ ॥

लोगों की शिक्षा के लिए सुकठिन तपस्या करके निद्रा तथा भोजन त्याग कर

* यह स्तोत्र श्रीमत्स्वामी अभेदानन्द-विरचित है । श्रीरामकृष्ण वेदान्तमठ के अधिकारियों की अनुमति से यह प्रकाशित हुआ है—प्रकाशक ।

स्वस्वरूपं समाधाय सच्चिदानन्द-विग्रहम् ।
दयामूर्तिः सदानन्दो जिज्ञासूनुपदिष्टवान् ॥
तेषामज्ञाननाशाय लाभाय च परात्मनः ।
नमोऽस्तु रामकृष्णाय तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ३ ॥
सत्यबोधतया साङ्गान् सर्वधर्मान् समाचरन् ।
धर्ममात्रन्तु सत्यं वै येन सम्यक् सुनिश्चितम् ॥
नमोऽस्तु रामकृष्णाय तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ४ ॥
यो भक्तान् भक्तिमार्गे तु निनाय लोकनायकः ।
आकृष्य मानसं तेषां भक्तिसिंचितया गिरा ॥
दर्शयित्वा महाभावं परमानन्ददायकम् ।
नमोऽस्तु रामकृष्णाय तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५ ॥
ज्ञानिनो ज्ञानमार्गे च येन सम्यक् प्रवर्तिताः ।
नमोऽस्तु रामकृष्णाय तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ६ ॥

तथा बारह वर्षों तक कठोर तपस्या करके सत्, चित् तथा आनन्द को अपना स्वरूप जान कर कृपया जिज्ञासुओं के अज्ञान का नाश करके परमात्मा की प्राप्ति रूप लाभ का उपदेश किया। ऐसे दयामूर्ति जगद्गुरु रामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

समस्त अंगों के साथ, समस्त धर्मों का उत्तम रूप से आचरण करके तथा हर एक धर्म के अंग-प्रत्यंग का विचार करके सभी धर्म सत्य (मार्ग) हैं–यह सुनिश्चित कहने वाले श्रीरामकृष्ण देव, आपको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

जो लोकनायक (रामकृष्ण) भक्तों को भक्ति मार्ग में ले आते हैं, भक्तिपूर्ण भाषा से उनके मन को आकर्षित करते हैं और परमानन्ददायक महाभाव दिखाकर भक्तों को अपने वश में रखते हैं उन जगद्गुरु रामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

जिन्होंने ज्ञानियों को ज्ञान मार्ग में प्रवर्तित किया है तथा ज्ञान का साधन बताया है उन जगद्गुरु रामकृष्ण देव को प्रणाम है ॥ ६ ॥

यैर्मतैर्धार्मिका यस्मिन् धर्ममार्गे व्यवस्थिताः।
तेषां तन्मतमादृत्य भक्तिस्तत्र दृढ़ीकृता॥
प्रोत्साहिता यथान्यायं येन तत्साधनेष्वपि।
नमोऽस्तु रामकृष्णाय तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ ७॥
पूजिता येन वै शश्वत् सर्वेऽपि साम्प्रदायिकाः।
सम्प्रदायविहीनो यः सम्प्रदायं न निन्दति।
नमोऽस्तु रामकृष्णाय तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ ८॥
शश्वल्लीला-विलासेन येन सर्वमिदं ततम्।
लीलारूपं सदानन्दं रामकृष्णं नमाम्यहम्॥ ९॥
सर्वधर्मप्रणेतारं धर्मग्लानिविनाशकम्।
साधुमित्रं शिवं शान्तं रामकृष्णं नमाम्यहम्॥ १०॥
अज्ञानतिमिरे यस्तु ज्ञानालोकप्रदीपकः।

जिन्होंने समस्त धार्मिक सम्प्रदायों के प्रति आदर दिखाकर उनके अनुयायियों की धार्मिक श्रद्धा को बढ़ाया तथा उनकी भक्ति को दृढ़ किया तथा प्रत्येक धर्म के साधकों को उनका साधन बताया और उन्हें उनके मार्ग में प्रोत्साहित किया ऐसे जगद्गुरु रामकृष्ण को नमस्कार करता हूँ॥ ७॥

जिन्होंने सम्प्रदायविहीन होने पर भी किसी सम्प्रदाय की निन्दा नहीं की तथा किसी सम्प्रदाय को स्वीकार नहीं किया फिर भी सभी सम्प्रदायों की पूजा की ऐसे जगद्गुरु श्री रामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूं॥ ८॥

जो नित्य लीला रूप में समस्त विश्व में व्याप्त हैं उन लीलारूपी श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूं॥ ९॥

सर्व धर्म प्रणेता तथा धर्म ग्लानि विनाशक साधुमित्र, शिव, शान्त रूप जगद्गुरू रामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ॥ १०॥

अज्ञान तिमिर में आप ज्ञान के दीपक रूप हैं। मनुष्यों को विमल आनन्द

विमलानन्ददानाय　　प्रादुरासीन्महीतले ॥
नमोऽस्तु रामकृष्णाय तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ११ ॥
संसारार्णवघोरे　यः　कर्णधारस्वरूपकः ।
नमोऽस्तु रामकृष्णाय तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १२ ॥
त्वं हि विष्णुर्विरिंचिस्त्वं त्वं च देवो महेश्वरः
त्वं चैव शक्तिरूपोऽसि निर्गुणस्त्वं सनातनः ॥
त्वां स्तोतुं कोऽत्र शक्तः स्याद् भावातीतमनामयम् ।
भगवन् सर्वभूतात्मन् रामकृष्ण नमोऽस्तुते ॥ १३ ॥
सर्वाय　सर्वपाराय　　सर्वभावस्वरूपिणे ।
सर्वभावविहीनाय रामकृष्णाय ते नमः ॥ १४ ॥
महामायास्वरूपाय　　महामोहविनाशिने ।
मायातीताय शान्ताय रामकृष्णाय ते नमः ॥ १५ ॥
निरञ्जनं　नित्यमनन्तरूपं
भक्तानुकम्पाद्धृतविग्रहं　वै ।

का दान देने के लिए आप इस संसार में आविर्भूत हुए हैं। ऐसे श्री गुरुदेव रामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ११ ॥

जो घोर संसार समुद्र में मेरे कर्णधार रूप हैं, ऐसे जगद्गुरू श्रीरामकृष्ण को मेरा प्रणाम है ॥ १२ ॥

तुम्हीं ब्रह्मा, तुम्हीं विष्णु, तुम्हीं महेश्वर हो, तुम्हीं शक्ति स्वरूप तथा तुम्हीं निर्गुण तत्त्व हो। तुम भावातीत तथा अनामय हो, तुम्हारी स्तुति करने में कौन समर्थ है (अर्थात् कोई नहीं है), ऐसे सर्वभूतात्मा श्रीरामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ १३ ॥

तुम सब कुछ हो, पारापार तथा सर्वभावमय हो, तथा तुम सर्वातीत हो, ऐसे श्रीरामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ १४ ॥

तुम महामाया रूप हो। तुम माया मोह का नाश करने वाले हो, तुम मायातीत तथा शान्त हो। ऐसे जगद्गुरू श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥१५॥

ईशावतारं परमेशमीड्यं
तं रामकृष्णं शिरसा नमामः ॥ १६ ॥

इति श्रीअभेदानन्दस्वामिना विरचितं जगत्गुरु श्रीरामकृष्णस्तोत्रमिदं समाप्तम् ।



अथ श्रीरामकृष्णाष्टकं प्रारभ्यते ।

स्वामिअभेदानन्दविरचितम् .

श्रीमद्रामकृष्णपादाब्जसुधापानोन्मत्ता रसिका
भावुकाः पिवन्तु सर्वकल्याणकरं,
तन्नामामृतं मुदा
विश्वस्य धाता पुरुषस्त्वमाद्यो
ऽव्यक्तेन रूपेण ततं त्वयेदम् ।
हे रामकृष्ण, त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ १ ॥
त्वं पासि विश्वं सृजसि त्वमेव

तुम नित्य, निरञ्जन, अनन्त स्वरूप हो। भक्तों पर कृपा करके विविध रूप धारण करते हो। तुम परमेश्वर तथा पूज्य हो, ऐसे श्री रामकृष्ण को मैं सिर झुका कर निरंतर प्रणाम करता हूँ ॥ १६ ॥

स्वामी अभेदानन्द-विरचित जगद्गुरू श्रीरामकृष्ण स्तोत्र समाप्त हुआ।



श्री रामकृष्ण-पादपद्म से क्षरित सुधाधारा पीकर रसिक, भावुक भक्त लोग अपने हृदय में परमानन्द प्राप्त करते हैं। उनका नामामृत लोगों के लिए परम कल्याणकारी है। उस नामामृत का पान करके अपने को भूल जाओ। तुम विश्व के विधाता हो। तुम आदि पुरुष हो। सारे भुवन में तुम अव्यक्तरूप से विराजमान हो। हे रामकृष्ण ! तुम मेरे जैसे भक्तिहीन व्यक्ति के प्रति सदा कृपा-कटाक्ष करते रहो ॥ १ ॥

त्वमादिदेवो विनिहंसि सर्वम् ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ २ ॥
मायां समाश्रित्य करोषि लीलां
भक्तान् समुद्धर्तु मनन्तमूर्तिः ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ३ ॥
विधृत्य रूपं नरवत्त्वया वै
विज्ञापितो धर्म इहातिगुह्यः ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटा कुरु देव नित्यम् ॥ ४ ॥
तपोऽथ ते त्यागमदृष्टपूर्वं
दृष्ट्वा नमस्यन्ति कथं न विज्ञाः ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ५ ॥

इस विशाल ब्रह्माण्ड की सृष्टि, पालन तथा संहार, हे आदि देव, तुम ही करते हो। हे रामकृष्ण, तुम इस भक्तिहीन व्यक्ति के प्रति सदा कृपादृष्टि करते रहो ॥ २ ॥

हे हरि, तुम माया का आश्रय करके लीला करते हो, भक्त के उद्धार के लिये अनेक मूर्ति धारण करते हो। हे रामकृष्ण, तुम इस भक्तिहीन व्यक्ति के प्रति सदा कृपा दृष्टि करते रहो ॥ ३ ॥

हे रामकृष्ण, तुम नर रूप धारण कर इस धरातल पर आये हो, तुमने अति गुह्य धर्मतत्त्व सबको बतलाया है। हे रामकृष्ण, तुम इस भक्तिहीन व्यक्ति के प्रति सदा कृपादृष्टि करते रहो ॥ ४ ॥

तुम्हारी अद्‌भुत अपूर्व त्याग-तपस्या को देखकर विद्वान लोग क्यों नहीं तुमको नमस्कार करेंगे ? हे रामकृष्ण देव !तुम इस भक्तिहीन व्यक्ति के ऊपर सदा कृपा दृष्टि रखो ॥ ५ ॥

श्रुत्वात्र ते नाम भवन्ति भक्ताः
दृष्ट्वा वयं तन्नतु भक्तियुक्ताः ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ६ ॥

सत्यं विभुं शान्तमनादिरूपं
प्रसादये त्वामजमन्तशून्यम् ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ७ ॥

जानामि तत्वं न हि देशिकेन्द्रं
किं वा स्वरूपं कथमेव भावम् ।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम् ॥ ८ ॥

इति श्रीअभेदानन्दस्वामिनाविरचितं 'जगद्गुरुश्रीरामकृष्णाष्टकं' समाप्तम्



तुम्हारा नाम सुनकर अनेक मनुष्य महान भक्त हुए हैं, उसे देख कर भी हम लोग भक्तियुक्त नहीं होते हैं । हे रामकृष्ण, तुम मेरे जैसे भक्तिहीन लोगों पर सदा कृपा दृष्टि रखो ।। ६ ।।

तुम सत्य, शान्त, सर्वव्यापक, आदि-अन्त-रहित हो, तुम जन्म-मरण-रहित तथा सदा प्रसन्न हो । हे रामकृष्ण, तुम मेरे जैसे भक्तिहीन जनों पर सदा कृपा दृष्टि रखो ।। ७ ।।

हे गुरुश्रेष्ठ, तुम्हारा तत्व क्या है ? तुम्हारा स्वरूप क्या है ? तुम्हारा भाव क्या है ? इन्हें मैं नहीं जानता । हे रामकृष्ण, तुम मेरे जैसे भक्ति-हीन व्यक्ति पर सदा कृपा दृष्टि रखो ।। ८ ।।

इति स्वामीअभेदानन्द विरचित 'श्रीरामकृष्णाष्टकं' समाप्त हुआ ।



श्रीरामकृष्णषट्कम्*

श्रीप्रमदादासमित्रविरचितम्

विशुद्धविज्ञानमगाधसौख्यं
विश्वस्य वीजं करुणापयोधिः।
अनाद्यनन्तं प्रकृतेः परस्तात्
तत्त्वं त्वमेकं भुवि रामकृष्णः॥ १॥
न-नेति मिथ्या श्रुतयो वदन्ति
वदन्ति साक्षान्न च यं कदाचित्।
चिदेकरूपः शिव ईश्वराणां
महेश्वरोऽसौ भुवि रामकृष्णः॥ २॥
यं नित्यमानन्दमनन्तमेकं
शिवेति नाम्ना श्रुतयो गृणन्ति।
तस्यावतारो नररूपधारी
कृपासुधाब्धिर्भुवि रामकृष्णः॥ ३॥

विशुद्ध विज्ञान, अथाह सुखस्वरूप, विश्व के कारण, करुणासागर, जन्मरहित, नाशरहित, प्रकृति के परे अवस्थित जो एकमात्र तत्व है इस पृथ्वी पर, हे रामकृष्ण, वह तुम ही हो ॥ १ ॥

जिस तत्व को समझाने के लिये वेद को 'यह नहीं है', 'यह नहीं है' (नेति-नेति) कह कर जगत् को मिथ्या बताना पड़ता है तथा जिसका साक्षात् रूप से वाणी के द्वारा वर्णन नहीं किया जा सका है, एकमात्र चेतनास्वरूप मंगलमय, ईश्वरों के भी महेश्वर इस पृथ्वी पर हे रामकृष्ण, तुम्हीं हो ॥२॥

जिनको नित्य, आनन्दरूप, अनन्त, एक शिव आदि नाम से वेद वर्णन करते हैं, उन्हीं का इस पृथ्वी पर नर रूप कृपासागर रामकृष्ण के रूप में अवतार हुआ है ॥ ३ ॥

---

* उद्बोधन पत्रिका के स्वत्वाधिकारी की अनुमति से लिया गया है—प्रकाशक।

विज्ञानपीयूषनिमग्नमूर्तिः
पस्पर्श यान यान दयया करेण ।
तें कामिनीकाञ्चनरिक्तचित्ताः
सद्यो बभूवुर्भुवि रामकृष्णः ॥ ४ ॥

प्रेमाब्धिगम्भीरतरंगभंगै-
रान्दोलितो यो भगवद्विलीनः ।
भक्तिर्विशुद्धा स्वयमाविरासीत्
पुंविग्रहोऽहो भुवि रामकृष्णः ॥ ५ ॥

तमद्भूतं कश्चिदचिन्त्यशक्ति
वन्दे प्रशान्तं परिपूर्णबोधम् ।
ज्ञानस्य भक्तेश्च विशुद्धमूर्तिं
द्विमूर्तिमेकं भुवि रामकृष्णः ॥ ६ ॥

इति श्रीप्रमदादास-मित्रविरचितं 'श्रीरामकृष्णषट्कं समाप्तम्' ।



विज्ञानामृत में निमग्नदेह जिन्होंने जिन जिन लोगों को कृपापूर्वक अपने हाथ से स्पर्श किया था; उनके चित्त से तुरन्त कामिनी-कांचन की चिन्ता दूर हो गयी थी । वे ही रामकृष्ण इस भुवन में आये हैं ॥ ४ ॥

जो प्रेमसमुद्र के ऊँचे तरंगभंग में आन्दोलित होकर भगवान में विलीन हो जाते हैं, जिनकी भक्ति विशुद्ध है तथा स्वयं पुरुष शरीर ग्रहण कर जो संसार में आविर्भूत हुए थे वे ही इस भूमण्डल में रामकृष्ण हैं ॥ ५ ॥

(जिस) किसी एक अपूर्व, अचिन्त्य शक्ति, प्रशान्त, पूर्णज्ञानस्वरूप, ज्ञान और भक्ति की विशुद्ध एवं युगल मूर्ति की मैं वन्दनाकरता हूँ । संसार में वे ही रामकृष्ण हैं ।। ६ ॥

इति श्रीप्रमदादास मित्र विरचित 'श्रीरामकृष्णषट्कम्' समाप्त हुआ ।



श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्

साहित्याचार्य-एम० ए०, श्रीभाण्डारकरोपाह्वेन त्र्यम्बकशर्मणाविरचितम्

लोकान् विलोक्य नवभौतिकभोगलग्नान्
मग्नांश्च नास्तिकविचारपरम्परासु ।
भक्त्या विहीनहृदयांश्च समुद्धिधीर्षुः
श्रीरामकृष्ण भगवान् स्वयमाविरासीत् ॥ १ ॥
वैराग्यबोधभजनत्रयसंगमेन
सच्चित्सुखार्थमनपायमुपायरूपम् ।
सन्देशमौपनिषदं विशदीविधातुं
श्रीरामकृष्णभगवान् स्वयमाविरासीत् ॥ २ ॥
कान्तासु विश्वजननीमवलोकयन्तं
तुल्याश्मकाञ्चनमतिं सदसद्विवेकम् ।
नित्यं करामलकसिद्धसमाधियोगं
श्रीरामकृष्णचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥

लोगों को नये भौतिक भोगों तथा नास्तिक विचार-धाराओं में मग्न और भक्तिहीन हृदय-युक्त देखकर उनके उद्धार करने के इच्छुक भगवान् स्वयं श्री रामकृष्ण के रूप में आविर्भूत हुए थे ॥ १ ॥

वैराग्य, ज्ञान तथा भगवद्भक्ति-इन तीनों के संयोग से सच्चिदानन्द लाभ के लिए अविनाशी उपाय रूप से उपनिषदों के उपदेशों को (जीवन में आचरण के द्वारा) विशद् रूप से समझाने के लिये भगवान् श्रीरामकृष्ण रूप में स्वयं आविर्भूत हुए थे ॥ २ ॥

स्त्रीजाति के भीतर जगन्माता का दर्शन करने वाले, प्रस्तर और सुवर्ण में समान बुद्धियुक्त, सदसद् विवेक-ज्ञानशील, सदा हाथ में आँवला धारण करने की तरह सिद्ध समाधियोगयुक्त श्रीरामकृष्ण के चरण - युगल में मैंने शरण ली ॥ ३ ॥

विद्याविलासविदुषोऽपि जगत्यनेका
नेकान्तमद्भुतरसानकरोत् स्वकीयान् ।
कृच्छ्रान्वितेषु करुणावरुणालयः सन्
श्रीरामकृष्ण-भगवान् द्युतिमातनोतु ॥ ४ ॥
अद्वैतमार्गममलं चिरशान्तिबीजं
संस्थापयन्नतुलयत्न परः परार्थः ।
वन्दे तमन्धतमसावृतजीववृन्दे
प्रज्वालितो जगति येन विवेकदीपः ॥ ५ ॥

इति साहित्याचार्य–एम० ए० श्रीभण्डारकरोपाह्वेन त्र्यम्बकशर्मणा
विरचित—"श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



जिन्होंने संसार में अनेक विद्याविलासी पण्डितों को अपूर्व (ईश्वरीय) रस एकान्तरूपसे अनुभव कराया था (अर्थात् अपनी महिमा से विस्मयान्वित किया था) और जो कठोर तपस्या करनेवालों के लिए करुणासागर हुए थे, वे भगवान् श्रीरामकृष्ण सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश विस्तृत करें ॥ ४ ॥

चिरशान्ति के बीजरूप निर्मल अद्वैतज्ञानपथ स्थापित करके जो अनुपम प्रयत्नपरायण तथा परार्थपर हुए थे और अज्ञानान्धकार से आवृत्त जीवों में जिन्होंने ज्ञानका प्रदीप जलाया, उनकी (अर्थात् उन भगवान् श्रीरामकृष्ण की) वन्दना करता हूँ ॥ ५ ॥

श्रीभण्डारकर उपनामक साहित्याचार्य, एम० ए० त्र्यम्बकशर्मा के द्वारा
विरचित "श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



श्रीरामकृष्णस्तुतिः

साहित्याचार्य, एम० ए० श्रीभाण्डारकरोपाह्वेन त्र्यम्बकशर्मणा विरचिता

नमः श्रीरामकृष्णाय रामकृष्ण-स्वरूपिणे ।
नरान् भवाम्बुधेः पारं नेतुं नौरिव यः स्थितः ॥ १ ॥
सर्वगः सर्वसाक्षी यः सर्वधर्ममयः प्रभुः ।
स्वभावतः कृपासिन्धुरिन्दुश्चिन्तानलोष्मणः ॥ २ ॥
ससन्तोषोऽकिञ्चनत्वे समहेमाश्ममृत्तिकः ।
मातुराराधनासक्तो विहितेश्वरदर्शनः ॥ ३ ॥
निष्कामलोकसत्कार्यपरः परमतत्त्ववित् ।
कृतकृत्यो नरेन्द्रोऽभूद्यस्य संगतिमात्रतः ॥ ४ ॥
वितृष्णः संसृतौ रामकृष्णस्तु भगवान् स्वयम् ।
सर्वदेवमयः पूर्णः सर्वज्ञो विश्वपूजितः ॥ ५ ॥

जो मनुष्यों को संसार-समुद्र के उस पार ले जाने के लिए नाव की तरह अवस्थित हैं उन राम और कृष्ण-स्वरूप श्रीरामकृष्ण को प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

जो सर्वगत, सर्वसाक्षी, सर्वधर्ममय तथा स्वभाव से ही कृपासिन्धु और चिन्तानल का ताप प्रशमित करने के लिए चन्द्रतुल्य हैं उन्हीं श्रीरामकृष्ण को प्रणाम करता हूं ॥ २ ॥

जो धन का अभाव होने पर भी सदा सन्तुष्टचित्त हैं, सुवर्ण, प्रस्तर तथा मृत्तिका में समदर्शी हैं, जगन्माता की उपासना में अनुरक्त तथा ईश्वरदर्शन-सम्पन्न हैं उन श्रीरामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

जो निष्काम भाव से मनुष्यों के सेवापरायण हैं, परमतत्त्वज्ञ हैं और जिनके संग मात्र से नरेन्द्र (यानी श्रीनरेन्द्र नाथ दत्त) कृतकृत्य हो गए थे उन श्रीरामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

जो संसार-वितृष्ण, सर्वदेवमय, पूर्ण, सर्वज्ञ, विश्वपूजित हैं वे ही श्रीरामकृष्ण स्वयं भगवान् हैं ॥ ५ ॥

मानवस्य स्वरूपं हि नित्यं शुद्धं तथामलम् ।
विश्वस्य शान्तये सर्वनरैकत्वमतोऽब्रवीत् ॥ ६ ॥
सद्वस्तुनः प्रकाशेन सर्वधर्मसमन्वयात् ।
यत्कीर्तिर्देशमर्यादामतिक्रम्याभितो ययौ ॥ ७ ॥

साहित्याचार्य, एम० ए०, श्रीभण्डारकरोपाह्वेन त्र्यम्बकशर्मणा विरचिता "श्रीरामकृष्णस्तुतिः" समाप्ता ।



श्रीरामकृष्ण-प्रशस्तिः

न्यायाचार्य पण्डित आनन्द झा इत्येतेन विरचिता

अभूत् त्रेतायुगे रामः कृष्णो यो द्वापरे तथा ।
रामकृष्णतया काले कलावत्र बभूव ह ॥ १ ॥

मानवों का स्वरूप निश्चय ही नित्य, शुद्ध, तथा निर्मल है; इस कारण विश्वशान्ति के लिए श्रीरामकृष्ण ने समस्त मनुष्यों की एकता की घोषणा की है ॥ ६ ॥

सत्य वस्तु के प्रकाश के द्वारा समस्त धर्मों का समन्वय होने से जिनकी कीर्ति देश की सीमा पार कर व्यापक हो गयी थी उन श्रीरामकृष्ण को प्रणाम है ॥ ७ ॥

यह 'श्रीरामकृष्णस्तुति' साहित्याचार्य, एम० ए० श्री भण्डारकर उपनाम युक्त त्र्यम्बकशर्मा के द्वारा विरचित है ।



जो त्रेतायुग में श्रीरामचन्द्र तथा द्वापर युग में श्रीकृष्ण रूप में आविर्भूत हुए, वे ही इस कलिकाल में इस पृथ्वी पर रामकृष्ण रूप में अवतीर्ण हुए, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है ॥ १ ॥

युगप्रवर्तकत्वेन युगाचार्याख्यया पुनः ।
स्वामीविवेकानन्दोऽतः प्रणमन्नाह सादरम् ॥ २ ॥
"स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्म स्वरूपिणे ।
अवतारवरिष्ठाय रामकृष्णाय ते नमः" ॥ ३ ॥
मतभेदेन मार्गाणां भेदो नास्त्यत्र संशयः ।
विभिन्नसाधनास्यूतानुभूतिः कल्पना न हि ॥ ४ ॥
विश्वधर्मप्रतीकोऽभूद् रामकृष्णो न संशयः ।
सर्वेषामेव धर्माणां साधना यत् समादृताः ॥ ५ ॥
तद्रहस्यमिदं ज्ञेयं सर्व एव हि मानवाः ।
सन्तानवद्धि विश्वस्य स्रष्टुर्हि परमात्मनः ॥ ६ ॥
इति निर्णीय विश्वऽस्मिन् भ्रातृत्वे सुप्रतिष्ठिते ।
विश्वबन्धुत्वसंसिद्धिर्मैत्र्यूत्कर्षाद्भवेदिति ॥ ७ ॥

इस कारण युगप्रवर्तक रूप में तथा युगाचार्य रूप आख्या द्वारा स्वामी विवेकानन्द ने सम्मान के साथ उन्हें प्रणाम कर कहा था ॥ २ ॥

धर्म की स्थापना करने वाले तथा सर्व-धर्म स्वरूप, अवतार-श्रेष्ठ रामकृष्ण रूपधारी आपको प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

भिन्न-भिन्न मतों के कारण मार्गों का भेद हो गया है । इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है । ऐसी अनुभूति विभिन्न साधनाओं से उत्पन्न है । यह केवल कल्पना-मात्र नहीं है ॥ ४ ॥

सभी धर्मों की साधना ही उनके द्वारा समादृत हुई (अर्थात् समस्त धर्ममतों की ही साधना को उन्होंने सम्मान दिया)। इस कारण विश्वधर्म के प्रतीक रूप में रामकृष्ण आविर्भूत हुए, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ॥ ५ ॥

इस कारण इसे ही रहस्य रूप में जानना चाहिए कि समस्त मनुष्य ही संसार के सृजन करनेवाले परमात्मा की सन्तान तुल्य हैं ॥ ६ ॥

इसी प्रकार का निर्णय करके उन्होंने सिद्धान्त कर लिया कि इस विश्व के समस्त मनुष्यों में भाईचारे का भाव सुप्रतिष्ठित होने पर मित्रता का भाव उत्कर्ष

अत्यन्तबाल्यकाले षड्वर्षावस्थस्य योगिनः।
भावावस्था स्वतो जाता रामकृष्णस्य भूम्न्यहो ॥ ८ ॥
कस्य साधारणस्यैवं दृष्टं केनापि कर्हिचित्।
ततःपरं समग्रे हि जीवने परमेशितुः ॥ ९ ॥
सगुणत्वागुणत्वाभ्यां ध्याननिष्ठो बभूव सः।
सत्यं भगवतो रूपमसत्यं यत्ततः परम् ॥ १० ॥
इति नूतनया भंग्या सारयामास दुस्तरे।
सन्देहान् स कुतर्कोत्थनास्तिकत्वाकुले युगे ॥ ११ ॥
क एवमन्य आस्ते यो लभ्यः साधारणे जने।
रामकृष्णसमो यः स्यात् प्रथितोऽसंख्यमानवे ॥ १२ ॥
भगवल्लाभसंपर्के दृढ़ेच्छा जागरं गता।

पायेगा और इसके फलस्वरूप विश्वबन्धुत्व की भावना स्थापित होगी ॥७॥

क्या ही आश्चर्य है कि अत्यन्त बचपन (छः वर्ष की अवस्था) में ही योगी रामकृष्ण में भूमा-ब्रह्म में स्वाभाविक रूप से भाव समाधि की स्थिति उत्पन्न हुई ॥ ८ ॥

क्या कभी किसी के द्वारा, किसी समय, किसी मनुष्य में ऐसी समाधि की अवस्था दिखाई पड़ी है? उसके बाद से समस्त जीवन में ही परमेश्वर श्रीरामकृष्ण की ऐसी अनुभूति दिखाई पड़ी है ॥ ९ ॥

वे सगुण और निर्गुण भाव से ध्याननिष्ठ हुए। साकार भगवान एकमात्र सत्य हैं, अन्य सब कुछ ही मिथ्या है अर्थात् साकार सत्य है और निराकार मिथ्या है ऐसा उन्होंने नहीं कहा है ॥ १० ॥

कुतर्क से उत्पन्न नास्तिक-भाव से परिपूर्ण इस युग में नये ढंग से उन्होंने (श्रीरामकृष्ण देव ने) समस्त सन्देह दूर कर दिए हैं ॥ ११ ॥

समस्त विश्व में ऐसा मनुष्य और कौन है जो असंख्य मनुष्यों में रामकृष्ण की तरह विख्यात हो सका है ॥ १२ ॥

इष्ट दर्शन करने के इच्छुक रामकृष्ण में भगवान् को प्राप्त करने के सम्बन्ध

इष्टदर्शनकामस्य रामकृष्णस्य शाश्वती ॥ १३ ॥
तदीयं जन्म साधीयो मातुराश्वासितस्य च ।
जातिधर्मं विशेषार्थमागतिस्तस्य नैव हि ॥ १४ ॥
समग्रविश्वकल्याणप्रसवार्थं तदागमः ।
इयं विचित्रता तस्य स्पर्शमात्रेण केवलम् ॥ १५ ॥
समाधिस्तर उन्नीतं बहु साधारणं मनः ।
स्वीयाध्यात्मिकशक्तेर्हि कृत्वा संक्रमणं परे ॥ १६ ॥
चैतन्योद्बोधनेनासौ तं मुक्तिद्वारमानयत् ।
अहैतुक्यां तत्कृपायां सीमा भौगोलिकी न हि ॥ १७ ॥
ततस्तस्य कृपालाभे सर्वं एवाधिकारिणः ।
जन्मापि नाभवत्तत्र बाधकं कुत्रचित्ततः ॥ १८ ॥

में हार्दिक दृढ़ इच्छा लगातार जाग उठी थी ॥ १३ ॥

उनका जन्म अन्य किसी भी व्यक्ति से उत्तम था। जगदीश्वरी जगज्जननी के आशीर्वाद प्राप्त रामकृष्ण किसी विशेष जाति या विशेष धर्म के लिए नहीं आये थे ॥ १४ ॥

समस्त विश्व का कल्याण-साधन करने के लिये उनका आगमन हुआ था। उनमें यह विचित्र भाव तथा विशेष शक्ति थी कि केवल स्पर्शमात्र से वे लोगों का कल्याण साधन कर सकते थे ॥ १५ ॥

अपनी आध्यात्मिक शक्ति अन्य व्यक्ति के भीतर संचारित करके अनेक साधारण जनों के मनों को उन्होंने समाधि के स्तर में उन्नीत कर दिया था ॥ १६ ॥

वे चेतनता के उद्बोधन द्वारा मानवों को मुक्ति के द्वार पर ले जाते थे। उनकी अहेतुकी कृपा की यथार्थ में ही कोई भौगोलिक सीमा नहीं थी ॥ १७ ॥

इस कारण उनकी कृपा प्राप्त करने के सभी अधिकारी थे। ऐसे स्थलों में कोई जन बाधा स्वरूप नहीं होता था (अर्थात् निम्न श्रेणी तथा अस्पृश्य व्यक्ति भी उनकी कृपा प्राप्त करने से वञ्चित नहीं होता था) ॥ १८ ॥

अन्त्यजाद्या अपि कृपालाभात्तस्य न वञ्चिताः ।
नातीत-भूपतेर्मुद्रा वर्तमानेऽर्थसाधनी ॥ १९ ॥
उपादानैक्यसत्वेऽपि चिह्नवैचित्र्य योगतः ।
सर्वप्रसिद्धमेवैतत् तद्वदेतत् प्रबुद्धताम् ॥ २० ॥
युगधर्मश्चिह्नितोऽद्य रामकृष्णचरित्रतः ।
रामकृष्णावतारस्य वैलक्षण्यमिदं महत् ॥ २१ ॥
सन्त्यज्य सकलैश्वर्यं दीनवेशे समागमः ।
त्यागस्तपश्च वैराग्यमीश्वराश्रयता परा ॥ २२ ॥
रामकृष्णावतारेऽत्र भावैश्वर्यमुदाहृतम् ।
गार्ह्यस्थ्यमपि सन्यासो द्वयं हि समपेक्षितम् ॥ २३ ॥

चण्डाल आदि भी उनकी कृपा प्राप्त करने से वञ्चित नहीं होते थे । पुराने जमाने की मुद्रा वर्तमान दिनों में नहीं चलती ॥ १९ ॥

उन मुद्राओं का उपादान एक होने पर भी भूतकाल के भिन्न चिह्न रहने से मुद्राविभाजन के कारण यह भेद सदा ही प्रसिद्ध रहता है । इसे जातिभेद के सम्बन्ध में भी वैसा ही जानना चाहिए (अर्थात् वर्तमान राजा की मुहर रहने से एक ही धातु की विभिन्न मुद्राएँ विभिन्न मूल्यों की होती हैं । उसी प्रकार नये युग के अवतारों के द्वारा घोषित होकर सभी मनुष्य ही उन परम पिता के सन्तान रूप से उनकी कृपा प्राप्त करने में समर्थ हुए थे) ॥ २० ॥

अब रामकृष्ण देव के चरित्र से ही युगधर्म चिह्नित हुआ है । रामकृष्ण अवतार की यही महान् विशेषता है ॥ २१ ॥

वर्तमान युग में समस्त ऐश्वर्य सम्यक् रूप से परित्याग करके अति दीन के वेश में उनका आगमन हुआ था । त्याग, तपस्या, वैराग्य तथा परम ईश्वरपरायणता आदि उनके स्वाभाविक गुण थे ॥ २२ ॥

इस रामकृष्ण अवतार में भावरूपी ऐश्वर्य ही विशेष रूप से प्रकाशित हुआ था । गृहस्थ आश्रम तथा सन्यास आश्रम दोनों को ही उन्होंने समान स्थान दिया था ॥ २३ ॥

इत्यप्यदर्शयद्रामकृष्णस्तद्द्वयमाश्रयन् ।
जीवनाद्रामकृष्णस्य तत्तदाश्रमजीवने ॥ २४ ॥
प्रपतन्नूतनालोकसंकेतं प्राप निश्चितम् ।
सत्ययोर्देवदेव्योस्तु मूर्तिपूजापि नानृता ॥ २५ ॥
द्वैतं विशिष्टाद्वैतं चाद्वैतं सर्वं हि शोभनम् ।
शैवाः शाक्ता गाणपत्या बौद्धाः खृष्टानुयायिनः ॥ २६ ॥
यवनाश्च समे धर्माः शाखाभूताः स्तरात्मकाः ।
किंवा वेदान्तधर्मस्य वितताऽमितशाखिनः ॥ २७ ॥
तासां तासां साधनानां विधानेनोपदेशतः ।
इत्येव ख्यापयामास रामकृष्णः प्रभुः परः ॥ २८ ॥

अपने जीवन के द्वारा रामकृष्ण ने दो आश्रमों का आश्रय करके उन उन आश्रम-जीवनों में (अर्थात् आदर्श गार्हस्थ्य तथा सन्यास-जीवन में) दिखाया था कि दोनों आश्रम ही ईश्वर-प्राप्ति के लिये समान रूप से अनुकूल हैं ॥ २४ ॥

प्रपतित नवीन प्रकाश का संकेत उन्होंने निश्चित भाव से पाया था कि प्रतिमा के भीतर भी देवदेवी सचमुच ही विद्यमान हैं । मूर्तिपूजा कभी मिथ्या नहीं है अर्थात् मूर्ति-पूजारूप साधन के सहयोग से भी परम तत्त्वज्ञान प्राप्त करना सम्भव है ॥ २५ ॥

द्वैत, विशिष्टाद्वैत तथा अद्वैत-सभी अच्छे हैं । शैव, शाक्त गाणपत्य, बौद्ध, ईसाई आदि खराब नही हैं । सब ही सत्य प्राप्त करने के एक-एक पथ मात्र हैं ॥ २६ ॥

यवनों का धर्म मत भी विस्तृत है । वह अगणित शाखाओं वाले वेदान्त धर्म की एक शाखा के तुल्य है या स्तर-स्वरूप है (अतः वे सब धर्ममत भी हेय नहीं हैं) ॥ २७ ॥

वे सब साधन समूह भी विधि पूर्वक अनुष्ठान होने पर ईश्वर प्राप्ति के लिए उत्तम उपाय स्वरूप हैं । यह बात भी परम प्रभु रामकृष्ण ने कही थी ॥२८॥

पत्नीं देवीस्वरूपेण सम्पूज्यादाद् बृहत्तराम् ।
मर्यादां मातृजात्यै हि तद्देवत्वं स्थिरीकृतम् ॥ २९ ॥
गच्छामि शरणं श्रीमद्रामकृष्णपदाम्बुजम् ।
तस्मात् सदैव हृदये समुदेतु स एव हि ॥ ३० ॥

न्यायाचार्य पण्डित आनन्द झा इत्येतेन विरचिता "श्रीरामकृष्ण-प्रशस्तिः" समाप्ता ।



श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्

स्तोत्रमिदं साहित्याचार्य–एम० ए० श्रीभाडारकरोपाह्वेन त्र्यम्बकशर्मणा विरचितम्

स्वयं निर्मलं निर्मलीकर्तुमन्यान्
अलं सिद्धमप्युच्चसिद्धिप्रयासम् ।
प्रपन्नार्ति-नाश-प्रसन्नान्तरं तं
भजे रामकृष्णं परब्रह्मरूपम् ॥ १ ॥

अपनी पत्नी की देवी रूप में पूजा करके उन्होंने मातृजाति के प्रति वृहत्तर मर्यादा-दान किया था तथा निश्चित रूप से मातृ जाति का देवीत्व निश्चित कर दिया था ॥ २९ ॥

श्रीरामकृष्ण के चरण कमलों में मैंने शरण लिया है । इस कारण वे ही मेरे हृदय में सम्यक् रूप से उदित रहें ॥ ३० ॥

न्यायाचार्य पण्डित-आनन्द झा के द्वारा विरचित "श्रीरामकृष्ण-प्रशस्ति" समाप्त हुआ ।



जो स्वयं निर्मल हो कर दूसरों को निर्मल करने में समर्थ हैं, सिद्ध होने पर भी और ऊँची सिद्धि प्राप्त करने के इच्छुक हैं तथा आश्रितों का दुःख नाश करने में ही जिनका चित्त प्रसन्न रहता है, उन्हीं पर ब्रह्म-स्वरूप श्री रामकृष्ण का मैं भजन करता हूँ ॥ १ ॥

सदान्तर्लसत्सर्वसद्भाव भावं
जगच्छान्तये विश्वधर्मप्रकाशम् ।
मुदान्तः-प्रविष्टाखिल-स्वप्नवृन्दं
भजे रामकृष्णं परब्रह्मरूपम् ॥ २ ॥
अविद्यान्धकारापहार-प्रहारं
स्वभक्तानुकम्पा प्रसक्तान्तरंगम् ।
अवस्थागुणादिव्यतीत स्वरूपं
प्रभुं रामकृष्णं शिवं सन्नतोऽस्मि ॥ ३ ॥
स्मृतिः केवलं तेऽङ्हसां नाशहेतुः
स्तुतिर्मानसं मान-सम्मोद-पूर्णम् ।
करोति ध्रुवं दर्शनस्पर्शनादेः
फलं भाषितुं कोऽस्त्यलं देवदेव ॥ ४ ॥
विवस्वत् प्रकाशाः पयोधेस्तरंगा

जो सदा अन्तर में प्रकाशमान हैं, सद्भाव युक्त हैं, जगत् की शान्ति के निमित्त सब धर्मों के प्रकाशक हैं, प्रसन्न चित्त हैं और जिनके हृदय में समस्त सृष्टि स्वप्न की तरह निविष्ट है, परब्रह्मस्वरूप उन्हीं श्रीरामकृष्ण का मैं भजन करता हूँ ॥ २ ॥

जो अविद्यारूपी अन्धकार को दूर करने के लिये प्रहार (अर्थात् ज्ञान सूर्य) स्वरूप हैं, जिनका अन्तःकरण भक्तों पर अनुग्रह करने की भावना से आप्लावित है और जिनका स्वरूप विविध अवस्थाओं और तीनों गुणों से परे है, उन्हीं प्रभु, शिवस्वरूप श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

तुम्हारी स्मृतिमात्र से ही पापसमूहों का नाश होता है। तुम्हारी मान पूर्वक स्तुति करने से मन को आनन्द प्राप्त होता है। हे देवदेव ! तुम्हारे दर्शन और स्पर्श आदि का निश्चित फल कौन बता सकता है ? ॥ ४ ॥

सूर्य की ज्योति, समुद्र की तरंग, आकाश के नक्षत्र (तारे) जिस प्रकार

यथाकाशगास्तारकाः सन्त्यमेयाः ।
असंख्यास्तथा यद्गुणानां गणास्तं
भजे रामकृष्णं परब्रह्मरूपम् ॥ ५ ॥
विकारहेतावपि निर्विकारं
साकारमप्याकृतिशून्यभावम् ।
ज्ञानोपदेशैः सुकृतोपकारं
श्री रामकृष्णं शिरसा नतोऽस्मि ॥ ६ ॥
यथाम्बुधिं यान्ति विभिन्न गंगा–
स्रोतांसि धर्मा अपि देवदेवम् ।
येनोपदिष्टं निजसाधनाभि–
स्तं रामकृष्णं शिरसा नतोऽस्मि ॥ ७ ॥
त्वमेव साक्षाज्जगदात्मरूप
स्त्वमेव कार्यं परकारणं वा ।

असंख्य हैं, उसी प्रकार जिनके गुण समूह अगणित हैं, उन्हीं परब्रह्मस्वरूप श्रीरामकृष्ण का मैं भजन करता हूँ ॥ ५ ॥

विकार का कारण रहने पर भी जो निर्विकार हैं, साकार होकर भी जो आकार रहित हैं, ज्ञान के उपदेश समूहों के द्वारा जिन्होंने मनुष्यों का अशेष उपकार किया है, उन्हीं श्रीरामकृष्णदेव को मैं नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

जिस प्रकार नदियों की विभिन्न धाराएँ समुद्र में जाकर मिल जाती हैं, उसी प्रकार सभी धर्म भी परम देवता परमेश्वर में ही मिल जाते हैं। यही उपदेश जिन्होंने अपनी साधना के द्वारा संसार को दिया, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

तुम ही जगत् के साक्षात् आत्मस्वरूप हो, कार्य-पदार्थ एवं परमकारण

अनुग्रहैकार्थपरं परात्मन्
करोम्यभीक्ष्णं शरणं कमन्यम् ॥ ८ ॥

साहित्याचार्य, एम० ए०, श्रीभण्डारकरोपाह्वेन त्र्यम्बकशर्मणा विरचितम्
"श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



श्री श्रीरामकृष्णवन्दनास्तोत्रम्

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य विरचितम्

जगज्जातं त्यक्तं हिमगिरिसुता पादकमले
शरीराद्याः प्राणा वलय इव येनार्पणमिताः ।
त्रिवर्गोयच्छ्रद्धाविमल गुरुभक्त्याहि सुलभो
नुमो रामकृष्णं सुरनुतपदं भेदरहितम् ॥ १ ॥

स्वरूप हो । हे परमात्मन् ! एकमात्र अनुग्रहपरायण तुमको छोड़कर मैं और किसकी शरण में जाऊँ ? ॥ ८ ॥

साहित्याचार्य, एम० ए०, श्रीभण्डारकर उपनाम त्र्यम्बकशर्मा कृत
"श्रीरामकृष्णस्तोत्र" समाप्त हुआ ।



पार्वती के चरणकमलों में जिन्होंने समस्त जगत् का त्याग किया है, जिन्होंने बाला की तरह से उनके चरणों में अपना शरीर और प्राण समर्पित कर दिया है, श्रद्धा युक्त विमल गुरु भक्ति के द्वारा जिनसे धर्म, अर्थ और मोक्ष प्राप्त किये जा सकते हैं और जिनके चरणों में देवता लोग भी प्रणाम करते हैं, उन्हीं भेद-ज्ञान-रहित श्रीरामकृष्ण देव की हम लोग वन्दना करते हैं ॥ १ ॥

स्वयं त्यक्तं प्रोक्तं हृदयकरशाखोल्लिखनतः
पुरा रामात् कृष्णः समभवदनन्यो न हि परः ।
इदानीमायान्तं नयनविषयत्वं जनिभृतां
प्रविष्टो देहेऽस्मिन्निति कनककामातिगतया ॥ २ ॥

यदद्वैतं शान्तं सततमघमायाविरहितं
चिदानन्दं शुद्धं प्रकृतिसहितं प्रेमवशगम् ।
त्वमेवाविर्भूतः करणविषये दुर्लभतरो
जगज्जीवैः क्रीड़न्महदमितवीर्यो रसतमः ॥ ३ ॥

त्वमेव श्रीरामो मधुरिपुहरिर्गोपतनयः
स्वयंभूतश्चाद्यः परमपुरुषो नाथ रमण ।
विवादं धर्माणां शमयितुमनाश्चिन्मयवपुः
प्रसन्नो लोकानां प्रकटितमकार्षीः पुनरिह ॥ ४ ॥

जिन्होंने मानों मन से ही अपने हाथों से लिखकर सर्वस्व त्याग कर दिया है, जिन्होंने स्वयं श्रीमुख से यह भी कहा है कि प्राचीन काल के राम और कृष्ण ही सम्मिलित रूप से वर्तमान् युग में काम कांचन त्यागी श्रीरामकृष्ण हुये हैं । जनसाधारण के सम्मुख दृष्टिगोचर, देव-वन्दित-चरण और भेद-ज्ञान-रहित उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव को हम लोग प्रणाम करते हैं ॥ २ ॥

जो अद्वैत तत्त्व सर्वदा पाप और मायारहित, ज्ञान और आनन्द स्वरूप, शुद्ध होकर भी प्रकृति से युक्त और प्रेम के वशीभूत हैं, वास्तव में तुम वही हो । अपरिमेय वीर्यवान्, परमआनन्द स्वरूप और अत्यन्त दुर्लभ होकर भी तुम जगत् के जीवों के साथ महाभाव की लीला करने के लिए उनके सामने श्रेष्ठ साधक के रूप में आविर्भूत हुये हो ॥ ३ ॥

तुम ही श्रीराम, मधुसूदन, हरि और गोप नन्द के पुत्र हो । हे नाथ, हे आनन्ददायक ! तुम आदि, श्रेष्ठ पुरुष, चैतन्यदेहधारी, स्वयं उत्पन्न एवं प्रसन्न हो । धर्मों का आपसी विवाद शान्त करने के लिये तुमने इस संसार में अपने आपको पुनः प्रकाशित किया है ॥ ४ ॥

त्वदीयांघ्रिद्वन्द्वक्षरितमकरन्दं प्रतिदिशं
सदा पायं पायं कलितभवभीतिं प्रशमयन् ।
भजन् साम्यानन्दं विमलहृदयो याति परमां
जनानां संघोऽयं निखिलभुवि शान्ति मुहुरहो ॥ ५ ॥
समाधावानन्दं पुनरतिविशुद्धं हरिकथा–
प्रसंगादुद्बुद्धं करणगणरोधं प्रविवहन् ।
नराणां भक्तानां हृदयपुलकानां प्रतिदिनं
समाधानं चक्रे य इह शरणं मेऽस्तु सततम् ॥ ६ ॥
ध्रुवा मूर्तिर्गङ्गा-तटपरिगता या गुणमयी
गुणातीतापि स्यान्ननुलसति दक्षेश्वरमणिः ।
व्रजन्ती गायन्ती भवतारिणी मातुर्गुणकथाः
सदा स्वान्ते सा मे स्फुरतु रमणीया द्युतिमयी ॥ ७ ॥

तुम्हारे चरणों से स्रवित होने वाले मकरन्द का पान करने से संसार का भय शान्त होता है एवं समता का आनन्द पाकर हृदय निर्मल होता है । इसीलिये लोगों को इस रामकृष्णसंघ में मुहुर्मुहु परम शान्ति प्राप्त करते देखकर संसार आश्चर्यचकित होता है ॥ ५ ॥

हरि कथा श्रवण कर इन्द्रिय समूहों के वृत्ति निरोध सम्पादन पूर्वक विशुद्ध आनन्द में निमग्न पुनः पुनः समाधिस्थ होने पर जब हाथ के सहारे भक्तगण उनको सम्भालते थे, इस प्रकार की लीला जिन्होंने इस लोक में भक्तगणों के समक्ष सम्पादित की, वे ही श्रीरामकृष्ण निरन्तर मेरे आश्रय हों ॥ ६ ॥

गंगातट पर इतस्तः विचरण करने वाली दक्षिणेश्वर की मणि स्वरूपा, (श्री रामकृष्ण की) जो गुणमयी सत्यमूर्त्ति गुणातीता होकर भी प्रत्यक्ष प्रकट, जागृत हुयी, वे ही परिचरणशीला, मां भवतारिणी के गुण समूहों का गान करने वाली रमणीया, ज्योति से मण्डित मूर्त्ति सर्वदा मेरे अन्तर्जगत् में प्रकाशित हों ॥७॥

कृपापीयूषाम्भः पतितमधिकं पातकिजने
दयासिन्धो मन्दे रसिकचतुर प्रीतरसिक।
दरिद्राणां बन्धो तव विदुरगेहे सुखलवाः
समर्थो निर्णेतुं क इह महिमानं ननु बुधः ॥ ८॥
समुद्धर्तुं लोकान् स्वयमधिगतिस्ते प्रतिगृहं
क्व देवेन्द्रादीनां वसति-भवनं क्व शशधृक्।
गुणानां साधूनां त्वयि निवसनं गुणधर
स्मरामो नित्यानामपि निरभिमानं निरुपमम्॥ ९॥
नियन्ता जीवानामपिशिशुवदेवानुनटसि
स्वतन्त्रः सर्वेषामिव चरसि देवीपरगतः।
अभिज्ञाता विश्वं भणसि ननु मूर्खाभिध इति
प्रियां ते जानीमो निज-सकलगुप्तिं नटवर॥ १०॥

हे दया के सागर, चतुर रसचूड़ामणि, 'रसिक' मेहतर से प्रीति करने वाले मन्द बुद्धि युक्त पापी लोगों पर तुम्हारी कृपा रूपी अमृत की बूंद अधिक बरसती है। हे दरिद्रों के सखा, तुमने विदुर के घर सुख का कण (साग) खाया था। इस संसार में कौन ऐसा ज्ञानी व्यक्ति होगा जो निश्चित रूप से तुम्हारी महिमा निर्णय कर सकने में समर्थ हो ? ॥८॥

लोगों का उद्धार करने के लिये तुम स्वयं प्रत्येक के घर (देवेन्द्र मजुमदार आदि के निवास स्थान से लेकर चन्द्रलोक तक) गये। हे गुणों को धारण करने वाले, तुम्हारे अन्दर निहित, कभी समाप्त न होने वाली सद्गुणावली और अतुलनीय निरभिमानता हम सभी सर्वदा स्मरण करें ॥९॥

जीवों के स्वामी होकर भी तुम शिशु की तरह नाचते हो। स्वाधीन होने पर भी तुम आद्या शक्ति के अधीन होकर विचरण करते हो। समग्र विश्व को जान कर भी तुम स्वयं को "मूर्ख" नाम से अभिहित करते हो। हे नटवर! तुम्हारे प्रिय समस्त गुप्त रहस्यों को हम लोग जानें ॥१०॥

नमो रामैक्यामितमधुर देवीमयतनु-
भृते कृष्णैक्याय श्रुतपरमहंसाय यतये ।
नमश्चन्द्रामण्याः प्रियतनयदेवाय गतये
नमः सर्वस्वाय प्रणयिक्षुदिरामस्य मणये ॥ ११ ॥
इयं स्तुति कथा पूजा रामकृष्णे परे गुरौ ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां परमेश्वरः ॥ १२ ॥

इति ब्रह्मचारी मेधाचैतन्येन विरचितम् "श्री श्री रामकृष्ण
वन्दना स्तोत्रम्" समाप्तम् ।



राम से अभिन्न, कृष्ण से अभिन्न, अतिमधुर देवीमय शरीरधारी, विश्रुत परमहंस, यतिवर, चन्द्रमणि देवी के प्रिय पुत्र रूप में देवता, जीवों के एकमात्र गतिस्वरूप, स्नेहमय पिता क्षुदिराम के नयन मणिस्वरूप और मेरे सर्वस्व धन श्रीरामकृष्ण को बार-बार मेरा प्रणाम है ॥११॥

श्रेष्ठ गुरु श्रीरामकृष्ण देव के प्रति यह स्तुति वाक्य रूपी पूजा अर्पित हुई; इसी कारण से देवेश परमेश्वर प्रसन्न हों ! ॥१२॥

ब्रह्मचारी मेधा चैतन्य द्वारा विरचित "श्री श्रीरामकृष्ण वन्दना स्तोत्र"
समाप्त हुआ ।



श्रीरामकृष्णारात्रिकम् *

स्वामिविवेकानन्दविरचितम्

[न्यायाचार्य पं० श्री आनन्द झा-अनुवादितम्]

भव-बन्धन-भय-खण्डन ! शुभ-वन्दन ! वन्दे ।
गत-रंजन ! भव-भंजन ! निहितनयन ! मन्दे ॥ १ ॥
गुणमयवर ! निर्गुणनर ! नवमानव रूपिन् ।
अघदूषण - गणमोचन ! जगभूषण - रूपिन् ॥ २ ॥
ज्ञानाञ्जन विमलनयन ! वीक्ष्यमोहनाशिन् ।
भास्वर-सुभाव-सागर ! शशि-सुविशदहासिन् ॥ ३ ॥
भक्तार्चित चरण युगल ! भवसागर तारक ।
जृम्भितयुग-ईश्वर ! जगदीश्वर ! न्यायकारक ॥ ४ ॥

हे संसार रूपी बन्धन के भय का नाश करने वाले, शुभ वन्दना के योग्य, आसक्ति रहित, संसार का खण्डन करने वाले, मन्द व्यक्ति पर भी कृपा दृष्टि रखने वाले हे देव रामकृष्ण ! तुम्हारी मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

हे गुणियों में श्रेष्ठ, गुणातीत मानव, नूतन मनुष्य रूप धारण करने! वाले, पाप के दोष समूहों का मोचन करने वाले, जगत् के भूषण स्वरूप हे देव रामकृष्ण ! तुम्हारी मैं वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥

हे ज्ञान रूपी अंजन से युक्त विमल नेत्र वाले, दृष्टि मात्र से शरणागतों का मोह नाश करने वाले, ज्योतिर्मय, अच्छे भावों के समुद्र, चन्द्रमा के समान अत्यंत निर्मल और मधुर हास्य परायण हे देव रामकृष्ण ! मैं तुम्हारी वन्दना करता हूँ ॥ ३ ॥

भक्त लोग तुम्हारे चरणों की पूजा करते हैं, तुम संसार सागर से जीवों का

* यह स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा रचित "श्री श्री रामकृष्ण-आरात्रिक" भजन का संस्कृत अनुवाद है। विवेकानन्द सोसाइटी के सम्पादक की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

तव कृपया प्राप्त - समाधानमना: पश्यन् ।
अस्मि कर्मकाठिन्यं करुणाघन ! हृष्यन् ।। ५ ।।
भवतारण - प्राणार्पण ! भयहर ! कलिकृन्तन ।
अतिनिन्दित - करणराग ! वंचन कामकांचन ।। ६ ।।
त्यागीश्वर ! हे नरवर ! देहपदामोह ।
निर्भय ! गत-संशय ! दृढ़निश्चय ! गतलोह ।। ७ ।।
निष्कारण ! भक्तशरण ! त्यक्तजातिमान ।
सम्पन्मम तव चरणं भवगोष्पदमान ।। ८ ।।
प्रेमार्पण समदर्शन ! दु:खमेतु विलयम् ।
तव गानं गतमानं विलसत्वविलयम् ।। ९ ।।

उद्धार करते हो, तुम युग-धर्म का विस्तार करने वाले हो, भगवान्, जगदीश्वर एवं न्याय करने वाले हो । हे देव रामकृष्ण ! मैं तुम्हारी वन्दना करता हूँ ।। ४ ।।

हे करुणाघन ! कर्म की कठोरता देखकर तुम्हारी कृपा से आनन्द का अनुभव करते-करते मैं एकाग्र-चित्त हुआ हूँ ।। ५ ।।

हे देव ! तुम भवतारण हो, तुमने भगवान् में अपना प्राण अर्पित किया है, तुमने भय का हरण किया है, पाप का खण्डन किया है, इन्द्रियासक्ति की तुमने अत्यंत निन्दा की है और तुम कामकांचन में आसक्ति से रहित हो ।। ६ ।।

(तुम) श्रेष्ठ त्यागी, मानव श्रेष्ठ ! शरीर(रूपी आधार) से मोह रहित (हो) निर्भय, संशयरहित, दृढ़, निश्चय युक्त एवं आसक्तिरहित (हो) हे देव रामकृष्ण ! मैं तुम्हारी वन्दना करता हूं ।। ७ ।।

हे देव रामकृष्ण ! तुम कारण रहित, भक्तों के आश्रय हो, तुमने जाति और अभिमान का त्याग किया है, तुम्हारे चरण मेरी सम्पत्ति हैं एवं संसार को तुम गौ के खुर के समान समझते हो ।। ८ ।।

हे देव रामकृष्ण ! सब जीवों में प्रेम दान कर तुम समदृष्टि-सम्पन्न हुये हो । दुख का विनाश हो, विलय हो । तुम्हारा मान-रहित गीत (भजन) विलय रहित भाव से विलास करे अर्थात् सदैव विराजमान रहे ।। ९ ।।

नमो नमोऽवाङ्मानसगोचर !
मतिवचनैकाधार ।
ज्योतिर्ज्योतिषोऽपि हृत्कन्दर-
तमसो वर - संहार ॥ १० ॥
धिक्तान् धिक्तान् वदति मृदंगो
ये न पदे ते प्रणताः ।
गायन्त्येते भक्तजनास्ते
ह्यारात्रिकं प्रविनताः ॥ ११ ॥
जयतु जयत्वारात्रिकमेतत्
तव शम्भो ! शिव ! हर ! हर !
आनन्देनानूदितमभवत्
गानमिदं ते शंकर ! ॥ १२ ॥



हे देव रामकृष्ण ! वाणी और मन के द्वारा अगम्य होकर भी तुम वाणी और मन के एकमात्र आधार हो। ज्योति के भी ज्योतिस्वरूप होकर तुम जीव के हृदय के अज्ञान रूपी अन्धकार के श्रेष्ठ संहारक हो; (तुमको बार-बार प्रणाम) ।। १० ।।

जो लोग तुम्हारे चरणों में प्रणत नहीं होते, मृदंग उनको धिक्कार, उनको धिक्कार–यह बात कहता है, किन्तु जो लोग अत्यन्त विनयशील, विनम्र भक्तगण हैं, वे तुम्हारी आरती का गायन करते हैं ।। ११ ।।

हे शम्भो ! हे शिव ! हे हर ! हे हर ! तुम्हारे-आरती स्तोत्र की जय हो। हे शंकर, तुम्हारा यह गायन आनन्द झा द्वारा बंगला से संस्कृत में अनुवाद किया गया है ।। १२ ।।



श्रीरामकृष्णभुजंगम्

महाकवि कुट्टमत्तुकुन्नियूरुकृष्णकुरूपविरचितम्

सदाकारमोंकार मंत्रैकसारं सदानिर्विकारं चिदानन्दपूरम् ।
अणोरप्यणुं सर्वधीसाक्षिभूतं गुरूणां गुरुं भावये रामकृष्णम् ॥ १ ॥

युगेऽस्मिन् कलौ संकुचत्सारतत्त्वं
समुल्लासयन् लोकपद्माकरं यः ।
प्रभो ! कर्मसाक्षीव साक्षाद्बभूव
प्रभाप्रोज्ज्वलं तं भजे रामकृष्णम् ॥ २ ॥

भृशं कामिनीं कांचनं किंचनाप्य-
स्पृशन् सुप्तिकालेऽपि योऽभूदसंगः ।
अतिश्लाघ्यवैराग्य सौभाग्यमूर्त्ति
भवच्छेदिनं तं भजे रामकृष्णम् ॥ ३ ॥

जो सत्स्वरूप हैं, ॐकार मंत्र के एक मात्र सार हैं, सर्वदा निर्विकार हैं, चैतन्य और आनन्द से परिपूर्ण हैं, अणु से भी अणुतर हैं (अणु के भी अणु स्वरूप), सभी बुद्धियों के साक्षी स्वरूप एवं गुरुओं के भी गुरु हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव का मैं चिन्तन करता हूं ॥ १ ॥

इस कलियुग में पृथ्वी लोक रूपी कमलवन के (सरोवर के) धर्मकमलरूपी सारतत्त्व के संकुचित होने पर, उसको प्रस्फुटित करके, जो उस कमलवन में (सरोवर में) आनन्द-समुज्ज्वल प्राण-संचारपूर्वक मानो विराट् यज्ञ में सभी कर्मकाण्डों के साक्षी स्वरूप साक्षात् ब्रह्मा नाम के होता (ऋत्विक) हुए थे, स्वकीय आध्यात्मिक प्रभा से अतीव उज्ज्वल उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव का मैं भजन करता हूँ ॥ २ ॥

सोते समय भी जो कामिनी और किंचित् परिमाण में भी कांचन का स्पर्श नहीं कर पाते थे, अतिशय प्रशंसा योग्य वैराग्य और सौभाग्य दायक मूर्त्ति

जटां वक्त्र वैराग्यलक्ष्मीकचाभा-
-मुरोलम्बितश्मश्रुमालां वहन्तम् ।
लसद्भ्रूयुगान्तः स्फुरद्भाव-दृष्टि—
प्रमृष्ट प्रपंचं भजे रामकृष्णम् ॥ ४ ॥
यथान्तर्बहिर्निर्विकारस्वभाव-
स्फुटाशंसदन्तद्युति द्योतिवक्त्रम् ।
समस्तप्रकृत्यन्तिमस्थस्वलीला-
समाकृष्टविश्वं भजे रामकृष्णम् ॥ ५ ॥
द्रुतस्वर्णसावर्ण्य भृद्रम्यगात्रो-
-पवीतीकृतस्वच्छ दिव्योत्तरीयम् ।
महापीनवक्षो भुजाभारकिंचित्-
--समाकुंचितांगं भजे रामकृष्णम् ॥ ६ ॥

धारण करने वाले एवं संसार के बन्धन को काटने वाले उन्हीं श्री रामकृष्ण देव का मैं भजन करता हूँ ॥ ३ ॥

जिनका मुखमंडल वैराग्यश्री की आभा से आलोकित है, लक्ष्मी देवी के केशपाशों की आभा के समान शोभित केशजाल और वक्षपर्यन्त लटके हुए दाढ़ी के बाल जो धारण किये हुए हैं, जिनके नेत्रों की दृष्टि शोभामंडित भौहों के बीच एकाग्र है, जिन्हें देखने से ऐसा लगता है कि मानो निखिल संसार को जो अपने भीतर विलीन करने वाले हैं, उन्हीं श्री रामकृष्ण देव का मैं भजन करता हूँ ॥ ४ ॥

जो अन्दर के समान बाहर भी निर्विकार दृष्टि रखते हैं, अत्यन्त प्रशंसनीय हैं, अन्तस् में लीन होने के लिए मुखमंडल प्रकाशहीन (ज्योतिहीन) करने वाले, अपनी लीला से संसार को आकर्षित करने वाले, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव का मैं भजन करता हूँ ॥ ५ ॥

जो गले लगे हुए सोने के समान विशिष्ट वर्ण वाले अपने रमणीय शरीर पर बहुत साफ दिव्य उत्तरीय वस्त्र उपवीत (जनेऊ) की तरह धारण करते

वसानं सुधाशुभ्रवस्त्रं सुगात्रं
स्फुरच्चारुपद्मासनस्थं पवित्रम् ।
विशालांकविन्यस्त विश्वैकरक्षा–
–विधानांजलिं तं भजे रामकृष्णम् ॥ ७ ॥
"अहं सर्वसाक्षीमहाहंसयोगी" त्यहो
निर्विकल्पे समाधौ जगत्याम् ।
परं पामराणामपि व्यंजयन्तं
भ्रमं मार्जयन्तं भजे रामकृष्णम् ॥ ८ ॥
जगत् सृष्टिरक्षालयस्वैरलीला-
महावीर्यमैश्वर्यसम्पत्समृद्धम् ।
भवतप्तभक्तावनैकप्रवीणं
पुराणं पुमांसं भजे रामकृष्णम् ॥ ९ ॥

हैं, जिनके अतिशय स्थूल वक्ष:स्थल और दोनों हाथों के भार से जिनका शरीर कुछ संकुचित सा हुआ है, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव का मैं भजन करता हूं ॥ ६ ॥

जो अमृत के समान श्वेत वस्त्र के द्वारा अपने शरीर को ढकते हैं, जिनकी आकृति विशिष्ट प्रकार से रमणीक है; जो पद्मासन में अति पवित्र भाव से आसीन हैं, जो निखिल जगत् की रक्षा करने के लिए अपने दोनों हाथो की अंजुली बाँधकर अपनी गोद में रखे एकाग्र भाव से बैठे हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव का मैं भजन करता हूँ ॥ ७ ॥

अहो ! इस जगतीतल पर निर्विकल्प समाधि में अवस्थान काल में "मैं सबका साक्षी, (परब्रह्मस्वरूप) एवं परमहंसयोगी हूँ"—इस भाव को जिन्होंने पापियों के प्रति भी उत्कृष्ट रूप में प्रकाशित कर उनका भ्रम दूर किया था, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव का मैं भजन करता हूं ॥ ८ ॥

संसार की सृष्टि, स्थिति और प्रलय रूपी अपने आप चलने वाली लीला में जो महाशक्ति सम्पन्न थे, जो ईश्वरीय भाव रूपी संपत्ति से समृद्ध थे, संसार के ताप से दु:खी शरणागत भक्तों की रक्षा करने में जो सर्वश्रेष्ठ और कुशल थे,

पुरा येन तत्त्वं वसिष्ठाद्गृहीतं
पुनः पाण्डुपुत्राय योऽदात्तदेव ।
स रामश्च कृष्णश्च तत्तत्त्वमूर्त्या
ग्रहीत् साम्प्रतं रामकृष्णावतारम् ॥ १० ॥
पुरा रावणादीन् यथा चेदिपादीन्
रुषा प्राववीस्त्वं तथाऽस्मिन्युगेऽपि ।
महामौढ्यरुढ़ोद्भताधर्मदाढ्यं
समुत्पाट्य धर्मप्रतिष्ठां करोषि ॥ ११ ॥
जय श्रीपते ! सर्वलोकेश ! विष्णो,
जय क्षीरवाराशिशायिन् ! कृपालो !

जो स्वयं पुराणपुरुष भगवान् थे, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव का मैं भजन करता हूं ॥ ९ ॥

प्राचीन काल (त्रेतायुग) में जिन्होंने वशिष्ठ (के पास) से धर्मतत्त्व की शिक्षा प्राप्त की थी एवं पुनः द्वापर युग में) जिन्होंने वह तत्त्व पाण्डु के तृतीय पुत्र अर्जुन को सिखाया था, अभिन्न सत्ता और व्यक्तित्व से सम्पन्न वही राम और वही कृष्ण उक्त तत्त्व की अभिव्यंजना करते हुए समन्वय मूर्ति का आश्रय करके इस युग में (कलियुग में) पृथ्वी पर रामकृष्ण रूप में अवतरित हुए हैं ॥ १० ॥

जिस प्रकार भगवान ने रामावतार में रावणादि राक्षसों का एवं कृष्णावतार में चेदिपति शिशुपालादि का वध किया था, उसी प्रकार इस कलियुग में आपने महान् मूर्खता से ग्रसित, पहले न सुने गये, अति निन्दित अधर्म को जड़ सहित उखाड़ कर धर्म की प्रतिष्ठा की है ॥ ११ ॥

हे लक्ष्मीपति, सभी भुवनों के अधीश्वर विष्णु (श्रीरामकृष्ण) ! आपकी जय हो; हे क्षीरसागर में शयन करने वाले, दयामय (श्री रामकृष्ण) ! आपकी जय हो; हे श्री वाराहमूर्तिधारी, हे श्रीनृसिंह का रूप धारण करने वाले,

जय श्री वराहाकृते ! श्री नृसिंह !
　　　　प्रभो ! भारतोद्धारका ! ब्रह्ममूर्ते ॥ १२ ॥
विवेको-दितानन्दमन्दाकिनी यत्
　　　　पदाब्जोद्भवा सर्वलोकान् पुनाति ।
कुधीभिर्दुरापं कृपापूर्ण रूपं
　　　　तमीशं वितृष्णं भजे रामकृष्णम् ॥ १३ ॥
महाभक्तिसेव्यं महायोगभाव्यं
　　　　महाज्ञानगम्यं चिदानन्दरम्यम् ।
अवर्ण्यं वरेण्यं महैश्वर्यपूर्णं,
　　　　भजे रामकृष्णं भजे रामकृष्णम् ॥ १४ ॥

इति महाकविना कुट्ट मत्तुकुन्नीयूरुकुञ्जूकृष्णकुरूप् नामकेन विरचितं
"रामकृष्ण भुजंगम्" समाप्तम् ।

प्रभु, भारत के उद्धार कर्त्ता, वेद - तत्त्व - तपो - मूर्ति, विप्रशरीरधारी (श्रीरामकृष्ण) ! आपकी जय हो ॥ १२ ॥

जिनके चरण कमल से उत्पन्न नित्यानित्य वस्तु विवेक जनित आनन्द की मन्दाकिनी धारा सभी भुवनों को पवित्र करती है, दुर्बुद्धि से युक्त लोग जिनका महत्व और जिनकी महिमा धारण करने में असमर्थ हैं, जिन्होंने करुणा से विगलित होकर परिपूर्ण रूप धारण किया, विषयतृष्णा से रहित, साक्षात् सर्वनियामक ईश्वर स्वरूप उन्हीं श्री रामकृष्ण देवका मैं भजन करता हूँ ॥ १३ ॥

जो परम भक्ति के द्वारा सेवा करने योग्य हैं, एकाग्र चित्त की सहायता से योग के द्वारा चिन्तन करने योग्य हैं, जिनका स्वरूप महान् ज्ञानियों के लिए बोधगम्य है, जो चैतन्य और आनन्द की परिपूर्णता के कारण अतीव रमणीय हैं, अवर्णनीय हैं, वरणीय हैं एवं महायोग ऐश्वर्य से संपन्न हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्णदेव का मैं भजन करता हूँ, उन्हीं का मैं भजन करता हूँ ॥ १४ ॥

श्री कुट्टुमत्तुकुन्नीयूरु कुंजू कृष्णकुरूपनामक महाकवि द्वारा विरचित "श्रीरामकृष्णभूजंगम्" नामक स्तोत्र समाप्त हुआ ।

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम् *

श्रीवामदेवभट्टाचार्य-प्रणीतम्

ॐ-कार ज्ञान-वेद्यो यः सच्चिदानन्द-मूर्त्तिकः
ब्रह्माम्भोधि-समुद्भूत तरंगो वेद - विग्रहः।
भेद-द्वन्द्व-गुणातीतो माया-धृत-कलेवरः
चरण-प्रणताय मे विदधातु शिवं सदा ॥ १ ॥
न-लिन-नयन-नाथं चानुकम्पाधिवासं
निखिल-नर-शरण्यं दीनबन्धुं दयालुम्।
निरवधि विनतानां दुःखनाशे नियुक्तं
भव-जलनिधिपोतं नौमि नित्यमनन्तम् ॥ २ ॥
मोह-मेघ-समाच्छन्न-मानसाकाश-भास्करः!
कल्मष-तमसाच्छन्न-रजन्याश्चन्द्रमाश्च यः।

जो ॐकार रूप से ही जाने जाते हैं, जो सच्चिदानन्द स्वरूप हैं, जो अखिल ब्रह्माण्ड रूपी समुद्र से उत्पन्न तरंग स्वरूप हैं वेद ही जिनके विग्रह हैं, जो गुण-द्वन्द्व और भेद से परे हैं, जो माया से शरीर धारण करते हैं, वे ही महात्मा श्री रामकृष्णदेव अपने चरणों में प्रणत मुझ सेवक का सर्वदा मंगल करें ॥ १ ॥

जिनके नेत्र कमल के समान कोमल हैं, जो अनुकम्पा के सागर हैं, सभी मनुष्यों को आश्रय देने वाले हैं, दीनजनों के बन्धु हैं, दयालु हैं, अपने चरणों में विनीत भाव से झुके लोगों का दुःख दूर करने में सदा लगे हुए हैं, और जो संसार समुद्र से पार कराने वाली नाव के समान हैं, उन्हीं नित्य और अनन्त स्वरूप श्रीरामकृष्ण देव को मैं सदा प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

जो मोहरूपी बादल से ढके हुये मानसरूपी आकाश में उदित सूर्य के समान हैं एवं पापरूपी अन्धकार से आवृत्त रात में चन्द्रमा के समान विभासित

* उद्बोधन कर्तृ पक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक।

हरति करुणा यस्य सकलं दुष्कृतं कृत-
मविरत-कृपाराशिर्वृष्टोऽस्तु तस्य मे सदा ॥ ३ ॥
भ-वति च भव-भंगो भावतो यस्य नित्यं
भव-विधि-सुर संघाः यस्य वै मूर्ति-भेदाः ।
भुवन-भवन-बीजं यत्र सर्वं समुप्तं
भवतु हि मम तस्मिन् भावनं सर्वदैव ॥ ४ ॥
ग-गन-सदृशमीशं वाङ्मनोबुद्ध्यगम्यं
गिरिवर-हिमराज-सन्निभं धैर्य-वासम् ।
सकल-भुवन-संस्थं वारिनाथ-प्रशान्तं
धृत-नरहित-कायं सततं संस्मरामि ॥ ५ ॥
वहति वपुषि विश्वं विस्तरं वीर्ययोनि-
र्धरति विमल-वेशं दीन-सन्तान-जन्यम् ।

हैं एवं जिनकी करुणा समस्त दुष्कर्मों का नाश करती है, उनकी कृपा मेरे ऊपर निरन्तर वर्षित हो ॥ ३ ॥

जिनकी चिन्ता मात्र से संसार के क्लेश विनष्ट होते हैं एवं शिव, ब्रह्मा आदि सभी देवता जिनकी भिन्न-भिन्न मूर्ति हैं, सभी उत्पत्ति का बीज जिनमें निहित है, उनके प्रति मेरी श्रद्धा भावना बनी रहे—यही एकमात्र प्रार्थना है ॥ ४ ॥

जो आकाश के समान व्यापक हैं, वाणी और बुद्धि के द्वारा अगम्य हैं, पर्वतराज हिमालय के समान धैर्यवान् हैं, जो समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं, समुद्र के समान शान्त और गम्भीर हैं, जिन्होंने मनुष्य के कल्याण के लिये शरीर धारण किया है, उनको मैं श्रद्धापूर्वक अपने हृदय में सर्वदा स्मरण करता हूँ ॥ ५ ॥

शक्ति के आधाररूप में जो इस विशाल जगत को अपने शरीर में धारण करते हैं, जो समस्त बल और वीर्य के आदि कारण हैं, दीन-दुःखियों के

विषम-विषय-बाण-प्रोज्झितं भक्तिपूतं
चरण-शरणमेवं मानसं मे प्रयातु ॥ ६ ॥
ते-जोभिरस्पष्ट-दिगन्तमाप्तं
भास्वद् विभाषा जगदन्तमाप्तं ।
ज्योतिर्निवासं चरणान्तमाप्तं
मुहुर्मनो ध्यान-निमग्नमस्तु ॥ ७ ।
रा-शौ कृपावारिनिधेर्जलस्य
स्नातो विशुद्धो विमलान्तरात्मा ।
पिवामि रूपामृतमेव सम्यक्
भक्त्यंजनाभृन्नयनस्तु देव ॥ ८ ॥
मनुष्य-देवेन्द्र-प्रसेव्यमानं
तापत्रयोन्मूलनमिष्टमीड्यम् ।
उद्वेजितः सन् जनिमृत्यु जालैः
पादारविन्दं शरणं प्रपद्ये ॥ ९ ॥

लिये जो विमल वेश धारण करते हैं एवं जो विषम विषयवासना से मुक्त हैं, भक्ति से पवित्र हुआ मेरा मन उन्हीं के चरणों में शरण ले ॥ ६ ॥

तेज समूह के द्वारा अप्रकाशित, सभी दिशाओं में सुप्रकाशित एवं जिनकी ज्योति समस्त विश्व में परिव्याप्त है, उसी ज्योति के निदान स्वरूप श्रीरामकृष्ण के चरण सिंधु में मेरा मन बार-बार अवगाहन करे ॥ ७ ॥

हे देव, तुम्हारे कृपा समुद्र में अवगाहन करने से मेरा अन्तःकरण विशुद्ध हुआ है एवं अपने नेत्रों के सभी कोनों में भक्तिरूपी अंजन का लेपकर मैं उत्तम रूप से तुम्हारे रूपामृत का पान कर रहा हूँ ॥ ८ ॥

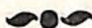
मनुष्य और देवताओं में प्रधान इन्द्र के द्वारा सेवित, तीनों तापों (आधिभौतिक, आधिदैहिक, आधिदैविक) के उन्मूलन करने वाले, वन्दनीय और अभीप्सित (श्री रामकृष्ण के) चरण कमलों में जन्म-मृत्यु के जाल में बँधे होकर भयभीत हुए मैंने सदा के लिये आश्रय लिया है ॥ ९ ॥

कृ - तान्तक - त्रास - प्रणाशनास्त्रं
समस्त - लोकस्य परायणं वै ।
संश्रृत्य शान्ता हि भवन्तु सर्वे
कृशानुवत्तावदतर्प्यकामा: ॥ १० ॥

ष्णा - न्तं सुमिष्टं हि निरस्तपापं
सन्दोह - सन्देह - विनाशमन्त्रः ।
त्वन्नाम सत्यं सुमहद्वरेण्यं
विराजतां नित्य मुखाम्बुजे मे ॥ ११ ॥

यस्यैव कारुण्यमजस्र धारं
विज्ञप्तवद्धर्म - समन्वयं वै ।
योषिद्धनानां परिवर्ज्जनंच
तमेव वन्दे भुवि रामकृष्णम् ॥ १२ ॥

श्री वामदेव भट्टाचार्य प्रणीतं "श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



समस्त लोकों के मृत्यु भय को विनष्ट करने के लिये अमोघ अस्त्र स्वरूप और अग्नि के समान देदीप्यमान श्री प्रभु के चरणों में आश्रय लेकर सभी मनुष्य, जो कि अतृप्त वासनाओं के वशीभूत होकर पतित हैं, जितेन्द्रिय हों और शान्त हों ॥ १० ॥

हे प्रभु, समस्त पापों को नष्ट करने वाले, सन्देहों का विनाश करने वाले, मन्त्र स्वरूप सुमधुर लगने वाले, महत्, वरेण्य तुम्हारा तारक ब्रह्म (रामकृष्ण) नाम सदा हम लोगों के हृदय में विराजमान रहे ॥ ११ ॥

जिनकी करुणा की अजस्रधारा प्रवाहित होकर पृथ्वी पर सभी धर्मों का समन्वय कर रही है, जिन्होंने "कामकांचन त्याग से परम शान्ति" इस महान् वार्त्ता की विशेष रूप से घोषणा की है, उन्हीं श्री रामकृष्ण परमहंस-देव की मैं बारम्बार वन्दना करता हूँ ॥ १२ ॥

श्री वामदेव भट्टाचार्य द्वारा प्रणीत यह "श्री रामकृष्ण स्तोत्र" समाप्त हुआ ।



श्रीश्रीरामकृष्णस्तुतिः *

डॉ० श्रीयतीन्द्रविमलचौधरिणा विरचिता

त्रेतायां रामभद्राय जगद्रमणकारिणे
द्वापरे कृष्णरूपाय पापतापादिकर्षिणे ॥ १ ॥
कलौ श्री रामकृष्णाय युग्मरूपप्रधारिणे ।
नमः कोटियुगव्यापीतपःफलस्वरूपिणे ॥ २ ॥
अवतीर्ण परेशाय यतीन्द्रस्य नमोऽस्तु ते ।
युगयुगावताराणां समष्टये नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥
रामो दूर्वादलश्यामः कृष्णोऽपि कृष्णवर्णकः ।
माता ते कालिका घोरा गौरस्त्वं शिवरूपकः ॥ ४ ॥

जिन्होंने त्रेता युग में श्रीराम रूप में जगत् को आनन्द प्रदान किया, द्वापर युग में श्रीकृष्णरूप में संसार के पाप और ताप का हरण किया और कलियुग में श्रीराम और श्रीकृष्ण के सम्मिलित पूर्णरूप को धारण किया, उन्हीं श्री रामकृष्ण देव को, जो कि संसार की करोड़ों-करोड़ों युगों की तपस्या के फलस्वरूप अवतीर्ण हुए, प्रणाम ॥ १-२ ॥

तुम ही स्वयं अवतीर्ण परमेश्वर हो; तुमको ही यतीन्द्र का प्रणाम । युग-युग के सभी अवतारों के समष्टिस्वरूप तुमको ही प्रणाम ॥ ३ ॥

श्रीराम दूर्वादल की तरह श्यामवर्ण के थे; श्रीकृष्ण भी कृष्णवर्ण के थे । तुम्हारी माँ काली भी घोर कृष्ण वर्णा हैं; किन्तु श्रीराम और श्रीकृष्ण के मिलितरूप एवं मां काली के पुत्र होकर भी तुम पिता शिव की तरह से गौरवपूर्ण हो ॥ ४ ॥

तुमने ही यह उज्ज्वल गौर रूप धारण कर समग्र जगत् को कलंकरहित,

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

निष्कलुषं जगत्सर्वं निष्पापं चिरशुभ्रकम् ।
कृतं त्वया स्थिरज्योतिः प्रमूर्तब्रह्मवर्चसम् ॥ ५ ॥
विश्वदीप स्वरूपाय भक्तिमुक्तिप्रदायिने ।
नमस्ते रामकृष्णाय नरेन्द्रध्यानरूपिणे ॥ ६ ॥
वामनस्य स्थिरा प्रज्ञा रामस्य सत्यनिष्ठता ।
वीर्यं नीतिश्च कृष्णस्य त्वय्येव पूर्णतां गता ॥ ७ ॥
गौरस्य प्रीतिभक्ति च ज्ञानकर्म समन्विते ।
त्वयि रूपं परं प्राप्ते रामकृष्ण नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥
सर्वधर्मप्रपालिने तत्समन्वय - कारिणे ।
नमस्ते रामकृष्णाय सच्चिदानन्दरूपिणे ॥ ९ ॥
'तावान् पन्था मतं यावन्' —महावाणीप्रचारिणे ।

पापरहित और हमेशा के लिये शुद्ध, ज्योतिर्मय किया था, ऐसा लगा मानों ब्रह्मलोक की प्रतिच्छवि ही धरती पर मूर्तरूप में आ गई हो ॥ ५ ॥

जो विश्व के दीपक स्वरूप हैं, भक्ति और मुक्ति के देने वाले हैं, श्री नरेन्द्रनाथ के ध्यान की मूर्ति हैं, उन्हीं श्री रामकृष्ण देव को प्रणाम ॥ ६ ॥

सत्य युग के अवतार श्री वामन का शाश्वत ज्ञान, त्रेता युग के अवतार श्री रामचन्द्र की सत्य निष्ठा एवं द्वापर युग के अवतार श्रीकृष्ण की शूरता, वीरता और धर्मनीति एक मात्र तुम्हारे ही अन्दर पूर्ण भाव से प्रकाशित है ॥ ७ ॥

साथ ही कलियुग के अवतार श्री गौरांग देव की प्रेम भक्ति और ज्ञान समन्वित होकर तुममें ही श्रेष्ठरूप धारण किये हुए है। श्री रामकृष्ण! तुमको ही प्रणाम ॥ ८ ॥

जिन्होंने स्वयं सब धर्मों का पालन किया, सब धर्मों का समन्वय किया, जो सच्चिदानन्द परब्रह्म ही श्री रामकृष्ण रूप में अवतरित हैं, उन्हीं श्री रामकृष्ण को प्रणाम ॥ ९ ॥

"जितने मत, उतने पथ" यह महान् मतवाद जिन्होंने प्रचारित किया था,

परशिवस्वरूपाय 'जीवशिव'—विघोषिणे ॥ १० ॥
माध्यमेन महादेव्या जननीशारदामणेः ।
नारीशक्तेः प्रबोधाय संसारारण्यवासिने ॥ ११ ॥
ईशप्रत्यक्षतायाश्च साक्षात्प्रमाणकारिणे ।
नमो भगवते तुभ्यं षड़ैश्वर्य प्रकाशिने ॥ १२ ॥
पुत्राधमयतीन्द्राय पादरेणु प्रदायिने ।
नमस्ते रामकृष्णाय शारदासाररूपिणे ॥ १३ ॥

इति डॉक्टर श्रीयतीन्द्रविमलचौधरिणाविरचिता "श्री श्रीरामकृष्णस्तुतिः' समाप्ता ।



स्वयं परम शिव स्वरूप होकर भी जिन्होंने "जीव ही शिव" यह महावाणी घोषित की, जिन्होंने महादेवी माँ शारदामणि के माध्यम से नारी शक्ति का पूर्ण जागरण करने के निमित्त संसाररूपी अरण्य में ही वास किया था, जिन्होंने यह महासत्य निस्सन्देह भाव से प्रकाशित किया था "ईश्वर को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है" एवं जिनको प्रत्यक्ष देखकर ही हम उनका साक्षात् प्रमाण पा सकते हैं; जिन्होंने ऐश्वर्य, वीर्य, यश, सौभाग्य, ज्ञान और वैराग्यरूपी छः ऐश्वर्यों को पूर्ण रूप से प्रकाशित किया, उन्हीं भगवान् श्रीरामकृष्ण देव को प्रणाम ॥ १०–१२ ॥

जिन श्री रामकृष्ण देव ने अधम पुत्र यतीन्द्र को अपनी चरण - रज प्रदान की, जो माँ शारदा के सार रूप हैं, उन्हीं को प्रणाम ॥ १३ ॥

डॉ० श्री यतीन्द्रविमलचौधरी द्वारा विरचित यह "श्री श्रीरामकृष्ण स्तुतिः" समाप्त हुई ।



श्रीरामकृष्ण-स्तोत्रम् *

पं० आशुतोषकाव्य-व्याकरण-स्मृतितीर्थविरचितम्

दीनानाथः सदानन्दो भ्राजमानो स्वतेजसा।
कलिदोष - समाक्रान्त - समुद्धरण - वांछया ॥ १ ॥

महाशक्तिं समाश्रित्य त्वमागतो निजेच्छया।
नमोऽस्तु गुरवे तुभ्यं रामकृष्ण स्वरूपिणे ॥ २ ॥

यो रामः स हि कृष्णस्तु त्वय्यभेदः प्रदृश्यते।
लोकशिक्षा प्रदानार्थं आगतस्त्वं महीतले ॥ ३ ॥

करुणार्णव भो देव! गृहाण प्रणतांजलिम्।
नास्त्यस्माकं धनं किंचित् तुभ्यं यद्दीयते पुनः ॥ ४ ॥

हे रामकृष्ण! तुम दीनों के नाथ हो, सदानन्दमय हो और कलियुग के बहुत से दोषों से परिपूर्ण मनुष्यों का उद्धार करने के निमित्त स्वकीय तेज धारण करते हुए विराजमान हो ॥ १ ॥

तुमने महाशक्ति का आश्रय करके स्वेच्छा से शरीर धारण किया है। हे गुरुदेव! रामकृष्णरूपधारी तुमको प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

जो राम हैं, वे ही कृष्ण हैं—यह राम और कृष्ण का अभेद तत्त्व तुममें ही प्रकाशित हुआ है। तुम लोक शिक्षा के लिए धरातल पर अवतरित हुए हो ॥ ३ ॥

हे दया के सागर देव! इस (तुम्हारे चरणों में नतमस्तक) भक्त की श्रद्धांजलि ग्रहण करो; हम लोगों के पास अन्य कोई धन नहीं हैं जो तुमको दे सकें ॥ ४ ॥

---

* उद्बोधन के कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक।

विष्णवे रामकृष्णाय रामकृष्णाय विष्णवे ।
नमस्तुभ्यमभेदात्मन् पुनः पुनर्नमो नमः ॥ ५ ॥

अहो तवायं महिमा महात्मन्, समग्रलोके सदया हि दृष्टिः ।
रूपं तवेदं करुणार्द्रचित्तं रजस्तमोनाशकरं जनानाम् ॥ ६ ॥

इच्छास्माकं तव चरणयोः सन्निपातो महात्मन्,
संसाराब्धेस्तरणकरणं रामकृष्णाख्य देव !
किन्त्वेतेषामति गुरुतरं मानसं शत्रुपक्षं
शीघ्रं नो भो शमय शमय प्रार्थना नेष्टमन्यत् ॥ ७ ॥

हे योगिंस्त्वं परमपुरुषो दृश्यसे सुप्रसन्नो
निष्पन्दं ते नयनयुगलं पश्यतामाशु भक्तिम् ।
संमूढानां जनयति मुहुः किं पुनः सात्त्विकानां
स त्वं मुक्तो नयनपथगो रामकृष्णोह्यमीषाम् ॥ ८ ॥

तुम विष्णु-स्वरूप रामकृष्ण एवं रामकृष्ण-स्वरूप विष्णु हो। अतएव हे अभिन्न स्वरूप ! तुमको बार-बार प्रणाम ॥ ५ ॥

हे महात्मन् ! तुम्हारी महिमा देखकर आश्चर्य होता है, समग्र संसार को तुम करुणा की दृष्टि से देख रहे हो। तुम्हारे दयार्द्र चित्त से सभी लोगों का रजोगुण व तमोगुण नष्ट हो रहा है ॥ ६ ॥

हे महात्मन् ! हे रामकृष्ण ! इच्छा होती है कि तुम्हारे चरणों पर गिर पड़ूँ; तुम्हारे चरणों में समर्पण ही हम लोगों का यह संसार-सागर पार करने का मात्र कारण है, किन्तु हम लोगों के चित्त में काम-क्रोधादि प्रबल शत्रु वास कर रहे हैं, इनका शीघ्र ध्वंस कीजिए, और कुछ मैं आपसे नहीं चाहता—यही प्रार्थना है ॥ ७ ॥

हे योगारूढ़ ! तुमको परम पुरुष और आनन्दमय रूप में देखता हूँ। मोहाच्छन्न होने पर भी तुम्हारे दोनों निश्चल नेत्रों का दर्शन करने से हमारे

हे रामकृष्ण ! युक्तात्मन् ! वामांगं प्रकृतिस्तव ।
साऽपि योगविशुद्धात्मा शारदानामधारिणी ॥ ९ ॥

युवयोर्दृष्टिमात्रेण भक्तिरव्यभिचारिणी ।
जायते प्रार्थनाऽस्माकं साधवी स्यान्मनो गतिः ॥ १० ॥

मातः ! पूज्या जगति सकलैर्भर्तृपादेवसन्ती
नित्यध्याना पतिगतमनाः शान्तशुद्धस्वभावा ।
धन्यास्मिंस्त्वं करणनियमाज् ज्ञायसे देवतैव
आद्या माता जनहितकारी रामकृष्णेन सार्धम् ॥ ११ ॥

अन्तःकरण में भी भक्ति की भावना उमड़ रही है तो सात्विक पुरुषों की बात ही क्या हैं ? यही प्रार्थना है कि आप (मायामुक्त) कृपा करके हम लोगों के दृष्टि पथ में आइये, दर्शन दीजिए ॥ ८ ॥

हे योगिन् श्री रामकृष्ण ! बायें भाग में तुम्हारी प्रकृति विराजमान है, वे भी शारदा नाम धारण कर योग के द्वारा विशुद्ध चित्त हुई हैं ।। ९ ॥

आप दोनों की मात्र कृपा-दृष्टि पड़ने से मनुष्य एकनिष्ठ भक्ति प्राप्त कर सकता है । आपसे यही प्रार्थना है कि हम लोगों की मनोगति साधुता से युक्त हो ॥ १० ॥

हे जननी ! स्वामी के चरणों के समीप वास कर तुम संसार में सभी के लिए पूजन करने योग्य बन गई हो । तुम सर्वदा ध्यान-युक्ता, पतिगत प्राणा, निर्मल और शान्तस्वभावा हो । इस संसार में इन्द्रिय-संयम करने के कारण तुम धन्य हुई हो । श्रीरामकृष्ण देव के साथ जनकल्याणकारिणी आद्याशक्ति देवी के रूप में परिचित हो ॥ ११ ॥

रचितमाशुतोषेन श्रीमता भक्तिसाधकम् ।
संख्यैकादश मात्रेण श्लोकस्तोत्रमिदं स्मृतम् ॥

इति पण्डित आशुतोषकाव्य-व्याकरण-स्मृतितीर्थं विरचितं "श्रीरामकृष्ण स्तोत्रम्" समाप्तम् ।



श्रीरामकृष्णपंचकम् *

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम्

विधीनां श्रौतानामनियमगते संहततया,
न संप्राप्याधारं क्वचिदपि सखेदं लयजुषाम् ।
इदानींत्वामेकं सहजविषयं संस्कृतमतिं
किमेतत् संश्रित्य प्रियमिव हितं जन्मसफलम् ॥ १ ॥
निषेधास्ते सर्वे विलसदभयाकुन्ठितधियो
विशेषान् पापांस्ताननृजुमनुजानत्र कलिजान् ।

मात्र ग्यारह श्लोकों के द्वारा यह भक्ति साधक स्तोत्र (श्रीमान्) आशुतोष के द्वारा रचित हुआ ।

श्री आशुतोष द्वारा विरचित " श्रीरामकृष्णस्तोत्रम् " समाप्त हुआ ।



हे नियमबन्धन शून्य ! वैदिक विधि समूह सम्मिलित भाव में कहीं भी एक आश्रय न पाकर दुःख से विनष्ट होने ही वाले थे । लोग जैसे प्रिय बन्धु को पाकर कृतार्थ होते हैं, उसी प्रकार संस्कृत बुद्धि के सहज आश्रय (में) एकमात्र तुमको पाकर मनुष्य क्या उस प्रकार की सफलता प्राप्त कर सकता है, अपना यह जन्म धन्य कर सकता है ? ॥ १ ॥

शास्त्रों का निषेधात्मक वाक्य भयरहित होकर बिना किसी कुंठा से

---

* उद्‌बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

समाश्रित्यामत्ताः प्रकटितजया धिक्कृतजना,
अहो रामं कृष्णं सचकितमेवेत्यातिविजिताः ॥ २ ॥
तितिक्षा त्यागोऽसौ शमदमसमाध्यभयताः,
क्षमा शान्तिर्भक्तिः सहचरतया ज्ञानमतिगम् ।
प्रसिद्धं वैराग्यं मणिललनयोः सत्यपरता,
तनौ दिव्यायां ते युगपदतिलोभात्किमवसन् ॥ ३ ॥
किमून्मत्तो मूर्खस्तव गुणगरिम्नः स्तवमिमं,
पिशाचार्त्तः कर्त्तुं सितशशिधृतौ बाल इव वा ।
क्षमार्होऽयं दासः सहजकृपया नाथ निरतो
विवेकानन्दानामपि दुरवगाह स्वरमण ॥ ४ ॥

व्यवहार में आ रहा था। यह विशेष करके कलियुग के पापी, कुटिल मनुष्यों को अवलम्बन कर सम्यक् प्रकार से मतवाला होकर अपने जय की घोषणा कर रहा था एवं धार्मिक लोगों को धिक्कार रहा था; किन्तु सहसा श्री रामकृष्ण देव के आविर्भाव को जानकर कलियुग भी एकदम म्लान मुख हो गया है, श्री–रहित हो गया है ॥ २ ॥

यह तितिक्षा, यह त्याग, शम, दम, समाधि, अभय, क्षमा, शान्ति, भक्ति, अतीन्द्रिय ज्ञान, काम-कांचन से नितान्त विराग, सत्यनिष्ठा—ये लोग क्या आपके दिव्य शरीर और मन को आश्रय करके आपके सहचर के रूप में वास कर रहे हैं ? ॥ ३ ॥

हे आत्मरते ! तुम स्वामी विवेकानन्द आदि के लिए भी दुर्बोध्य थे। विवेकानन्द प्रारम्भ में छोटी उम्र में यह सोचते थे कि यह व्यक्ति उन्माद, मूर्ख, पिशाच-ग्रस्त है अथवा श्वेत चन्द्रमा को पकड़ने के लिए हठ करने वाले बालक के समान नासमझ है, किन्तु बाद में आपके गुणों से मुग्ध होकर, आपको अवतार वरिष्ठ घोषित कर उन्होने आपका स्तवन किया था। अतएव हे नाथ ! तुम सहज कृपा करके इस दास को क्षमा करोगे (यही आशा एवं प्रार्थना है) ॥ ४ ॥

त्वमेकोऽद्वैतस्त्वं त्वमपि सकलोनिष्कल इति,
त्वमाराध्यो देवः शरणमिह दीनस्य कृतधीः ।
प्रियस्त्वं सर्वेषां स्मरणमननैकाधिकरणं
नमो भूयस्तुभ्यं सुकृतनिकराणां प्रतिकृते ॥ ५ ॥

इति ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम् "श्रीरामकृष्णपंचकम्" समाप्तम् ।



श्रीरामकृष्ण भक्तिपंचकम् *

पण्डित रामेन्द्रसुन्दरभक्तितीर्थं विरचितम्

सर्वावतारवर्याय शारदावल्लभाय च ।
श्रीरामकृष्ण देवाय तस्मै भगवते नमः ॥ १ ॥

सर्वार्थसाधिके देवि श्रीरामकृष्णवल्लभे ।
श्रीशारदे जगन्मातर्नारायणि नमोऽस्तुते ॥ २ ॥

तुम एक अद्वैत, सर्वकला युक्त, निष्कल, सत्यवुद्धि एवं इस संसार में दीनों के आराध्य देवता तथा शरण हो । तुम सभी के प्रिय हो, स्मरण और मनन के एकमात्र आधार हो । हे पुण्यराशियों के मूर्त्तस्वरूप ! तुमको बारम्बार नमस्कार है ॥ ५ ॥

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य द्वारा विरचित यह "श्रीरामकृष्णपंचकम्" समाप्त हुआ ।



पृथ्वी पर जो सभी अवतार हुए हैं उनमें सबसे श्रेष्ठ अवतार भगवान् श्रीरामकृष्ण देव हैं । ये साक्षात् भगवती शारदा देवी के पति, षड़ैश्वर्यं विभूषित स्वयं भगवान् हैं ॥ १ ॥

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—चारो पुरुषार्थों का फल देने वाली श्रीरामकृष्ण

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित – प्रकाशक ।

ठाकुरस्यैवान्यमूर्तेः सकाशात्श्रीनरेन्द्रतः।
ठाकुरस्योत्तमाभक्तिं शिक्षेरन् सर्वमानवाः॥ ३॥

भजनं रामकृष्णस्य जानन्ति तस्य पार्षदाः।
नित्यसिद्धगणा एव नान्यभक्ता मनागपि॥ ४॥

यतस्तदतिदुर्बोध्यमतिगुह्यं भवापहम्।
विशुद्धं दुर्लभं दीप्तं यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते॥ ५॥

इति पण्डित श्री रामेन्द्रसुन्दरभक्तितीर्थ विरचितम् "श्री रामकृष्ण भक्तिपंचकम्" समाप्तम्।



देव की शक्तिरूपिणी अर्द्धांगिनी जगन्माता शारदा देवी को (असंख्य) प्रणाम करता हूँ॥ २॥

श्री श्री ठाकुर के ही दूसरे प्रकाश स्वरूप स्वामी विवेकानन्द के उपदेशों का अनुसरण कर पृथ्वी के समस्त स्त्री-पुरुष ठाकुर की विशुद्धा या सर्वोत्तम भक्ति प्राप्त करेंगे (या भक्ति की शिक्षादेंगे)॥ ३॥

श्री श्री ठाकुर रामकृष्ण का साधन-भजन उनके नित्य सिद्ध पार्षद लोग ही जानते हैं। उनके भावों का अनुकरण न करने से (भक्त के) मानस पटल पर श्रीरामकृष्ण भाव की ठीक-ठीक धारणा हो पाना सम्भव नहीं है, क्योंकि वह भजनीय तत्व बहुत गोपनीय है, अति दुर्बोध्य (समझने में कठिन) है, जन्म मरण आदि संसार के तापों का नाश करने वाला है, विशुद्ध, दुर्लभ और ब्रह्म ज्योति स्वरूप है। उस तत्व को जान लेने पर ही मनुष्य अमृतत्त्व लाभ का अधिकारी होता है॥ ४-५॥

पण्डित श्रीरामेन्द्रसुन्दरभक्तितीर्थ द्वारा विरचित "श्रीरामकृष्णभक्ति-पंचकम्" समाप्त हुआ।



श्री रामकृष्ण सुप्रभातम्*

स्वामिहर्षानन्दविरचितम्

धर्मस्य हानिमभितः परिदृष्य शीघ्रं
कामारपुष्कर इति प्रथिते समृद्धे।
ग्रामे सुविप्रसदने ह्यभिजात देव
श्रीरामकृष्णभगवंस्तव सुप्रभातम्॥ १॥

बाल्ये समाध्यनुभवः सितपक्षिपंक्तिं
सन्दृष्य मेघपटले समवापि येन।
ईशैक्यवेदनसुखं शिवरात्रिकाले
श्रीरामकृष्ण भगवंस्तव सुप्रभातम्॥ २॥

नानाविधानयि सनातनधर्ममार्गान्
क्रैस्तादि चित्रनियमान् परदेश धर्मान्।

चारों तरफ धर्म की ग्लानि देखकर, कामारपुकुर नामक समृद्धिशाली गांव में सद्ब्राह्मण के घर हे देव! तुमने शीघ्र ही जन्म ग्रहण किया था। हे भगवान् श्रीरामकृष्ण! शुभ प्रभात में तुम्हारी वन्दना करता हूँ॥ १॥

बाल्यकाल में काले बादलों में श्वेत पक्षियों के उड़ते झुण्ड को देखकर आप समाधिस्थ हुये थे; (पुनः) शिवरात्रि के अवसर पर (शिव की वेशभूषा धारण कर) शिव के साथ एकात्म बोध करके आपने आनन्द का अनुभव किया था। हे भगवान् श्रीरामकृष्ण! शुभ प्रभात में तुम्हारी वन्दना करता हूँ॥ २॥

सनातन धर्म के विभिन्न पथों एवं अन्य देशों के (इसाई धर्मादि) धर्मों की साधना करके तुमने यह उपलब्धि की कि सब धर्म एक ही लक्ष्य की तरफ ले

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक।

आस्थाय चैक्यमनयोरनुभूतवांस्त्वं
श्रीरामकृष्ण भगवंस्तव सुप्रभातम् ॥ ३ ॥

हे कालिकापदसरोरुहकृष्णभृंग
मातुस्समस्तजगतामपि शारदायाः ।
ऐक्यं ह्यदर्शि तरसा परमं त्वयैव
श्रीरामकृष्णभगवंस्तव सुप्रभातम् ॥ ४ ॥

राखालतारकहरींश्च नरेन्द्रनाथम्
अन्यान्विशुद्धमनसः शशिभूषणादीन् ।
सर्वज्ञ आत्मवयुनं त्वमिहानुशास्सि
श्रीरामकृष्ण भगवंस्तव सुप्रभातम् ॥ ५ ॥

नित्यं समाधिजसुखं निजबोधरूपम्
आस्वादयन् तव पदे शरणागतांश्च ।
आनन्दयन् प्रशमयन्नुप्रतिष्ठसे त्वं
श्रीरामकृष्ण भगवंस्तव सुप्रभातम् ॥ ६ ॥

जाते हैं । हे भगवान् श्रीरामकृष्ण ! शुभ प्रभात में तुम्हारी वन्दना करता हूँ ॥३॥

हे माताकालिका के चरण कमलों में आश्रित कृष्ण भ्रमर ! तुमने अति सहज भाव से ही (अपनी पत्नी) शारदा देवी और विश्वजननी में अभेदत्व का ज्ञान कर लिया था । हे भगवान् श्रीरामकृष्ण ! शुभ प्रभात में तुम्हारी वन्दना करता हूँ ॥ ४ ॥

हे सर्वज्ञ ! यहीं पर (अर्थात् पर्वतों में नहीं, लोगों के बीच में ही) तुमने राखाल, तारक, हरि, नरेन्द्रनाथ शशिभूषण आदि शुद्धचित्त युवकों को आत्मविद्या सिखलायी । हे भगवान् श्रीरामकृष्ण ! शुभ प्रभात में तुम्हारी वन्दना करता हूं ॥ ५ ॥

समाधि में आत्मज्ञानरूपी आनंद का नित्य अनुभव करके आपने अपने चरणाश्रित शरणागतों को भी आनन्द और शान्ति प्रदान किया । हे भगवान् श्रीरामकृष्ण ! शुभ प्रभात में आपकी वन्दना करता हूँ ॥ ६ ॥

स्वीकृत्य पापमखिलं शरणागतैर्यद्
आजीवनं बहुकृतं दयया स्वदेहे।
तज्जातखेदनिवहं सहसे स्म नाथ
श्रीरामकृष्ण भगवंस्तव सुप्रभातम् ॥ ७ ॥
प्रातः प्रणामकरणं तव पादपद्मे
संसारदुःखहरणं सुलभं करोति।
मत्वेति भक्तिभरिताः प्रतिपालयन्ति
श्रीरामकृष्ण भगवन्स्तव सुप्रभातम् ॥ ८ ॥
गातुं स्तुतीस्तव जना अमृतायमानाः
सम्प्राप्य दर्शनमिदं तव पादयोश्च।
धन्या नरेश भवितुं मिलितास्समीपं
श्रीरामकृष्ण भगवंस्तव सुप्रभातम् ॥ ९ ॥
सन्दाय दर्शनसुखं शरणागतेभ्यो
मोहान्धकारमखिलं त्वमपाकुरुष्व।

हे प्रभु ! शरणागतों के अनेक जन्मों के नाना प्रकार के पापों को (करुणा से विवश होकर) अपने ही शरीर में ग्रहण करके उससे उत्पन्न कष्ट (आपने) चुपचाप सहन किया। हे भगवान् श्रीरामकृष्ण ! शुभ प्रभात में आपकी वन्दना करता हूँ ॥ ७ ॥

प्रातःकाल तुम्हारे चरण कमलों में प्रणाम संसार के दुःखों का नाश करने वाला है। यह जानकर भक्त लोग विनम्रचित्त होकर तुम्हारे दर्शन की आकांक्षा से प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे भगवान् श्री रामकृष्ण ! शुभ प्रभात में तुम्हारी वन्दना करता हूँ ॥ ८ ॥

हे लोकप्रभु, तुम्हारा अमृत-निःसृत करने वाला स्तव गान सुनने और चरण-दर्शन के द्वारा धन्य होने के लिए बहुत से लोग यहाँ समवेत हुए हैं। हे भगवान श्री रामकृष्ण ! शुभ प्रभात में तुम्हारी वन्दना करता हूँ ॥ ९ ॥

हे ज्ञानभास्कर ! दर्शनानन्द प्रदान करके तुम शरणागतों के निखिल अज्ञान

ज्ञानार्कभक्तिजलधे सकलार्त्तिहन्तः
श्रीरामकृष्ण भगवंस्तव सुप्रभातम् ॥ १० ॥

अहैतुकीति करुणा किल ते स्वभावो
दुष्टाः कठोरहृदया अपि ते भजन्ते ।
त्वामेव सर्वजगतां जननि प्रपात्रि
श्रीशारदेश्वरीरमे तव सुप्रभातम् ॥ ११ ॥

सुप्तांस्तु भारतजनान् स्ववचः प्रहारै
रुद्बोधयन् विवशयन् निजधर्ममार्गे ।
प्रोत्साहयन् परमतां प्रकटीकरोषि,
वीरेशदत्त महीमंस्तव सुप्रभातम् ॥ १२ ॥

प्रातरुत्थाय यो देवं रामकृष्णं स्मरन्स्मरन् ।

अंधकार को दूर करते हो। हे भक्तिवारिधि ! हे सर्वदुःख नाशक ! हे भगवान् श्री रामकृष्ण ! शुभ प्रभात में तुम्हारी वन्दना करता हूँ ॥ १० ॥

हे माता शारदेश्वरी ! तुम कल्याणी रूपा हो। अहैतुकी करुणा तुम्हारा स्वभाव है। यह जानकर कठोर हृदय रखने वाले और दुराचारी पुरुष भी तुम्हारी पूजा करते हैं। तुम सारे संसार की रक्षा करने वाली हो। हे माता ! शुभ प्रभात में तुम्हारी वन्दना करता हूँ ॥ ११ ॥

शिव के प्रसाद से जो महिमामय हैं, जो अपने वाणी रूपी अंकुश के द्वारा सोये हुए भारतवासियों को अपने धर्मपथ पर जाग्रत और उत्साहित करके अपनी महिमा सर्वदा प्रकाशित कर रहे हैं, उन्हीं (स्वामी विवेकानन्द की) वन्दना शुभ प्रभात में करता हूँ ॥ १२ ॥

जो कोई प्रातःकाल उठकर (प्रभु) श्रीरामकृष्णदेव को स्मरण करता है

स्तोत्रमेतत्पठेद्भक्त्या सोऽमृतत्त्वाय कल्पते ॥

इति स्वामिहर्षानन्दविरचितम् "श्री रामकृष्ण सुप्रभातम्" समाप्तम् ।



श्री श्रीरामकृष्णस्मरणम् *

श्रीरामेन्द्रसुन्दरभक्तितीर्थविरचितम्

नमः श्रीरामकृष्णाय सर्वमंगलहेतवे ।
सर्वसिद्धिप्रदात्रे च मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥ १ ॥
लीलावतारः श्रीरामकृष्णः शेषयुगे हरिः ।
कलेर्जीवान्समुद्धर्तुं वैकुन्ठाद्वसुधातले ॥ २ ॥
एष मातरि चन्द्रायां ब्राह्मण्यां भगवान् स्वयं ।
ब्रह्मज्ञस्य ब्राह्मणस्य पितुः श्रीक्षुदिरामतः ॥ ३ ॥
प्रादुर्भूतः कर्मकार पुष्करिण्यां सनातनः ।
स्वर्णगौरः शुभ्रवस्त्रो भूषणादिविवर्जितः ॥ ४ ॥

एवं भक्तिपूर्व इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह (और वे सभी लोग) अमृत तत्त्व पाने का अधिकारी हो जाता है ।

स्वामी हर्षानन्द द्वारा विरचित यह "श्रीरामकृष्णसुप्रभातम्" समाप्त हुआ ।



सब मंगलों के कारण, सब सिद्धियों के देने वाले साक्षात् ब्रह्मण्यदेव भगवान् श्रीरामकृष्णदेव को नमस्कार करता हूं ॥ १ ॥

कलियुग के जीवों का (भगवद्भक्ति दान पूर्वक) उद्धार करने के लिए लीलावतार भगवान् श्रीरामकृष्णदेव अपने बैकुण्ठधाम से इस पृथ्वी पर कामारपुकुर गांव में आविर्भूत हुए । ब्रह्मज्ञ ब्राह्मण क्षुदिराम उनके पिता और चन्द्रमणि उनकी माँ हैं । वे गौरवर्ण हैं, श्वेतवस्त्रों से भूषित हैं और अलंकारादि आभूषणों से रहित हैं ॥ २-४ ॥

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

कामिनीकांचनत्यागी कालिकासाधने रतः।
पृथिव्यां सन्ति ये धर्मास्तेषां ये धर्मयाजकाः ॥ ५ ॥

तत्सर्वमतमाश्रित्य तत्तत्सिद्धिमवाप्तवान्।
कालिकापुत्ररूपोऽसौ निर्विकल्पसमाधिमान् ॥ ६ ॥

जगदम्बा स्तन्यपायी स्वसुतं जननी यथा।
कृपया कालिकादेव्याः स्वस्य साधन शक्तितः ॥ ७ ॥

साधारणकन्यकेव काली प्रत्यक्षतां गता।
प्रायेनैवं साधनायां गता द्वादशवत्सराः ॥ ८ ॥

ततः सिद्धस्वरूपेण स्वधाम्नि दक्षिणेश्वरे।
विराजितः स्वीयां लीलां पार्षदानामदर्शयत् ॥ ९ ॥

वे कामकांचन त्यागी, मां कालिका की साधना में रत थे। पृथ्वी पर जितने भी धर्मगुरु हैं, उन सभी से धर्ममतों की दीक्षा लेकर, उन सब धर्माचार्यों द्वारा प्रदर्शित विभिन्न पथों में चलकर (साधना कर) श्रीरामकृष्ण ने विभिन्न भावों का अवलम्बन करके विभिन्न धर्म मतों के इष्ट देवों का प्रत्यक्ष दर्शन किया। वे अपने को मां काली का पुत्र कहते थे और निर्विकल्प समाधि में भी लीन रहते थे ॥ ५-६ ॥

जिसप्रकार गर्भधारिणी मां अपनी सन्तान को अपना स्तन पान कराती है, श्री रामकृष्णदेव के निकट मां काली भी ठीक उसी प्रकार से थीं। साधारण मानवी देहधारिणी मां को जिस प्रकार से देखा जाता है, उसी प्रकार से माँ काली को भी श्रीरामकृष्णदेव ने स्पष्ट रूप से देखा था। मां की कृपा से एवं उनकी अपनी साधना से उनके लिए वैसा संभव हुआ था। लगभग (पूरे) बारह वर्ष तक उन्होंने साधना की थी ॥ ७-८ ॥

साधना में सिद्ध होकर अपने धाम दक्षिणेश्वर में अवस्थानपूर्वक पार्षदगणों के समीप इन्होंने अपनी लीला प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित की थी ॥ ९ ॥

उक्तं श्रीरामकृष्णेन यत्कथामृतमुत्तमं।
भूर्लोकस्या जनास्तेन जानन्ति मधुसूदनम् ॥ १० ॥
ईदृग्युगावतारेषु नैकस्मिन्नपि दृश्यते।
केवलं श्रीरामकृष्णे सर्वकारणकारणे ॥ ११ ॥

दृश्यते श्रीरासमण्या मन्दिराभ्यन्तरे तदा।
स्त्रीबालबालिशानांच यद्वाक्यममृतायते ॥ १२ ॥

अत्यन्तासज्जनेभ्योऽपि यद्दत्तं ठाकुरेण हि।
तेनानुभूतं तैः सर्वैस्तद्विष्णोः परमं पदम् ॥ १३ ॥

सर्वत्र सर्वभावेन सर्वजातिषु सर्वदा।
साधुसज्जनसन्यासी संसारीब्रह्मचारिभिः ॥ १४ ॥

एवं उस समय ठाकुर श्रीरामकृष्णदेव ने अमृत के समान जो उत्तम बातें कहीं थीं आज भी उन सभी कथामृतों का अनुशीलन कर भक्तवृन्द भगवान् के यथार्थ तत्व और स्वरूप से अवगत हो रहे हैं ॥ १० ॥

युगावतारों में अन्य किसी अवतार ने भगवत्प्राप्ति का ऐसा सहज, सबके लिए सुलभ, मार्ग नहीं दिखाया। केवल सभी कारणों के भी कारण स्वरूप भगवान् श्रीरामकृष्णदेव ने ही ऐसा मार्ग दिखाया ॥ ११ ॥

ठाकुर के वे उपदेश स्त्री, बालक या मूर्ख सभी को अमृतवत् लगते हैं। वे सभी बातें उस समय दक्षिणेश्वर के काली मन्दिर में ही हुई थीं ॥ १२ ॥

अत्यन्त असदाचरण करने वाले दुराचारी पुरुष को लक्ष्य करके, उनकी शुद्धि एवं कल्याण के लिये वे जिन उपदेशों को दिया करते थे, उन सब उपदेशों का पालन करके वे सभी महापापी भी विष्णु के चरणों का प्रत्यक्ष दर्शन करते थे ॥ १३ ॥

इसीलिये वर्तमान युग में पृथ्वी पर सर्वत्र साधु, सज्जन, सन्यासी, संसारी, ब्रह्मचारी, सभी लोग सभी समय, सभी भाव से भगवान् श्रीरामकृष्णदेव की

सुपूजितो रामकृष्णः पृथिव्यां सर्वमानवैः ।
तेन सर्वयुगश्रेष्ठाऽवतारोऽयं भवेद्ध्रुवम् ॥ १५ ॥

दन्ते विधृत्य तृणकं पदयोर्निपत्य ।
कृत्वोत्तमांगनतमेतदहं ब्रवीमि ।
भो भ्रातरः सकलमेव विहाय दुरात् ।
श्रीरामकृष्ण चरणे कुरुतानुरागम् ॥ १६ ॥

श्रीरामकृष्ण चरणानुरागात् प्राप्नुवन्ति यत् ।
सर्वे भवन्तः श्रृण्वन्तु सावधानमिदं वचः ॥ १७ ॥

मुक्तिर्नापि सुखायते विबुधपूराकाशपुष्पायते ।
दुर्दान्तेन्द्रिय कालकुंडलिचयः प्रोत्खातदन्तायते ।
पृथ्वी पूर्णसुखायते विधिसुरेशादिश्च कीटायते ।
यत्कारुण्य कटाक्षवैभववतस्तं रामकृष्णं भज ॥ १८ ॥

पूजा करते हैं । अतएव इस विषय में रंचमात्र भी सन्देह नहीं है कि भगवान् श्रीरामकृष्णदेव ही सब युगों के अवतारों में श्रेष्ठ अवतार हैं ॥ १४-१५ ॥

मैं दाँत में तिनका दबाकर, मस्तक झुकाकर, तुम लोगों का चरण छूकर (पकड़कर) कहता हूं कि, हे भाई ! तुम लोग सभी प्रकार के विषयों का परित्याग कर भगवान् श्रीरामकृष्णदेव के चरणों में भक्ति करो । यदि कहो कि इस प्रकार की भक्ति करने से क्या फल प्राप्त होगा ? तो ध्यान से सुनो—॥ १६–१७ ॥

जिन लोगों ने ठाकुर की कुछ भी करुणा (उनके दर्शन से) पाई है, उनके निकट मुक्ति भी तुच्छ है । उनके लिये स्वर्ग एक आकाश-कुसुम के समान अलीक पदार्थ है । जिहोंने श्रीरामकृष्ण की कृपा पाई है, उनके समीप अत्यंत दु:खरूपी इन्द्रियें और कालसाँप सभी के जहरीले दाँत टूट जाते हैं, ब्रह्मा और इन्द्रादि देवतागण दीर्घजीवी होने पर भी क्षणिकजीवी जान पड़ते हैं । श्रीरामकृष्ण की कृपा प्राप्त करने वाले जो जहाँ भी हैं, इस लोक में या परलोक में, वे वहीं पर सदा पूर्ण आनन्द का अनुभव कर रहे हैं या करेंगे अर्थात् मृत्यु के बाद आनन्दमय शरीर में भी ठाकुर की कृपा प्राप्त कर सकेंगे ॥ १८ ॥

सम्पूज्य तद्भक्तवर्गान् पृथिव्यां सर्वसज्जनाः।
भजन्तु भक्तिभावेन रामकृष्णपदाम्बुजम् ॥ १९ ॥
नरनारीसमीपे मे गलवस्त्रकृतांजलेः।
श्रीरामेन्द्रसुन्दरस्य द्विजस्येदं निवेदनम् ॥ २० ॥

इति श्रीरामेन्द्रसुन्दरभक्तितीर्थ विरचितम् "श्री श्रीरामकृष्णस्मरणम्" समाप्तम् ।



श्रीरामकृष्णाष्टकम् *

महामहोपाध्याय श्रीप्रमथनाथतर्कभूषणविरचितम्

प्रस्थानभेदान् विविधान् विरुद्धान् समन्वयेनैक्यमलम्भयद्यः।
कृपामृताब्धि तमचिन्त्यशक्ति श्रीरामकृष्णं शरणं श्रयेऽहम् ॥ १ ॥
निरंजनं निष्कलमात्मतृप्तं सदाचिदानन्दतनुं प्रसन्नम्।
प्रपन्नमर्त्यार्त्तिहरं नृदेवं युगावतारं भज रामकृष्णम् ॥ २ ॥

अतएव द्विज रामेन्द्रसुन्दर गले में वस्त्र बाँध कर हाथ जोड़ कर यही निवेदन कर रहे हैं कि पृथ्वी के सभी सज्जन श्रीरामकृष्णदेव के भक्तों की (दान मानादि के द्वारा) पूजा करके भगवान् श्रीरामकृष्णदेव की ही उपासना और भजन करेंगे ॥ १९–२० ॥

श्रीरामेन्द्रसुन्दरभक्तितीर्थ द्वारा विरचित "श्री श्रीरामकृष्ण स्मरणम्" स्तोत्र समाप्त हुआ ।



नाना प्रकार के परस्पर विरोधी 'प्रस्थान' भेद समूहों के समन्वय के द्वारा जिन्होंने ऐक्य सम्पादन किया, उन्हीं अचिन्त्यशक्ति, करुणामृत-सागर, श्रीरामकृष्ण देव की शरण मैं ग्रहण कर रहा हूँ ॥ १ ॥

निरंजन, निष्कल, आत्मतृप्त, सर्वदा चैतन्य और आनन्दमय विग्रह धारण करने वाले, प्रसन्न, शरण में आये हुये सभी मनुष्यों का दुःख दूर करने वाले, मनुष्य की आकृति में देवता और युगावतार श्रीरामकृष्ण का भजन करो ॥ २ ॥

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

श्रीरामकृष्णौ पृथगेव पृथ्व्यां यदावतीर्णौ न तदा यदासीत् ।
तत्सर्वधर्मैक्य-समन्वयाख्यं कृत्यं यदीयं भुवनैकभव्यम् ॥ ३ ॥
श्रीरामकृष्णं मिलितावतीर्णं भूदेवरूपेण तमादिदेवम् ।
भजन् विवेकेन विहाय दम्भं नरः समाप्नोति भवार्त्तिशान्तिम् ॥ ४ ॥
पृथक्पृथक्धर्मनिषेवणेन सारं तदीयं स्वयमव्यलीकम् ।
सम्यक् समास्वाद्य जगद्धिताय श्रीरामकृष्णः वितरन्तमीड़े ॥ ५ ॥
निरस्तमोहं परिपूर्णकामं भवाम्बुधेः पारदपारपोतम् ।
नवं नवं रूपमिहाददानं श्रीरामकृष्णं भजतां न दुःखम् ॥ ६ ॥
सदा प्रशान्तं सकलैकसेव्यं ऐश्वर्यवैराग्यनिधानभूतम् ।
नित्यैकरूपं समदर्शिनं तं गुरुं गुरूणां भज रामकृष्णम् ॥ ७ ॥

पृथ्वी पर पृथक्-पृथक् भाव से भगवान् श्रीराम और श्रीकृष्ण जिस समय अवतीर्ण हुये थे, उस समय जो नहीं हुआ था, वह (सब धर्मों का समन्वय) संसार के लिये कल्याणकारी कार्य जिनका असाधारण कार्य है, ॥ ३ ॥

राम और कृष्ण के मिले हुये पृथ्वी पर देवता के रूप में अवतीर्ण आदिदेव उन्हीं श्रीरामकृष्ण का भजन जो मनुष्य दम्भ परित्याग करके विवेक के द्वारा करता है, वह इस संसार के सभी प्रकार के दुःखों से मुक्त होकर शान्ति प्राप्त करता है ॥ ४ ॥

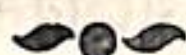
जिन्होंने अकपट भाव से सभी धर्मों के सारभूत तत्व का स्वयं सम्यक् भाव से आस्वादन किया एवं जो इसे संसार के कल्याण के लिए वितरित कर रहे हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव का मैं भजन करता हूँ ॥ ५ ॥

जिन्होंने सभी प्रकार के मोह का त्याग किया है, जो परिपूर्ण काम हैं, जिनके चरण रूपी नाव से संसार रूपी समुद्र पार किया जा सकता है, जो अभी भी इस संसार में नया-नया रूप धारण कर रहे हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव का भजन जो लोग करते हैं, उन्हें किसी प्रकार का दुःख नहीं रहता ॥ ६ ॥

सर्वदा प्रशान्त, सभी के लिये एकमात्र सेव्य, ऐश्वर्य और वैराग्य की निधि स्वरूप, नित्य एकरूप और गुरुओं के गुरु उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव का भजन करो ॥ ७ ॥

स्वजन्मना धन्यतमां धरित्रीं विधाय यो राजति निष्कलंकम्।
तं पूर्णचन्द्रं क्षयहीनमेकं युगावतारं भज रामकृष्णम् ॥ ८ ॥

इति महामहोपाध्यायश्रीप्रमथनाथतर्कभूषणविरचितम्
"श्रीरामकृष्णाष्टकम्" समाप्तम् ।



श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्*

श्रीकालीपदबन्द्योपाध्यायविद्याविनोदेनविरचितम्

लब्ध्वा पाश्चात्यशिक्षामगणितयुवका धर्महीना विमूढ़ाः
स्वैराचार प्रमत्ताः शुभमतिरहिता ध्वंसमार्गं गताश्च।
तेषामुद्धारणार्थं भुवनविजयिनं मातृमन्त्रं ददानं
वन्दे श्रीरामकृष्णं कलिकलुषहरं पावनं पुण्यराशिम् ॥ १ ॥

अपने आविर्भाव के द्वारा जो इस पृथ्वी को धन्यतमा करके विराजमान हैं, उन्हीं नाशरहित, निष्कलंक और अद्वितीय पूर्ण चन्द्रमारूपी श्रीरामकृष्ण देव का भजन करो ॥ ८ ॥

महामहोपाध्याय श्रीप्रमथनाथतर्कभूषण द्वारा विरचित
"श्रीरामकृष्णाष्टकम्" समाप्त हुआ ।



पाश्चात्य शिक्षा प्राप्तकर जब देश के असंख्य युवक धर्महीन, विमूढ़, स्वेच्छाचारी और शुभ बुद्धि रहित होकर ध्वंस के मार्ग पर अग्रसर हो रहे थे, तब उनके उद्धार के लिये जिन्होंने भुवनविजयी मातृमन्त्र प्रदान किया था, उन्हीं कलिकलुषहारी—लोकपावन एवं पुण्यराशिस्वरूप—श्रीरामकृष्ण की वन्दना करता हूं ॥ १ ॥

---

* उदबोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित— प्रकाशक।

धर्मानैक्यात् पृथिव्यामजनि जनमनः स्वासुरी भेदबुद्धि—
हिंसा-द्वेषोत्थदावानल-दहन भयव्याकुले सर्वलोके।
"सर्वे धर्माः समाना" इति निजचरितैमर्यानवं दर्शयन्तं
वन्दे श्रीरामकृष्णं हरिहरदयितं कालिका-लीनचित्तम् ॥ २ ॥

नाधीत्य ग्रन्थराजिं न च गुरुभवनं शिष्यरूपेण गत्वा
वेदान्तातीत-तत्वं सुललित-वचनैर्हेलया कीर्तयन्तम्।
ज्ञाने तुंगं महीध्रं शिशुमिव सरलं विश्वकल्याणमूर्तिं
वन्दे श्रीरामकृष्णं द्विजकुलतिलकं निर्जरं मानवाख्यम् ॥ ३ ॥

बाल्यात् त्यागस्य मार्गे स्थिरमतिचलितं भोगमार्गंच हित्वा
पश्यन्तं न प्रभेदं कमपि करधृते कांचने मृच्चये च।
जित्वा जैवप्रवृत्तिं प्रकृतिसहचरं ब्रह्मचर्यं चरन्तं
वन्दे श्रीरामकृष्णं जगति निरुपमं साधकेष्वग्रगण्यम् ॥ ४ ॥

धर्मों की अनेकता केकारण जब पृथ्वी पर लोगों के मन में असुर सुलभ भेद बुद्धि का उद्‌भव हुआ था, तथा जब सभी लोग हिंसा-द्वेष जनित दावानल में जलने के भय से व्याकुल हो उठे थे, तब जिन्होंने अपने आचरण के द्वारा 'सभी धर्म समान हैं' यह मानव को दिखाया था, उन्हीं हरिहरप्रिय एवं कालिका-निविष्ट-चित्त श्रीरामकृष्ण की वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥

जो ग्रन्थों का अध्ययन न कर तथा शिष्यरूप में गुरुगृह न जाकर भी वेद वेदान्त के अतीत सभी तत्व (अनुभव करके) अब लीला क्रम से सुललित भाषा में कीर्तन करते एवं ज्ञान के अति उच्च पर्वत के समान होकर भी शिशु की तरह सरल और विश्वकल्याण की मूर्ति स्वरूप थे, उन्हों द्विज कुलश्रेष्ठ एवं मानव-नामधारी देवता श्रीरामकृष्ण की वन्दना करता हूँ ॥ ३ ॥

जो बाल्यकाल से ही भोग का पथ त्यागकर स्थिर चित्त से त्याग के पथ पर चले थे, जिन्होंने हाथ में रुपया और मिट्टी का ढेला लेकर उनमें कोई भेद नहीं देखा एवं जिन्होंने जीव की स्वाभाविक प्रकृति को जीतकर प्रकृति-सहचर

जीवन्मुक्तं महान्तं विजित भव भयं शुद्धसत्त्व-स्वरूपं
विश्वाराध्यं महिम्ना विजित रिपुचयं तापसं देव कान्तिम् ।
भक्तानामार्त्तिराशिं निजवरवपुषि स्वेच्छया धारयन्तं
वन्दे श्रीरामकृष्णं शरणग-सदयं तापित-त्राणहेतुम् ॥ ५ ॥

श्यामाध्याने निमग्नं हसित रुदितयोर्लीलया दीप्यमानं
'मा ! मा ! मा ! मा !' ब्रुवानं चरण-सरसिजे तन्मयं लुप्तसंज्ञम् ।
उद्गीते मातृमन्त्रे पुनरपि तरसा लब्ध्र संज्ञं सचेष्टं
वन्दे श्रीरामकृष्णं स्मरहर-रुचिरं पूजितं सर्वलोकैः ॥ ६ ॥

ग्लानौ धर्मस्य पृथ्व्यां प्रभवति कलुषे पीड्यमाने च साधौ
दुष्टानां शासनायावतरति भुवने विश्वराड् विश्वभूत्यै ।

होकर भी ब्रह्मचर्य पालन किया था, संसार में तुलनारहित एवं साधकों में अग्रगण्य उन्हीं श्री रामकृष्ण की वन्दना करता हूँ ॥ ४ ॥

जो जीवनमुक्त, महान भवभय जीतने वाले, शुद्ध सत्वगुण स्वरूप, महिमा में विश्व के आराध्य, रिपुगुणजयी, देवकान्ति से युक्त तपस्वी थे और स्वेच्छा से अपने दिव्य शरीर में भक्तों की आधिव्याधि को धारण किए हुए थे, शरणागत के प्रति दयावान एवं तापितों का त्राण करने वाले उन्हीं श्रीरामकृष्ण की वन्दना करता हूँ ॥ ५ ॥

जो श्यामा ध्यान में निमग्न होकर हास्य-रोदन लीला में उज्ज्वल हो उठते, "माँ ! माँ ! माँ ! माँ !" बोलते-बोलते उन्हीं के चरणकमलों में तन्मय होकर बाह्य ज्ञान खो बैठते, जो उच्च स्वर में मातृमन्त्र उच्चारित होने पर उसी क्षण संज्ञा लाभ कर बाह्य ज्ञान प्राप्तकर क्रियाशील हो उठते, उन्हीं महादेवतुल्य, मनोहर और सर्वलोक पूजित श्री रामकृष्ण देव की वन्दना करता हूँ ॥ ६ ॥

संसार में धर्म की ग्लानि और पाप का अभ्युत्थान होने पर एवं साधु सज्जनों के निपीड़ित होने पर विश्व के राजा (भगवान्) दुष्टों का दमन और विश्व का मंगल करने के लिये पृथ्वी पर अवतीर्ण हुये; जो शमन भय को हरने

यो रामो यो हि कृष्णः शमन-भयहरो मानव-त्राणकर्ता
विश्वप्रेमावतारो धृतमनुजतनु रामकृष्णः स एव ॥ ७ ॥
जाह्नव्याः पुलिने पवित्र धरणौ श्री मन्दिरे शोभने
घन्टा-शंख-निनाद-नित्यमुखरे चोंकार-सन्दीपिते ।
दिव्ये धाम्नि दिने दिने च बहुभिः पुण्यार्थिभिः सेविते
लीनं श्रीभवतारिणी-चरणयोः श्रीरामकृष्णं स्तुमः ॥ ८ ॥

इति श्रीकालीपदबन्द्योपाध्याय-विद्याविनोद-
विरचितं "श्रीश्रीरामकृष्णस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



श्री रामकृष्णाष्टक स्तोत्रम्*

स्वामिविविदिषानन्दविरचितम्

नित्यध्यानपरं मग्नयोगिवरम्
सच्चित्सुखं शान्तसमाहितम् ॥ १ ॥

वाले और मनुष्य का त्राण करने वाले राम और कृष्ण थे, वे ही विश्वप्रेमावतार मानव देह धारण करने वाले रामकृष्ण हैं, उन्हीं की वन्दना मैं करता हूँ ॥ ७ ॥

जाह्नवीतट पर पवित्र भूमि में प्रतिदिन अनेक पुण्यार्थिसेवित दिव्य धाम में, शंखघण्टाध्वनि से नित्य मुखरित ओंकार समुज्ज्वल मनोरम मन्दिर में श्रीभवतारिणी के चरणों में लीन श्रीरामकृष्ण का हम सभी स्तवन करते हैं ॥ ८ ॥

यह श्री कालीपद बन्द्योपाध्याय-विद्याविनोद-द्वारा रचित "श्री श्रीरामकृष्ण स्तोत्र" समाप्त हुआ ।



जो रामकृष्ण सदा ध्यान-परायण थे, ध्यानमग्न योगियों में श्रेष्ठ थे, सच्चिदानन्दमय, शान्त और समाधिमग्न थे उनको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

---

* उद्‌बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

निरीहमचलं ध्रुवं केवलम्
उपाधिव्याधिविकल्पादिशून्यम् ॥ २ ॥
सततं विगतरागभयक्रोधम्
सर्वत्र समं तुल्यनिन्दास्तवम् ॥ ३ ॥
आश्रितानां सदा रक्षाकरम्
पतितानां च पावनकरम् ॥ ४ ॥
मुमुक्षूणां भवबन्ध विमोचकम्
शरणागतनतस्य कल्पपादपम् ॥ ५ ॥
भजनानुकूलं भाववल्लभम्
ब्रह्मविज्ञानमूलमचलप्रतिष्ठम् ॥ ६ ॥
यं लब्ध्वा मृत्युभय मत्येति चिरम्
यस्य भासा विभाति सर्वमिदम् ॥ ७ ॥

जो इच्छारहित, अचल, नित्य केवल उपाधि-व्याधि विकल्प-आदि रहित थे उन्हीं श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

जो आसक्ति-रहित एवं सर्वदा भय और क्रोधशून्य थे, एवं निन्दा-स्तुति को सर्वत्र समान भाव से ग्रहण करते थे उन्हीं श्रीरामकृष्ण को प्रणाम करता हूं ॥ ३ ॥

जो सभी शरणागतों की सर्वदा रक्षा करते थे और पतित व्यक्तियों को भी पवित्र करते थे उन्हीं श्रीरामकृष्ण का भजन करता हूँ ॥ ४ ॥

जो मुमुक्षुओं के संसारबन्धन का विमोचन करते थे एवं शरणागत तथा प्रणत व्यक्तियों के लिये कल्पवृक्ष के समान थे उन्हीं श्रीरामकृष्ण का मैं भजन करता हूँ ॥ ५ ॥

जो सदा भजन के अनुकूल भगवद्भाव में विभोर रहते थे और जो विशिष्ट (ब्रह्म) ज्ञान के मूल में अचल रूप से प्रतिष्ठित थे उन्हीं श्रीरामकृष्ण का मैं भजन करता हूं ॥ ६ ॥

जिनको प्राप्तकर लोगों का मृत्युभय दूर होता है एवं जिनकी ज्योति से

दिवाकरं शशधरस्तारकावृन्दम्
नमाम्यहं तं भवरोगवैद्यम् ॥ ८ ॥

इति स्वामिविविदिषानन्दविरचितं "श्रीरामकृष्णाष्टकस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



श्रीश्रीरामकृष्णमहिमोद्गीतिः
(आशयानुवादसहिता)

प्राध्यापक—पाँचुगोपाल वन्द्योपाध्यायेति—प्रचलन्नामधेय—
श्रीजगन्नाथदेव शर्मणा विरचिता ।

वन्दे पुराणपुरुषं करुणावतारं
प्रेमानुराग-भरिताक्षि-सरोज-युग्मम् ।
भक्तालिलीढ़-युगभाव-कदम्ब-सारं
श्रीरामकृष्णमखिलाघ-कुरंग-भंगम् ॥ १ ॥

समस्त ब्रह्माण्ड आलोकित होता है उन्हीं श्रीरामकृष्ण का मैं भजन करता हूँ ॥ ७ ॥

जो दिवाकर के समान, शशधर और नक्षत्रवृन्द स्वरूप थे, उन्हीं भवरोगवैद्य, परमहंस श्रीरामकृष्णदेव को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

स्वामी विविदिषानन्द द्वारा विरचित यह "श्रीरामकृष्णाष्टकम् समाप्त हुआ ।



जीव के प्रति करुणावश जो धराधाम में अवतीर्ण हुये, जिनके युगल नेत्र कमल, ईश्वर के प्रति प्रेम और अनुराग से परिपूर्ण थे, भक्तरूपी भ्रमरगण जिनके द्वारा आचरित और उपदिष्ट वर्तमान समय के लिये उपयोगी शिवज्ञान से जीव सेवा, नारी मात्र ही श्री श्रीजगदम्बा की प्रतिमूर्ति, ईश्वर लाभ ही मानव जीवन का श्रेष्ठ उद्देश्य है इत्यादि भावरूपी कदम्ब के फूल का रस (या मधु का लेप या) पान करते हैं, जो पापरूपी कुत्सित रंग-समूहों का विलय करने वाले हैं अथवा उसी प्रकार के हरिण समूहों का नाश करने वाले हैं, उन्हीं पुराण पुरुष श्रीरामकृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

अभिराम-नराकार ! जय जय गदाधर !
परिहृतधराभार ? जय जय नमोऽस्तुते ॥ २ ॥
अभिनव-समाचार ! लीलामय-तनु-धर !
निखिल-सद्गुणाधार ! जय जय नमोऽस्तुते ॥ ३ ॥
अतिक्रान्त-कुलाचार ! मधुर-मोहन-स्वर !
"धनी"-भिक्षा-कणाहार ! जय जय नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥
अनुपम रसागार ! विमल प्रतिभा-धर !
पितृ-प्रसू-मनश्चौर ! जय जय नमोऽस्तुते ॥ ५ ॥
त्रेतायां यश्च रामोहि श्रीकृष्णो द्वापरे स्मृतः ।
तस्मै त्वभेद-रूपाय रामकृष्णाय ते नमः ॥ ६ ॥

हे अति रमणीय नराकारधारी, हे गदाधर (रामकृष्ण) तुम्हारी जय हो, तुम्हारी जय हो एवं तुमको नमस्कार ॥ २ ॥

हे अभिनव-युगधर्म संवाद-परिवेशक, हे देव-मानव–लीला-माधुर्य में परिपूर्ण शरीरधारी, हे सभी सद्गुणों के आधार (रामकृष्ण), तुम्हारी जय हो, तुम्हारी जय हो और तुमको नमस्कार ॥ ३ ॥

हे कुलाचार उल्लंघनकारी ! हे मधुर और मनोहर कंठस्वरैश्वर्यशाली ! हे भिक्षामाता ! धनीकामारिनी-प्रदत्त खाद्य ग्रहण करने वाले (रामकृष्ण) ! तुम्हारी जय हो, तुम्हारी जय हो और तुमको नमस्कार ॥ ४ ॥

हे अतुलनीय रसनिलय, हे विमल प्रतिभाशाली, हे पिता (क्षुदिराम) और माता (चन्द्रमणि) के मनचोर (रामकृष्ण) ! तुम्हारी जय हो, तुम्हारी जय हो और तुमको नमस्कार ॥ ५ ॥

जो त्रेतायुग में रामरूप में एवं द्वापर युग में कृष्ण रूप में आविर्भूत हुये थे, वही राम और कृष्ण की अभिन्न सत्ता स्वरूप, हे रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार ॥ ६ ॥

जगन्मातृ-गत-प्राण-दक्षिणेश्वर-वासिने ।
सर्वतन्त्र-सुसिद्धाय-रामकृष्णाय ते नमः ॥ ७ ॥
नानामत-सुसिद्धाय समन्वय-विधायिने ।
अनुलोम-विलोमज्ञ-महाविज्ञानिने नमः ॥ ८ ॥
कामिनी-कांचन-त्यागि-न्यक्कृत-सिद्धि-सम्पदे ।
विश्वमातृत्व-सम्बुद्ध-जायांघ्रि पूजकाय च ॥ ९ ॥
विशुद्ध मातृभावाय सिद्धि कपाट-मोचिने ।
नमस्ते देवदेवाय करुणाघन-मूर्तये ॥ १० ॥

जगन्माता कालिका देवी के चरणकमलों में अपना शरीर, मन और प्राण उत्सर्ग करके दीर्घकाल पर्यन्त दक्षिणेश्वर में निवास करने वाले एवं, सभी तन्त्रों में चरम सिद्धिप्राप्त करने वाले, हे रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार ॥ ७ ॥

नाना धर्म मतों में परमसिद्ध, वर्णाश्रम धर्म के निष्काम कर्मादि योग मार्ग के एवं हिन्दू धर्म के ही अन्तर्गत शाक्त, शैव, वैष्णव आदि शाखा धर्मों तथा हिन्दू, इसाई, इस्लाम आदि सभी नाना प्रकार के धर्ममतों का समन्वय करने वाले विश्व ब्रह्माण्ड और उसके अन्तर्गत जीव समूहों की उत्पत्ति, स्थिति और लय के रहस्य को जानने वाले एवं परब्रह्म के नित्य और लीला तथा अव्यक्त और व्यक्त भावसमूहों का सम्यक् परिदर्शन करने वाले, हे रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार ॥ ८ ॥

कामिनी-कांचनत्यागी, अणिमादि सिद्धिरूपी सम्पदा को तुच्छ मानने वाले, विश्व में जननी रूप से सम्बोधित स्वीय पत्नी शारदादेवी के श्री चरणों का पूजन करने वाले, विशुद्ध मातृभाव से अनुरंजित, भगवत्प्राप्तिरूपी परमासिद्धि के द्वार सदृश सुदृढ़ आवरण को निरावरण करने वाले, करुणाघन मूर्ति एवं देवता वृन्द के भी देवता स्वरूप, हे रामकृष्ण, तुमको नमस्कार ॥ ९-१० ॥

"न तु जीवे दया भावः सेवैव शिव-बोधतः ।"
इति श्रेष्ठ-युगादर्शोद्घोषकाय नमोऽस्तुते ॥ ११ ॥
प्रेमैक-सिन्धवे तुभ्यं ज्ञान-वैराग्य-मूर्तये ।
धर्म-ग्लानि-विनाशाय चैतन्य-दायिने नमः ॥ १२ ॥
आचण्डाल-वृष्ठ-प्रेम्नेः पाप-ताप-निवारिणे ।
पातकी-पाप-संकृष्टेऽर्गलव्याधि-भुजे नमः ॥ १३ ॥
द्विजान्त्यज-सम-ज्ञान-पतित-पावनाय वै ।
सर्वपाश-प्रहाणाय जगद्गुरो ! नमोऽस्तुते ॥ १४ ॥

श्री चैतन्य चरितामृत आदि धर्म ग्रन्थों में जीवके प्रति दया प्रदर्शित करने की बात कही गयी है, किन्तु दया प्रदर्शन के समय प्रायः ही दया के पात्र के प्रति थोड़ी सी अनुकम्पा और अहं मिश्रित करुणा का भाव प्रकट होता है, जो कि आध्यात्मिक उन्नति में बाधक है । इसीलिये "दयाभाव न दिखाकर जीव में शिव हैं, इस ज्ञान से उनकी यथा-साध्य सेवा करना" ही वर्तमान युगादर्श होना उचित है । अपने अन्तरंग शिष्य नरेन्द्रनाथ के निकट यह श्रेष्ठ युगादर्श घोषित करने वाले, हे रामकृष्ण, तुमको नमस्कार ।। ११ ।।

प्रेम के एकमात्र सिन्धु स्वरूप, ज्ञान और वैराग्य के घनीभूतविग्रह, धर्मग्लानि विनाशक और भक्तों तथा मुमुक्षु प्राणियों के लिये भगवद्ज्ञानरूपी चैतन्य प्रदान करने वाले, हे रामकृष्ण, तुमको नमस्कार ।। १२ ।।

चाण्डाल तक के प्रति प्रेम प्रदर्शित करने वाले मुमुक्षुओं के सब प्रकार के पाप एवं तीनों तापों की ज्वाला का निवारण करने वाले एवं पातकियों के पाप को स्वेच्छा से अपने शरीर में ग्रहणकर असाध्यरोग (कैन्सर) भोगने वाले, हे रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार ।। १३ ।।

सर्वोच्च ब्राह्मण और अतिनीच चण्डाल आदि में समदृष्टि रखने वाले, पतितोद्धारक एवं आत्मज्ञान प्राप्ति में प्रतिबन्ध स्वरूप कुल, मान, शील आदि सब प्रकार के पापों का उच्छेद करने वाले, हे जगद्गुरु रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार ।। १४ ।।

असाध्य-व्याधि-संक्रान्तेः काशीपुर-निवासिने।
प्रेष्ठ-शिष्य-नरेन्द्राय सर्वस्व-दायिने नमः ॥ १५ ॥
निर्विकल्प प्रलीनाय चैतन्योद्बोधकाय च।
प्रशान्ति-करुणा-प्रेम-मण्डितास्याय ते नमः ॥ १६ ॥
सर्वधर्म स्वरूपाय देशिकेन्द्राय सूरये।
महाभाव प्रतिष्ठाय ब्रह्मिष्ठायापि ते नमः ॥ १७ ॥
"न जातःप्रत्ययोऽद्यापि खलु ते यो हि रामो नु।
श्रीकृष्णो यश्च भूतले सोऽत्र रामकृष्णोऽधुना" ॥ १८ ॥
लीला-संवृति बेलायां स्फुटमिति नरेन्द्राय।
स्वरूपोन्मोचिने तुभ्यं त्रिकालदर्शिने नमः ॥ १९ ॥

असाध्य रोग (कैन्सर) से आक्रान्त होने पर अन्तिम लीला के समय काशीपुर उद्यान में अवस्थान करते समय अपने प्रियतम शिष्य नरेन्द्र नाथ के भीतर सभी प्रकार की आध्यात्मिक शक्ति का संक्रमण करने वाले हे (अवतारवरिष्ठ) रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार है ॥ १५ ॥

निर्विकल्प समाधि में लीन, आश्रित भक्तों के स्वरूप को ढकने वाली अविद्या का नाश करके उनमें दिव्य चैतन्य का सम्पादन करने वाले एवं प्रशान्ति, करुणा और प्रेमानुरंजित मुखमण्डल युक्त, हे रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार है ॥ १६ ॥

सर्वधर्मस्वरूप, श्रेष्ठ अध्यात्म मार्ग के उपदेशकारी, यथार्थतत्व ज्ञानी, उन्नीस भावों से घनीभूत दिव्य महाभाव में सुप्रतिष्ठित एवं ब्रह्म विज्ञानियों में वरिष्ठ, हे रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार है ॥ १७ ॥

"अभी भी तुझे विश्वास नहीं हुआ ? जो राम, जो कृष्ण, वही (अपने शरीर को इंगितकर) इसमें रामकृष्ण (रूप से आये हैं), किन्तु तेरे वेदान्त की दृष्टि से नहीं।" लीलासंवरण करने से कुछ पहले यह बात स्पष्ट रूप से कहकर, हे रामकृष्ण ! प्रियतम शिष्य नरेन्द्र के निकट त्रिकालदर्शी तुमने अपना

ऊरीकृत्य नैव यो गुरु-जनक-मतिं कर्तृभावं निकृष्टं
प्राभूत् विश्वे वरिष्ठोऽतुल-मनुजवरः संघ-देवो गरिष्ठः।
ईशानस्तारको योऽखिल कलुषहरस्त्वाश्रयो भक्तिदाता
तस्मै हे रामकृष्ण प्रभु गुणधरते झंकृताः साधुवादाः ॥ २० ॥
नमस्तुभ्यं विराड् रूप ! हिरण्यगर्भ हे ! नमः।
ईश्वर हे ! नमस्तुभ्यं तुरीय ब्रह्मते ! नमः ॥ २१ ॥

स्वरूप प्रकाशित किया था। अतएव इस प्रकार की कल्याणकारी बात कहने वाले, तुमको नमस्कार है ॥ १८-१९ ॥

"गुरु, कर्ता और बाबा—इन तीन बातों से मेरे शरीर में काँटा चुभता है।" साधारण भूमि में अवस्थान काल में जो अनेकों से प्रायः ही इस प्रकार की बात करते थे एवं इसी कारण जो अपने आप में गुरु और पिता की भावना एवं नाना अनर्थों का मूल निकृष्ट कर्त्ताभाव आरोप करने के सम्पूर्ण अनिच्छुक और असमर्थ थे, तथापि इस पृथ्वी पर जो वरेण्यतम अतुलनीय, श्रेष्ठ मानवरूप में वन्दित और श्रेष्ठ गुरुरूपी संघदेवता रूप में नित्य विराजमान हैं एवं जो संसार-तारक महेश्वर के समान निखिल कलुषहारी (हैं) एवं शरणागत मुमुक्षुओं के एकमात्र आश्रय और भक्तिदाता हैं, वही हे सकल प्रभाव परिपूरित, सद्गुणों के भंडार रामकृष्ण ! समग्र जगत् में तुम्हारा असंख्य साधुवाद नियमित रूप से झंकृत और अनुरणित होकर परिव्याप्त हो रहा है ॥ २० ॥

हे विराट् चैतन्यरूपी रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार, हे हिरण्यगर्भ चैतन्यरूपी रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार, हे ईश्वरचैतन्यरूपी रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार एवं हे तुरीयब्रह्म चैतन्यरूपी रामकृष्ण ! तुमको नमस्कार ॥ २१ ॥

पशुराज (सिंह) पिंजरे में बन्द होने पर जितनी प्रबल शक्ति से पिंजड़े को तोड़कर बाहर आकर मुक्ति के सुख का आस्वादन करने की चेष्टा करता है, उसी प्रकार अविद्या से उत्पन्न मोह आदि कारण से संसार जाल में फँसे हुये, कलिके पाप से आच्छन्न और हत बुद्धि, हताशा से कुम्हलाये हुये, उद्भ्रान्त

जगज्जालबद्धः कलिस्तब्धबोधो हताशा विमूढ़श्च नूनं मनुष्यः।
मृगेन्द्रो बहिः पिंजरात् याति यादृक्
तथा रामकृष्ण प्रसादाद्धि तस्मात् ॥ २२ ॥

इति "श्रीश्रीरामकृष्णमहिमोद्गीतिः" समाप्ता ॥



श्रीश्रीरामकृष्णवन्दना*

श्री अमरनाथमुखोपाध्यायविरचिता

परहितरतचेता यो महात्मा गतासु—
र्दिशि दिशि जनवृन्दा यं भजन्ति स्मरन्ति।
भुवि सुरगुरुकल्पं सर्वयोगेषु सिद्धं
निखिलमनुजबन्धुं रामकृष्णं नमामि ॥ १ ॥

और विभ्रान्त नगण्य मनुष्य भी भक्तिपूर्वक आँसू बहाकर परमदयालु, पतित-पावन श्रीरामकृष्ण की प्रसन्नता और कृपा प्राप्त करके उस जाल को काट कर अवश्य ही प्रशान्ति, दिव्यप्रेम और आनन्द प्राप्त कर धन्य और कृतार्थ होता है ॥ २२ ॥

यह स्तोत्र "श्री श्रीरामकृष्ण महिमोद्गीती" समाप्त हुआ।



जो महात्मा दूसरे का कल्याण करने में सर्वदा निरत हैं, विभिन्न देशों के लोग जिनकी पूजा एवं जिनका नाम स्मरण करते हैं, इस भूमण्डल पर जो देवताओं के गुरु बृहस्पति के समान हैं एवं जो सब प्रकार के योग में सिद्ध हैं और जो समस्त मानवों के बन्धु स्वरूप हैं, उन्हीं रामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक।

ललित-सरल वाक्यं रम्यकान्ति सुदृश्यं
कलुषरहित चित्तं शक्तिमत्तं विनम्रम्।
सतत शमथपूर्णं ब्रह्मभावाभिमग्नं
निखिलमनुजबन्धुं रामकृष्णं नमामि ॥ २ ॥

अगणित गुणि शिष्यैः सार्द्धमासीनमेनं
हितमितवचनाढ्यं जीवसिद्ध्यै यतन्तम्।
कृति मति भजनानां विग्रहं मूर्तमेकम्।
निखिल मनुजबन्धुं रामकृष्णं नमामि ॥ ३ ॥

कलिकलुष विनाशं कालिका भक्तमीशं
त्रिभुवन भयनाशं मुक्तिवादानुरक्तम्।

जिनके वाक्य अत्यन्त सरल और सुमधुर हैं, जो देखने में अति सुन्दर हैं और जिनका हृदय कालिमा रहित अत्यन्त स्वच्छ है, जो शक्तिमान हैं, विनम्र हैं, पूर्णात्मा एवं ब्रह्मभाव में निमग्न हैं और जो सभी प्राणियों के बन्धु स्वरूप हैं, उन्हीं रामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

असंख्य गुणवान शिष्यों के साथ बैठकर जो सबके लिये हितकारी एवं विशेष कल्याणकारी उपदेश दिया करते थे, जो जीव की सिद्धि के लिये सर्वदा प्रयत्नशील रहते थे, जो कर्म, ज्ञान और भक्ति के एक अपूर्व मूर्त विग्रह थे एवं सभी लोगों के बन्धु स्वरूप थे, उन्हीं रामकृष्ण देव को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

जो कलियुग की कलुषता दूर करते हैं, श्री माँ काली के अनन्य भक्त हैं, ईश्वर सदृश हैं, त्रिभुवन के भय का नाश करने वाले हैं और मुक्ति की वार्ता घोषित करने में अनुरक्त हैं और जो पूर्व-पूर्व युगों में राम और कृष्ण नाम से

भुवि पुनरवतीर्णं रामकृष्णाख्यमादौ
निखिलमनुजबन्धुं रामकृष्णं नमामि ॥ ४ ॥

इति श्रीअमरनाथमुखोपाध्यायविरचिता "श्रीश्रीरामकृष्णवन्दना" समाप्त ।

श्रीश्रीरामकृष्णप्रातःस्मरणस्तोत्रम्*

स्वामिप्रशान्तानन्दविरचितम्

प्रातः स्मरामि जगतो भव-भाव-हेतु
हेतुं लयस्य च भवाम्बुधि-पार-सेतुम् ।
लीला-विलास-विलसद्-वपुषं सुधीशं
श्रीरामकृष्णमवतारवरं तमीशम् ॥ १ ॥
प्रातर्नमामि कलिदोष-विदाह-दक्षं
चानन्द-कन्दमरविन्द-दलायताक्षम्

अभिभूत होकर पृथ्वी पर पुनः श्रीरामकृष्ण रूप में अवतीर्ण हुये हैं एवं जो समस्त लोगों के बंधु हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

श्री अमरनाथ मुखोपाध्याय द्वारा विरचित यह "श्री श्रीरामकृष्ण वंदना" समाप्त हुई ।

जो जगत् की उत्पत्ति, पालन एवं प्रलय के कारण हैं, संसार सागर से पार करने के लिये एकमात्र पुल स्वरूप हैं, लीला करने के लिए जो शरीर धारण किए हैं वे ही विद्वत्वर श्री रामकृष्ण परमहंस देव हैं और उन्हीं को मैं शुभ प्रभात में स्मरण करता हूं ॥ १ ॥

जो कलियुग के दोष को भस्म करने में दक्ष हैं; आनन्द के मूल उत्स स्वरूप हैं और पद्मपलाश के समान लोचन से युक्त हैं, जो मनसा, वाचा, कर्मणा इस

---

*उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

य: कामकांचनमहोतनु-वाङ्मनोभि
रेजे विहाय भुवि संयत-वाक् सदाभी: ॥ २ ॥
प्रातर्भजामि भजतां भव-भार-हारं
पापौघहं करुणया धृत-देह-भारम् ।
योगीश्वरं परमहंस वरं प्रशान्त—
म्मूर्द्धारविन्द-मकरन्द-मधुव्रतं तम् ॥ ३ ॥

इति स्वामी प्रशान्तानन्दविरचितम् "श्रीरामकृष्णप्रात:स्मरणस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



श्री रामकृष्णाष्टकम्*

श्री दुर्गादासगोस्वामी, एम० ए०, काव्यव्याकरणतीर्थ, साहित्यशास्त्रीविरचितम्

भूदेव वंशं जनुषा विमण्डयन् भूलोक दु:खं मनसा विचिन्तयन् ।
भूभारहाराय समागत: स्वयं भू भारते य: किल भक्त सज्जनै: ॥ १ ॥

पृथ्वी पर काम और कांचन का परित्याग कर एवं वाणी को संयत रख कर निर्भीक होकर विराजमान थे, उन्हीं अवतार वरिष्ठ श्री रामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

जो प्रणत लोगों को मुक्ति देने वाले, समस्त पापों का विनाश करने वाले, करुणा से आप्लावित हो कर शरीर धारण करने वाले, योगीश्वर, प्रशान्त, परमहंसों में श्रेष्ठ और संसार चक्र से ऊपर उठे हुए, ऊर्ध्वरेता, भगवद्भक्ति के मकरन्द का पान करने वाले भ्रमर हैं। ऐसे श्रीरामकृष्ण का मैं प्रात:काल भजन करता हूँ ॥ ३ ॥

यह स्वामी प्रशान्तानन्द द्वारा विरचित "श्रीरामकृष्णप्रात:स्मरणस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



अपने जन्म के द्वारा ब्राह्मणवंश को गौरवान्वित कर पृथ्वी के दु:ख का

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित– प्रकाशक ।

हन्तोदितः श्यामवनानि वेष्टिते
पर्णोटजे बंग भुविच्छलेन यः।
निर्मुक्तलक्ष्मेव महीसुधाकरः
प्राह्लादयन् विश्वमनिन्द्यधामभिः ॥ २ ॥

वक्तारविन्दान्मकरन्दसुन्दरै—
र्निस्यन्दिभिर्वागमृतैर्निरन्तरम् ।
तापत्रयेणाभिहतान्स्तपस्विनः
सञ्जीवयन् प्रेम भरेण यः स्थितः ॥ ३ ॥

ब्रह्मैव भो जीवजगत् स्वरूपकं
लीलामयेनेदमहो प्रपञ्चितम् ।
सेवा ततः सन्त तमेव देहिनां
कार्या जनैः प्राह यं एवमात्मवित् ॥ ४ ॥

निवारण करने के लिये एवं पृथ्वी का भार हरण करने के लिये जो इस भारत वर्ष में स्वयं भक्तों के साथ अवतीर्ण हुए हैं– उन्हीं युग-भगवान् श्री रामकृष्ण-देव की वन्दना करता हूँ ।। १ ।।

श्यामल वन-शोभा वेष्टित पर्णशाला में पृथ्वी के निष्कलंक चन्द्रमा स्वरूप समग्र संसार को आनन्दित और पवित्र ज्योति में अभिनन्दित करते हुए जो सुकौशल बंगभूमि (बंगाल) में अवतीर्ण हुए थे (उन्हीं युगावतार श्री रामकृष्ण की वन्दना करता हूं) ।। २ ।।

जो अपने मुखकमल से मकरन्द के समान रमणीय सरस वाणीरूपी अमृत के द्वारा त्रिताप पीड़ित तपस्वियों को आश्वस्त करते हुए इस भूमण्डल में अवस्थित थे उन्हीं युगाचार्य श्रीरामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ।। ३ ।।

ब्रह्म ही लीला के द्वारा समस्त जीव जगत् के रूप में उद्भासित है। उसी लीलामय परमेश्वर के द्वारा, यह विश्व अभिव्यक्त हुआ है। इसीलिये शरीर-धारी सभी प्राणियों की सेवा सब समय करना मनुष्यों का कर्तव्य है; यह बात

विज्ञान-कर्माख्यसुदुर्ग कूलयो
र्मध्ये सुगम् भक्तिनदी पथं मुदा ।
यो नारदाद्यैर्बहुधाप्युदीरितं
ब्रह्माब्धिलाभाय जनान् समादिशत् ॥ ५ ॥

यः कामिनी कांचन संग वर्जितः
कृच्छ्रव्रतः शान्त उदार दर्शनः ।
आदर्शमात्मोपमया भुवि स्थिरं
प्रादर्शयत् वैषयिकान् नरोत्तमः ॥ ६ ॥

धर्मांश्चरित्वा विविधान् समन्वयं
दृष्ट्वा च तेषां विषमैः स्वसाधनैः ।

जिन्होंने आत्मज्ञ (आत्मज्ञानी) होकर भी कहा था उन्हीं ब्रह्मस्वरूप श्री राम-कृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

विज्ञान और कर्म नामक दो दृढ़ दुर्ग रूपी किनारों के दुर्गम भक्तिरूपी नदी जो कि नारदादि के द्वारा बहुत प्रकार से कीर्तित हुई है (नारदादि ऋषियों ने भक्तिदेवी की महिमा का जो बहुत प्रकार से गायन किया है), परमानन्द पूर्वक उसी पथ पर अग्रसर होकर उसी के द्वारा ब्रह्मसमुद्र की प्राप्ति सहज में हो सकती हैं । जो इस प्रकार के उपदेश लोगों को दिया करते थे उन्हीं युगावतार श्री रामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

जो काम और कांचन के स्पर्श से दूर रहते थे एवं कठिन से कठिनतर व्रत का आचरण करते थे, अत्यन्त उदार और शांत स्वभाव के थे, जिन्होंने अपने जीवनादर्श के द्वारा इस भूमण्डल के विषयासक्त लोगों के सामने स्थिर आदर्श प्रदर्शित किया था--उन्हीं जगद्गुरु श्री रामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

जिन्होंने धर्मके सम्बन्ध में अनेक विषय में विचित्रता से परिपूर्ण नाना धर्मों में समन्वय साधन करके सभी के लिये एकमात्र ग्रहण करने योग्य, सुलभ,

सर्वैकगम्यां प्रकृतिं पुरातनीं
योऽप्याह शक्तिं परमार्थकोविदः ॥ ७ ॥
आजन्मब्रह्मचारी शिशुरिव सततं स्निग्ध हास्योज्ज्वल श्री-
मूर्तिः कारुण्यराशिः कुसुममिव शुचिः सद्गुरुर्वीतमानः ।
आत्मारामो मनोज्ञः परम इति पुनर्हंससंज्ञः स शिष्यैः
साक्षाच्छ्रीरामकृष्णः प्रदिशतु भगवान् रामकृष्णः शुभं नः ॥ ८ ॥
दुर्गादासग्रन्थितोऽयं हारावलीव योषिताम् ।
श्री रामकृष्ण-भक्तानां कन्ठे लगतु सर्वदा ॥ ९ ॥
ॐ श्रीरामकृष्णार्पणमस्तु । ॐ तत्सत् ।

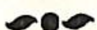


आश्रय देने वाली प्राचीन प्रकृति शक्ति का अर्थात् देवी आद्याशक्ति महामाया की शरणागति के संबंध में (स्वयं माँ के सम्पर्क में रहकर) उपदेश दिया था, उन्हीं युगावतार श्री रामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

जो आजन्म ब्रह्मचारी थे, शिशुवत् सर्वदा स्निग्ध हास्य से उज्ज्वल श्री से मंडित थे, करुणा के मूर्त विग्रह स्वरूप थे, फूल की तरह पवित्र थे, सद्गुरु थे, अभिमान रहित थे, आत्माराम थे, चित्त का मनोरंजन करने वाले थे, सर्वश्रेष्ठ और साधकों में अग्रणी होने के कारण जो परमहंस की संज्ञा से संज्ञित थे एवं जो साक्षात् श्रीरामकृष्ण रूप में अवतीर्ण हुये थे, इस प्रकार के श्रीरामकृष्ण परमहंसदेव अन्तरंग शिष्यों के साथ उपस्थित होकर हम लोगों का मंगल करें यही प्रार्थना है ॥ ८ ॥

नारी कंठ में शोभायमान मुक्ता की माला के समान (हार के समान) दुर्गादास गोस्वामी द्वारा विरचित यह स्तवन श्रीरामकृष्ण के भक्तों के कंठ में निवास कर शोभित हो, अर्थात् भक्तगण सदा इस स्तोत्र का पाठ और पारायण करें ॥ ९ ॥

ॐ श्रीरामकृष्णदेव को अर्पित । ॐ तत्सत् ।



श्रीश्रीरामकृष्णसंघस्तोत्रम् *

स्वामिशारदानन्दविरचितम्

सर्वधर्मस्थापकस्त्वं सर्वधर्मस्वरूपकः।
आचार्याणां महाचार्यो रामकृष्णाय ते नमः ॥ १ ॥

यथाग्नेर्दाहिका शक्ती रामकृष्णे स्थिता हि या।
सर्वविद्या स्वरूपां तां शारदां प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥

परतत्त्वे सदा लीनो रामकृष्ण समाज्ञया।
यो धर्मस्थापनपरो वीरेशं तं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥

कालिन्दीफुल्लकमले माधवेन क्रीड़ारतः।
ब्रह्मानन्द ! नमस्तुभ्यं सद्गुरो लोकनायक ॥ ४ ॥

हे रामकृष्ण ! तुम सब धर्मों के स्थापक हो, सभी धर्मों के स्वरूप हो एवं आचार्यों में भी महान् आचार्य हो। तुमको नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

अग्नि की दाहिका शक्ति के समान जो सर्वदा श्रीरामकृष्ण में अवस्थान करतीं हैं एवं जो सर्वविद्यास्वरूपिणी हैं, उन्हीं माँ शारदा देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

जो श्रीरामकृष्ण (देव) की आज्ञा से हमेशा परम तत्त्व में लीन रहते थे एवं जो सदा धर्म स्थापन में परायण थे उन्हीं वीरेश्वर को (स्वामी विवेकानन्द को) मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ३ ॥

यमुना के प्रस्फुटित कमलवन में माधव के साथ क्रीड़ा परायण, हे सद्गुरु, हे लोकनायक ब्रह्मानन्द । तुमको नमस्कार करता हूँ ॥ ४ ॥

---

* बेलूड़ मठ के ब्रह्मचारी ज्ञान द्वारा प्रकाशित एवं रामकृष्ण-विवेकानन्द प्रचार–'अंजलि' से गृहीत—प्रकाशक ।

योगानन्दः प्रेमानन्दश्चान्ये वै ये च पार्षदाः ।
रामकृष्णगत प्राणाः सर्वान्स्तान् प्रणमाम्यहम् ॥ ५ ॥

इति स्वामिशारदानन्दविरचितं "श्रीश्रीरामकृष्णसंघस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



श्रीमद्रामकृष्णावतारस्तोत्रम् *

स्वामित्रिगुणातीतविरचितम्

सल्लोका विषयविरागिणो यदर्थं
सन्त्यक्तः सुखनिबहो बुधैश्च बाल्यात् ।
यल्लब्धुं कठिनतपो हि चर्यते ज्ञै—
र्लिप्स्यन्ते त्रिदशगणाः सदा पदं यत् ॥ १ ॥

यस्मान्नास्ति भगवतो हि किंचिदूर्ध्व—
सुप्राप्यश्च न खलु कस्यचित् यतोऽन्यः ।

रामकृष्णगतप्राण योगानन्द प्रेमानन्द आदि अन्यान्य जो सभी पार्षद्गण हैं, उन सबको प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

यह स्वामी शारदानन्द द्वारा विरचित "श्रीश्रीरामकृष्णसंघस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



विषय विरागी साधु लोग जिनके लिए बाल्यकाल से ही समस्त विषय सुखों का परित्याग करते हैं एवं ज्ञानी व्यक्ति जिस पद को प्राप्त करने की आकांक्षा से तपस्या करते हैं, जो पद देवतागण भी पाने के लिए सदा लालायित रहते हैं ॥ १ ॥

इस संसार में जिस भगवान से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है, इस संसार में जिस

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

सो सावेव परमहंस रामकृष्णः
सर्वज्ञः सकलमनोमतः प्रशान्तः ॥ २ ॥
रक्षार्थं निजवचनं त्रितापहर्ता
गौरांगेन भगवता प्रतिश्रुतं यत् ।
भक्तार्थं परमदयालु गतस्त्वं
मह्यां ते पुरुष समर्पयामि सर्वम् ॥ ३ ॥
छद्म प्रसाधन धरोऽसि विवेत्ति कस्ते
कृष्णाधुनावतरणस्य निगूढ़ तत्वम् ।
स्वेनैव चेन्न कथितं शिव त्वत्प्रियेभ्यो
गुप्तावतार भगवन् भवतः कृपैवम् ॥ ४ ॥

इति स्वामित्रिगुणातीतविरचितम् "श्रीमद्रामकृष्णावतार स्तोत्रम्" समाप्तम् ।



भगवान से श्रेष्ठ पाने योग्य वस्तु और कुछ भी नहीं है, वे ही हैं सर्वज्ञ, सभी के प्रिय और शान्तचित्त परमहंसदेव श्री रामकृष्ण ॥ २ ॥

भगवान् श्री गौरांगदेव के रूप में जीवों का उद्धार करने के लिए आपने प्रतिश्रुति दिया था । हे रामकृष्ण देव ! आप त्रितापहारी हैं—अपनी बात की रक्षा करने के लिए एवं भक्तों की अभिलाषापूर्ण करने के लिए आप (दयालु होकर) पृथ्वी पर अवतीर्ण हुये हैं । अतएव मैं आपके चरणों में सर्वस्व अर्पण करता हूँ ।। ३ ।।

हे परमहंसदेव ! आपको इस संसार में कौन जान सकता है ? आप प्रच्छन्न साधक के रूप में सम्प्रति श्रीकृष्ण के अवतार का निगूढ़ तत्व प्रकट कर रहे हैं । हे मंगलमय ! आप स्वयं ही यदि अपने प्रिय सहचरों में यह तत्व प्रकाशित न करते तो यह तत्व इस संसार में कौन जान पाता । हे गुप्तावतार भगवान् ! यह आपकी ही विशेष कृपा है (मैं आपके श्री चरणों की वन्दना करता हूँ) ।। ४ ।।

स्वामी त्रिगुणातीत द्वारा विरचित यह "श्रीमद्रामकृष्णावतारस्तोत्रम्"समाप्त हुआ ।



श्रीरामकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् *

श्रीत्र्यम्बकशर्मणाविरचितम्

जयतु जयतु वांछा कल्पशाखी सशिष्यः
स जयतु भगवान् यः सद्गुरू रामकृष्णः ।
जयतु च जननी श्री शारदा भक्तिदात्री
विमल चरण रेणं दीनभक्तः प्रयाचे ।। १ ।।

त्रितापनाशको देवः पुनः पतित पावनः ।
ब्रह्माविष्णुर्महेशस्त्वं निर्गुणोऽसि निरंजनः ।। २ ।।

लोकंविलोक्य सकलं कामार्थतमसावृतम् ।
उदितस्त्वं समुद्धर्त्तुं तरुणारुण सारथिः ।। ३ ।।

वांक्षा कल्पतरु भगवान् की जय हो । पार्षदों के सहित सद्गुरु भगवान् रामकृष्ण की जय हो । भक्तिदायिनी मां श्रीमती शारदा देवी की जय हो । मैं दीन भक्त ठाकुर और मां के पवित्र चरणों की धूलि पाने का इच्छुक हूँ ।। १ ।।

हे भगवान् ! आप दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार के दुःखों का नाश करने में समर्थ हैं एवं पतितपावन हैं । आप ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर हैं । आप निगु ण और निरंजन हैं ।। २ ।।

समस्त संसार को कामकांचन के मोहरूपी अंधकार में निमग्न देखकर आप उसका उद्धार करने के लिए तरुण सूर्य के रूप में उदित हुए हैं ।। ३ ।।

---

* "श्री रामकृष्णाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्" के दो नाम पिता क्षुदिराम द्वारा दिये गये हैं, एक नाम माता चन्द्रा देवी का दिया हुआ है, एक नाम 'धनी' कामारनी ने दिया है, श्री शारदा देवी चार नामों से उन्हें बुलाती थीं । उनके संबंध में उन्होंने स्वयं ही उन्हें "पूर्णावतार" कहा है । बाकी सब नाम स्वामी श्री विवेकानन्द द्वारा रचित स्तोत्रादि और गाने से लिखे गये हैं । संकलनकर्त्ता ।

पुत्ररूपेणावतीर्य, क्षुदिराम गृहेऽकरोः।
जगत्कल्याण सिद्ध्यर्थं सर्वधर्म समन्वयम् ॥ ४ ॥

रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥ ५ ॥

'मतानुसारं पन्थानं'—तत्त्वं नवमिदं पुनः।
स्वयमाचरता येन धर्मद्वन्द्वं विनाशितम् ॥ ६ ॥

भक्तेर्ज्ञानस्य योगस्य, कर्मणश्च समन्वयात् !
कृतं नृहरिणा येन ससम्भवमसम्भवम् ॥ ७ ॥

जनकेन गयास्वप्नाद्‌गदाधर[1] इतीरितः
चन्द्रादेव्या 'गदाई'[2]ति दुलालेत्य[3]ब्रवीद्धनी ॥ ८ ॥

'रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल।
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥ ९ ॥

क्षुदिरामचट्टोपाध्याय के घर पुत्ररूप में अवतीर्ण होकर जगत के कल्याण के लिए आपने सभी धर्मों का समन्वय माधन किया है ॥ ४ ॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धु ! हे शरणाशतवत्सल ! हे प्रभो ! भक्तिहीन इस दीन को सदा दास्य भक्ति प्रदान करें ॥ ५ ॥

'जितने मत, उतने पथ' यह नया तत्व आपने स्वयं आचरण कर कहकर सभी धर्मों के आपस के द्वन्द्व को विनष्ट किया ॥ ६ ॥

जिन मनुष्यरूपी भगवान् ने भक्ति, ज्ञान, योग और कर्म का समन्वय क्रिया है, उन्हीं ने असम्भव को सम्भव कर दिखाया है ॥ ७ ॥

पिता ने गयाधाम में स्वप्न देखकर पुत्र का नाम 'गदाधर' रखा था। माता चन्द्रादेवी पुत्र को 'गदाई' कहकर पुकारती थीं और धात्री माता धनी उनको 'दुलाल' कहकर उनके प्रति स्नेह प्रदर्शित करती थीं ॥ ८ ॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धु ! इत्यादि ॥ ९ ॥

अन्नप्राशन संस्कारे रामकृष्णे[४]ति नामतः ।
तातेनाकारितः प्रेम्ना, स्वयं चान्तेऽब्रवीदिदम् ॥ १० ॥
स्वामिनायं विवेकेन पूजितः शतनामभिः ।
पठनाच्छ्रवणाद्वापि येषां तुष्यति मानसम् ॥ ११ ॥
निरंजनो[५] निर्गुणश्च[६] गुणेढ्यो[७] गुणजित्[८] प्रभुः[९] ।
देवो[१०] नरवर[११]श्चापि नररूपधरः[१२] शिवः[१३] ॥ १२ ॥
रामकृष्णः ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥ १३ ॥
भववैद्यो[१४] दीनबन्धु[१५]र्भवभेदा[१६] करोऽचलः[१७] ।
गोष्पदीकृत[१८] संसार सागरो भवतारणः[१९] ॥ १४ ॥
शान्तो[२०] वाङ्मनसातीतः[२१] समदृक्[२२]जगदीश्वरः[२३] ।

अन्नप्राशन संस्कार के समय पिता ने पुत्र को स्नेह पूर्वक रामकृष्ण कहकर बुलाया था बाद में उन्होंने भी स्वयं अपने को 'रामकृष्ण' कहा था ॥ १० ॥

स्वामी विवेकानन्द ने इस प्रकार के सैकड़ों पुण्य नामों के द्वारा भगवान् की पूजा की थी, जिसे पढ़ने या सुनने से मन आनन्द से परिपूर्ण हो उठता है ॥ ११ ॥

हे भगवान् ! आप निरंजन, निगु'ण, गुण पूर्ण हैं एवं आपने सत्व-रज-तम इन तीनों गुणों को वशीभूत कर लिया है । आप नरश्रेष्ठ, देवता एवं नररूप धारी हैं, शिव हैं ॥ १२ ॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धु ! इत्यादि ॥ १३ ॥

आप भवरोग के वैद्य, दीन बन्धु, संसार के दुःखों के निवारक एवं शान्त स्वरूप हैं । आपने संसार सागर को गोष्पद जल के समान कर लिया है जिससे जीव लोग (प्राणी मात्र) उससे अनायास ही तर सकते हैं । आप संसार सागर के कर्णधार हैं ॥ १४ ॥

आप शान्त, वाणी और मन के जानने से परे (अगोचर) समदर्शी एवं

ॐ[24] स्वरूपो ह्रीं[25]-स्वरूपो निर्भयः[26] करुणाघनः[27] ॥ १५ ॥
भगवान्[28] ज्योतिषां ज्योति[29]र्धर्म संस्थापकः[30] पुनः ।
अवतारवरिष्ठोऽ[31]पि सर्वधर्मस्वरूपकः[32] ॥ १६ ॥
रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥ १७ ॥
मर्त्यामृतं[33] त्यक्तजाति[34] कुलाहंधीः सुनिर्मलः[35] ।
त्यागीश्वरः[36] परित्यक्त कामकांचन भावनः[37] ॥ १८ ॥
युगावतारो[38] जगतां जन दुःखनिवारणः[39] ।
जगत्त्राणार्पितप्राणः[40] कालबन्धनमोचनः[41] ॥ १९ ॥
श्रीजी[42] गुणमय[43]श्चापि मरणोर्मि विनाशकः[44] ।
ज्ञानांजन[45] पवित्राक्षः पाप दूषणनाशनः[46] ॥ २० ॥

जगत् के ईश्वर हैं । आप निर्गुण ओंकार स्वरूप एवं सगुण ह्रीं शक्ति स्वरूप हैं । आप निर्भय और करुणापरायण हैं ॥ १५ ॥

हे भगवान ! आप ज्योति समूहों के ज्योति एवं धर्म के संस्थापक हैं । आप अवतारों में श्रेष्ठ एवं सर्व धर्म स्वरूप हैं ॥ १६ ॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धु ! इत्यादि ॥ १७ ॥

हे भगवान् ! आप मर्त्य जीवों के लिये अमृत के समान हैं। आपने जाति, कुल और अहं भाव का त्याग किया है, आपका चित्त निर्मल है, आप त्यागियों में श्रेष्ठ हैं एवं आपने अपने मन से काम कांचन की भावना तक का परित्याग कर दिया है ॥ १८ ॥

हे भगवान् ! आप इस युग के अवतार हैं, आप संसार के लोगों का दुःख दूर करने वाले हैं । आपने संसार का उद्धार करने के लिए प्राण उत्सर्ग किया है एवं आप पाप रूपी कलि का बन्धन काटने वाले हैं ॥ १९ ॥

आप पूजनीय, समृद्धि और सौन्दर्य स्वरूप हैं, निर्गुण होकर भी लोककल्याण

रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥ २१ ॥

निन्दिते[४७]न्द्रियरागोऽपि, यश्च योगसहायवान्[४८] ।
सन्देह-राक्षसहन्ता,[49] भक्तार्चितपदः[50] पुनः ॥ २२ ॥

सकलेष्वर्पितप्रेमा,[51] विजृम्भित युगेश्वरः[52] ।
प्रेमरत्नाकरः[53] पूर्णो[54] दुखगंजनभंजनः[55] ॥ २३ ॥

कठोरकर्मकृत्,[56] सर्वदेवदेवीस्वरूपकः[57] ।
वेदमूर्ति[58]र्बहुकृतः[59] "ष्णान्तः"[60] प्राणसखा[61] गुरुः[62] ॥ २४ ॥

रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥ २५ ॥

के लिये गुणमय हुए हैं। आप मृत्यु रूपी उत्ताल तरंग माला के विनाशक हैं। ज्ञानरूपी अंजन के द्वारा आपके नेत्र पवित्र हैं एवं आप पाप दोष का मोचन करने वाले हैं ॥ २० ॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धु ! इत्यादि ॥ २१ ॥

हे भगवन् ! आप इन्द्रियासक्त की निन्दा करते हैं। आप योग साधन के सहायक हैं और सन्देह रूपी राक्षस का विनाश करने वाले हैं। भक्तगण आपके चरणों की पूजा करते हैं ॥ २२ ॥

आप सबसे प्रेम करते हैं, आपने चार युगों (सत्, त्रेता, द्वापर, कलि) का विस्तार किया है और इन चारों युगों के प्रभु भी आप ही हैं। आप प्रेम के रत्नाकर हैं, पूर्ण हैं और दुःख के समूहों का विनाश करने वाले हैं ॥ २३ ॥

आपने अति कठोर तपस्या की है, आप सभी देव-देवियों के मूर्त-विग्रह हैं। आप ज्ञान स्वरूप हैं एवं आपने बहुत से शुभकार्य सम्पादन किए हैं। आप के नाम के अन्त में 'ष्ण' है; आप प्राण सखा और गुरु हैं ॥ २४ ॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धु ! इत्यादि ॥ २५ ।

अद्वैततत्त्व बोधाब्धि[63]—समाहितमनाः स्वयम् ।
प्रोल्ल[64]सद्भक्तियोगास्य—पटावृत सुवृत्तवान् ॥ २६ ॥
शरणं[65] शक्ति सिन्धू[66]त्थ—तरंगः करुणानिधिः[67] ।
जगता[68]मेकगम्योऽसौ, नित्यं[69] कर्मकलेवरः[70] ॥ २७ ॥
मोहंकषो[71] मनोवाचामेकाधार[72]स्तमोहरः[73] ।
भास्वरो[74] भावपाथोधि[75]-दृढनिश्चय मानसः[76] ॥ २८ ॥
रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥ २९ ॥
जगद्भूषण[77] इत्थं चिद्घनकाय[78]स्तथा स्तुतः ।
ऋतस्वरूपो[79] भक्तानां, निर्हेतुशरणं[80] सदा ॥ ३० ॥
नरदेवो[81] गुरुमहाराजो[82] विगतसंशयः[83] ।
जग[84]द्वन्दनयोग्यात्मा, भवबन्धन खण्डनः[85] ॥ ३१ ॥

आप स्वयं अद्वैत तत्व का ज्ञान प्राप्त कर समाधिस्थ हुए हैं। आपका जीवन भक्तियोग रूपी श्वेत पट (पर्दा) या आवरण से आवृत्त है ॥ २६ ॥

आप सभी के आश्रय स्थल हैं, महाशक्तिरूपी सिन्धु के तरंग में आप परमविकासरूप हैं, आप करुणानिधि हैं। आप संसार की एकमात्र गति हैं एवं आप लोककल्याण के लिए निरंतर कर्म करने में तत्पर हैं ॥ २७ ॥

आप माया मोह के विनाशक, वाणी और मन के एक मात्र आधार हैं, आप अज्ञानान्धकार को दूर करते हैं। आप स्वयं प्रकाश हैं, सद्भावसमूहों के समुद्र के समान हैं एवं आपका चित्त दृढ़निश्चयात्मिका बुद्धि से संपन्न है ॥ २८ ॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धु ! इत्यादि ॥ २९ ॥

आप जगत् के अलंकार स्वरूप एवं चैतन्यघनशरीरधारी हैं आप सत्य स्वरूप हैं एवं सदा भक्तों के अहैतुक आश्रय स्थल हैं ॥ ३० ॥

आप मनुष्यरूपधारी देवता हैं, हमलोगों के गुरुदेव हैं। आप संशयरहित हैं, संसार के लोगों के द्वारा वन्दनीय हैं और भवबन्धन काटने वाले हैं ॥ ३१ ॥

अहेतु:[86] करुणामूर्तिः सुवितीक्ष्णोविशालधी:[87] ।
सर्वव्यापी[88] साक्षीरूपो[89] यः सनातनपूरुषः[90] ॥ ३२ ॥
रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥ ३३ ॥
आदर्शजीवन:[91] सर्वसम्प्रदायाधिनायकः[92] ।
साम्य[93]मैत्री—दिव्यदूतो[94]ऽद्भुतमूर्ति[95]रुदारधीः ॥ ३४ ॥
नरनारीभेदशून्यो[96] वेदान्तोज्ज्वलभाष्यभूः[97] ।
समदृक्[98] पण्डिताऽज्ञेषु, मायामुग्धदयापरः[99] ॥ ३५ ॥
रामकृष्ण[100] स्वरूपेण अवतीर्णः पुरुषो महान् ।
महासमन्वयाचार्यः[101] ख्यातः परम-ईश्वरः[102] ॥ ३६ ॥
रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥ ३७ ॥

आप अहेतुकी करुणा मूर्ति हैं आपकी बुद्धि सुतीक्ष्ण और विशाल है। आप सर्वव्यापी एवं साक्षी स्वरूप हैं। आप ही वही सनातन पुरुष हैं ॥ ३२ ॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धु ! इत्यादि ॥ ३३ ॥

आपका जीवन मानव जाति के लिए आदर्श स्वरूप है। आप सभी धर्म सम्प्रदायों के अधिनायक हैं और समानता व मैत्री का सन्देश देने वाले (ईश्वर द्वारा भेजे हुए) देवदूत हैं। आपकी मूर्ति अद्भुत है तथा आप उदार बुद्धि से युक्त हैं ॥ ३४ ॥

आपके लिए स्त्री और पुरुष में कोई भेद नहीं है। आप वेदान्त के समुज्ज्वल भाष्य (स्वरूप) हैं। पण्डित और मूर्ख में आपकी समदृष्टि है। माया में मुग्ध प्राणियों के प्रति आप परम दयालु हैं ॥ ३५ ॥

आप संसार के कल्याणार्थ रामकृष्णरूप में पृथ्वी पर अवतीर्ण परमपुरुष महासमन्वयाचार्य एवं परमेश्वर रूप से विख्यात हैं ॥ ३६ ॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धु इत्यादि ॥ ३७ ॥

प्राक् प्रत्यक् संस्कृतेरास्ते, यः समन्वयरूपवान् ।
विश्वधर्मप्रकाशकः[103] पूज्यो लोकोत्तरः[104] पुमान् ॥ ३८ ॥
वन्दितः शारदादेव्या[105] पूर्णब्रह्म सनातनः ।
माँ काली[106] ठाकुरश्चापि[107] यः सदानन्दपूरुषः[108] ॥ ३९ ॥
'पूर्णावतार'[109] इत्यम् यः शिष्य सन्देह शान्तये ।
यो रामो[110] यश्च कृष्णोऽभूद्रामकृष्णोऽधुनाऽब्रवीत् ॥ ४० ॥
रामकृष्ण ! कृपासिन्धो ! शरणागतवत्सल !
देहि दीने, भक्तिहीने, नित्यं दास्यमतिं प्रभो ॥ ४१ ॥
नामान्याष्टोत्तरशतं पठतां प्रीतिपूर्वकम् ।
भवचिन्ता विपन्नानां शान्तिः शाश्वतिकी भवेत् ॥ ४२ ॥

इति त्र्यम्बकशर्मणा विरचितं "श्रीश्रीरामकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं" समाप्तम् ।



आप प्राच्य और पाश्चात्य संस्कृतियों के समन्वय के मूर्तस्वरूप हैं एवं सार्वभौम धर्म का आचरण करके पूजनीय लोकोत्तर पुरूष के रूप में वन्दनीय हैं ॥ ३८ ॥

माँ शारदा देवी ने आपकी "पूर्णब्रह्म सनातन" नाम से वन्दना की है। वे आप को "माँ काली" "ठाकुर" "सदानन्दमय पुरुष" आदि नामों से सम्बोधित करती थीं ॥ ३९ ॥

शिष्य नरेन्द्र का सन्देह दूर करने के लिये आपने दृढ़ स्वर में कहा था। 'इस बार पूर्णावतार है' एवं त्रेता में जो राम एवं द्वापर में जो कृष्ण थे वे ही इस समय इस युग में रामकृष्ण रूप में आविर्भूत हुये हैं ॥ ४० ॥

हे रामकृष्ण ! हे कृपासिन्धु ! इत्यादि ॥ ४१ ॥

भगवान् श्रीरामकृष्णदेव के इन १०८ नामों का श्रद्धा पूर्वक पाठ करने से संसार की चिन्ता से ग्रसित लोगों को शाश्वत शान्ति प्राप्त हो ॥ ४२ ॥

त्र्यम्बक शर्मा द्वारा विरचित "श्रीश्रीरामकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र" समाप्त हुआ ।



श्रीरामकृष्णस्तुतिः *

श्रीविधुभूषणभट्टाचार्यसप्ततीर्थप्रणीता

गुणातीतचित्तं परज्ञानवित्तं महायोग-साक्षात्कृत-ब्रह्मतत्त्वम् ।
महिम्ना द्युलोक प्रसर्पन्महत्वं भजे रामकृष्णं महाशुद्धसत्त्वम् ॥ १ ॥

वरेण्यं शरण्यं कृपाप्रावृषेण्यं जगन्मातृहस्ताम्बुजस्पर्श धन्यम् ।
महामोहनाशाभिलाषैः प्रपन्नं भजे रामकृष्णं समाधिप्रसन्नम् ॥ २ ॥

समाराध्यतंत्रैर्महाशक्तिमन्त्रैः
समीयागताया जगन्मातुरंके ।
लसद्दिव्यकान्तिच्छटाभिर्विभान्तं
भजे रामकृष्णं त्रिलोक्यां महान्तम् ॥ ३ ॥

जिनका चित्त गुणातीत अवस्था में प्रतिष्ठित है, सर्वश्रेष्ठ भगवद्ज्ञान ही जिन की सम्पत्ति है, जिन्होंने महायोग के द्वारा ब्रह्म का साक्षात्कार किया है, देवलोक तक जिनकी महिमा व्याप्त है, इस प्रकार के परमशुद्ध सत्त्व रूप श्रीरामकृष्ण परमहंसका मैं भजन करता हूँ ॥ १ ॥

जो वरेण्य हैं, शरण देने वाले हैं, कृपा बरसाने वाले हैं और जगन्माता के करकमलों के स्पर्श से धन्य हैं; जो महामोह का नाश करने की अभिलाषा से युक्त हैं एवं समाधि में सदा प्रसन्न रहते हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्ण परमहंस का मैं भजन करता हूँ ॥ २ ॥

जो तन्त्र विद्या की सहायता से सम्यक् आराधना करके महाशक्तिप्रद शक्ति मंत्र के ज्ञाता हैं, पास में आयी जगदम्बा की गोद में सुशोभित हैं, दिव्य कान्ति की छटा से विभासित हैं, तीनों लोकों में महान् उन्हीं श्रीरामकृष्णदेव का मैं भजन करता हूँ ॥ ३ ॥

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

निरुद्धान्तरत्वादनिष्पन्दकायं
परज्योतिरुत्सादितोत्तुंगमायम् ।
स्थितं निर्विकल्पे समाधौ प्रशान्तं
भजे रामकृष्णं परध्यानवन्तम् ॥ ४ ॥

प्रशान्तं महान्तं त्रितापं हरन्तं
कृतान्तं जयन्तं गिरीशं स्मरन्तम् ।
चितब्धौ निमज्जन्तमुग्रं तपन्तं
भजे रामकृष्णं भवानीं भजन्तम् ॥ ५ ॥

यः कामकांचनमोहमुक्तः नित्ये परब्रह्मणि नित्य युक्तः ।
योगीन्द्रवृन्दार्चितपादपद्मं तं नौमिदेवं भवरोगवैद्यम् ॥ ६ ॥

विश्वार्तिखण्डनविभावनबद्धचेता
स्तत्वार्थनिर्णयविधौ समिति प्रमाता ।

अन्तःकरण की वृत्ति निरुद्ध होने पर (समाधि में) जिनका शरीर स्पन्दन रहित हो जाता है, जो ब्रह्मज्योति से मंडित हैं, माया का (अति) लेश भी जो वर्जित समझते हैं, जो निर्विकल्प समाधि में प्रशान्त भाव से अवस्थित हैं और जो परब्रह्म के ध्यान में विलीन हैं उन्हीं श्रीरामकृष्ण परमहंसदेव का मैं भजन करता हूँ ॥ ४ ॥

जो प्रशान्त, महान्, त्रिताप को विदूरित करने वाले, यम को पराजित करने वाले, गिरिराज हिमालय के भगवान् शंकर का स्मरण करने वाले, चित् समुद्र में निमज्जन करने वाले, अति कठोर तपस्या करने वाले तथा भवानी का भजन करने वाले हैं उन्हीं श्रीरामकृष्ण का मैं भजन करता हूँ ॥ ५ ॥

जो काम और कांचन के मोह से विमुक्त हैं, जो सर्वदा नित्य परब्रह्म से युक्त हैं और योगियों का समूह जिनके चरणकमलों का पूजन करता है, उन्हीं संसार रोग के चिकित्सक परमहंसदेव को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

जिनका चित्त संसार की कातरता दूर करने के लिये विशेष चिन्तित

दृष्टया तृणीकृत जगद्विषयाभिलाषं
तं नौमि दुर्लभसमागममिष्ट भाषम् ॥ ७ ॥

यो मृण्मयीं स्वतपसा कृतचिन्मयीं तां मूर्ति
व्यलोकयद सन्मतिभागिनेऽस्मिन् ।
पुत्रीयति प्रतिपदं जगदेकमाता यं
शाम्भवी क्षितितले मम सोऽस्तु पाता ॥ ८ ॥

लीलार्थमीप्सित-विशुद्ध विवाह रंगं
शक्त्या विधित्सितमनोजविलास भंगम् ।
अंगीकृतानघजितेन्द्रिय साधुसंगं
तं नौमि दुर्दमविषयेष्वसंगम् ॥ ९ ॥

है, जिन्होंने तत्त्वार्थ निर्णय के लिये बुलाए गए और एकत्र किये गये समसामयिक सिद्धों व साधकों के अधिवेशन में प्रसन्नतापूर्वक भाग लिया, समस्त जागतिक विषयों की अभिलाषा को तुच्छ समझ कर उनका तृणवत् परित्याग किया एवं जो अप्रत्याशित रूप से आये हुये लोगों से भी मृदु भाषण करते थे, उन्हीं महापुरुष श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

जिन्होंने मिट्टी की प्रतिमा को अपने तप के प्रभाव से चिन्मय कर लिया था, जिनको अपने पुत्र रूप में पाने के लिये जगदम्बा (शिव की गृहिणी) पार्वती पद-पद पर इच्छुक हैं, इस पृथ्वीतलपर मन्द बुद्धि वाले हम लोगों की वे ही रक्षा करें ॥ ८ ॥

जिन्होंने लीला के लिये विशुद्ध गार्हस्थ्यधर्म (विवाह करके) स्वीकार किया, जिन्होंने अपनी शक्ति से कामदेव के गर्व को चूर्ण किया, जिन्होंने निष्पाप और जितेन्द्रिय साधुओं का संग किया था, उन्हीं दुर्दमनीय विषयों से विरक्त महापुरुष श्री रामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

अतुलितमहिमानं ब्रह्मवित्सु प्रधानं
भगवदमृतपानं तत्त्वबोधैकदानम् ।
विबुधनिकरशाश्वद्भक्ति पूजा प्रदानं
कुमति तिमिरहानं नौमि वन्द्यातिमानम् ॥ १० ॥

सगुणमिति यदस्मिन् नामरूप प्रभिन्नं
पुनरपगत भेदं निर्गुणं स्यात्तदेव ।
निजविदित रहस्यं सर्वतो व्याहरन्तं
त्रिदिव वसति पूज्यं नौमि तं ज्ञानवन्तम् ॥ ११ ॥

वलयितविमलार्चिर्वेष्टितं निश्चलांगं
शुचि ललित निजांके न्यस्तहस्ताब्जयुग्मम् ।
मुकुलितकमलाक्षं पंचवट्यां निषण्णं
समधिगतसमाधिं नौमिदेवं प्रसन्नम् ॥ १२ ॥

जो अतुलनीय महिमा से मंडित हैं, ब्रह्मवेत्ताओं में प्रधान हैं, भगवत्कथा रूपी अमृत का पान करने के रसिक हैं, तत्त्वबोध के एक मात्र दाता हैं, पण्डित लोग निरन्तर जिनकी पूजा भक्ति निवेदित चित्त से करते रहते हैं और जो कुबुद्धि रूपी अन्धकार को अनायास ही दूर करने में समर्थ हैं, उन्हीं वन्दनीय और सम्माननीय महापुरुष श्रीरामकृष्णपरमहंसदेव को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १० ॥

इस संसार में जो नाम रूप के द्वारा विभिन्न भावों में प्रतीयमान सगुण ब्रह्म है, वही समस्त भेद शून्य निर्गुण ब्रह्म है—इस प्रकार के रहस्य का अनुभव कर जो सर्वत्र अपने अनुभव को व्यक्त करते थे, उन्हीं देवताओं द्वारा पूजित परमज्ञानी महापुरुष श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ११ ॥

जो वलयाकार विमल किरण-वेष्टित निश्चल अंगयुक्त अपनी पवित्र और सुंदर गोद में दोनों हस्त कमल रखकर पंचवटी में साधना के लिए समाधिमग्न हैं, उन्हीं विकसित कमल के समान नेत्र वाले प्रसन्न देवता श्रीरामकृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १२ ॥

भ्रमरवृतसरोज श्रीमुषाश्मश्रुलेन शशिसित-
रुचिभाजा भ्राजमानं मुखेन ।
जगदघनिकरान्तं वीक्षणैः कारयन्तं
पदकमलनुपेतान् नौमि नः पावयन्तम् ॥ १३ ॥

त्रिभुवनजनसारं सर्वविद्याविहारं
घनकुमतिविदारं ब्रह्मतत्व प्रचारम् ।
तमिह परमहंसं त्यागिवर्यं सदारं
क्षयितदुरितभारं नौमि दिव्यावतारम् ॥ १४ ॥

बीजं मुक्तितरोरनर्थभुजगीसन्दंशनिस्तारकं
धामं प्रेम रसस्य मोहदुरिता शुद्धात्मनां पावकम् ।
यत् साक्षाज्जनयेदमन्दमनसां चिच्छक्तिवृत्युद्भवं
भूयात् तच्चरणं सदैव शरणं श्रीरामकृष्णस्य नः ॥ १५ ॥

जो भ्रमरों के द्वारा आवृत्त कमल के समान दाढ़ी युक्त शोभायमान मुख वाले हैं, जिनका मुखमंडल चन्द्रमाके समान शुभ्र किरण युक्त है एवं स्वच्छ कान्तिमय ज्योति से विभासित है, जो अपनी दृष्टि से संसार के सभी पाप दूर करने में समर्थ हैं, वही महापुरुष श्रीरामकृष्ण अपने चरणकमलों के समीप आये हुए हम लोगों पर कृपा करें। हम लोग उनके चरणों में नतमस्तक हैं ॥ १३ ॥

जो तीनों लोकों में रहने वाले अधिवासियों में सर्वश्रेष्ठ हैं, समस्त विद्याओं में विहार करने वाले हैं, प्रगाढ़ दुर्बुद्धि का ध्वंस करने वाले साधक हैं, ब्रह्मतत्व के प्रचारक हैं, पूंजीभूत पाप के भार का क्षय करने वाले हैं, दिव्य अवतार स्वरूप हैं, कलत्रयुक्त होकर भी त्यागिश्रेष्ठ हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्णपरमहंसदेव को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १४ ॥

जो मोक्ष रूपी वृक्ष के बीज स्वरूप हैं, जो अनर्थरूपी सर्पिणी के द्वारा भीषण रूप से डसलिए जाने पर निस्तार दिलाने वाले हैं, जो प्रेमरस के निलयस्वरूप हैं एवं जो साक्षात् रूप से विशुद्ध अन्तःकरण वाले व्यक्तियों में

अन्तर्ज्योतिरवेक्षण प्रमुदिताम्भोजायमानेक्षणं
चेतोवृत्तिनिरोध निश्चलतनुं निर्बीजयोगस्थितम् ।
प्रह्लादद्युतिसुन्दरोज्ज्वलमुखं निर्वातदीपोपमं
तं वन्दे यतिराजमुन्नतकरं दण्डायमानं गुरुम् ॥ १६ ॥
नानातत्त्वमयं गिरा सरलया गूढार्थविज्ञापकं
प्रेष्ठं यस्य कथामृतं हृदि नृणां संताप संहारकम् ।
प्रज्ञाभास्करदिव्यदीप्त महिम प्रक्रान्तदिङ्मण्डलं
तं वन्दे भगवन्तमिष्टशरणं श्री रामकृष्णाह्वयम् ॥ १७ ॥
सर्वैर्धर्मपथैरनन्तमहिमा लब्धव्य एकेश्वरः
यस्यैतद्वचनाशनिर्विवदतां मोहाद्रिविद्रावणम् ।
शश्वत्साधितसर्वधर्म शरणि तत्वार्थिकल्पद्रुमं ।
तं वन्दे धृतविग्रहामरवरं श्रेष्ठावतारं कलौ ॥ १८ ॥

चेतना शक्ति का उत्पादन करने वाले हैं, सत्पुरुष श्रीरामकृष्ण के वे ही चरण हम लोगों को शरण प्रदान करें ॥ १५ ॥

अन्तर्ज्योति के दर्शन से प्रसन्न खिले हुये कमल के समान जिनके नेत्र हैं, चित्तवृत्तियों का निरोध करने के फलस्वरूप जिनका शरीर निश्चल है, जो निर्विकल्प समाधि में अवस्थित सुन्दर और समुज्ज्वल मुखमंडलयुक्त हैं, वायुरहित दीपक के समान स्वन्दन रहित हैं, हाँथों को ऊँचा करके खड़े हैं, उन्हीं यतिराज गुरु श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १६ ॥

जिनकी सरल वाणी गूढ़ अर्थ को प्रकाशित करने वाली एवं विविध तत्त्वों से परिपूर्ण है, जिनका प्रिय कथामृत मनुष्य के हृदय के सन्ताप को समूल नष्ट कर सकता है एवं जिनके प्रज्ञा रूपी सूर्य की दिव्य प्रदीप्त महिमा चारो दिशाओं में उद्भासित हैं, उन्हीं अभीष्ट शरणयोग्य श्रीरामकृष्ण नामक भगवान् की मैं वन्दना करता हूँ ॥ १७ ॥

समस्त धर्म मार्गों के द्वारा जो एक ही (अद्वितीय) अनन्त महिमाओं से युक्त ईश्वर प्राप्तव्य है, जिनके वचन रूपी वज्र तर्कशील व्यक्तियों के तर्क

नाना मार्ग प्रभिन्ना धृतगतिसरितः सागरं निर्विकारं
गत्वा प्रनष्टभेदाः परिगत समता अन्विताः स्युर्यथास्मिन् ।
तद्वद्यं सर्वभावा विषममतिमता ज्ञाततत्त्वैकसारं
लब्ध्वा नष्टप्रभेदास्तमिह यतिवरं रामकृष्णं प्रवन्दे ॥ १९ ॥

अखण्डानन्द बोधाय पूर्णाय देवतात्मने ।
नमोऽस्तु रामकृष्णाय नित्य चैतन्यरूपिणे ॥ २० ॥

इति विधुभूषण भट्टाचार्यं सप्ततीर्थं प्रणीता "श्रीरामकृष्णस्तुतिः" समाप्तम् ।



रूपी पर्वत को विनष्ट करते हैं, जिन्होंने सभी धर्मों की साधनाकर सभी में सिद्धि प्राप्त की है, जो तत्त्वज्ञान पिपासुओं के लिये कल्पवृक्ष के समान माने जाते हैं, उन्हीं मनुष्य शरीर में अवतरित, देवताओं में श्रेष्ठ, कलियुग में श्रेष्ठ अवतार श्रीरामकृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ ।। १८ ।।

जिस प्रकार विभिन्न मार्गों से प्रवाहित होती हुई विभिन्न नदियाँ निर्विकार समुद्र में जाकर उसी में समता प्राप्त होकर मिल जाती हैं एवं उनका आपसी भेद नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार विभिन्न बुद्धियों से युक्त सभी भाव वाले जिनको प्राप्तकर भेद रहित हो जाते हैं, उन्हीं यतिश्रेष्ठ सार तत्व ईश्वर का साक्षात् दर्शन करने वाले परमहंस श्रीरामकृष्ण की मैं प्रकृष्ट भाव से वन्दना करता हूँ ।। १९ ।।

अखण्ड आनन्द मण्डित ज्ञानस्वरूप, देवतात्मा, पूर्ण परात्पर नित्य चित् रूपी श्रीरामकृष्ण को मेरा प्रणाम स्वीकार हो ।। २० ।।

यह श्री विधुभूषण भट्टाचार्य, सप्ततीर्थ द्वारा प्रणीत "श्रीरामकृष्ण स्तुति" समाप्त हुई ।



श्रीश्रीरामकृष्णोजयति *

अध्यापकश्रीनित्यगोपालविद्याविनोदविरचितम्

उद्धर्त्तुकामं दुरिताब्धिमग्नान् जनान् कृपावश्यतयावतीर्णम् ।
घोरे कलौ सर्वजनैकसेव्यं श्री रामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ १ ॥

कालात्प्रनष्टं शुभयोगमार्गं ज्ञानस्य भक्तेश्च कृतेश्च तं तम् ।
वीक्ष्यात्मयत्नेन विशुद्धसर्वं श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥

गदाधरांशप्रभवं स्वपुण्यैर्गदाधरं शैशवनामधेयम् ।
श्रीरामकृष्णाख्यमतः परन्तं श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥

आबाल्यसन्यासमतानुरक्तं कठोरवैराग्यकृतात्मदर्शम् ।

पाप रूपी समुद्र में निमग्न लोगों का उद्धार करने के लिये परम करुणावश जो इस धराधाम में अवतरित हुये और जो इस घोर कलिकालके अपामर सभी स्त्री पुरुषों के आराध्य हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्णदेव की शरण मैं ग्रहण करता हूँ ॥ १ ॥

कालचक्र के प्रभाव से ज्ञान, भक्ति एवं योगमार्ग को विनष्ट होते देखकर जिन्होंने अपने प्रयत्न से उन सभी लुप्त मार्गों की पुनः प्रतिष्ठा की, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव की शरण मैं ग्रहण करता हूँ ॥ २ ॥

जो अपने पुण्यबल से गदाधर विष्णु के अंश से आविर्भूत हुए एवं शैशव में जिनका नाम गदाधर था और परवर्ती काल में जिन्होंने श्रीरामकृष्ण नाम धारण किया उन्हीं श्रीरामकृष्ण की शरण मैं ग्रहण करता हूँ ॥ ३ ॥

बाल्यकाल से ही जो सन्यास धर्म के प्रति अनुरक्त थे एवं जिन्होंने कठोर वैराग्य की सहायता से आत्मसाक्षात्कार किया था, जिन्होंने समस्त भोग्य

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

पुरीषवत्त्यक्त-समग्रभोगं श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥

इति श्रीनित्यगोपालविद्याविनोदविरचित
"श्रीरामकृष्णोजयति" स्तोत्रं समाप्तम् ।



श्रीरामकृष्णसुप्रभातगीतम्

ओट्टुरउन्निनम्मूतिरिप्पादविरचितम्

लीला मनुष्यो भगवन् क्षुदिराम सूनो
श्री शारदारमण, चन्द्रमणी तनूज ।
सर्वावतार तिलकायित-पुण्यकीर्त्ते
श्रीरामकृष्ण भवतस्तव-सुप्रभातम् ॥ १ ॥

कालीपदाम्बुज समर्चनलालसस्य
तद्विप्रयोग कठिनव्यसनातुरस्य ।
निःशेष रोमविवरश्रृतरक्तबिन्दो-
र्मूर्छामिभूतमनसस्तव-सुप्रभातम् ॥ २ ॥

वस्तुओं को विष्ठा के समान जान कर उनका परित्याग किया था, उन्हीं श्रीरामकृष्ण देव की शरण मैं ग्रहण कर रहा हूँ ॥ ४ ॥

श्री नित्यगोपाल विद्याविनोद द्वारा विरचित "श्रीरामकृष्णोजयति" स्तोत्र समाप्त हुआ ।



हे भगवन्, ! लीलाविग्रहधारी, हे क्षुदिरामनन्दन ! हे शारदाप्रिय ! हे चन्द्रमणितनय ! हे सर्वावतार वरिष्ठ ! हे पुण्यकीर्तिवाले श्रीरामकृष्ण ! दिशा-दिशा में तुम्हारा सुप्रभात घोषित हो ॥ १ ॥

देवी कालिका के चरण कमलों की पूजा करते-करते व्याकुल एवं उनका दर्शन न पाने के विरह के ताप में जिनके शरीर के रोमकूप से निश्चित रूप से रक्त के बिन्दु गिरे हैं, साथ-साथ जो समाधिमग्न हुए, उन्हीं श्रीरामकृष्ण का सुप्रभात दिशाओं में घोषित हो ॥ २ ॥

त्यक्तान्नपानशयनादि शरीर धर्मान्,
शश्वद्धरातललुंठन-कमनीयमूर्ते ।
अम्बाभिधान मुखरीकृत पुण्यकंठ
त्रैलोक्य पावनविभो, तव सुप्रभातम् ॥ ३ ॥

खड्गेण कन्ठदलनाय समुद्यतस्य
सद्योविलोकित जगज्जननीमुखस्य ।
तत्कान्तिवीचि कवलीकृत विग्रहस्य
संमूर्च्छया प्रपततस्तव सुप्रभातम् ॥ ४ ॥

कालीनिरन्तरनिरीक्षणानन्दितस्य
वातात्मजेन परमैक्यमुपागतस्य ।
कामोपधावन परस्य साक्षात्-
कारानुरंजितधियस्तव सुप्रभातम् ॥ ५ ॥

हे त्रैलोक्य पावन प्रभो! हे जगदम्बा का दर्शन न पाने से व्याकुल अन्न, पानी, शयन आदि शरीर के धर्मों का परित्याग करने वाले! हे माँ के विरह में दिन-रात पृथ्वी पर लोट-पोट होने वाले दिव्य मूर्तिधारी! हे सर्वदा "माँ माँ" शब्द से दसो दिशाओं को मुखरित करने वाले! हे सुमधुर कंठ युक्त श्रीरामकृष्ण! दिशाओं में तुम्हारा सुप्रभात घोषित हो ॥ ३ ॥

हे रामकृष्ण! देवी का दर्शन न पाकर कातर होकर तुमने आत्मबलिदान करने के लिए खड्ग धारण किया था एवं उसी क्षण तुम देवी काली के चिन्मय रूप दर्शन में और उनकी दिव्य कान्ति से निःसृत ज्योति समुद्र में निमग्न होकर बाह्यज्ञान शून्य होकर (अचेत होकर) पृथ्वी पर गिर पड़े थे—उन्हीं ऐसे श्रीरामकृष्ण का सुप्रभात सभी दिशाओं में घोषित हो ॥ ४ ॥

सर्वदा जगन्माता का दर्शन करते हुए दिव्य आनन्द का अनुभव करने वाले, भक्ताग्रणी पवन के पुत्र महावीर (हनुमान) के साथ एकात्म भाव रखने वाले, कामना-वासना का हमेशा के लिए परित्याग करने वाले और रात-दिन माता

निष्कामलोभमदमत्सरमानसस्य
सत् शिक्षणार्थकृतदारपरिग्रहस्य ।
वैतृष्ण्य विस्मृत विवाहकथस्य साधोः
श्रीशारदामणिपतेस्तव सुप्रभातम् ॥ ६ ॥
सर्वांगदाहशमनार्थं मुदप्लुतस्य
श्रीभैरवी विहित भेषज निर्वृतस्य।
तंत्रोक्तसाधन सहस्रनिषेवकस्य
सर्वेषु सिद्धिमयतस्तव सुप्रभातम् ॥ ७ ॥
स्वस्याङ्गतः सुकृतपातकरूप पुंसो-
निर्वाणमुत्कटपरस्परमल्लयुद्धम् ।

की चिन्ता में तन्मय रहने वाले, श्रीरामकृष्ण का सुप्रभात सभी दिशाओं में घोषित हो ॥ ५ ॥

काम, लोभ, मद, मात्सर्य रहित होकर भी जिन्होंने संसार में आदर्श की स्थापना करने के लिए स्त्री को ग्रहण किया था, किन्तु वैराग्य की प्रेरणा से मानों (अति वैराग्य से) जो विवाह की बात ही भूल गये थे, पत्नी की खोज या उसका समाचार भी जानने का प्रयास जो नहीं करते थे, वही साधकश्रेष्ठ, श्री शारदा के पति हे रामकृष्ण ! तुम्हारा सुप्रभात चारो दिशाओं में घोषित हो ॥ ६ ॥

जब महाभाव से उत्पन्न भीषण जलन से सारे शरीर में होने वाली पीड़ा से तुम कातर हुए थे, तब भैरवी ब्राह्मणी के निर्देश से तुमने गात्रदाह का उपशम करने के लिए माला आदि धारणकर सुख प्राप्त किया था । तंत्रोक्त नाना प्रकार की साधनाओं के मार्ग में अग्रसर होने वाले एवं अनायास ही सिद्धत्व प्राप्त करने वाले हे रामकृष्ण ! चारो दिशाओं में तुम्हारा सुप्रभात घोषित हो ॥ ७ ॥

निर्वाण प्राप्त करने की साधना के समय तुम्हारे शरीर में पुण्य और पाप पुरुषों के बीच मल्ल युद्ध हुआ था । पुण्य के द्वारा पाप को पराजित

पुण्येन पापहननं च निशाम्य साक्षा-
च्छांन्तज्वरस्य सुखिनस्तव सुप्रभातम् ॥ ८ ॥

स्वर्णे तृणे मलयते विषतुल्यदृष्टे-
र्जीवे शवे नृषु मृगेषु समानबुद्धेः ।
भिक्षौ गृहिण्य विषमं प्रसमीक्ष्यमाण
स्यान्तर्बहिः समदृशस्तव सुप्रभातम् ॥ ९ ॥

भोगेषु योगविभवेषु विरागशालिन्
क्षेत्रेषु वेशभवनेषु परार्थदर्शिन् ।
शिष्टेषु दुष्टनिकरेषु कृपाभिवर्षिण्
त्रैलोक्यपावनयशस्तव सुप्रभातम् ॥ १० ॥

कर निश्चिन्त होकर तुमने आनन्द का अनुभव किया है, और यह घोषणा की है कि पुण्य के द्वारा पाप का विनाश होता है—इस प्रकार के हे रामकृष्ण ! चारो दिशारों में तुम्हारा सुप्रभात घोषित हो ॥ ८ ॥

कांचन, तृण (मृत्तिका), चन्दनादि भोग्य वस्तुओं के प्रति वैराग्य की भावना रखने वाले, जीवित और मृतमानव और पशुओं में समदृष्टि रखने वाले, गृहस्थ और सन्यासी में भेद न मानने वाले, हे रामकृष्ण ! चारों दिशाओं में तुम्हारा सुप्रभात घोषित हो ॥ ९ ॥

सभी प्रकार के भोग्य विषयों से एवं सभी प्रकार के योग्य और ऐश्वर्य से (अणिमादि सिद्धियों से) सदा विरक्त रहने वाले, जमीन-जायदाद, वेश-भूषा और घर के प्रति भी वैराग्य की भावना रखने वाले, दुष्ट और शिष्ट दोनों ही लोगों पर समान भाव से कृपा करने वाले, अपनी कीर्त्ति के द्वारा तीनों लोकों को पवित्र करने वाले, हे रामकृष्ण ! दिशाओं-दिशाओं में तुम्हारा सुप्रभात घोषित हो ॥ १० ॥

अन्तर्बहिश्च भुवनत्रितयं समस्तं
सर्वेश्वरस्य महसातिमितं ततं च ।
आलक्ष्य हर्षजवधर्षित मानसस्य
मत्तप्रणर्तन कृतस्तव सुप्रभातम् ॥ ११ ॥

आलोक्य लोकजननी प्रतिमान् प्रदीपा-
नाराधनोपकरणानि समर्चकांश्च ।
देवालयं च सकलानि चिदात्मकानि
विश्वक्सुमानिकिरतस्तव सुप्रभातम् ॥ १२ ॥

राधाप्रविष्टहृदयस्य, तदात्मकस्य
माधुर्यभावमधुपान मदोत्कटस्य ।
प्रेयावियोगद्रवतप्तकलेवरस्य
निर्जीवसाम्यमयतस्तव सुप्रभातम् ॥ १३ ॥

समग्र विश्व में, चराचर जगत् में अन्दर और बाहर उसी परब्रह्म की दिव्य ज्योति परिव्याप्त है—आब्रह्म स्तम्ब पर्यन्त इस ब्रह्म दर्शन जनित परमानन्द में आप्लुत हो तुम आनन्द में मत्त होकर नाचते थे । हे रामकृष्ण ! तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं—दिशाओं में घोषित हो ॥ ११ ॥

जगज्जनी की प्रतिमा, प्रदीप आदि पूजा के उपकरण, पुजारी और मन्दिर आदि सभी वस्तुओं में तुमने एक ही चेतन सत्ता का दर्शन किया । जिनकी ऐसी कीर्ति दिशाओं में व्याप्त है, उन्हीं श्रीरामकृष्णदेव का सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ १२ ॥

हे रामकृष्ण ! राधाभाव में विभोर तुम्हारे हृदय में श्रीमती राधारानी ने प्रवेश किया एवं उनके प्रेम माधुर्य का पान करके तुम तन्मय हुए । फिर विरह के दावानल में दग्ध होकर तुम निर्जीव प्राणहीन अवस्था को भी प्राप्त हो गये । इसप्रकार के हे रामकृष्ण ! तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं—दिशाओं में घोषित हो ॥ १३ ॥

गोपालनन्दननिरीक्षणविज्वरस्य
तन्नित्ययोगपरमोत्सवनिर्वृतस्य ।
सर्वत्रतत्तनुविलोकनविस्मितस्य
तत्सात्मतांगतवतस्तव सुप्रभातम् ॥ १४ ॥

भक्तोत्तमो महित भागवतं पुराणं
तत्संश्रयश्च भगवानिति कीर्त्तितस्य ।
वस्तुत्रयैक्य परमैक्य महारहस्यं
साक्षाद्विलोकितवतस्तव सुप्रभातम् ॥ १५ ॥

अन्यादृशात्मतपसामनुभावहेतो-
रेकैक रोमविवरात् स्वतनोर्गलन्तीम् ।
आलोक्य कान्तिमभिनन्दितुमक्षमस्य
तन्नष्टयेस्पृहयतस्तव सुप्रभातम् ॥ १६ ॥

हे रामकृष्ण ! नन्दनन्दन श्रीकृष्ण का दर्शन कर तुम परमानन्दित हुए एवं नित्य ही उनके दर्शन जनित आनन्द से उत्फुल्ल थे। सर्वत्र वही कृष्णमूर्त्ति देखकर विस्मितचित्त तुम स्वयं भी कृष्णमय हुए। वही श्रीरामकृष्ण ! तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ १४ ॥

हे रामकृष्ण ! तुम भक्तश्रेष्ठ हो, श्रीमद्भागवत् को आश्रय करके उसके प्रति श्रद्धा अर्पित करने के कारण श्री भगवान् कह कर तुम कीर्त्तित हुए थे। भागवत् भक्त और भगवान् ये तीनों वस्तु या तत्त्व एक ही तत्त्व के प्रदर्शक हैं—इस प्रकार की बात कहने वाले हे रामकृष्ण ! तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ १५ ॥

हे रामकृष्ण ! एकाग्रचित्त से उग्र तपस्या के प्रभाव स्वरूप अपने हर रोम-कूप से निकलते हुए ज्योतिपुंज का दर्शन कर उसको अनुचित समझकर एवं उसके बाहरी प्रकाश की इच्छा से रहित होकर इस ज्योति को अपने अन्दर ही लीन करने के लिए जगन्माता से प्रार्थना करने वाले—तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ १६ ॥

अस्तेयसत्यकरुणादियमैर्युतस्य
कार्त्स्न्येन साधनचतुष्टय पुष्कलस्य ।
अज्ञानतोऽपि कनकादिसमस्तलोह-
स्पर्शाक्षमस्य भगवन्स्तव सुप्रभातम् ॥ १७ ॥

पूगादियत् किमपि वस्तुकरारविन्दे
संगृह्यते यदि कदापि निजोपयुक्त्यै ।
तर्ह्यंजसा कुरूटतामतिमूढ़तां च
संप्राप्य कश्मलभुजस्तव सुप्रभातम् ॥ १८ ॥

संताड़नस्य परकायनिपातितस्य
सुस्पष्टचिह्नमखिलात्मतया स्वदेहे ।
संक्रान्तमद्भुतविमोहित मानुषाणां
नेत्रस्य गोचरयतस्तव सुप्रभातम् ॥ १९ ॥

अचौर्य, सत्य, करुणा आदि यम नियम से युक्त एवं समग्र साधन चतुष्टय संपन्न तुम अनजाने में भी स्वर्ण आदि धातु और द्रव्य का स्पर्श करने से असह्य यंत्रणा का अनुभव करते। इस प्रकार के उन भगवान् श्रीरामकृष्णदेव का सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ १७ ॥

हे रामकृष्ण ! यदि कभी तुम अपने व्यवहार के लिए सुपाड़ी (मुखशुद्धि) आदिसामान्य कोई वस्तु भी अपने हाथ में लेते तो उसी क्षण तुम्हें असहनीय वेदना होती और तुम अपने को घोर अन्धकार में पाते। इस प्रकार के हे रामकृष्ण ! तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ १८ ॥

हे विश्वात्मा श्रीरामकृष्ण ! दूसरे के शरीर पर पड़े हुए आघात का चिह्न तुम्हारे शरीर में देख कर और उस आघात की यन्त्रणा से तुम्हें वास्तव में पीड़ित देखकर सभी लोग विस्मित हुए। इस प्रकार के श्रीरामकृष्ण, तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ १९ ॥

तोतापुरीचरणभक्त, ततोगृहीत
सन्यासदीक्ष विदितस्वपरात्मभाव ।
मासान् षड्ज्झित विकल्पमहासमाधौ
निर्मज्य संस्थित विभो, तव सुप्रभातम् ॥ २० ॥

आचारपूतकरणस्य शुभाशयस्य
बद्धासनस्य विजितानिलपंचकस्य ।
प्रत्याहृतेन्द्रियगणस्य, समाहितस्य
ब्रह्मामृतं रसयतस्तव सुप्रभातम् ॥ २१ ॥

स्वेच्छागृहीत मधुरप्रमदामयस्य
वर्षार्धभुक्तबहुदुःसहयातनस्य ।
इत्थं शनैर्जड़समाधि समुत्थितस्य,
स्थानत्रयं गतवतस्तव सुप्रभातम् ॥ २२ ॥

तुम तोतापुरी के भक्त (शिष्य) थे, उनसे तुमने सन्यास व्रत की दीक्षा ली एवं आत्म तत्त्व में प्रतिष्ठित होने में सहायता प्राप्त की । तुम छः महीने तक लगातार निर्विकल्प समाधि में बाह्य ज्ञान से रहित होकर जड़ की तरह पड़े थे । इस प्रकार के हे श्रीरामकृष्ण ! तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ २० ॥

हे श्रीरामकृष्ण ! शास्त्रोक्त विधि का अनुसरण कर तुमने इन्द्रियों को पवित्र किया एवं सदा शुभ बुद्धि में प्रतिष्ठित हुए । तुम सर्वदा पद्मासन में अवस्थान करते, प्राणादि (प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान) पंच वायु को जीतते, पंचकर्मेन्द्रियों एवं मन—इन ग्यारह इन्द्रियों का प्रत्याहार तुमने किया और दिन रात समाधि में मग्न हो कर ब्रह्मानन्द का आस्वादन किया । वही तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ २१ ॥

हे श्री रामकृष्ण ! तुमने वैष्णवभाव की साधना के अंग स्वरूप स्त्रीभाव का अपने में आरोप किया एवं छः महीने भगवद्विरह की यंत्रणा भोगा एवं

इस्लामतोत्सुक मोहम्मदमूर्तिदर्शिन्
　　　　ईशोर्निरीक्षक, विलोकित गौर कृष्ण ।
तेषामशेषवपुषां स्वतनोः प्रवेशं
　　　　निवर्ण्य विस्मितमते, तव सुप्रभातम् ॥ २३ ॥

साक्षात्कृतेशगिरिजाच्युतरामराधा
　　　　सीतांजनेयनविकृस्तुशचीतनूज ।
अन्यैरदृष्टचरयोगरहस्यवेदिन्
　　　　संक्षुण्ण सर्वसरणे तव सुप्रभातम् ॥ २४ ॥

त्यक्त्वा विकल्परहितां जड़योगनिद्रा
　　　　मम्बाज्ञया कुशलभावमुखस्थितस्य ।

इस भाव में इस साधनकाल में त्रिपुटी की तीनों अवस्थाओं को पार कर तुरीय भाव, जड़ समाधि में अवस्थान कर परमानन्द प्राप्त किया। इस प्रकार से तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ २२ ॥

हे रामकृष्ण ! इस्लाम धर्म की साधना कर तुमने मुहम्मद का दर्शन किया तथा ईसा मसीह गौरांगदेव एव श्रीकृष्ण का भी दर्शन किया। पूर्व में आये हुए तुम्हारे पहले के सभी अवतार गणों को अपने शरीर में प्रवेश करते देखकर आश्चर्यचकित होकर तुमने वह घोषणा की। इस प्रकार से तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ २३ ॥

हे रामकृष्ण ! तुमने महादेव, गिरिजा, नारायण, रामचन्द्र, राधा, सीता, महावीर, हनुमान, मोहम्मद, ईसामसीह एवं गौरांग आदि का दिव्य भाव से दर्शन किया। अन्य साधकों के भी अनुसरण किये गये गूढ़ साधन पंथों में जो उन्हें भी अज्ञात थे, उनमें भी तुम सिद्ध हुये। इस प्रकार तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं दिशाओं में घोषित हो ॥ २४ ॥

हे रामकृष्ण ! जगज्जननी भवतारिणी की आज्ञा से तुमने निर्विकल्प समाधि की उच्च भूमि से उतर कर लोक संग्रह के लिए भावमुख अवस्था में अवस्थान

लोकं महेश्वरमपि स्फुटमेककाले
संपश्यतोऽखिल गुरोस्तव सुप्रभातम् ॥ २५ ॥
लीलासहायविरहव्यथितान्तरंग
तेषामुपागमनदर्शनसुप्रसन्न ।
तेषां पुरः प्रकटितात्ममहाप्रभाव
स्वामिन् जगत्त्रयगुरो, तव सुप्रभातम् ॥ २६ ॥
सच्चिन्मूर्त्ते धृतनरतनोर्लीलया धर्मगुप्त्यै
कृत्वा दीर्घं वहुविधतपां स्येषुसंप्राप्यसिद्धिः ।
निक्षिप्यान्ते स्वयमुपचितं ज्ञानवित्तं स्वशिष्ये,
ष्त्रन्तर्धातुं व्यवसितमतेरस्तु ते सुप्रभातम् ॥ २७ ॥

किया । उस अवस्था में तुमने भूः आदि समस्त लोकों के साथ सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ एकात्मभाव प्राप्त कर संसार के कल्याण के लिए कार्य किया । हे जगद्गुरो ! इस प्रकार तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ २५ ॥

हे रामकृष्ण ! अपने लीला सहायकों के आगमन में विलम्ब होते देखकर विरह से व्यथित चित्त होकर तुमने जगदम्बा से कातर प्रार्थना की एवं उनके आगमन से तुम आनन्दित हुए । हे प्रभु ! उनके समीप जगदम्बा की इच्छा से तुम्हारा महाभाव प्रकट हुआ । हे त्रिजगद्गुरो ! इस प्रकार तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ २६ ॥

हे सच्चिदानन्द विग्रह श्रीरामकृष्ण ! धर्म संरक्षण के लिए तुमने लीलामय नरशरीर धारण कर, दीर्घ काल तक कठोर तपस्या करके उसमें सिद्धि प्राप्त किया एवं अन्तिम महाप्रयाण के लिए इच्छुक होकर अपने शिष्यों में स्वभावतः प्राप्त अपने ज्ञान रत्न को प्रदान किया । ऐसे तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में घोषित हो ॥ २७ ॥

सच्चित्सौख्यैकमूर्ते निजमहिमरतेर्भूरिकारुण्यराशे-
र्विप्राग्र्याल्लब्धजातेर्बहुविधतपसि व्यापृतस्वान्तवृत्तेः ।
प्राप्तब्रह्मानुभूतेः सहचरनिहित स्वीयतेजोविभूते-
रानाकव्यापिकीर्तेरखिलजनपतेरस्तु ते सुप्रभातम् ॥ २८ ॥

इति ओट्टुरउन्निनम्मूतिरिप्पाद विरचितम् "श्रीरामकृष्णसुप्रभातगीतम्" समाप्तम् ।



श्रीरामकृष्णस्तोत्रदशकम् *

स्वामिविरजानन्दविरचितम्

ब्रह्म-रूपमादि-मध्य-शेष-सर्वभासकं
भावषट्कहीनरूप नित्यसत्यमद्वयम् ।
वाङ्मनोऽति-गोचरश्च नेति-नेति भावितं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ १ ॥

हे रामकृष्ण ! तुम ज्ञान और आनन्दघन मूर्तिविशिष्ट हो ! तुम अपनी महिमा में सदा प्रतिष्ठित हो । तुम अनन्त करुणामय हो । तुम्हारा जन्म श्रेष्ठ ब्राह्मण परिवार में हुआ । तुम्हारा चित्त सदा बहुत विचित्र तपस्या में निरत था । तुमने ब्रह्मानुभूति प्राप्त की । तुमने अपनी योगविभूति अपने पार्षदों को दान की । हे त्रिलोक विश्रुतकीर्ति वाले अखिल जनगणों के अधिनायक ! इस प्रकार तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में विघोषित हो ॥ २८ ॥

श्री ओट्टुरउन्निनम्मूतिरिप्पाद द्वारा विरचित यह "श्रीरामकृष्णसुप्रभात गीतम्" समाप्त हुआ ।



जो परब्रह्मस्वरूप हैं, जिनकी सत्ता से आदि मध्य और अंत में सभी वस्तुयें प्रकाश पाती हैं, जो छः विकारों से रहित हैं, वाणी और मन के परे हैं नित्य सत्यस्वरूप हैं, जिनको छोड़कर और दूसरा पदार्थ नहीं है, जो 'नेति-नेति' इस

---

*उद्बोधन कार्यालय के अध्यक्ष की अनुमति से "परमार्थ-प्रसंग" से गृहीत है । रचयिता के द्वारा अनूदित है—प्रकाशक ।

आदितेय भीहरं सुरारिदैत्यनाशकं
साधु-शिष्ट-कामदं महीसुभार हारकम् ।
स्वात्मरूपतत्त्वकं युगे युगे च दर्शितं
तं नमामि देव-देव रामकृष्णमीश्वरम् ॥ २ ॥

सर्व-भूत-सर्ग-कर्म-सूत्र-बन्ध कारणं
ज्ञान-कर्म-पाप-पुण्य-तारतम्य साधनम् ।
बुद्धि-वास-साक्षि-रूप-सर्व-कर्म-भासनं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ३ ॥

सर्व-जीव-पाप-नाश कारणं भवेश्वरं
स्वीकृतं च गर्भवास देह पापमीदृशम् ।

वेद वाक्य की सहायता से चिन्तनीय हैं, उन्हीं परमदेवता भगवान् श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

जो अदिति के पुत्र देवताओं का भय दूर करते हैं, देवताओं के शत्रु दैत्यों के कुल का विनाश करते हैं, साधुओं और शिष्ट लोगों को उनका अभीष्ट देने वाले हैं, पृथ्वी के पाप रूपी भारी भार का हरण करने वाले हैं, अपना स्वरूप और तत्त्व युग-युग में (भक्तों के निकट) प्रकट करने वाले हैं, उन्हीं परम देवता भगवान श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

निखिल प्राणियों को जिन्होंने कर्मसूत्र में बांध रखा है, संसार के ज्ञान-कर्म एवं पाप-पुण्य के तारतम्य का जो विधान करते हैं, मनुष्य के हृदय रूपी घर में जो वास करते हैं, जो निर्लिप्त हैं, साक्षी स्वरूप हैं और सब कर्मों के प्रेरक हैं उन्हीं परमदेवता भगवान् श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ३ ॥

जो सभी जीवों के पापों का नाश करने वाले हैं, ब्रह्माण्ड के ईश्वर होकर भी (जीव के प्रति करुणा के कारण) गर्भ वास एवं इस प्रकार का

यापितं स्वलीलया च येन दिव्यजीवनं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ४ ॥
तुल्य लोष्ट्र-कांचनंच हेय नेय धीगतम्
स्त्रीषु-नित्य-मातृरूप शक्तिभाव भावुकम् ।
ज्ञानभक्ति भुक्ति मुक्ति शुद्ध बुद्धि दायकं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ५ ॥
सर्व-धर्म-गम्यमूल-सत्य-तत्त्व-देशकं
सिद्ध सर्व सम्प्रदाय साम्प्रदाय वर्जितम् ।
सर्वशास्त्रमर्मदर्शि सर्व विन्निरक्षरं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरं ॥ ६ ॥
चारुदर्श-कालिका सुगीत-चारु-गायकं
कीर्तनेषु मत्तवच्च नित्य-भाव विह्वलम् ।

शरीर बन्धन जिन्होंने स्वेच्छा से ग्रहण किया, जिन्होंने दिव्य जीवनयापन कर अपनी बहुत प्रकार की ईश्वरीय लीला प्रकट की, उन्हीं परमदेवता श्रीरामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

मिट्टी के ढेले एवं कांचन में जिनका समज्ञान था, जिनके मन से त्याज्य एवं ग्राह्य बुद्धि तिरोहित हो गई थी, जो सभी स्त्रियों को सर्वदा जगन्माता की महाशक्ति के रूप में देखते थे—ज्ञान, भक्ति, भुक्ति (इस लोक और परलोक का सुख), मुक्ति एवं शुद्ध बुद्धि देने वाले, उन्हीं परम देवता भगवान् रामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

सभी धर्मों के मूल में जो एक सत्य तत्व है उसी का निर्देश देने वाले, सभी सम्प्रदायों में सिद्ध होकर भी साम्प्रदायिक भावहीन, निरक्षर होकर भी सभी शास्त्रों का मर्म जानने वाले और सर्वज्ञ, उन्हीं परमदेवता भगवान् रामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ६ ॥

जिनका रूप अति मनोरम था, मां काली के सम्बन्ध में भजन जो मधुर कंठ से गाया करते थे, कीर्तन में जो उन्मतवत् एवं ईश्वरीय भाव में सर्वदा

सूपदेश-दायकं हि शोक-ताप-वारकं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ७ ॥

पाद-पद्म-तत्व-बोध-शान्ति-सौख्य-दायकं
सक्तचित्त-भक्त-सूनु-नित्य-वित्तवर्द्धकम् ।
दम्भि-दर्प-दारणं तु निर्भयं जगद्गुरुं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ८ ॥

पंचवर्ष बालभाव युक्तहंसरूपिणं
सर्वलोकरंजनं भवाब्धि संग भंजनम् ।
शान्ति-सौख्य सद्मजीवजन्मभीति नाशनं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ ९ ॥

धर्महान हारकं त्वधर्मकर्मवारकं
लोकधर्मचारणं च सर्वधर्मकोविदम् ।

विभोर रहते, भक्तों को सदुपदेश देते, एवं तीनों तापों से जले हुए का शोक और ताप निवारण करते, उन्हीं परमदेवता भगवान् रामकृष्ण को प्रणाम करता हूं ॥ ७ ॥

अपने चरण कमलों के निगूढ़ तत्त्व का ज्ञान, शान्ति एवं सुख देने वाले अनुरक्त संतानगणों का (इस लोक और परलोक में) सदा संवर्धन करनेवाले, दम्भी लोगों का दर्प हरण करने वाले, निर्भय, जगद्गुरु के रूप में जो संसार में अवतीर्ण हुए, उन्हीं परमदेवता भगवान् रामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

जो परमहंस रूप थे जिनका स्वभाव पाँच वर्ष के बालक की तरह था, जो सबको आनन्दित करते, प्राणियों की संसार-आसक्ति तोड़ते, शान्ति और सुख के आलय थे, जन्म-मृत्यु के भय का विनाश करने वाले उन्हीं परम देवता भगवान् श्री रामकृष्ण को प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

जिन्होंने अधर्म की गति निवारण की एवं धर्म की ग्लानि दूर की, जिन्होंने सब धर्मों के विशारद होकर भी लोकशिक्षा के लिए लौकिक धर्म का

त्यागि गेहि सेव्य नित्य पावनांघ्रि पंकजं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम् ॥ १० ॥

स्तोत्र-शून्य-सोमकं सदीश-भाव-व्यंजकं
नित्य-पाठकस्य वै विपत्ति-पुंज-नाशकम् ।
स्यात् कदापि जाप याग-योग-भोग-सौलभम्
दुर्लभं तु रामकृष्ण-राग-भक्ति-भावनम् ॥ ११ ॥

इति श्री विरजानन्दरचितं भक्तिसाधकम् ।
स्तवसारं समाप्तं वै श्रीरामकृष्ण तूणकम् ॥ १२ ॥



आचरण किया, जिनके पवित्र चरण कमल त्यागी और गृहस्थ दोनों प्रकार के भक्तों के लिए ही नित्य सेव्य हैं, उन्हीं परम देवता भगवान् श्रीरामकृष्ण को प्रणाम करता हूं ॥ १० ॥

श्रीरामकृष्ण का माहात्म्य प्रकाशक यह स्तोत्र दशक (सोम = १, शून्य = ०) सत् स्वरूप ईश्वर के भाव का व्यंजक है। जो नित्य इसका पाठ करते हैं उनकी विपत्तियाँ नष्ट होती हैं। जप-तप, याग-यज्ञ, योग-भोग--ये सभी कभी-कभी सुलभ हो सकते हैं, किन्तु भगवान् श्रीरामकृष्ण के प्रति अनुराग और उनकी भक्ति प्राप्त करना दुर्लभ है ॥ ११ ॥

स्वामी विरजानन्द द्वारा तूणक छन्द में रचित "श्री रामकृष्णस्तोत्र-दशक" नामक भक्तिवर्धक यह स्तवन समाप्त हुआ ॥ १२ ॥



श्रीरामकृष्णप्रपत्तिः*

स्वामिहर्षानन्दविरचिता

आकारशून्यं त्रिगुणैर्विहीनम्
ओंकारवेद्यं परमं पवित्रम्।
प्रपञ्चकारं परिपूर्णरूपं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ १ ॥

तिलेषु तैलं दधनीव सर्पि-
र्व्याप्तं च विश्वे परमं निधानम्।
सर्वस्य संस्थं हृदयप्रदेशे
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥

जिनका कोई स्थूल आकार नहीं है, जो त्रिगुणातीत हैं, एक मात्र ॐ कार ही जिनका वाचक शब्द है। परम पवित्र, परिपूर्ण अवतार रूप में जो मानवाकार धारण किये हुये हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्ण की शरण मैंने लिया है ॥ १ ॥

जिस प्रकार तिल में सर्वत्र तेल परिव्याप्त है, दही में घी निहित है, उसी प्रकार समस्त संसार के परम आश्रय हे रामकृष्ण! तुमसे यह चराचर जगत् ओतप्रोत है। सभी के हृदय में अन्तर्यामी रूप से अवस्थित श्रीरामकृष्ण, मैंने तुम्हारी शरण ली है ॥ २ ॥

---

* रामकृष्ण मिशन, आलों, अरुणांचल प्रदेश, प्रकाशित 'स्तुतिः' ग्रन्थ से यह स्तोत्र प्रकाशक की अनुमति से गृहीत हुआ। अनुवाद हम लोगों का है—प्रकाशक।

धर्मस्य वृद्ध्यै सुजनस्य मुक्त्यै-
दुष्टप्रजायाः परिवर्तनाय ।
विश्वेऽवतीर्णं समतीतमायं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥

दीप्ताननं तं परिपूर्णबोधं
सदा समाधौ परिमग्नचित्तम् ।
कृपाभिपूर्णं प्रति तप्तलोकं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥

मृदं सुवर्णं प्रतिपद्य तुल्यं
नारीषु मातुस्समवाप्य भावम् ।
तद्बोधयन्तं च हिताय नृणां
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ ५ ॥

धर्म के प्रसार, साधु-सज्जनों की मुक्ति एवं दुष्ट जनों का स्वभाव परिवर्तन करने के लिए मायातीत रूप तुम इस विश्व में अवतीर्ण हुये हो । इस प्रकार के हे श्रीरामकृष्ण ! मैंने तुम्हारी शरण लिया है ।। ३ ।।

तुम्हारा मुखमंडल दिव्य ज्योति से उद्दीप्त था, तुम ज्ञान स्वरूप हो, तुम्हारा चित्त सदा समाधि में लीन रहना चाहता था । तीनों तापों के द्वारा जले हुये सांसारिक जीवों के प्रति तुम सदा कृपा-वितरण करते हो । हे रामकृष्ण ! इसीलिए मैंने तुम्हारी शरण ली ।। ४ ।।

हे श्रीरामकृष्ण ! मिट्टी और स्वर्ण में तुम्हारा समान ज्ञान था । समग्र नारी जाति के प्रति तुम्हारा मातृभाव था । तुम मनुष्य के कल्याण एवं जागृति के लिये आविर्भूत हुये । इसीलिये हे रामकृष्ण ! मैंने तुम्हारी शरण लिया ।। ५ ।।

गंगासु सिक्तं मलिनाम्बु शुद्धं
रसेन्द्रसक्तैरय एव रुक्मम्।
पापिष्ठमेवं विपुनाति यस्तं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ ६ ॥

पाण्डित्यपूर्णैः कठिनैर्वचोभि-
र्यद्बोधयन्ते श्रुतिसारभूतम्।
येनैव तत्वं सुगमायितं तं
श्रीरामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

दुर्ज्ञेयरूपः शिशुवद्विभाति, सर्वज्ञमूर्तिस्त्वनधीतशास्त्रः।
देवाधिदेवोऽपि नरत्वमाप्तं, तं रामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ॥ ८ ॥

इति 'श्रीरामकृष्णप्रपत्तिः' समाप्ता।



गंगा में मिलकर मैला जल भी जिस प्रकार शुद्ध हो जाता है, रस शक्ति के प्रभाव से पारस पत्थर से स्पर्श कर (द्रव्य गुण से) लोहा भी जिस प्रकार स्वर्ण में परिणित हो जाता है, उसी प्रकार से पापियों को भी जिन्होंने पवित्र किया है, वे ही श्रीरामकृष्ण हैं, मैंने उन्हीं की शरण ली है ॥ ६ ॥

हे श्रीरामकृष्ण ! पण्डित लोग पाण्डित्यपूर्ण दुरूह व्याख्या के द्वारा वेद का जो सार मर्म समझाने की चेष्टा करते हैं, तुमने उसी तत्त्व को अति सहज और सरल भाषा में सभी को समझाया। इसीलिए मैंने तुम्हारी शरण ली है ॥ ७ ॥

तुम्हारा आचरण बालक के समान दिखाई पड़ता है किन्तु तुम्हारा आचरण दुर्ज्ञेय है। शास्त्र आदि का विधि पूर्वक पाठ न करके भी सभी शास्त्रों के मर्म तुम्हें विदित हैं। सभी देवताओं से बड़े होकर भी तुम नर रूप में अवतीर्ण हुए। इसीलिए हे श्रीरामकृष्ण ! मैंने तुम्हारी शरण लिया है ॥ ८ ॥

यह "श्रीरामकृष्णप्रपत्तिः" स्तोत्र समाप्त हुआ।



श्रीगदाधरस्तोत्रम्*

श्रीशरच्चन्द्र चक्रवर्तीविरचितम्

घनचेतनमक्रियमादिमजं, चिर-निश्चल-निष्कल निर्विरुजम् ।
सुख-सद्म-विशुद्ध-विबुद्ध वरं, प्रणमामि-गदाधर ब्रह्मपरम् ॥ १ ॥
शत-सौरि-मुरारि-तरंगयुतं, अयुतायुत-भास्कर-कुक्षिवृतम् ।
सुविशाल-समुद्र-सुदभ्रकरं, प्रणमामि गदाधर ब्रह्मपरम् ॥ २ ॥
क्षुदिराम-विराम-विलासकरं, छलजृम्भितकारण कार्यबलम् ।
जितकांचन-काम-प्रपंचहरं, प्रणमामि गदाधर ब्रह्मपरम् ॥ ३ ॥
युगधर्म-प्रवर्तक-गुप्तनरं, जनपावन-गांग्य-तटावसथम् ।

जो चैतन्यघन, क्रियातीत, आदिपुरुष, जन्मरहित, शाश्वतकाल से अचल, निष्कल, शोक-दुःख के अतीत, परमार्थ का सुख प्राप्त करने के लिए सर्वदा शुद्ध, चैतन्यमय, ज्ञानोदीप्त हैं, उन्हीं परब्रह्म श्री गदाधर को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

सैकड़ों सूर्य और विष्णु आदि देवतागण जिनके समक्ष क्षुद्र हो जाते हैं एवं अगणित सूर्य जिनकी कुक्षि में अवस्थान करते हैं, जिनके दोनों हाथ विशाल समुद्र की तरह प्रसारित हैं, उन्हीं परब्रह्म गदाधर को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

जिन्होंने पिता क्षुदिराम का आनन्दवर्धन किया, मायावश कार्य और कारण का प्रकाश किया, काम कांचन को जीता, प्रपंच से परे उन्हीं परब्रह्म श्री गदाधर को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

जिन्होंने गुप्त अभिनेता की तरह छद्मवेश धारण करके युगधर्म का प्रवर्तन किया, गंगा के पवित्र तट पर निवास किया, बालक की तरह जो आनन्दित

---

* रामकृष्ण मिशन शारदापीठ से प्रकाशित 'आमादेर गान' से गृहीत—प्रकाशक ।

शिशुसौम्यमगम्य-प्रणम्यवरं, प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥ ४ ॥
शिव-केशव-वासव-संगयुतं, अवतारगरिष्ठमरिष्ट-हृतम् ।
अघमोचन दुष्कृत मुक्तिकरं, प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥ ५ ॥
करुणाघन-कर्मकठोर-पणं, गुणहीनमपापमशेष गुणम् ।
युगचक्र-विवर्तक तर्कहरं, प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥ ६ ॥
शुभ बेलूड़-मन्दिर-सन्निहितं, निजशिष्य प्रशिष्य-विशेषरतम् ।
शिवमोक्ष-धनेश्वरमादिगुरुं, प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥ ७ ॥
सुगभीर-समाधिसमुद्र-गतं, कृतभक्तिविकासन-विश्वहितम् ।

हुए एवं जिनका स्वरूप साधारण लोगों के लिए दुरतिगम्य था, वे ही पर-ब्रह्म गदाधर प्रणाम करने योग्य लोगों में श्रेष्ठ हैं, उनको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

जो सर्वदा महेश्वर, विष्णु एवं इन्द्र आदि देवतागणों का संग करते, अवतार वरिष्ठ थे, सभी अशुभों का विनाश करने वाले थे, सब जीवों के पाप का मोचन करने वाले एवं दुष्कर्म करने वालों को भी मुक्तिदान करने वाले थे, उन्हीं परब्रह्म गदाधर को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

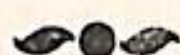
सदैव दयार्द्रचित्त और कठोर साधना में दृढ़ प्रतिज्ञ, गुणातीत, निष्कलुष, सभी गुणों से युक्त, युगधर्म का प्रवर्त्तन करने के सम्बन्ध में समस्त तर्कों का नाश करने वाले, उन्हीं परब्रह्म गदाधर को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

अपने पवित्र बेलूड़-मन्दिर में विराजमान होकर जो अपने शिष्य, प्रशिष्यों का सतत कल्याण करने में रत हैं, शिव स्वरूप हैं, मोक्षदाता एवं सभी ऐश्वर्यों से युक्त हैं, उन्हीं आदिगुरु परब्रह्म गदाधर को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ७ ॥

गम्भीर समाधि समुद्र में निमग्न रहकर भी तुम विश्व के कल्याण में और संसार के मनुष्यों के ज्ञान और भक्ति का विकास करने के लिए सतत

तव शुभनाम-भवतापहरं, प्रणमामि गदाधर-ब्रह्मपरम् ॥ ८ ॥

श्रीशरच्चन्द्रचक्रवतीविरचितं "श्रीगदाधरस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



श्रीरामकृष्णमंगलाशासनम्*

स्वामिअचलानन्दसरस्वतीविरचितम्

मंगलं देशिकेन्द्राय यमिनां चक्रवर्तिने ।
पराशक्तिस्वरूपिण्यै देव्यै भवतु मंगलम् ॥ १ ॥

सत्यसन्धस्य भक्तस्य क्षुदिरामस्य सूनवे ।
गदाधराय मेदिन्यामवतीर्णाय मंगलम् ॥ २ ॥

रूप से नियुक्त थे। तुम्हारा पवित्र नाम आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक तीनों सांसारिक यंत्रणाओं से मुक्ति दिलाता है। अतएव हे परब्रह्म गदाधर! तुमको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

श्री शरच्चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा विरचित "श्रीगदाधरस्तोत्रम्" समाप्त हुआ।



संयमियों में श्रेष्ठ एवं पूजक प्रधान हे रामकृष्ण! तुम्हारा मंगल हो, परम शक्तिस्वरूपिणी देवी शारदा माँ का भी मंगल हो ॥ १ ॥

सत्यपरायण भक्त पं० क्षुदिराम के पुत्र रूप में गदाधर नाम से पृथ्वी पर अवतीर्ण हे रामकृष्ण! तुम्हारा मंगल हो ॥ २ ॥

---

* रामकृष्ण मिशन, आलों, अरुणाचल प्रदेश से प्रकाशित "स्तुति" ग्रंथ से प्रकाशक की अनुमति से लिया गया है। हिन्दी में अनुवाद हम लोगों के द्वारा किया गया—प्रकाशक।

गदाधरसुनाम्ने च भक्त्यावेष्टितचेतसे।
अनादृतान्यविद्याय मंगलं ब्रह्मचारिणे ॥ ३ ॥

भवतारणदक्षायाः सन्निधौ दक्षिणेश्वरे।
अपूर्व कालिका पूजा निरतायास्तु मंगलम् ॥ ४ ॥

मथुरानाथविस्वास सेवानिर्वृतचेतसे।
तपश्चरणशीलाय योगीशायास्तु मंगलम् ॥ ५ ॥

साधकव्याजसन्दिष्ट सर्वान्नाय सुवर्त्मने।
सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय नित्यसिद्धाय मंगलम् ॥ ६ ॥

तपसि ब्रह्मचर्यें च या स्वस्य सहधर्मिणी।
तस्याः श्री शारदादेव्या भर्त्रे भवतु मंगलम् ॥ ७ ॥

तोतापुरीयती प्राप्त चरमाश्रमहेतुके।

गदाधर रूपी उत्तम नाम धारण करने वाले, भक्तिपूर्ण चित्त एवं अध्यात्म ज्ञान के अतिरिक्त अन्य विद्याओं का अनादर करने वाले ब्रह्मचारी हे रामकृष्ण ! तुम्हारा मंगल हो ॥ ३ ॥

संसार जाल से मुक्ति दिलाने वाले, दक्षिणेश्वर की भवतारिणी मां काली की पूजा में आसक्तचित्त हे रामकृष्ण ! तुम्हारा मंगल हो ॥ ४ ॥

मथुरानाथ विस्वास की सेवा से आनन्दचित्त, तपस्यापरायण योगीश्वर, हे रामकृष्ण ! तुम्हारा मंगल हो ॥ ५ ॥

सभी प्रकार के साधनों में सिद्ध होकर तुमने वेद के सुगम मार्ग का उपदेश दिया। सभी प्रकार के तंत्रों से स्वतंत्र स्वरूप, नित्यसिद्ध हे रामकृष्ण ! तुम्हारा मंगल हो ॥ ६ ॥

अखण्ड ब्रह्मचर्य पालन करके तपस्या के समय जो तुम्हारी सहधर्मिणी के रूप में थीं, उन्हीं शारदा देवी के पति रामकृष्ण, तुम्हारा मंगल हो ॥ ७ ॥

सन्यासी तोतापुरी के निकट से प्राप्त सन्यास प्राप्त करने के एकमात्र मूल

समाधौ निर्विकल्पाख्ये सुदीर्घस्थाय मंगलम् ॥ ८ ॥
स्थिताय मातुरादेशात् जगदुद्धारकारणात् ।
पूर्णाऽन्तस्थितौ भावमुखे भवतु मंगलम् ॥ ९ ॥
पश्यते मातरं स्त्रीषु मृत्पिण्डं कांचनं तथा ।
सर्वभूतेषु च ब्रह्म मायातीताय मंगलम् ॥ १० ॥
सदारोऽपि विरक्तानां यतीनां पुरतस्तु यः ।
सदाशिवस्वरूपाय तस्मै भवतु मंगलम् ॥ ११ ॥
ब्रह्मानन्दादिसच्छिष्य गणपूज्यपदाय ते ।
तेषु दीप्तात्मबोधाय परमहंसाय मंगलम् ॥ १२ ॥

कारण स्वरूप निर्विकल्प समाधि में लम्बे समय तक अवस्थान करने वाले हे रामकृष्ण ! तुम्हारा मंगल हो ॥ ८ ॥

माता भवतारिणी के आदेश से संसार का कल्याण करने के लिये अवस्थान करने वाले तथा पूर्ण रूप से अहंकार का परित्याग करने वाले हे रामकृष्ण ! तुम्हारा मंगल हो ॥ ९ ॥

स्त्रियों को जो मातृभाव से देखते एवं कांचन को मिट्टी के समान तुच्छ समझते और समस्त प्राणियों में जो ब्रह्म का दर्शन करते, वे ही रामकृष्ण, तुम्हारा मंगल हो ॥ १० ॥

जो स्त्री ग्रहण करके भी वैराग्यवान् सन्यासियों में अग्रणी थे एवं सर्वदा शिव स्वरूप में (आत्म स्वरूप में) अवस्थान करते, उन्हीं श्रीरामकृष्ण का मंगल हो ॥ ११ ॥

ब्रह्मानन्द आदि श्रेष्ठ सन्यासी शिष्यों के द्वारा जिनके दोनों चरणों की पूजा की गयी एवं उन शिष्यों में जिन्होंने आत्मज्ञान का उन्मेष किया, उन परमहंस श्रीरामकृष्णदेवका मंगल हो ॥ १२ ॥

गर्जद्वेदान्तसिंहेन विवेकानन्दरूपिणा।
अपास्तनिद्रा भूर्येणा कारिताऽस्मै च मंगलम् ॥ १३ ॥

संसारसागरोत्तर सेतु भूतांघ्रि रेणवे।
गुरवे सर्वलोकानां रामकृष्णाय मंगलम् ॥ १४ ॥

'ॐ स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे।
अवतारवरिष्ठाय' रामकृष्णाय मंगलम् ॥ १५ ॥

मंगलं गुरुदेवाय देव्यै मात्रे च मंगलम्।
मंगलं भक्तवृन्देभ्यः सर्वलोकाय मंगलम् ॥ १६ ॥

स्वामिअचलानन्दसरस्वतीविरचितं "श्रीरामकृष्णमंगलाशासनम्" समाप्तम्।



जिन वेदान्तकेशरी विवेकानन्द ने पृथ्वी को आत्मज्ञान से उद्बुद्ध किया था, उनको जिन्होंने आत्मज्ञान में सुप्रतिष्ठित किया, उन्हीं श्रीरामकृष्ण का मंगल हो ॥ १३ ॥

जिनकी चरण रज संसार-समुद्र से पार करने के लिये नाव के समान है, उन समस्त लोकों के गुरु श्रीरामकृष्ण का मंगल हो ॥ १४ ॥

'सभी धर्मों के प्रतिष्ठाता, सभी, धर्मों के स्वरूप एवं सभी अवतारों में श्रेष्ठ' श्रीरामकृष्ण का मंगल हो ॥ १५ ॥

गुरुदेव श्रीरामकृष्ण का मंगल उद्घोषित हो, जगन्माता श्री शारदादेवी का मंगल उद्घोषित हो, सभी भक्तवृन्दों एवं समग्र संसारवासियों का मंगल उद्घोषित हो ॥ १६ ॥

स्वामी अचलानन्द सरस्वती द्वारा विरचित "श्रीरामकृष्णमंगलाशासनम्" समाप्त हुआ।



श्रीशारदादेवीस्तोत्रम्*

(अथ श्री मत्याः शारदादेव्याः स्तोत्रं प्रारम्यते)

स्वामिअभेदानन्दविरचितम्

प्रकृतिं परमामभयां वरदां
नररूपधरां जनतापहराम् ।
शरणागत सेवकतोषकरीं
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥ १ ॥

गुणहीनसुतानपराधयुतान्
कृपयाऽद्य समुद्धर मोहगतान् ।
तरणीं भवसागरपारकरीम्
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥ २ ॥

विषयं कुसुमं परिहृत्य सदा
चरणाम्बुरुहामृत शान्तिसुधाम् ।

परमा प्रकृति, अभया, आनन्ददायिनी वर देने वाली, नररूप धारण करने वाली एवं तीनों तापों का हरण करने वाली, शरण में आये हुये सेवकों को तुष्टि प्रदान करने वाली जगन्माता शारदा देवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

भव सागर, से पार करने वाली नाव स्वरूपा हे मां ! तुम गुणहीन और अपराधी पुत्रों का, जो मोह से ग्रसित हैं, आज कृपा करके उद्धार करो । मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं ॥ २ ॥

हे मनरूपी भ्रमर ! विषय रूपी फूलों का त्याग कर मां के चरण कमलों के अमृत का पान कर, तभी शान्ति पायेगा । मां का चरणामृत संसार

* श्रीमत् स्वामी अभेदानन्द के द्वारा विरचित यह स्तोत्र श्रीरामकृष्ण वेदान्त मठ की अनुमति से लिया गया है—प्रकाशक ।

पिब भृंगमनो भवरोगहरां
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥ ३ ॥
कृपां कुरु महादेवि सुतेषु प्रणतेषु च।
चरणाश्रय दानेन कृपामयि नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥
लज्जापटावृते नित्यं शारदे ज्ञानदायिके।
पापेभ्यो नः सदा रक्ष कृपामयि नमोऽस्तुते ॥ ५ ॥
रामकृष्णगत प्राणांतन्नामश्रवणप्रियाम्।
तद्भावरंजिताकारां प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥ ६ ॥
पवित्र चरितं यस्याः पवित्रं जीवनं तथा
पवित्रता स्वरूपिण्यै तस्यै कुर्मो नमो नमः ॥ ७ ॥
देवीं प्रसन्नां प्रणतार्तिहन्त्रीं, योगीन्द्रपूज्यां युगधर्मपात्रीम्।

के रोगों को दूर करने वाला है। इस प्रकार की जगन्माता शारदा देवी को प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

हे कृपामयी महादेवी मां शारदा ! अपने चरणों में प्रणत बच्चों पर कृपा कीजिये। उन्हें अपनी शरण में लीजिये। आपको नमस्कार है ॥ ४ ॥

हे विज्ञानदायिनी मां शारदा ! आप लज्जारूपी आवरण के द्वारा नित्य ही आवृत्त हैं। आप लज्जाशीला हैं। आप हम लोगों की पाप से सदा रक्षा करें। हे कृपामयी ! आपको सदा नमस्कार है ॥ ५ ॥

स्वयं रामकृष्ण देव ही जिनके प्राण हैं, उनका नाम सुनना जिनको प्रिय लगता है और जो स्वयं श्री परमहंस देव के मातृभाव की मूर्त्ती रूप हैं, उन्हीं मां शारदा देवी के चरणों में मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

जिनका जीवन और चरित्र पवित्र है, जो पवित्रता-स्वरूपिणी है, उन्हें हम सभी नमस्कार करते हैं ॥ ७ ॥

जो आर्त प्राणियों का दुःख नाश करके प्रसन्न होती हैं, योगीन्द्र के द्वारा जो पूजित हैं, करुणास्वरूपा हैं, युग-धर्म की रक्षा करने वाली हैं तथा भक्ति और विज्ञान

तां शारदां भक्तिविज्ञानदात्रीं, दयास्वरूपां प्रणमामि नित्यम् ॥ ८ ॥

स्नेहेन वध्नासि मनोऽस्मदीयं, दोषानशेषान् सगुणी करोषि ।
अहेतुना नो दयसे सदोषान्, स्वांके गृहीत्वा यदिदं विचित्रम् ॥ ९ ॥

प्रसीद मातर्विनयेन याचे, नित्यं भव स्नेहवती सुतेषु ।
प्रेमैकबिन्दुं चिरदग्धचित्ते, विषिञ्च चित्तं कुरु नः सुशान्तम् ॥ १० ॥

जननीं शारदां देवीं रामकृष्णं जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥ ११ ॥

इति श्रीमत् अभेदानन्दस्वामिनाविरचितं "श्रीमत्याः शारदादेव्याः स्तोत्रम्" समाप्तम् ।



को देने वाली हैं, उन दयास्वरूपा मां के चरणों में नित्य प्रणाम करता हूं ॥ ८ ॥

मां ने हम सभी के मन को स्नेह के बंधन में बांध लिया है, हम लोगों के असंख्य दोषों को भी गुण के रूप में ग्रहण कर लिया है और सभी दोषी व्यक्तियों को भी अपनी गोद में प्रेम पूर्वक बैठा लिया है । हे मां ! तुम्हारी इस अहैतुकी कृपा को कौन समझ सकता है ? अर्थात् कोई नहीं समझ सकता ॥ ९ ॥

हे मां ! प्रसन्न होओ । मैं विनीत होकर याचना करता हूँ । सन्तान के प्रति नित्य ही स्नेहवती होओ । हे मां शारदा ! इस त्रिताप दग्ध (जले) चित्त में प्रेम का एक बिन्दु सिंचित करो ताकि हृदय शीतल हो सके, शान्ति पा सके । यह भिक्षा तुम्हारे चरणों में मांगता हूँ ॥ १० ॥

जगद्गुरु श्रीरामकृष्ण देव एवं जगज्जननी मां शारदा देवी के पाद पद्मों में आश्रय कर बार-बार प्रणाम करता हूँ और दोनों के चरण कमलों को हृदय में धारण करता हूँ ॥ ११ ॥

यह श्री अभेदानन्द स्वामी के द्वारा रचित किया गया "श्रीश्रीशारदादेवी-स्तोत्र" समाप्त हुआ ।



श्रीशारदामातृस्तुतिः

साहित्याचार्य, एम० ए०, भण्डारकरोपाह्वनत्र्यम्बकशर्मणाविरचिता

श्री–रामकृष्णमय जीवन सर्वसारा
सारा धनाखिलजनेषु दया प्रसारा।
लोकप्रसूर्विजितजैत्रमनो विकारा
श्रीशारदा विजयते जगदात्मरूपा ॥ १ ॥

सा–म्बां नितान्तमिह सत्त्वगुणप्रधानां
भक्त्या स्वयं भगवता परिपूजितां च।
दीक्षाप्रदानविमलीकृतभक्तचित्त
चिन्तासहस्रपरिहारपरां नमामः ॥ २ ॥

र–मां केशवस्याप्युमां शूलपाणेः
परा मुक्तिदां भक्तिमार्गप्रचाराम्।

श्रीरामकृष्ण जिनके जीवन-सर्वस्व हैं, जो सारी रात जाग कर ईश्वर की आराधना करने वाले सभी मनुष्यों के प्रति दया विस्तीर्ण करती हैं, समस्त लोगों की जो मां हैं, सभी दुर्जय मनोविकारों को जिन्होंने जीत लिया है एवं जो समस्त जगत् की आत्मस्वरूपा हैं, उन्हीं (विश्वजननी) श्री शारदा देवी की जय हो ॥ १ ॥

इस संसार में जो नितान्त सत्त्वगुण प्रधान हैं और जो स्वयं भगवान् श्रीरामकृष्ण के द्वारा भक्तिपूर्वक विविध उपचार से उत्तम रूप से पूजिता हैं एवं जो दीक्षा से पवित्र हुये भक्त के चित्तों की हजारों दुश्चिन्ताओं का विनाश करने में तत्परा हैं तथा सर्वश्रेष्ठ है, उन्हीं माता श्री शारदा देवी को प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

जो विष्णु की लक्ष्मी, शिव की उमा, परमा मुक्तिदात्री, भक्तिमार्ग को प्रचारकारिणी हैं, सदाचार की मूर्ति, सर्वमंगलमयी तथा विश्व की वन्दनीया

सदाचारमूर्ति शिवां विश्ववन्द्यां
नमामीश्वरीं सारदां शारदां ताम् ॥ ३ ॥
दा–क्षिण्यभावपरिपूरित निर्मलान्तां
तां लोकसंग्रहकृते सगुणस्वरूपाम् ।
लोकातिगां स्वयं जातिगुण प्रकारां
सन्मातरं मुहुरहं शिरसा नतोऽस्मि ॥ ४ ॥
मा–र्तण्डदीप्तिरथ दाहकशक्तिरग्नेः
स्वाधारतो न पृथगर्हति गन्तुमेवम् ।
एकात्मतामुपगताऽखिलकार्यजाते
मातः स्वयं भगवतोऽस्य पृथक् प्रकृत्या ॥ ५ ॥
तृ–ष्णात्रयज्वलनशोषितमानसानां
नानाविधानकरणैरनिशं जनानाम् ।

और परमेश्वरी हैं, उन्हीं दुर्गा स्वरूपा श्री शारदा देवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ३ ॥

जिनका निर्मल अन्तःकरण दया भाव से परिपूर्ण है, जो लोक संग्रह के लिये सगुण ब्रह्म स्वरूपिणी हैं, जो लोकातीता हैं एवं स्वयं जाति, गुण और सर्व प्रकार से सम्पन्न हैं, उन्हीं सद्भाव से युक्त माता श्री शारदा देवी को मैं बार-बार सिर झुका कर प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥

जिस प्रकार सूर्य की किरण और अग्नि की दाहिका शक्ति अपने आधारों (अर्थात् सूर्य और अग्नि) से अलग नहीं हो सकती, उसी प्रकार संसार का कार्य करने के लिये आयी हुई माँ (भगवान् श्रीरामकृष्ण देव की शक्ति), तुम भी भगवान् से एक रूप हो । इसलिये उनसे किसी भी प्रकार तुम अपने को अलग नहीं कर सकती ॥ ५ ॥

विषयरूपी नाना प्रकार के उपकरणों के द्वारा जो सभी लोगों का चित्त त्रिविध वासनाओं (पुत्र, वित्त और यश) की अग्नि में शोषित हुआ है, उनकी

या नित्यसान्त्वनपरा विपदो हरन्ती
तां शारदामभयदां शिरसा नमामः ॥ ६ ॥

स्तु-वन्ति मार्तनिखिलाश्रमाणा-
मादर्शभूता त्वमिहैकवारम् ।
स्त्रीभिस्तवांशानुकृतिः कृता चेत्
तज्जीवनं स्यात् सफलं रसायाम् ॥ ७ ॥

ति-ग्मं गृहीत्वा दुरितं परेषां
कष्टान्वितान्यान् सुखिनः करोषि ।
अलौकिकं ते चरितं जगत्सु
स्वयं शिरस्त्वच्चरणे नतं नः ॥ ८ ॥

भण्डारकरोपाह्वेनत्र्यम्बकशर्मणाविरचिता "श्रीशारदामातृस्तुतिः "समाप्ता ।



समस्त विपदाओं का हरण कर जो सर्वदा सान्त्वना देने में तत्पर हैं, उन्हीं अभयदात्री शारदामणि को हम लोग सिर झुका कर प्रणाम करते हैं ॥ ६ ॥

हे मातः ! सभी आश्रम में रहने वालों के लिये तुम आदर्श स्वरूपा हो। इस संसार में मनुष्य यदि एक बार तुम्हारा स्तवन करे और यदि स्त्री जाति तुम्हारे एक अंश का भी अनुकरण करे तो पृथ्वी पर उन लोगों का जीवन सार्थक हो सकता है ॥ ७ ॥

तुम बहुत लोगों का तीव्र पाप (घोर पाप) ग्रहण करके उन दुःख, कष्ट से पीड़ित लोगों को पापमुक्त और सुखी करती हो। समग्र जगत् में तुम्हारा चरित्र अलौकिक और अतुलनीय है। हम लोगों का मस्तक तुम्हारे चरणों में अनायास ही अपने आप झुक जाता है ॥ ८ ॥

भण्डारकर उपनाम युक्त, त्र्यम्बकशर्मा, साहित्याचार्य एम० ए०, द्वारा विरचित "श्रीशारदामातृस्तुतिः" समाप्त हुई।



श्रीशारदादेवीस्तुतिः

न्यायाचार्यपण्डितआनन्दझाविरचिता

रामकृष्णोऽब्रवीत् पत्नीं 'शारदे ! हे सरस्वति !
शक्तिस्त्वं मम विश्वेऽस्मिन् ज्ञान दानार्थमागता' ॥ १ ॥

श्री शारदैकदा प्राह, 'ठाकुरः स्वर्दिवं गतः ।
परं मामत्र मातृत्वप्रचाराय नियुक्तवान्' ॥ २ ॥

परमा प्रकृतिः साक्षात् शक्तिरूपेण भूतले ।
देव श्रीरामकृष्णस्य गुप्तलीला-समागता ॥ ३ ॥

सिद्धा वा साधिका वाऽपि नासीत् साधारणी हि सा ।
मानवं देहमाश्रित्य सा साक्षाद्भवतारिणी ॥ ४ ॥

विविधाः साधनास्तस्या जपो वा लक्ष संख्यकः ।
नासीत् स्वफललाभाय जगत्कल्याणहेतवे ॥ ५ ॥

श्रीरामकृष्ण देव ने कहा है, "हे शारदामणि, सरस्वती ! तुम मेरी शक्ति-रूपा हो । तुम संसार में ज्ञान देने के लिये आयी हो" ॥ १ ॥

एक बार श्री शारदामणि ने कहा था--"ठाकुर (श्रीरामकृष्ण) अपने धाम में चले गये, किन्तु मुझको इस संसार में मातृभाव का प्रचार करने के लिये नियुक्त कर गये" ॥ २ ॥

साक्षात्परमा प्रकृति शारदामणि पृथ्वी पर श्रीरामकृष्ण देव की शक्ति रूप में उनकी रहस्यमयी लीला में सहायिका हो कर आयी थीं ॥ ३ ॥

वे सामान्य नारी या सिद्धा किं वा साधिका भी नहीं थीं । वे मानव शरीर में अधिष्ठिता, संसार का त्राण करने वाली साक्षात् भगवती ही थीं ॥ ४ ॥

उनकी नाना प्रकार की साधनायें अथवा लाख-लाख जप अपना फल प्राप्त करने के लिये नहीं वरन् जगत् के कल्याण के लिये ही अनुष्ठित हुई ॥ ५ ॥

उवाच बहुशो देवी 'दुर्लभं नेशदर्शनम्।
सकृच्चक्षुर्निमीलिते शक्यं कर्तुं न संशयः'॥ ६॥

परवर्तिनि काले तु चक्षुरुन्मीलनेऽपि सा।
सर्वत्रैवाकरोद्देवी निश्चलं ब्रह्मदर्शनम्॥ ७॥

असंख्य-नरनारीणां गणं समवतारयत्।
धृतहस्ताऽमृताम्भोधेस्तीरं श्रीरामकृष्णवत्॥ ८॥

मातृनाम्ना तदाह्वानं श्रवणे तत्सुचेतसि।
सविशेषोर्मिमालायाः सृष्टिः प्रभवति स्म वै॥ ९॥

ये 'मात' रिति तां देवीं सम्बोध्योचुः सभक्तिकाः।
मुक्तेर्मार्गं च तेषां तु कृतेऽकारि तया ध्रुवम्॥ १०॥

सन्यासिनी न सिद्ध्यर्थं साधनायै तथा न च।
पर्वतारोहणं चक्रे पतिसेवापराऽनिशम्॥ ११॥

शारदा देवी ने अनेक बार कहा—"ईश्वर-दर्शन दुर्लभ नहीं है, एक बार आँख बन्द करने पर वह किया जा सकता है, इसमें सन्देह नहीं है" ॥ ६ ॥

परवर्ती समय में भी वे ही शारदा देवी, आँख खुली रहने पर भी, सभी स्थानों में निश्चित भाव से ब्रह्म का दर्शन करती थीं ॥ ७ ॥

श्रीरामकृष्ण देव के समान श्री शारदा देवी ने भी असंख्य स्त्री-पुरुषों का हाथ पकड़ कर उन सबको अमृत समुद्र के तट पर अवतरण कराया ॥ ८ ॥

'माँ' नाम की पुकार सुनते ही उनके कोमल अन्तःकरण में विशेष भाव से आनन्द की तरंगें उठती हैं, इसमें सन्देह नहीं है ॥ ९ ॥

जो लोग भक्तिपूर्वक उन्हें 'मां' कह कर सम्बोधित करते हैं, उन लोगों के लिये वे निश्चित रूप से मुक्ति की व्यवस्था करती हैं ॥ १० ॥

सदा पति सेवा--परायणा होने के कारण--सर्वत्यागिनी होने पर भी वे कभी भी तपस्या किं वा साधना के लिए पहाड़ों पर या पर्वतों पर नहीं गईं ॥ ११ ॥

'मातृदेवो भवे' त्युक्तं 'पितृदेवो' भवेत्यपि।
शास्त्रे तत्र तया प्रोक्तं 'पतिदेवाः' स्त्रियो मताः ॥ १२ ॥

धार्मिके जीवने पत्युः कृत्वा साहाय्यमद्भुतम्।
इत्यस्य ख्यापनं चक्रे पत्नी हि सहधर्मिणी ॥ १३ ॥

सदाक्षरिकभावेन स्वाम्यादेशस्य पालनम्।
आसीत्तस्याः कृते नूनं जीवनस्य परं व्रतम् ॥ १४ ॥

स्त्रीभिः कथमवस्थेयं संसारेऽस्मिन्नदर्शयत्।
आदर्शरूपमास्थाय समग्रे जीवने निजे ॥ १५ ॥

श्रीमत्याः शारदादेव्या जीवनं निर्मलं महत्।
विश्वजगति स्त्री जातेः श्रेष्ठादर्शो न संशयः ॥ १६ ॥

आदर्शरूपिणी कन्या भार्या चादर्शरूपिणी।
सर्वेषां मातृरूपा सा गुरुर्नैवात्र संशयः ॥ १७ ॥

वेद शास्त्रों में कहा है कि, माता और पिता को देवता समझना चाहिए; किन्तु श्री शारदा देवी ने यह भी कहा कि, स्त्रियों को अपने-अपने पति को भी देवता समझना चाहिए ॥ १२ ॥

धार्मिक जीवन में पति की अपूर्व सहायता करके उन्होंने यह घोषणा की कि 'स्त्री प्रत्यक्ष रूप से पति की सहधर्मिणी है' ॥ १३ ॥

उनके जीवन का निश्चित रूप से श्रेष्ठ व्रत था हमेशा पति की आज्ञा का अक्षरशः पालन करना ॥ १४ ॥

उन्होंने अपने जीवन में आदर्श आचरण के द्वारा यह दिखाया कि स्त्रियों को इस संसार में किस प्रकार रहना चाहिए ॥ १५ ॥

श्रीमती शारदा देवी का निर्मल और महान् जीवन सारे जगत् में स्त्री जाति के लिये श्रेष्ठ आदर्श है, इसमें सन्देह नहीं है ॥ १६ ॥

वे आदर्श कन्या, आदर्श पत्नी, सभी की मां एवं आदर्श गुरु थीं, इस विषय में रंचमात्र भी सन्देह नहीं है ॥ १७ ॥

सीता श्रीरामचन्द्रस्य राधाकृष्णस्य या मता ।
सैव श्रीरामकृष्णस्य शारदैक्यं त्रिषुस्थिरम् ॥ १८ ॥

न्यायाचार्यपण्डित-आनन्दझाइत्येतेनविरचिता
"श्रीशारदादेवीस्तुतिः" समाप्ता ।



श्रीश्रीशारदाषट्कम्

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम्

धवलवसन वेशा मूर्तकारुण्यदेहा
सुरनरमुनिवन्द्या रामकृष्णार्चिताद्या ।
सकलगुणयुता नो वेष्टितांगा सलज्जा
जननमरणभंगा शारदा पातु दिव्या ॥ १ ॥

विमलगगनशुद्धा सर्वलोकार्थचिन्ता
विगत विषम दृष्टिश्चिन्मयी शान्तिदात्री ।

जो श्री रामचन्द्र की सीता थीं एवं श्रीकृष्ण की राधा थीं वे ही श्रीरामकृष्ण की शारदा देवी हैं । तीनों में एकता निश्चित है । तीनों एक हैं ॥ १८ ॥

न्यायाचार्य पण्डित आनन्द झा द्वारा विरचित यह "श्री शारदा देवी स्तोत्र" समाप्त हुआ ।



श्वेतवस्त्र पहिने हुये, प्रकट करुणा रूपिणी, देवता-मनुष्य और मुनियों की पूज्या, रामकृष्ण के द्वारा पूजिता, आदिशक्ति स्वरूपा, समस्त गुणयुक्ता, सर्वांग को वस्त्र से ढके हुये, लज्जाशीला, जन्ममृत्यु नाशकारिणी, अलौकिक भाव मण्डिता श्री श्री शारदा देवी हम लोगों की रक्षा करें ॥ १ ॥

निर्मल आकाश के समान शुद्धा, सब लोगों के कल्याण की चिन्ता में निमग्ना, भेद-दृष्टि-रहिता, ज्ञानमयी, शान्ति देने वाली, त्रिभुवन के जीवों को

त्रिभुवनजनधात्री मंगला मर्त्यभूमौ
अवतरति परेशे स्वेच्छयाविर्भवन्ती ॥ २ ॥

त्रिपुरदहनकान्ता रामचन्द्रस्य कन्या
निखिलभुवन कर्त्री मार्जनीहस्तमुष्टिः ।
भवनिगड़विमुक्तिर्याद्यमाया-विमुग्धा
नरपतिगण शास्त्री दैन्य दुःखे धरित्री ॥ ३ ॥

प्रलयसमय घोरा रोषसंधातदेहा
स्तनितभयविधात्री कालिका-विश्वहर्त्री ।
अमरनिकरवन्द्या देवदेवोरुवासा
नटनहसनलास्या शारदा भिन्नरूपा ॥ ४ ॥

दशभुजदशशस्त्रा दिव्यमोदा सुहास्या
गुहगणपतिभाता, दक्षकन्या शरण्या ।

धारण करने वाली, मंगलदायिनी वे ही शारदा देवी परमेश्वर (रामकृष्ण) के अवतीर्ण होने पर इस मर्त्य जगत् में स्वेच्छा से आविर्भूत हुयी हैं ॥ २ ॥

जो त्रिपुरारि महादेव की पत्नी पार्वती थी वे ही विप्र रामचन्द्र की कन्या हैं; जो सभी भुवनों की अधीश्वरी हैं, वे ही झाड़ू हाथ में लेकर (घर) साफ करने वाली है; जो संसार बन्धन का छेदन करने वाली हैं, वे ही आज माया में विमुग्ध दीखती है; जो राजाओं के भी ऊपर शासन करने वाली हैं, वे ही दरिद्रता ओर दुःख में रह कर भी पृथ्वी के समान सहनशीला हैं ॥ ३ ॥

जो प्रलय काल के समान भयंकरी हैं, क्रोध में जिनका शरीर कांपता है, जिनकी गर्जना भयभीत करने वाली है, जो संसार का नाश करने वाली हैं, देवताओं की भी वन्दनीया हैं एवं महादेव के उरु मूल में निवास करने वाली काली है, वे ही आज लीलावश हास्यवदना मां श्री शारदा देवी के रूप में, भिन्न रूप में, विराजमान हैं ॥ ४ ॥

दस हाथों में दस प्रकार के शस्त्रों को धारण करने वाली, अलौकिक

विनतभयविहन्त्री राज्यलक्ष्मी-
विधिहरिभव पात्रं शारदा भूतधात्री ॥ ५ ॥

जपनभजनहीना किं नु पुत्राः कुपुत्रा
व्यसनगण नियुक्ताः किं नु हेया जनन्या ।
इति गुणततिशून्यान् शारदे त्रायतां नो
विदित सकल दोषा नैव माता जहाति ॥ ६ ॥

सर्वदेवात्मिकां वन्दे सर्वदेवमयीं भजे ।
शारदां प्रार्थये भक्ति तत्पादाम्बुरुहद्वये ॥ ७ ॥

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्येनविरचितं "श्रीश्रीशारदाषट्कं" समाप्तम् ।



आनन्द से युक्ता, हँसने वाली, कार्तिक और गणेश की माता, प्रजापति दक्ष की कन्या, सभी को शरण देने योग्य, विनम्रतापूर्वक मस्तक झुकाये हुए भक्तों का भय दूर करने वाली, पार्वती, राज्यलक्ष्मी, ब्रह्मा, विष्णु और शिव की आधार-रूपिणी श्री शारदा देवी चेतन और अचेतन सभी प्राणियों को धारण की हुई हैं ॥ ५ ॥

माँ क्या जप और साधन-भजनहीन पुत्रों को कुपुत्र समझती है ? बहुत ही कुकर्म करने वाले पुत्रों को क्या वह त्यागती है ? पुत्र के सभी दोष जानकर भी माँ उसको नहीं त्यागती है । यह बात जानकर ही हे माँ शारदा ! हम गुणहीन पुत्रों का आप उद्धार करें ॥ ६ ॥

समस्त देवदेवी स्वरूपा शारदा माता की मैं वन्दना करता हूं । सर्व देव-मयी शारदा मां का मैं भजन करता हूँ । उनके दोनों चरण कमलों में मैं भक्ति की प्रार्थना करता हूं ॥ ७ ॥

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य द्वारा विरचित "श्रीश्रीशारदाषट्कं" स्तोत्र समाप्त हुआ ।



श्रीशारदामातृसप्तकम्*

ध्यायेत्सदाहृदय पद्मसुखासनस्थां
सच्चिन्मयीं सकलधर्मसमन्वयां ताम् ।
श्रीरामकृष्णचरितामृत पुण्यपूरां
श्रीशारदां त्रिजगतां जननीं शरण्याम् ॥ १ ॥

शुभ्रज्योतिर्मयीं देवीं आत्मबुद्धि-प्रकाशिनीम् ।
शिवां शिवकरीं सत्यज्ञानानन्दातिलक्षणाम् ॥ २ ॥

रामकृष्णमहाभावां विवेकानन्ददायिनीम् ।
प्रसन्नवदनां देवीं शारदां प्रणतोऽस्म्यहं ॥ ३ ॥

नित्यशुद्धा च या देवी पराभक्तिस्वरूपिणी ।
अप्रमेयप्रभावात् या संसारार्णवतारिणी ॥ ४ ॥

भक्त अपने हृदय कमल में सुखासन में विराजमान, सच्चिदानन्दमयी, सभी धर्मों की समन्वयरूपिणी, श्रीरामकृष्ण के चरितामृत रूपी पुण्य से परिपूर्ण, तीनों जगतों की माता, शरणागतवत्सला, उन्हीं श्री शारदा देवी का सदा ध्यान करे ॥ १ ॥

शुभ्र ज्योतिर्मयी, दिव्या, आत्मबोध प्रकाशिनी, मंगलस्वरूपिणी, मंगल-कारिणी, सत्य, ज्ञान, आनन्द आदि जिनका स्वरूप है, ऐसी श्री शारदा देवी का हृदय में सदा ध्यान करे ॥ २ ॥

श्री रामकृष्ण के महाभाव से सम्पन्न, विवेक और आनन्द प्रदायिनी एवं प्रसन्नवदना श्री शारदा देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

जो देवी नित्यशुद्धा हैं, पराभक्तिस्वरूपिणी हैं, अपरिमित शक्ति के द्वारा जो संसार समुद्र के जीवों का उद्धार करने वाली हैं, उन्हीं श्री शारदा देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

---

* इस स्तोत्र के रचयिता का नाम अज्ञात है—प्रकाशक ।

ज्ञानविज्ञान सम्पूर्णा प्रत्यक्चैतन्य रूपिणी।
अभया वरदा वीर्यश्रद्धाभक्तिवरप्रदा ॥ ५ ॥
अमृता परमानन्दानित्यमुक्तिप्रदायिनी।
अपारकरुणापूर्णा मातृदेवी जगन्मयी ॥ ६ ॥
रामकृष्णपराशक्तिः पराविद्या महेश्वरी।
माता वसतु नश्चित्ते शारदा सर्वमंगला ॥ ७ ॥

इति शम् ॥



वन्देमातरम्

श्रीओट्टुरुउन्निनम्पूतिरिप्पादवि रचितम्

बङ्गक्षौण्यां रामचन्द्र द्विजातेर्धर्मक्षेत्रे लीलयैवावतीर्णाम्।
सत्यज्ञानानन्दवात्सल्यमूर्ति नित्यं वन्दे मातरं शारदाख्याम् ॥ १ ॥

ज्ञान और विज्ञान से परिपूर्ण, अन्तरात्मस्वरूपिणी, अभया, वरदात्री, वीर्य, श्रद्धा, भक्ति आदि प्रदान करने वाली उन्हीं श्री शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥

अमृत और परम आनन्दस्वरूपा, नित्य मुक्ति प्रदायिनी, अशेष करुणा से पूर्ण, जगन्मयी मातृदेवी श्री शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ६ ॥

श्रीरामकृष्ण के प्रति एकाग्र भाव से अनुगता, पराशक्ति, पराविद्या स्वरूपिणी महेश्वरी और सर्वमंगला वे ही मां शारदा देवी हमारे अन्तःकरण में निवास करें ॥ ७ ॥

यह "श्रीशारदामातृसप्तक" नामक स्तोत्र समाप्त हुआ।



पश्चिम बंगदेश में ब्राह्मण रामचन्द्र के घर धर्मप्रधान स्थान में (जयरामबाटी में) लीला से अवतीर्णा, सत्य, ज्ञान और वात्सल्य की मूर्तिस्वरूपा श्री शारदादेवी नामधारिणी श्री मां की मैं सदा वन्दना करता हूं ॥ १ ॥

देहासक्त्या क्लिश्यमानप्रपुंसां
सुप्तं बोधं सम्यगुन्मीलयन्तीम् ।
शोकं मोहं चाशु निर्मूलयन्तीं
भक्त्या वन्देमातरं शारदाख्याम् ॥ २ ॥

मायासिन्धौ मज्जतः प्राणिवर्गान्
प्रेमोदारेणात्मपादप्लवेन ।
उद्धृत्य द्रागस्य पारं नयन्तीं
मूर्ध्ना वन्देमातरं शारदाख्याम् ॥ ३ ॥

तच्छब्दार्थश्चण्डिकेति प्रसिद्ध-
श्छन्दोवासच्छादितो राजतीति ।
पश्यन्नार्चद् रामकृष्णोऽपि यां तां
दोर्भ्यां वन्देमातरं शारदाख्याम् ॥ ४ ॥

शरीर में आसक्ति के कारण क्लिष्ट हुए प्राणियों के प्रसुप्त ज्ञान को सम्यक् रूप से जागृत करने वाली तथा शोक और अज्ञान को शीघ्र निर्मल करने वाली मां श्री शारदा देवी की मैं भक्ति पूर्ण हृदय से वन्दना करता हूं ॥ २ ॥

माया समुद्र में निमग्न प्राणियों को अहैतुक प्रेमवश उदार अपने श्री चरणरूपी पतवार की सहायता से उद्धार पूर्वक इस संसार समुद्र के पार जो शीघ्र ही ले जाती हैं उन्हीं श्री शारदानामधारिणी माँ की मैं सिर झुकाकर वन्दना करता हूँ ॥ ३ ॥

"ॐ तत्सत्" किंवा "तत्वमसि" मंत्र के 'तत्' शब्द का अर्थ चण्डिका नाम से प्रसिद्ध है एवं वे अर्थात् चण्डिका देवी वेदरूपी वस्त्र से समाच्छादित होकर विराजमान हैं। यह देखकर (अर्थात् प्रत्यक्ष दर्शन करके) पति श्रीरामकृष्ण देव ने दोनों हाथों से जिनकी पूजा की थी, उन्हीं श्री शारदा माँ की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ४ ॥

रम्भादीनां स्वर्वधूनामधीशां
राधादीनां मानुषीणामधीनाम् ।
आर्तत्राणैकार्पित स्वाखिलार्थां
भूयो वन्दे मातरं शारदाख्याम् ॥ ५ ॥

इतिश्रीओट्टुरुउन्निनम्पूतिरिप्पादविरचितं "वन्देमातरम्" स्तोत्रं समाप्तम् ।



श्रीशारदाष्टकम्

श्रीमतीदेवकी, के, मेननविरचितम्

दक्षिणेश्वरपुराधिवासिनि दक्षजाभगिनि दुःखनाशिनि ।
स्वर्णदीतटनिवासमोदिनि पाहि मां जननि शारदाम्बिके ॥ १ ॥

सत्त्ववर्णविमलाम्बरावृते ध्यानगे दरानिमीलितेक्षणे ।
कंकनोल्लसित सत्कराम्बुजे पाहि मां जननि शारदाम्बिके ॥ २ ॥

जो रम्भा आदि स्वर्गवधुओं (अप्सराओं) की अधीश्वरी हैं (अर्थात् वे लोग जिनको आज्ञा के अधीन हैं), राधा आदि नारियों के कृष्ण प्रेम की जो अधीन है और आर्तों के त्राण के लिए जिन्होंने अपना सब कुछ (भक्ति-मुक्ति रूपी धन) अर्पित किया, उन्हीं श्री शारदा देवी नामधारिणी मां की मैं फिर वन्दना करता हूँ ॥ ५ ॥

श्रीओट्टुरूउन्निनम्पूतिरिप्पाद द्वारा विरचित यह 'वन्देमातरम्" स्तोत्र समाप्त हुआ ।



हे दक्षिणेश्वर-पुर-निवासिनी ! दक्षसुता भगिनी, दुःखनाशिनी, गंगातट निवास प्रमोदिनी, मां शारदादेवी ! मेरी रक्षा करो ॥ १ ॥

विमल श्वेतवर्ण के वस्त्र से आवृत्त, ध्यान निमग्न, ईषन्निमीलित नेत्रों वाली, सुन्दर कर कमलों में शोभायमान कंगन धारण करने वाली, मां श्री शारदा देवी ! तुम मेरी रक्षा करो ॥ २ ॥

शैशवे धृतविवाहमंगले तापसेन्द्रपति पूजितेऽनघे।
सर्वमंगल गुणैर्विराजिते पाहि मां जननि शारदाम्बिके ॥ ३ ॥
ब्रह्मयोगिसहधर्मचारिणि प्रेमवर्षिणि महातपस्विनि।
मौक्तिकामलवचोविलासिनि पाहि मां जननि शारदाम्बिके ॥ ४ ॥
भक्तलोकभवभेदकारिणि दुष्टपावनि सदा विरागिनि।
ब्रह्मवादिनि तमोनिवारिणि पाहि मां जननि शारदाम्बिके ॥ ५ ॥
श्री जगत्गुरु वचः प्रचारिणि धर्मरक्षिणि गुणानुरंजिनि।
योगिवृन्द-जननीष्टदायिनि पाहि मां जननि शारदाम्बिके ॥ ६ ॥

बाल्यकाल में विवाह का मंगलसूत्र धारण करने वाली, तपस्वी श्रेष्ठ, पति के द्वारा पूजिता, हे निष्पापे ! हे समस्त मंगल गुण समन्विते ! मा श्री शारदा देवी ! तुम सर्वदा मेरी रक्षा करो ॥ ३ ॥

हे ब्रह्मवित् योगी (पति) के साथ धर्म का आचरण करने वाली ! हे प्रेमाम्बु वर्षण करने वाली ! हे महातपस्विनी ! हे मुक्ता मणि के समान विमल वचन बोलने वाली ! हे जगदम्बिके मां श्री शारदादेवी ! तुम मेरी सर्वदा रक्षा करो ॥ ४ ॥

हे भक्तों के संसार भय का नाश करने वाली, दुष्टों को पवित्र करने वाली, सदा वैराग्यवती, ब्रह्मवादिनी, शरण में आये हुये लोगों के अज्ञान रूपी अन्धकार को नष्ट करने वाली, जगदम्बिके, मां श्री शारदा देवी ! तुम मेरी सदा रक्षा करो ॥ ५ ॥

हे जगद्गुरु श्रीरामकृष्णदेव की वाणी का प्रचार करने वाली ! धर्म की रक्षा करने वाली, उत्तम गुणों में अनुराग करने वाली, योगियों को मां, अभीष्ट फल देने वाली, हे जगदम्बिके मां शारदा देवी ! तुम मेरी सदा रक्षा करो ॥ ६ ॥

भेषजं भवरोगाणां ज्योतिरज्ञाननाशनम् ।
त्वत्पादपंकजं देवि, प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥ ७ ॥
मातरं सर्वलोकानां सर्वमंगलविग्रहाम् ।
भक्तेष्वमितकारुण्यां मातृदेवीं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥

इति श्रीमतीदेवकी, के, मेननविरचितं "श्रीशारदाष्टकम्" समाप्तम् ।



श्रीशारदामणिमातृभावस्तुतिः*

डा॰ श्रीयतीन्द्रविमलचौधरिणाविरचिता

श्रीशारदामातृसारात्सारा ।
अग्निवाय्विन्द्रदेवा यदिस्युर्मतिविक्तवा
उमाकारा सा हि सन्तानोद्धारा ।

संसार के रोग-समूहों की औषधि स्वरूपा, अज्ञान-नाशक ज्ञान की प्रभा स्वरूपा, हे देवि ! तुम्हारे चरणकमलों में बार-बार प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

सब लोगों को माँ, सभी का कल्याण करने वाली, पवित्र शरीर धारण करने वाली, शरणागत भक्तों के प्रति असीम कृपा प्रदर्शित करने वाली, मातृ देवी (मां श्री शारदादेवी) को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

श्रीमतीदेवकी के मेनन द्वारा रचित यह 'श्रीशारदाष्टकम्" समाप्त हुआ ।



जननी शारदामणि मातृमण्डली की सार की भी सार हैं ।

अग्नि वायु, इन्द्र आदि देवताओं की बुद्धि जब भ्रमित होती है, तब सन्तानों का उद्धार करने के लिए मां उमा हैमवती होकर दर्शन देती हैं । पुत्रगण प्रश्न

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

सुत-'किमेतद्‌यक्ष'मिति युगयुगान्त-प्रणतार्ति
सुसमाधान-सुखदान-सदातत्परा ॥ १ ॥

त्रेताद्वापरभरणी सीताराधारूपिणी
कलौ यशोधरा च गौरमनोहरा।
युगे युगे मे जननी प्रभुध्यानसारखनिः
शारदा तु मनिमणिः सर्वयुगोत्तरा ॥ २ ॥

'मातृभावो हि गरिष्ठः सख्यमधुरयोः श्रेष्ठः'
रामकृष्ण-मत-नित्य-सुख-प्रचारिणी।
शारदाम्बिकामणिः मातृभावशिरोमणिः
काश्यां विमोचिता यया पथचारिणी ॥ ३ ॥

करते हैं, यह सामने विराट् ज्योतिः पुंज युक्त यक्ष कौन है ?'' युग-युगान्तर से सन्तानों के इन प्रश्न समूहों की सुन्दर मीमांसाकर जननी उनको सुख देने के निमित्त व्याकुल रहती हैं ॥ १ ॥

उन्होंने त्रेता युग में सीता, द्वापर में राधा, कलियुग में यशोधरा और विष्णुप्रिया रूप से उन सभी का भरण पोषण किया है। युग-युग में मेरी मां प्रभु अर्थात् युगावतार के ध्यान की श्रेष्ठ वस्तु हैं, अर्थात् परमेश ने निरन्तर मेरी मां का ही ध्यान किया है। इस प्रकार की जननियों में भी जननी शारदा सत्य ही मणियों की भी मणि हैं। सभी युगों की विश्वधात्री जननियों को भी वे सर्वतोभाव से अतिक्रम कर गयी हैं (कारण बारह वर्ष तक जप करने की माला साधना की सिद्धि श्रीठाकुर ने फलहारिणी काली पूजा की रात्रि में मां के ही चरणों में समर्पण किया था)॥ २ ॥

जननी श्रीशारदा माताओं में भी सबसे श्रेष्ठ हैं। वे नित्य ही ठाकुर का वही विशिष्ट मतः 'मातृभाव ही श्रेष्ठ है; सख्य और मधुर भाव से भी श्रेष्ठ है' आनन्दपूर्वक प्रचार कर रही हैं। जिन्होंने काशी में रास्ते की भिखारिणियों को स्वतः प्रणोदित होकर मुक्तिदान किया था, उन्हीं श्रीशारदामणि की कृपा का अन्त नहीं है--वे विश्व की माताओं में शिरोमणि हैं ॥ ३ ॥

मातृमहानामामृत-पान-धन्य-खग-चेतः
चन्दनापि कृतार्था पिंजरवासिनी ।
धेनुकालीश्यामली युगपच्च वत्सावली
हाम्बा शब्दायते करतलार्थिनी ॥ ४ ॥
जननी-प्रसादधन्यो नरेन्द्रः सुत वरेण्यः
भुवनविजयी प्राह 'माता गरीयसी' ।
तथा नागमहाशयः गृहस्थसन्यासाश्रय
उच्चै 'र्मातृदया ज्यायसी श्रेयसी' ॥ ५ ॥
प्राप्तनित्यमात्राशिष-भक्तभैरवगिरीशः
सततमकथयन् 'माता दयालुतरा' ।
जननीपादसम्बलो भणति यतीन्द्रविमलोऽ-
म्बा शारदातुला नित्या परात्परा ॥ ६ ॥

डॉ० श्रीयतीन्द्रविमलचौधरिणविरचिता "श्रीशारदामणिमातृभावस्तुतिः" समाप्ता ।



माँ द्वारा पालित 'चन्दना' नामक पक्षी —अपने प्राण और माँ का महा-नामरूपी अमृत पानकर धन्य हुई । पिंजड़े में वास करने पर ही उसका जीवन कृतार्थ हुआ । 'काली' और 'श्यामली' गाय एवं साथ-साथ बछड़े भी माँ के हाथ का स्पर्श पाकर निरन्तर 'हाम्बा' शब्द करते ॥ ४ ॥

जननी के स्नेह से धन्य सुतश्रेष्ठ नरेन्द्रनाथ ने विश्व विजय करके आकर कहा—'पिता की अपेक्षा माता बड़ी है ।' समान भाव से गृहस्थ में भी सन्यासी नाग महाशय ने भी उच्च स्वर से कहा है--'पिता से माँ दयालु हैं' ॥ ५ ॥

भक्तभैरव गिरीश ने चिरकाल पर्यन्त माँ के आशीर्वाद की प्रार्थना की एवं पाया भी । वे भी हमेशा कहते, 'माँ की दया ही अधिक है ।' माँ के दोनों चरण यतीन्द्र विमल के एकमात्र सम्बल हैं । उसी सम्बल पर भरोसा कर उन्होंने कहा है-- माँ श्री शारदा अतुला हैं, वे ही सनातनी हैं, वे ही सर्वश्रेष्ठा हैं' ॥ ६ ॥

डॉ० श्री यतीन्द्रविमलचौधरी द्वारा विरचित यह "श्री शारदामणि मातृभाव-स्तुति" समाप्त हुई ।



श्रीशारदानवकम्*

स्वामिअमृतानन्दविरचितम्

श्री शारदेश्वरि महेश्वरि मुक्तिदात्रि
योगेश्वरार्चितपदे जगदेकवन्द्ये ।
श्रीरामकृष्णवरशिष्य नते दयार्द्रे
याचेऽम्ब देवी ! चरणाश्रय भक्तिभिक्षाम् ॥ १ ॥

संसारदावानल दग्धचित्ता
ये चापि दीनाः कुजना भवन्तु ।
स्मृत्वैकवारं तव पुण्यनाम
अहोऽद्भुतं भागवता भवन्ति ॥ २ ॥

भो मानवाः ! शृणुत कुत्र वृथा भ्रमन्तः
संसारघोरमरुभूमि मरीचिकाभ्यः ।
मातुः पदाम्बुजरुहमेव समाश्रयन्त
आमुष्मिकैहिकफलं परमं लभध्वम् ॥ ३ ॥

हे माँ ! तुम इस संसार में एकमात्र वन्दनीया हो, योगिगणों की पूज्या हो, मुक्तिदात्री हो, सारतत्व प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठा हो, श्रीरामकृष्ण परमहंस आदि महापुरुषों के द्वारा आराधित महेश्वरी हो एवं संसार के सभी जीवों के प्रति दयालु हो । इसलिए मैं तुम्हारे चरणों में भक्ति की कामना करता हूँ ।। १ ।।

विषय (संसारी) की अग्नि में दग्ध मानव दीन और पथभ्रष्ट होकर भी यदि एकबार तुम्हारे नाम का स्मरण करे तो वह भी परम भागवत हो जायेगा । यह तुम्हारे नाम की अपूर्व महिमा है ।। २ ।।

हे मानव ! संसार की भयंकर मरीचिका स्वरूप गोरखधन्धों में पड़कर क्यों वृथा में भ्रमण कर रहे हो ? श्री माँ के चरण कमलों का आश्रय करके ऐहिक और पारलौकिक दोनों ही प्रकार के परमफल को क्यों नहीं प्राप्त कर रहे हो ? ।। ३ ।।

मातरः सन्ति लोकेषु बह्वचः कारुण्यमूर्तयः।
क्षुधार्तैरेव संसेव्या न हि मुक्तिप्रदा हि ताः ॥ ४ ॥
भुक्तिमुक्तिप्रदात्री तु त्वमेका भक्तवत्सले।
कुत्र वा तव वात्सल्य सादृश्यं परिदृश्यते ॥ ५ ॥
विद्यां न याचे, विभवं न याचे
सिद्धि न ऋद्धि न वरं च जन्म ।
परन्तु याचे, तव देवी पाद-
पद्मेऽचलां भक्तिमहैतुकीं च ॥ ६ ॥
परहंसार्चिते देवि तस्य शिष्यैः सुसेविते।
अल्पयाप्यनया स्तुत्या प्रसन्ना भव सर्वदा ॥ ७ ॥
विदग्धानां विशिष्टैश्च स्तुतिः कृताप्यनेकशः।
प्रयासोऽयं कृतो देवि वृथा मा भूत् वार्पिताः ॥ ८ ॥

इस संसार में अनेक दयालु माताएँ हैं, जो क्षुधार्त सन्तानों की क्षुधा निवृत्ति कर पाती हैं (अर्थात् सांसारिक विषयों के उपभोग करने की आकांक्षा वे लोग पूर्ण कर सकती हैं), किन्तु वे लोग कैवल्य मोक्ष प्रदान नहीं कर सकतीं ॥ ४ ॥

हे भक्तवत्सला माँ ! तुम्ही एकमात्र ऐसी माँ हो जो भोग और मोक्ष दोनों ही फल दे सकती हो। तुम्हारे समान (दिव्य) वात्सल्य इस ससार में और कहाँ दिखाई देता है ? अर्थात् कहीं नहीं दिखाई देता ॥ ५ ॥

हे माँ ! तुम्हारे चरणों में अहैतुकी अचला भक्ति के अतिरिक्त मैं विद्या, धन, सम्पत्ति, सिद्धि, वर कि वा श्रेष्ठ कुल में जन्म भी नहीं चाहता ॥ ६ ॥

हे माँ ! तुम्हारे पति रामकृष्ण परमहंसदेव तुम्हारे चरणों की पूजा करते एवं उनके शिष्य लोग भी तुम्हारी सेवा करते थे। इसलिए मेरी भी यह सामान्य स्तुति ग्रहणकर तुम सदा प्रसन्न रहो ॥ ७ ॥

हे माँ ! मुझे भय है कि तुम्हारे चरणों में अर्पित यह क्षुद्र स्तुति रूपी प्रयास कहीं व्यर्थ न हो जाय, क्योंकि बड़े-बड़े महापुरुषों ने तुम्हारी दिव्य स्तुति की रचना की है ॥ ८ ॥

विदितं मातरो लोके प्रनन्दन्ति विशेषतः।
अल्पार्थाभिश्च ऋज्वीभिः सरलाभिः शिशूक्तिभिः॥ ९ ॥

इतिस्वामिअमृतानन्दविरचितं "श्रीशारदानवकम्" समाप्तम्।



श्रीश्रीशारदाष्टकम्*

अध्यापकश्रीदुर्गादासगोस्वामी, एम० ए०, साहित्यशास्त्री विरचितम्

पादाम्भोजरजः कणैर्वसुमतीं कृत्स्नां पुनन्ती स्वकै-
र्जाता या शुभलक्षणा जनगणक्षेमाय सौम्याकृतिः।
बंगान्तर्जयरामवाट्यभिहिते ग्रामे द्विजस्यान्वये
वन्दे तां खलु शारदामणिमहं श्रीरामकृष्णप्रियाम्॥ १ ॥
यां मातां पथि दस्युरप्यवनतः क्रौर्यं निरस्यादवाद्
द्रागंगीकृतवांश्चिराय दुहितेत्याख्याय मोहात्ययात्।

इस संसार में यह सर्व विदित है कि मातायें प्रायः शिशुओं की अर्थरहित (आधी-आधी) सरल बातों से विशेषरूप से प्रसन्न होती हैं। इसीलिये मेरी प्रार्थना है कि तुम भी मेरी इस क्षुद्र स्तुति से प्रसन्न होओ॥ ९ ॥

स्वामी अमृतानन्द द्वारा विरचित यह "श्रीशारदानवकम्" स्तोत्र समाप्त हुआ।



अपने चरण-कमलों के परागरज के द्वारा समग्र जगत् को पवित्र करके लोगों के कल्याण के निमित्त जो सुलक्षणा सौम्यदर्शना नारी बंगदेश के जयराम-बाटी नामक गाँव में ब्राह्मणवंश में आविर्भूता हुई थीं उन्हीं श्रीरामकृष्ण-लीलासंगिनी शारदामणि देवी को मैं प्रणाम करता हूँ॥ १ ॥

अपनी निष्ठुरता व क्रूरता का परित्याग कर दस्यु भी जिनके मोह के वशीभूत होकर बीच रास्ते में पीड़ितावस्था में जिनको अपनी कन्या के रूप में,

---

* उद्‌बोधन कर्त्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक।

सेवाद्यैरचिरात् प्रसाद्य दयितस्थानं तथा नीतवान्
वन्दे तां खलु शारदामणिमहं श्रीरामकृष्णप्रियाम् ॥ २ ॥

पूर्वं कल्पितया विवाहविधये दैवेन सद्वृत्तया
बध्वा शिक्षितयात्मना स्वमनसो वांछानुरूपं शनैः ।
शुद्धात्मापि पतिर्यया शुचितरो जातः कृतार्थोऽप्यहो
वन्दे तां खलु शारदामणिमहं श्रीरामकृष्णप्रियाम् ॥ ३ ॥

चित्रं भोः फलहारिणीतिथिरजन्यर्धे स्व सिद्धेः फलं
पूजान्ते पुरुषोत्तमेन गुरुणा यस्यै रहस्यार्पितम् ।
षोड़श्यै विधिवत् त्रिलोकजननी बुद्ध्या जपाक्षस्त्रजा
वन्दे तां खलु शारदामणिमहं श्रीरामकृष्णप्रियाम् ॥ ४ ॥

यस्या नो द्विजते स्म जीवनिवहः शिष्या नरेन्द्रादयः
प्राप्याज्ञामपि सम्भ्रमादपि भयात् प्रीत्यान्वतिष्ठन्नपि ।

आत्मीय रूप में ग्रहणकर स्नेहपूर्ण भाव से हमेशा के लिए ग्रहण किया एवं सेवा-शुश्रूषा के द्वारा प्रसन्न कर जिनको अपने पति के पास शीघ्र ही भेजा था, उन्हीं श्रीरामकृष्ण-लीलासंगिनी श्रीशारदामणि देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

जिनका विवाह पहले से ही विधि के विधान द्वारा निर्दिष्ट था, जिनको उनके पति ने अपने मन के अनुसार धीरे-धीरे शिक्षा दिया एवं जिन सुशीला और सुचरिता को वधू रूप में पाकर शुद्ध चित्त पति भी और अधिक शुद्ध चित्त और कृतकृत्य हुये, उन्हीं श्रीरामकृष्ण-लीलासंगिनी श्रीशारदामणि देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

फलहारिणी पूजा तिथि की रात्रि में जिन षोडशी नारी को जगज्जननी ज्ञान से शास्त्रोक्त विधि से पूजा कर उनके गुरु पुरुषोत्तम पति ने अपनी जपमाला समेत सिद्धि का फल अपूर्व भाव से एकान्त में जिन्हें अर्पित किया, उन्हीं श्रीराम-कृष्ण-लीलासंगिनी श्रीशारदामणि देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

जिनके पास से सभी प्राणी कभी उद्विग्न नहीं होते, जिनकी आज्ञा प्राप्त कर नरेन्द्र आदि प्रमुख शिष्यगण आनन्दपूर्वक भ्रम-रहित होकर और निर्भय होकर

लीयन्ते रिपवः प्रणश्यति भवः शान्तिश्च संजायते
वन्दे तां खलु शारदामणिमहं श्रीरामकृष्णप्रियाम् ॥ ५ ॥

सेवाप्रेम दयात्रपामति कथा यस्याः परं गीयते
श्रद्धाभक्तिभराज्जनैरहरहः पारेऽब्धि राष्ट्रेष्वपि ।
कारुण्यं नयनेऽभयं करतले मुक्तिश्च पादाम्बुजे
वन्दे तां खलु शारदामणिमहं श्रीरामकृष्णप्रियाम् ॥ ६ ॥

यस्यां स्नेहनिधौ प्रकामविनताः सौजन्यमुग्धान्तराः
साध्वीसंघशिरोमणौ पृथुतपो निष्ठाम्बुधौ सज्जनाः ।
स्वेषामादधति प्रसन्नवदनाः सर्वस्वमप्यार्तितो
वन्दे तां खलु शारदामणिमहं श्रीरामकृष्णप्रियाम् ॥ ७ ॥

मातर्मातरये ! कृपामयि ! धरोद्धारार्थमभ्यागते !
त्रायस्वेह सुताननाथपतितांस्तत्पादपद्माश्रितान् ।

उसका प्रतिपालन करते एवं जिनकी कृपा से रिपुगण विनष्ट होते हैं, संसार-चक्र से आवागमन-रहित होकर लोग शान्ति प्राप्त करते हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्ण-लीलासंगिनी श्रीशारदामणि देवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥

समुद्र के उस पार अवस्थित राष्ट्र-समूहों में भी जिनकी सेवा, प्रेम, दया, लज्जा और बुद्धि की बात नर-नारियों के द्वारा परम भक्ति-श्रद्धा पूर्वक प्रतिदिन कीर्त्तित हो रही है एवं जिनके नयनों में करुणा, हाथ में अभय और चरण-कमलों में मुक्ति विराजित है, उन्हीं श्रीरामकृष्ण-लीलासंगिनी श्रीशारदामणि देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

जिन स्नेहपरायणा, साध्वीकुल शिरोमणि प्रभूत तपोनिष्ठावती महिला को उनके सौजन्य से विमुग्ध, विनय पूर्वक अवनत सज्जनगण आर्त्तिवश अपना-अपना सर्वस्व भी प्रसन्न मुख से अर्पण किये रहते हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्ण-लीलासंगिनी श्रीशारदामणि देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

"जगत् के उद्धार के लिए अवतीर्णा दयामयी जननी, अपने चरण-कमलों की शरण में आये हुये अनाथ और पतित सन्तानगणों का उद्धार करो" इस

संप्रार्थ्येति वरं क्रमादुपगताः प्राच्याः प्रतीच्याश्च यां
वन्दे तां खलु शारदामणिमहं श्री रामकृष्णप्रियाम् ॥ ८ ॥
श्री शारदाफुल्लपदारविन्दे लग्नो यथालिर्मकरन्दमत्तः
अत्याल्पधी-मातृकृपार्थि-दुर्गादासास्तृतोऽस्तु स्तव एष शस्तः ॥९॥
अध्यापकश्रीदुर्गादासगोस्वामीविरचितं "श्रीश्रीशारदाष्टकम्" समाप्तम् ।



श्रीशारदामणिदशकम् *

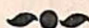
श्रीआत्मप्रज्ञविरचितम्

मानुषीं तनुमाश्रित्य लोकोद्धारविधायिनीम् ।
पतिलीलासहायां च वन्दे तां शारदामणिम् ॥ १ ॥
नारायणे यथा लक्ष्मीर्यथा गौरी च शंकरे ।
रामकृष्णे तथा याम्बा वन्दे तां शारदामणिम् ॥ २ ॥

प्रकार का वर प्राप्त करने की प्रार्थना करके पूर्व और पश्चिम के स्त्री-पुरुष जिनके पास धीरे-धीरे एक-एक करके क्रम से उपस्थित हो रहे हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्ण-लीलासंगिनी श्रीशारदामणि देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

अतीव मन्दबुद्धि और मातृकृपा प्रार्थी दुर्गादास द्वारा रचित यह प्रशस्त स्तव श्री श्रीशारदामणि देवी के प्रफुल्ल पाद पद्म में मधु के लोभ में मत्त भ्रमर के समान लीन होकर विराजमान हो ॥ ९ ॥

अध्यापक श्रीदुर्गादास गोस्वामी द्वारा विरचित यह "श्री श्रीशारदाष्टकम्" समाप्त हुआ ।



जो पति की लीला में सहायक होने के लिए लोगों का उद्धार करने की प्रेरणा से मनुष्य शरीर धारण कर पृथ्वी पर आईं, उन्हीं शारदामणि की आज मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

जिस प्रकार नारायण के साथ लक्ष्मी सुशोभित हैं, शंकर जी की गोद में स्निग्धोज्ज्वला गौरी सुशोभित हैं उसी प्रकार श्रीरामकृष्णदेव के साथ माता

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित--प्रकाशक ।

धरित्रीव सहिष्णुर्या स्पन्दक्षोभादिवर्जिता ।
स्वात्माभासनिरोधा च वन्दे तां शारदामणिम् ॥ ३ ॥

पतिप्रिया पतिप्राणा पतिसेवातिशोभना ।
पतिध्यानपरा या वै वन्दे तां शारदामणिम् ॥ ४ ॥

पतिशिक्षा प्रमोदा या ज्ञानभक्ति समुच्चिता ।
सर्वार्थसाधिका देवी वन्दे तां शारदामणिम् ॥ ५ ॥

अम्बा या भक्तशिष्याणां जगदम्बा समासदा ।
वराभयामृतस्यन्दा वन्दे तां शारदामणिम् ॥ ६ ॥

शारदामणि भी विराजमान हैं । मैं सिर झुकाकर उनके दोनों चरणों की वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥

जो पृथ्वी के समान सहनशीला हैं, स्पन्दन और विक्षोभ से हीन अतीव निरुपमा (उपमारहित) हैं और आत्मस्वरूप का दान करने में (अपना परिचय देने में) सदा संकोचशीला हैं, वे ही श्री शारदा माता मेरा प्रणाम ग्रहण करें ॥ ३ ॥

जो पति की अतीव प्रिया हैं, पति प्राणा हैं, पति की सेवा में अति सुशोभना हैं, प्रियपति के ध्यान में सर्वदा मग्ना हैं, उन्हीं शारदामणि के चरणों में बार-बार प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥

जो पति की शिक्षा पाकर पूर्ण रूप से आनन्दिता हैं, ज्ञान और भक्ति के समुच्चय से जिनके मुखारविन्द उत्फुल्ल हैं, जो सर्वार्थसाधिका और दिव्य-भाव की आगार हैं, उन्हीं शारदामणि के चरणों में बार-बार नमस्कार करता हूँ ॥ ५ ॥

जो भक्त और शिष्यों की मातृस्वरूपिणी हैं, जगदम्बा के समान हैं, सदा मन्दाकिनी और क्षीर सागर के जल के समान श्वेत वस्त्र धारण किये हुये हैं, वर देने वाली हैं, अभया हैं, अमृत के रथ पर सवार हैं, वे ही शारदामणि वन्दना के द्वारा प्रसन्न हों ॥ ६ ॥

स्वान्तःस्था शास्त्रमर्मज्ञा आबाल्यब्रह्मचारिणी।
पाखण्डोपाधिविध्वंसा वन्दे तां शारदामणिम् ॥ ७ ॥
सदाशान्ताब्धिसंकाशा सदा प्रबोधमालिका।
सदा सत्यविधात्री या वन्दे तां शारदामणिम् ॥ ८ ॥
दीनार्त्तदुःखहा माता कृपया परया युता।
अबोधं रक्ष सन्तानं मायाचक्रविभेदतः ॥ ९ ॥
अद्य ते पुण्यजन्माहः स्मरन् मातृ-सुगौरवम्।
पादेऽत्र प्रार्थनां देवि ! प्रीत्या सावहिता शृणु ॥ १० ॥

इतिश्रीआत्मप्रज्ञविरचितं "श्रीश्रीशारदामणिदशकम्" समाप्तम्।



जो शास्त्र की मर्मज्ञा हैं, अपने अन्तः में स्थित आत्मा के चिन्तन में लीन हैं, पाखण्ड की बुद्धि और गति को सब तरह से विध्वंस करने में निरता हैं और बाल्यकाल से ही ब्रह्मचर्य व्रत धारण किये हुये हैं, वे ही शारदामणि प्रणाम के द्वारा सन्तुष्ट हों ॥ ७ ॥

जिनका चित्त सदा शान्त-सागर के समान था, जिनके गले में सदा प्रबोध-विज्ञान की माला दोलायमान रहती (हिलती) है, जो मुक्तहस्त से सभी का कल्याण करने (मुक्ति देने) के लिये सतत प्रयत्नशीला हैं, उन्हीं शारदामणि के चरणों में साष्टांग प्रणाम करता हूं ॥ ८ ॥

हे दीन-दुःखियों पर कृपा करने वाली तथा दुःख का विनाश करने वाली माता ! कृपा करके अपने इस अबोध पुत्र की रक्षा करो। वह माया के चक्र में पड़कर छिन्न भिन्न (शरीर से युक्त) हो गया है और उसकी इस दुःखावस्था में (तुम्हारे सिवाय) उसे कोई नहीं देखेगा ॥ ९ ॥

हे देवि ! आज तुम्हारे पुण्य जन्म दिन के अवसर पर, हे माता ! तुम्हारी गौरव-पूर्ण बातें याद आ रही हैं। हे माता ! तुम्हारे श्रीचरणों में यह प्रार्थना निवेदन करता हूं कि मेरी प्रार्थना सुनकर प्रेमपूर्वक मुझ पर कृपा करके मुझे धन्य करो ॥ १० ॥

श्री आत्मप्रज्ञ द्वारा-विरचित यह "श्रीश्रीशारदामणिदशकम्" समाप्त हुआ।



श्रीशारदामणिस्तुतिः*

डॉ० श्री यतीन्द्रविमल चतुर्धुरीण-विरचिता

शारदे जन्मदात्रिः।
युगयुगसुभगस्ते सुन्दरः पुण्यवासः।
वससि परमहंसे सर्वसिद्धिस्वरूपा
परिहरसि च यत्नान् नाथदूर प्रयाणम्
भुवनवनविहारानन्द पूर्णान्तरा त्वं
परिहृतसुतशल्या नेत्रकूल्या विधात्रि ॥ १ ॥
सपदि भव प्रसन्ना शारदे शारदात्रि !
नियत—सकृप—दृष्टिर्मन्त्रदान—प्रहृष्टा

जननि शारदे ! तुम्हारी इस बार की अवतार-लीला से पूर्ण यह जीवन-यापन अन्यान्य युगों से कितना अधिक सुन्दर है। इस बार श्री श्रीपरमहंस-देव की सर्वसिद्धि रूप में उनके भीतर तो तुम हो ही, उससे भी बड़ी बात यह है कि तुम अत्यन्त आनन्द के साथ उनके साथ-साथ रही हो। पति से दूर रहकर भी (अभाव या) उनके वियोग से सन्तप्त नहीं हो। उस दूरी का तुमने परिहार कर दिया है। इस बार तुमने संसार-अरण्य में आनन्द पूर्ण अन्तःकरण से भ्रमण किया है। तुमने अपने दोनों खुले नेत्रों से जहाँ-जहाँ जिस-जिस पुत्र या कन्या का जितना दुःख देखा है, उन-उनका वह सब दुःख हरण किया है। हे ज्ञान-दायिनि जननि शारदे ! तुम शीघ्र मुझ पर प्रसन्न होओ ॥ १ ॥

इस बार के अवतार में तुम सर्वदा केवल कृपा दृष्टि डाल कर ही सन्तुष्ट नहीं रहीं, वरन् पुत्रों एवं कन्याओं को मन्त्र-दान करके, उनको नवीन आध्यात्मिक जन्म देकर अथवा उन्हें जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त कर तुमने प्रचुर आनन्द प्राप्त किया। 'श्यामली' गाय, 'चन्दना' पक्षी आदि के प्रति भी तुम्हारी सन्तानवत्

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक। बंगलानुवाद डॉ० श्रीमती रमा चौधरी ने किया।

तनयसम-ममत्वा श्यामलीचन्दनासु ।
पथि पथि विचरन्ती साधनाधारभूता
युग-युग मणि-रत्नं रामकृष्णांगभूषा ॥ २ ॥
भुवन कुशलमोदे शारदे शारदात्रि !
शारदे शान्तिदात्रि !
त्वयि च सुखनिदाने दुःखिता हा धरित्री
चरमविलयमायाद् देशदेशान्तहिंसा ।
भवतु तव सुतानां भ्रातृबोध-प्रबोधे
वरसुख-चिरधात्रि स्निह्य मातर्यतीन्द्रे ॥ ३ ॥
सपदि भव प्रसन्ना शारदे शारदात्रि !

डॉ० श्रीयतीन्द्रविमलचतुर्धुरीण-विरचिता "श्रीशारदामणिस्तुतिः" समाप्ता ।



ममता थी । स्वयं कृपा की आधार-स्वरूपा होकर कृपा (दान) करने के निमित्त तुमने पथ-पथ में विचरण किया है । हे श्रीरामकृष्ण की श्रेष्ठ भूषण ! युग-युगान्तर की मां-मणियों में तुम श्रेष्ठमणि हो । समस्त जगत् के कुशल में ही तुम्हारा एकमात्र आनन्द है । हे ज्ञानदायिनि मातः शारदे ! (शीघ्र तुम मेरे प्रति, मुझ पर, प्रसन्न होओ) ॥ २ ॥

हे शान्तिदायिनि जननी शारदामणि ! मेरी प्रार्थना है कि इस दुःखपूर्ण पृथ्वी पर तुम सभी सुखों की भण्डार हो । आज देश-देशान्तर में व्याप्त हिंसा का चरम अवसान हो । तुम्हारे पुत्र गणों में सौभ्रात्र जागृत हो; समस्त मंगलप्रद सुखों की सनातन आधार तुम ही हो । जननी ! तुम यतीन्द्र के प्रति स्नेह प्रकाशित करो । हे सारदायिनि शारदे ! शीघ्र ही तुम प्रसन्न होओ ॥ ३ ॥

डॉ० श्री यतीन्द्रविमल चौधरी द्वारा विरचित यह "श्रीशारदामणिस्तुतिः" समाप्त हुई ।



श्रीश्रीशारदादेवीस्तोत्रम्*

श्रीकालीपदबन्द्योपाध्यायविद्याविनोदेनविरचितम्

या देवी । मर्त्यदेहेऽमरगण-विरल-ज्योतिषा दीप्यमाना
यस्याः पुण्य प्रभावैरगणित-मनुजा दर्शिता मुक्तिमार्गम् ।
यस्याः पीयूषवाणी निखिल-तनुभृतां सर्वसन्ताप-हन्त्री
श्री माँ-रूपेण नृणां नियत-हितकरीं शारदां तां नमामि ॥ १ ॥

पत्युः स्थानं व्रजन्ती स्वजन-परिहृता प्रान्तरे भीमदस्यूं
'कन्याऽहं शारदा ते त्वमसि मम पिता रक्षणीया त्वयाऽहम् ।'
इत्युक्त्वा दस्युचित्तं कुलिश-सुकठिनं कोमलं या चकार
श्री माँ-रूपेण मह्यां धृततनुमभयां शारदां तां नमामि ॥ २ ॥

त्यक्त्वा भोगस्य मार्गं पतिगत-हृदया तद्व्रते चैकनिष्ठा
पूर्णं कर्तुं व्रतं तद् विगलित-चिकूरा मातृभावाश्रिता या ।

जो मर्त्यशरीर धारण करके देवदुर्लभ ज्योति से दीप्तिमयी हैं, जिनके पुण्य प्रताप ने असंख्य मनुष्यों को मुक्ति का मार्ग दिखाया है एवं जिनकी अमृत-वाणी समुदय जीवों के सब प्रकार के सन्तापों को हरने वाली है, श्री मां रूप में निरन्तर हित करने वाली उन्हीं शारदा को प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

पति का दर्शन करने के लिए जाते समय रास्ते में स्वजनों के द्वारा परित्यक्ता होकर भयानक दस्यु से 'मैं तुम्हारी कन्या शारदा हूँ, तुम मेरे पिता हो, मेरी रक्षा करो' यह बात कह कर जिन्होंने दस्यु के वज्र के समान कठोर हृदय को कोमल कर दिया था, पृथ्वी पर श्री माँ के रूप में शरीर धारण करने वाली उन्हीं भयशून्या शारदा को अथवा शारदारूपिणी अभया को (अर्थात् दुर्गा को) प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

भोग मार्ग का त्याग कर, पतिगत प्राणा और पति के व्रत में एकनिष्ठ होकर, उस व्रत को पूर्ण करने के लिए लम्बे फैले हुये बालों वाली हो कर,

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

पत्युः पूजामगृह्णाज्जगति निरुपमां षोडशी सिद्धिदात्री
श्री माँ-ख्यां विश्ववन्द्यां गिरिवर-तनयां शारदां तां नमामि ॥ ३ ॥

भक्तानां मातृरूपां सततमभयदां सर्वकल्याणकामां
पत्यूरुग्णस्य सेवामनलस-मनसा कुर्वतीं क्लान्तिहीनाम् ।
आतिथ्ये मुक्तहस्तां सुनिपुण-गृहिणीमब्धि जाता-स्वरूपां
श्री माँ-ख्यां विश्वरूपामभिमत-वरदां शारदामर्चयामि ॥ ४ ॥

लब्ध्वा मातृत्व-सम्पद्-बहुसुकृतिफलं योषितः पूर्णकामा-
स्तस्मात् सन्तानचिन्ता मनसि समुदिता सा तु तत्रैव लीना ।
संख्यातीतान् सुपुत्रान् निज-तनुज-निभान् प्राप्य यासीत्कृतार्था
कल्याणीं शुद्धसत्त्वां जनगणजननीं शारदां तां नमामि ॥ ५ ॥

मातृभाव आश्रय कर सिद्धि-दात्री षोडशीरूप में पति की पूजा जिन्होंने ग्रहण की थी—संसार में जिनकी तुलना नहीं मिलती "श्री माँ" नामधारिणी विश्ववन्द्या गिरिराज-तनया (दुर्गा) रूपिणी उन्हीं शारदा माँ को प्रणाम करता हूं ॥ ३ ॥

भक्तगणों की मातृ स्वरूपा, सतत अभयदायिनी, सर्व कल्याणकामा, आलस्य रहित मन से एवं आक्लान्त रूप से मुक्त हस्ता, लक्ष्मी स्वरूपा, सुनिपुण गृहिणी एवं ईश्वरी-रूप में अभिमत-वरदायिनी 'श्री माँ' नामधारिणी शारदा की मैं अर्चना करता हूँ ॥ ४ ॥

बहुत पुण्यों के फलस्वरूप मातृत्व सम्पद प्राप्त कर नारियों की मनोकामना पूर्ण होती है । अतएव सम्भवतः "श्री माँ" के भी मन में सन्तान चिन्ता उदित हुई थी, किन्तु वह मन में ही विलीन हो गयो । अपने शरीर से उत्पन्न पुत्र के समान बहुत से सुपुत्रों को पाकर (भक्त सन्तानों को पाकर) जो यथार्थ में ही माँ हुई थीं—उन्हीं कल्याणी, शुद्धस्वभावा, जनगणजननी शारदा को प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

प्रणत–हृदयपद्म–न्यस्तपादाब्जयुग्मा
मधुरवचनगर्भां बिभ्रती कन्ठवीणाम् ।
रुचिरविमलकान्तिर्ज्ञानभक्तिप्रदात्री
निखिलभुवन पूज्या शारदा शारदैव ॥ ६ ॥
जयतु जयतु देवी ध्यानगम्भीरमूर्त्ति-
र्जयतु जयतु देवी साधकाभीष्टदात्री ।
जयतु जयतु देवो रामकृष्णस्य शक्ति-
र्जयतु जयतु देवी शारदा विश्वधात्री ॥ ७ ॥
वैंकुन्ठे विष्णु पार्श्वे विहरति कमला विश्वकल्याणदात्री ।
कैलाशे शम्भुवासे विहरति गिरिजा लोकरक्षा-विधात्री ॥
जाह्नव्यां पुण्यतीर्थे मणिमय-भवने कालिका-पादपद्मे ।
राजते ध्यानमग्नौ मम हृदयनिधौ शारदा-रामकृष्णौ ॥ ८ ॥

श्रीकालीपदवन्द्योपाध्यायविद्याविनोदेनविरचितं "श्री श्रीशारदादेवीस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



जिन्होंने भक्तगणों के हृदय कमल में अपने दोनों चरण कमल स्थापित किये हैं एवं जो मधुर वचनपूर्ण कण्ठ रूपी वीणा धारण किये हुये हैं, सुन्दर एवं विमल कान्ति-विशिष्टा, ज्ञानभक्तिप्रदायिनी एवं अनन्त जगत की पूजनीया वे ही शारदा अर्थात् सरस्वती के सिवाय दूसरी कोई भी नहीं हैं ॥ ६ ॥

ध्यान गम्भीर मूर्त्तिधारिणी और साधकों को उनका अभीष्ट देने वाली देवी की जय हो, जय हो । श्री श्री रामकृष्ण परमहंस देव की शक्तिरूपिणी माँ शारदा देवी की जय हो, जय हो ॥ ७ ॥

जिस प्रकार बैकुन्ठ में नारायण के पार्श्व में विश्व-कल्याणदायिनी लक्ष्मी विराजमान हैं, कैलाश पर्वत पर महादेव जी के वाम भाग में लोकरक्षाकारिणी पार्वती जी विराजमान हैं, उसी प्रकार जाह्नवी तट पर पुण्यतीर्थ में मणिमय मन्दिर में कालिका देवी के चरण कमलों में ध्यानमग्न होकर मेरे हृदय निधि शारदा और रामकृष्ण विराजमान हैं ॥ ८ ॥

श्री कालीपदबन्द्योपाध्याय विद्याविनोद द्वारा विरचित "श्री श्रीशारदादेवी स्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



श्रीश्रीशारदामणिदेवीस्तुतिः*

डॉ० श्रीयतीन्द्रविमलचतुर्धुरीणविरचिता

भुवनविमोहने शारदामणे सारंदेहिजगद्धात्रि ।
बेलूड़ स्थाने पुण्यप्रधाने चरणरेणुधनदात्रि ॥ १ ॥
गदाधरधर्म सुनिगूढ़मर्म पतिपूजनग्रहित्री ।
लज्जाऽवरणे प्रच्छन्नधने पापतापशोकहर्त्रि ॥ २ ॥
कामारपुकुर पूर्णलीलाधर चिरसाधनसंगिनी ।
त्रेताद्वापर - पूर्णावतार - "रामकृष्ण" - प्रपालिनी ॥ ३ ॥
कामिनीकांचन त्यागवरण सर्वशक्ति-प्रदायिनी ।
तेलोभेलोवन दस्युप्रधान दुहितृ-पद-प्रार्थिनी ॥ ४ ॥

विश्वमनोरंजिनी शारदामणि, तुम्हीं सबको सार पदार्थ अथवा सत्य ज्ञान देती हो। हे जगद्धात्रि! महापुण्यमठ बेलूड़मठ में अपनी चरण धूलि प्रदान करके तुमने ही उसे अपूर्व सम्पदा से विभूषित किया ॥ १ ॥

तुम ही श्रीरामकृष्ण देव के धर्म की मूलभूत अर्थ हो अथवा तत्व हो। तुमने ही पति की पूजा ग्रहण की; किन्तु लज्जा रूपी आवरण से आवृत्त होने के कारण तुमने इस अनुपम आध्यात्मिक सम्पदा को गुप्त रखा। तुम ही हम लोगों के पाप, ताप और शोक का हरण करती हो ॥ २ ॥

तुम्हीं कामारपुकुर के पूर्णलीलामय देवता श्री श्रीरामकृष्ण की सदा के लिये साधन संगिनी हो। श्री श्रीरामकृष्ण त्रेता युग के अवतार राम एवं द्वापर युग के अवतार कृष्ण के एक अपूर्व समन्वय हैं। इस समन्वित पूर्णावतार श्री श्रीरामकृष्ण की पालन करने वाली तुम्हीं हो ॥ ३ ॥

तुमने ही उनको (श्री रामकृष्ण को) कामिनी-कांचन त्याग की सर्वशक्ति प्रदान की। तुमने ही 'तेलोभेलो' वन के प्रधान दस्यु की कन्या होना चाहा ॥ ४ ॥

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक। बंगलानुवाद डॉ० श्रीमती रमा चौधरी ने किया।

शारदानन्द विवेकानन्द "आम्‌जाद" समदर्शिनी।
धर्ममध्यमणि निखिलपावनी त्रिभुवनजननी जननी ॥ ५ ॥
भारतमखिलं मातृपदबलं त्वं हि मातृशिरोमणिः।
जगदम्बिका जयरामबाटिका दीन-गृह-प्रकाशिनी ॥ ६ ॥
"गणय स्वीयं विश्वं सर्वं" शेषवचः प्रचारिणी।
"प्रसूतिः सतां असतां च" सर्वसुत संरक्षिणी ॥ ७ ॥
वर मातृपदे सुखदे वरदे यतेर्नतिकोटिजननि !
विश्ववरेण्ये स्मरण सुपुण्ये जगदम्ब नारायणि ॥ ८ ॥
मातर्दिशिदिशि तवाशीराशि-वितरतु क्षेमं विधात्रि !
यतीन्द्रविमले तापविह्वले कृपां वर्षय विश्वधात्रि !

तुमने ही स्वामी शारदानन्द, स्वामी विवेकानन्द और आमजाद को समान दृष्टि से देखा था। तुम ही धर्म की केन्द्र स्वरूपा, विश्व को पवित्रता देने वाली, भुवन-जननी और जननी स्वरूपा हो ॥ ५ ॥

भारतवर्ष हमेशा से माता के ही बल से बलवान है। तुम सभी माताओं में श्रेष्ठा हो। इस प्रकार जगत् की माँ होकर भी, तुम लीला करने के निमित्त जयरामबाटी में एक दीन और दरिद्र (ब्राह्मण के) घर में आविर्भूत हुई ॥ ६ ॥

"संसार को अपना बना लेना सीखो; कोई पराया नहीं है—संसार तुम्हारा है"—यही तुम्हारी शेष वाणी है। तुमने ही कहा था "मैं सत की माँ हूँ, असत की भी माँ हूँ"—तुम्हीं सभी सन्तानों की रक्षा करती हो ॥ ७ ॥

सुखदायिनी वरदायिनी जननी ! तुम्हारे ही वरेण्य श्रीपादपद्मों में यतीन्द्र का कोटि-कोटि प्रणाम। तुम ही विश्व-वरेण्या हो; तुम्हारा स्मरण मात्र ही महापुण्य दायक है; तुम ही विश्वजननी नारायणी हो ॥ ८ ॥

मातः ! तुम्हारा ही अजस्र आशीर्वाद दिशाओं-दिशाओं में कल्याण वितरण करे। ताप से क्लिष्ट यतीन्द्र विमल पर भी कृपा वारि बरसाओ।

हे विश्वधात्रि ! मातृ धन से बलवान, माता को ही सर्वस्व मानने वाले

यतीन्द्रविमले मातृधनबले पदं निधेहि विश्वधात्रि ॥ ९ ॥

डॉ० श्रीयतीन्द्रविमलचतुर्धुरीणविरचिता "श्रीशारदामणिदेवीस्तुतिः" समाप्ता ॥



श्रीश्रीशारदास्तोत्रम्*

ब्रह्मचारिबादलविरचितम्

ॐ ह्रीं विशुद्धां प्रकृतिस्वरूपां
आधारभूतां जगदादिशक्तिम् ।
दयास्वरूपां जगदात्मिकां वै
श्री शारदां त्वां प्रणमामि नित्यम् ॥ १ ॥

सांख्यैश्च वेदैरपि सर्वशास्त्रैः
ज्ञेया न माता परमासि माया ।
तव प्रसादाद्विदिता भवेस्त्वं
प्रसीद देवेशि गतिस्त्वमेका ॥ २ ॥

यतीन्द्र विमल को श्री चरण कमलों में स्थान दो ॥ ९ ॥

डॉ० श्री यतीन्द्र विमल चौधरी द्वारा विरचित "श्रीशारदामणिदेवीस्तुतिः" समाप्त हुई ।



ॐ ह्रीं वाच्या, विशुद्धा प्रकृति स्वरूपा, आधारभूता, संसार की आदि शक्ति, जगदात्मिका, दयास्वरूपा शारदा देवी ! तुमको नित्य प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

तुम परमा माया प्रकृति हो, माँ ! तुम सांख्य वेदादि समस्त शास्त्रों के द्वारा भी जानी नहीं जा सकती । केवल तुम्हारी कृपा से ही तुमको जाना जा सकता है । हे देवेशि ! तुम ही एकमात्र गति हो, तुम प्रसन्न होओ ॥ २ ॥

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

रक्ताम्बरा त्वं जगदम्बिका वै
त्वं वेदमूर्तिर्भुवि विश्वधात्री ।
सृष्टेः स्थितेश्च प्रलयस्य कर्त्री
पदाम्बुजं मे तव देहि मातः ॥ ३ ॥

दात्रीं जनेभ्यो भवबन्धमुक्ते-
रनन्तवीर्यां शशिसूर्यनेत्राम् ।
आब्रह्मलोकाः प्रणमन्ति यां तां
नमाम्यहं शारदशारदाम्बाम् ॥ ४ ॥

देवीं हि शम्भोः परमस्य विष्णोः
प्रियां च सीतां रघुनन्दनस्य ।
श्री शारदां वा अवतारमुख्य
श्री रामकृष्णस्य नमामि भूयः ॥ ५ ॥

व्यैक्षन्त सिद्धा स्तव शक्तिमंत्रं
तेजोमयं यं हि तपोभिरुग्रैः ।

तुम ही पृथ्वी पर रक्ताम्बरा, जगदम्बिका और वेद मूर्ति हो; तुम ही पुनः विश्वधात्री हो और तुम ही सृष्टि, स्थिति और प्रलय करती हो। तुम्हारे चरण कमलों की कामना करता हूं ॥ ३ ॥

जो लोगों को संसार के बन्धन से मुक्ति दिलाने वाली हैं, जो अनन्तवीर्या हैं, चन्द्रमा और सूर्य जिनके दो नेत्र हैं, ब्रह्मादि देवगण जिनको प्रणाम करते हैं, मैं उस ज्ञानदायिनी माता शारदा देवी को प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

जो शिव की दुर्गा हैं, विष्णु की लक्ष्मी हैं, श्रीरामचन्द्र की सीता हैं, वे ही अवतारों में श्रेष्ठ श्रीरामकृष्ण की शारदा हैं; उन्हें बार-बार प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

उग्र तपस्या के द्वारा सिद्धगणों ने तुम्हारा जो तेजोमय शक्ति मन्त्र दर्शन

तमेव नृणां भव मोक्षसेतुं
जाने तु नाहं शरणागतस्ते ॥ ६ ॥
नक्तन्दिवं यद् यतयोऽपि देवाः
सिद्धादिसंघास्तव पादपद्मम् ।
ध्यायन्ति गायन्ति नमन्ति नित्यम्
दिव्यं पदं तद्विनयेन याचे ॥ ७ ॥
मोहान्धकारेऽति ममत्वगर्ते
भ्रष्टोऽस्मि मातः परिपाहि मां त्वम् ।
श्री रामकृष्ण-प्रकृति-स्वरूपे
श्री शारदे त्वां शरणं प्रपद्ये ॥ ८ ॥
देवि प्रसीद प्रणतार्त्तिहन्त्री
प्रसीद मातः परमेश्वरि त्वम् ।
प्रसीद देवेशि सदा प्रसीद
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि नस्त्वम् ॥ ९ ॥

किया था, जो समस्त जीवों के इस संसार से मुक्त होने का सेतु (पुल) है, वह भी मैं नहीं जानता, मैं केवल तुम्हारा ही शरणागत हूँ ॥ ६ ॥

देव, मुनि, ऋषि आदि सिद्धगण तुम्हारे जिन चरण-कमलों का नित्य ध्यान और स्तवन करते हैं, जहाँ प्रणाम करते हैं, उन्हीं दिव्य चरण कमलों की मैं कातर भाव से प्रार्थना करता हूं ॥ ७ ॥

ममता रूपी गर्त में मोह रूपी अन्धकार में मैं मग्न हूं; माँ ! तुम उससे मेरा उद्धार करो । श्रीरामकृष्ण की शक्ति-स्वरूपा माँ शारदा ! मैं तुम्हारी शरण में हूँ और तुमसे प्रार्थना करता हूँ ॥ ८ ॥

हे देवी ! हे आश्रितों की आर्त्ति का हरण करने वाली ! तुम प्रसन्न होओ । हे मातः परमेश्वरी ! तुम प्रसन्न होओ । हे देवेशि ! तुम सर्वदा प्रसन्न रहो । हे विश्वेश्वरी ! तुम प्रसन्न होओ । हम लोगों की रक्षा करो ॥ ९ ॥

ॐ दुस्तारार्णव संसारे नृणामेको गतिर्हि या ।
तस्यै तु शारदादेव्यै शिवायै च नमो नमः ॥ १० ॥

ब्रह्मचारिबादलेनविरचितं-"श्रीश्रीशारदादेवीस्तोत्रम्" समाप्तम् ।

श्रीश्रीशारदास्तोत्रम्

स्वामिबलरामानन्दविरचितम्

रामकृष्णस्य या शक्तिर्भिन्नरूपेण रूपिता ।
नमामि ब्रह्मशक्ति तां, शारदां परमेश्वरीम् ॥ १ ॥

माता ब्रह्ममयी पूज्या, ह्युद्बोधन निवासिनी ।
नमामि वैष्णवीं मायां, शारदां परमेश्वरीम् ॥ २ ॥

नारीरूपं समाश्रित्य, छद्मरूपेण या स्थिता ।
प्रणमाम्यादिशक्ति तां; शारदां परमेश्वरीम् ॥ ३ ॥

दुस्तर सागर के समान इस संसार में जो जीवों की एकमात्र गति हैं, उन्हीं मंगलमयी शारदा देवी को प्रणाम करता हूं ॥ १० ॥

ब्रह्मचारी बादल द्वारा विरचित "श्रीश्रीशारदादेवीस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।

जो भिन्न रूप में रूपायित श्रीरामकृष्ण की ही शक्ति है, उन्हीं ब्रह्मशक्ति-स्वरूपिणी, परमेश्वरी श्रीशारदादेवी को प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

जो 'उद्बोधन' (पत्रिका के प्रेस) में निवास करने वाली एवं भक्तगणों की पूज्या ब्रह्ममयी मां हैं, उन्हीं परमेश्वरी वैष्णवी माया स्वरूपिणी श्रीशारदा-देवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ २ ॥

जो सामान्य नारी रूप धारण करके गुप्त रूप में थीं, उन्हीं परमेश्वरी, आदि शक्ति-स्वरूपिणी श्रीशारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ३ ॥

परमा प्रकृतिर्नित्या, माया च त्रिगुणात्मिका।
सगुण निर्गुणा चैव, शारदा परमेश्वरी ॥ ४ ॥
सर्गस्थितिलयादीनां, लीलाशक्तिः सनातनी।
आविर्भूता जगत्त्रातुं, शारदा परमेश्वरी ॥ ५ ॥
सीता-राधादिरूपैश्च; याऽवतीर्णा युगे युगे।
नमामि योगमायां तां, शारदां परमेश्वरीम् ॥ ६ ॥
कालीदुर्गादिरूपैश्च, या शक्तिरर्चिता जनैः।
प्रणमाम्यादिशक्ति तां, शारदां परमेश्वरीम् ॥ ७ ॥
उमा-देवात्मशक्त्यादि, नाम्ना वेदेषु वर्णिता।
प्रणमाम्यादिमायां तां, शारदां परमेश्वरीम् ॥ ८ ॥

जो नित्या, परमा प्रकृति एवं त्रिगुणात्मिका माया हैं; जो स्वरूपतः सगुणा एवं निर्गुणा हैं, वे ही परमेश्वरी श्रीशारदादेवी के रूप में लीलाकर रही हैं। उनको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥

जो सृष्टि, स्थिति एवं प्रलय करने वाली चिरन्तनी लीला शक्ति हैं, वे ही परमेश्वरी श्री शारदादेवी के रूप में संसार का उद्धार करने के लिये आविर्भूता हुई हैं। उनको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥

जो पहले युगों में सीता-राधादि-रूपों में अवतारों की लीला संगिनी के रूप में अवतीर्ण हुई थीं, उन्हीं योगमाया स्वरूपिणी परमेश्वरी श्री शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ६ ॥

जो काली, दुर्गा आदि रूपों में भक्तों के द्वारा पूजिता होती हैं, उन्हीं आदि-शक्ति-स्वरूपिणी परमेश्वरी श्री शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ७ ॥

जो उमा, देवात्म शक्ति आदि नामों से वेद में वर्णित हुयी हैं, उन्हीं आदि-माया-स्वरूपिणी परमेश्वरी श्री शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ८ ॥

तुरीये न कदा दृष्टा, शुष्ककाष्ठेऽनलो यथा ।
नमामि ब्रह्मशक्ति तां, शारदां परमेश्वरीम् ॥ ९ ॥
यया च भ्राम्यते जीवो, ब्रह्मचक्रे पुनः पुनः ।
नमामि वैष्णवीं मायां, शारदां परमेश्वरीम् ॥ १० ॥
या शक्तिर्गुरूरूपेण, त्रायते भवबन्धनात् ।
नमामि गुणशक्ति तां, शारदां परमेश्वरीम् ॥ ११ ॥
रामकृष्णः परब्रह्म, तच्छक्तिः शारदा तथा ।
एकस्य द्विविधे रूपे, उभौ तौ प्रणमाम्यहम् ॥ १२ ॥

स्वामिबलरामानन्देनविरचितं 'श्रीश्रीशारदास्तोत्रम्" समाप्तम् ।



जिस प्रकार सूखी लकड़ी में अन्तर्निहित अग्नि को देखा नहीं जा सकता, उसी प्रकार तुरीय अवस्था में ब्रह्म से भिन्न शक्ति का अनुभव नहीं किया जा सकता। उन्हीं ब्रह्म में निहित ब्रह्म शक्ति परमेश्वरी श्री शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ९ ॥

जिस शक्ति के प्रभाव से जीव संसार-चक्र में पुनः पुनः भ्रमित होता रहता है (घूमता रहता है), उन्हीं विश्वमोहिनी वैष्णवी मायाशक्ति स्वरूपिणी परमेश्वरी श्री शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १० ॥

जो शक्ति गुरु का है माध्यम एवं जीव को भवबंधन से विमुक्त करता है, उन्हीं गुरुशक्ति स्वरूपिणी श्री शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ११ ॥

श्रीरामकृष्ण ही साक्षात् परब्रह्म हैं एवं श्री शारदादेवी ही साक्षात् ब्रह्म शक्ति हैं। वास्तव में ये दोनों एक ही ब्रह्मतत्व के दो रूप हैं। दोनों को ही मैं प्रणाम करता हूं ॥ १२ ॥

स्वामी बलरामानन्द द्वारा विरचित "श्री श्रीशारदास्तोत्रम्" समाप्त हुआ।



श्रीश्रीशारदेश्वरीध्यानम्*

श्रीचारुचन्द्रविद्यार्णवविरचितम्

द्विभुजां हेमगौरांगीं वस्त्रालंकार शोभिनीम् ।
मुक्तकेशीं जगद्धात्रीं अचिन्त्यशक्तिरूपिणीम् ॥ १ ॥
पद्मासनां पद्महस्तां पद्मनेत्रां सुहासिनीम् ।
वराभयकरां देवीं साधकाभीष्टदायिनीम् ॥ २ ॥
रामकृष्णगतप्राणां रामकृष्ण-परायणाम् ।
रामकृष्णमयीं राम-कृष्णभक्तिप्रदायिनीम् ॥ ३ ॥
लज्जाम्बरविभूषितां पतिव्रताशिरोमणिम् ।
पतिकथारतां दिव्यां नानासद्गुणधारिणीम् ॥ ४ ॥

आशय—द्विभुजधारिणी, स्वच्छ सोने के समान उज्ज्वल, शुभ्र अंग विशिष्टा, सुन्दर वस्त्र और अलंकार से सुशोभिता, फैले हुये केशपाश से युक्ता, जगद्धात्री स्वरूपा, अचिन्त्य पुंजीभूत, विमूर्त शक्तिरूपा, पद्मासन में उपविष्टा, पद्म के समान कोमल हाथों से युक्ता, कमल के समान मनोहर नयनों वाली, सुमधुर हास्य करने वाली, वर और अभय मुद्रा में शोभित हाथों वाली, साधक को अभीष्ट वर प्रदान करने वाली, श्रीरामकृष्ण में अपना प्राण समर्पित करने वाली, 'श्रीरामकृष्ण श्रेष्ठ आश्रयदाता हैं' यह समझाने वाली, श्रीरामकृष्ण-मय होकर जीवित रहने वाली, भक्तों को श्रीरामकृष्ण के प्रति भक्ति और अनुराग प्रदान करने वाली ॥ १-३ ॥

आशय—एवं लज्जारूपी वस्त्र के द्वारा विमण्डिता, पतिव्रता नारियों में शिरोमणि, पति श्रीरामकृष्ण के श्री मुख से निःसृत वाणी की आलोचना में विशेष भाव से अनुरक्ता, दिव्य चरित्र मण्डिता, नाना सद्गुणों को धारण करने वाली, स्थूल शरीर में लीला समापन करके पति श्रीरामकृष्ण के दिव्य लोक में गमन करने वाली, सौम्यमूर्तिधारिणी, नित्य ही मूर्तिमती विद्यादेवी

* उद्बोधन कर्तृपक्षकी अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।

पतिलोकगतां सौम्यां नित्यविद्यास्वरूपिणीम् ।
ध्यायेत् प्रयत्नतो नित्यं मातरं शारदेश्वरीम् ॥ ५ ॥

श्रीचारुचन्द्रविद्यार्णवविरचितं "श्रीश्रीशारदेश्वरीध्यानम्" समाप्तम् ।



श्रीश्रीशारदामणिवन्दना

डॉ० रमाचतुर्धुरिण्याविरचिता

माता गुरुभ्यां परमो गुरुर्मतः,
सा दैवतानां परमं च दैवतम् ।
सर्वाश्रयाणां परमाश्रयोऽपि सा,
तुल्यं जनन्या न ततोऽस्ति भुवने ॥ १ ॥

विलोक्य तीर्थाणि सहस्रवारं
प्रजायते यत् फलमत्र लोके ।
फलं ततः कोटि-गुणाधिकं स्यात्
सकृन्मुखावलोकनतो जनन्याः ॥ २ ॥

स्वरूपिणी, जगन्माता श्री शारदेश्वरी का नित्यप्रति यत्न करके इस प्रकार से ध्यान करना भक्त मात्र का, (हर भक्त का) कर्तव्य है ॥ ४-५ ॥

श्री चारुचन्द्र विद्यार्णव द्वारा विरचित "श्रीश्रीशारदेश्वरीध्यानम्" समाप्त हुआ ।



माता ही सभी गुरुओं में श्रेष्ठ गुरु है । माता ही सभी देवताओं में श्रेष्ठ देवता है । माता ही सभी आश्रयों में श्रेष्ठ आश्रय है । धरातल पर माता के समान और कुछ भी नहीं है ॥ १ ॥

हजारों बार पृथ्वी पर तीर्थ दर्शन करने से जो फल प्राप्त होता है, उसकी अपेक्षा करोड़ों गुना अधिक फल एक बार श्री मां का मुख दर्शन करने से ही प्राप्त होता है ॥ २ ॥

श्रुत्वा हरेर्नाम सहस्रबारं
प्रजायते यत् फलमत्र लोके।
फलं ततः कोटिगुणाधिकं स्यात्
श्री नाम्न आकर्णनतो जनन्याः ॥ ३ ॥

सहस्रबारं श्रुति-मन्त्रपाठात्
प्रजायते यत् फलमत्र लोके।
फलं ततः कोटिगुणाधिकं स्या-
च्छ्रीनाम्न उच्चारणतो जनन्याः ॥ ४ ॥

सहस्रकृत्वोऽमर-विग्रहांघ्रि
स्पर्शेन यावत् फलमत्र लोके ।
फलं ततः कोटि गुणाधिकं स्यान्
मातुः सकृच्छ्रीपद-संग्रहेण ॥ ५ ॥

जननी मम धरणी-सम सर्वसहन-सारा ।
स्वीकृत-नत-सन्तति-शत-पालन-वर-भारा ॥ ६ ॥

हजारों बार हरिनाम श्रवण करने से जितना फल प्राप्त होता है, उससे करोड़ों गुना अधिक फल मात्र एक बार श्री मां का नाम श्रवण करने से होता है ॥ ३ ॥

हजारों बार शास्त्रों एवं मंत्रों का पाठ करने से जितना फल प्राप्त होता है, उससे करोड़ों गुना अधिक फल मात्र एक बार श्री मां का नाम उच्चारण करने से ही प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

हजारों बार देवता के विग्रह का चरण स्पर्श करने से जितना फल प्राप्त होता है, उससे करोड़ों गुना अधिक फल मात्र एक बार श्री मां का चरण स्पर्श करने से प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

मेरी मां (श्री शारदादेवी) पृथ्वी के ही समान सब कुछ सहन करने में कुशला हैं। अपने निकट प्रणत जिन शत-शत सन्तानों को उन्होंने ग्रहण किया है, उन सब के लालन-पालन का भार भी तो उन्होंने स्वयं ही अनुग्रह करके आनन्दपूर्वक ग्रहण किया है ॥ ६ ॥

अम्ब ! सदयमृच्छ हृदय-जात-कुसुम-गुच्छम् ।
क्व सुरसद्म चरण-पद्म-विरहित मति तुच्छम् ॥ ७ ॥
वीताशन-पान-गमन-शयनासन-शोकम् ।
जननि ! बहसि निजवक्षसि दुर्दमापं तोकम् ॥ ८ ॥
माता मम करुणा-कम-मूर्तिः शम-धात्री ।
प्रति जनुरनुसरतु वितनु पुत्रममृत-पात्री ॥ ९ ॥
परम-जननि दैत्य-दलनि मोक्ष-धरणि धन्ये ।
वितर वितर मंगलकरचाचलेश्वर-कन्ये ॥ १० ॥

हे मातः (श्री शारदादेवी) ! सदया होकर, तुम हम लोगों के हृदय कुसुम के गुच्छों को भक्ति-श्रद्धा के अर्घ्य रूप में ग्रहण करो । तुम्हारा चरण कमल यदि न पड़े तो देवगृह भी तुच्छ से तुच्छ हो जाता है ॥ ७ ॥

हम लोगों के दैनन्दिन जीवन की अति साधारण घटना भोजन, पानी, गमनागमन, शयन-उपवेशन आदि से जो शोक-दुःख का उदय होता है, वह तुम्हारी ही अतुलनीय कृपा से दूरीभूत हो जाता है ।

केवल तुम्हारे चरणों में प्रणत, आश्रयप्रार्थी सन्तानों को ही नहीं उसके साथ-साथ, अति दुर्दान्त, दुर्धर्ष, दुर्विनीत सन्तानों को भी तुम उसी प्रकार से आदर करते हुए अपने हृदय में स्थान देती हो तथा उन पर कृपा करती हो ॥ ८ ॥

मेरी माता (श्री शारदा) करुणा की मूर्ति और कोमला हैं । वे अशेष शान्ति और कल्याण की धारयित्री हैं ।

प्रत्येक नारी इसी प्रकार से उनका अनुसरण करके, उन्हीं के समान अमृत पात्री होकर, सन्तानों का जीवन विकसित करें ॥ ९ ॥

हे परमा जननि ! तुम दैत्यों का दलन करने वाली, मोक्ष देने वाली और धन्य को भी धन्य करने वाली हो ।

हे दुर्गे ! अपनी मंगलधारा तुम सर्वत्र प्रवाहित करो ।

तुम ब्रह्म-महिषी, परम-विदुषी, चिन्मयी और चिर सत्य हो ॥ १० ॥

ब्रह्म-महिषि परम-विदुषि चिन्मयि चिर-सत्ये।
ज्ञान-विभवमर्पय भव-जलधि-तरण-कृत्ये ॥ ११ ॥

हृदयं ममभेद-विषम-बोध-विधुरमन्धम् ।
मृगयति सति हृत-निर्वृति भवतीमनुसन्ध्यम् ॥ १२ ॥

धरणी-शरणी भवाब्धि तरणी बन्ध-मोक्ष-कारिणी।
नमामि चरणे त्रिताप-तारिणी मलिन-मरण-हारिणी ॥ १३ ॥

कोटि-सूर्य-शोभा-सारिणी, कोटि-चन्द्र-भारिणी।
कोटि-तारक-किरण धारिणी, कोटि-ग्रह-विचारणी ॥ १४ ॥

विमल-हासिनी कनक-काशिनी दिव्यधामवासिनी।
श्री शारदामणिः नित्यानन्दखनिः सुधा-रस-निर्झरिणी ॥ १५ ॥

हमलोग संसार-सागर से अनायास ही पार हो सकें, इसके लिए तुम हम लोगों को स्नेह पूर्वक ज्ञान रूपी धन दान करो ॥ ११ ॥

मेरा हृदय भेद-ज्ञान द्वारा विषाक्त एवं अज्ञान से अन्धा हो गया है। उसमें, एकमात्र अनुसन्धान की वस्तु तुम्हारा अन्वेषण करने से ही मेरा वह विष और अज्ञान का आवरण अपसारित हो सकता है ॥ १२ ॥

हे माता श्री शारदादेवी ! तुम पृथ्वी पर एक मात्र शरण योग्य वस्तु हो; भवसागर से पार करने के लिए एकमात्र तरणी हो। एकमात्र बन्धन-मोक्ष देने वाली हो। त्रितापहारिणी, कृष्ण-कुटिल-मरणहारिणी, तुमको ही बारम्बार प्रणाम ॥ १३ ॥

तुम करोड़ों सूर्य के समान समुज्ज्वला; करोड़ों चन्द्रमा के समान सुशीतला, करोड़ों तारा गणों के समान स्फुरणशीला तथा करोड़ों ग्रहों एवं उपग्रहों में विचरण शीला हो ॥ १४ ॥

तुम विमल-हास्य-विभूषिता, स्वर्ण के समान दीप्यमान और दिव्य धाम में निवास करने वाली हो। तुम श्री श्री शारदामणि, आनन्द का भण्डार और नित्य अमृत बहाने वाली निर्झरणी के सदृश हो ॥ १५ ॥

भुवनादरिणी भवनाभरणी जननी शारदामणिः।
तनया तापिनी सदा-विलापिनी पाद-रेणु-कामिनी ॥ १६ ॥
नौमि श्री शारदामणिम् ! नौमि श्री शारदामणिम् !! नौमि श्री शारदामणिम् !!!
॥ ॐ शान्तिः ॥

श्रीश्रीशारदामातृ षोड़शिका

(आशयानुवादसहिता) प्राध्यापकपाँचुगोपालबन्धोपाध्यायेतिप्रचलन्नामधेय-
श्रीजगन्नाथदेवशर्मणा विरचिता

श्रीराम-श्यामागत-देहाऽतुल्य-कन्यकाभाव-दर्शिनी
सुस्निग्ध-ज्येष्ठ-स्वसृ-रूपा प्रायशोऽखिल-ग्राम-वासिनाम् ।

तुम, जननी श्री शारदामणि, समग्र भुवन की परम आदरणीया और समस्त भुवन की श्रेष्ठ आभरण हो। तापिता, तनया (दीनहीना रमा) भी तुम्हारे दर्शन के लिए रोरुद्यमाना है, रो रही है। वह दिन रात तुम्हारे श्री चरणों की धूलि का एकमात्र कण विनयपूर्वक श्रद्धा से कातर भाव से भिक्षा मांग रही है ॥ १६ ॥

श्री श्री शारदामणि को प्रणाम !
श्री श्री शारदामणि को प्रणाम !!
श्री श्री शारदामणि को प्रणाम !!!
॥ ॐ शान्तिः ॥

आशयः—ओ मां शारदा ! तुमने श्री रामचन्द्र मुखोपाध्याय और श्रीमती श्यामासुन्दरी देवी की कन्या रूप से शरीर धारणपूर्वक बाल्य, कैशोर और यौवन में अतुलनीय कन्या भाव का प्रदर्शन किया था। तुम अपनी जन्मभूमि जयरामबाटी ग्राम के प्रायः सभी अधिवासियों की अत्यन्त स्नेह परायण ज्येष्ठ भगिनी-स्वरूपा थी, तुम श्रीरामकृष्णदेव का पत्नीत्व स्वीकार करके भी, ऐकान्तिक

जायाऽपि ब्रह्म-व्रत-निष्ठा भर्तृ-दिव्य-भाव-प्रकाशिनी।
देवी त्वं माता सकलानां संघपालिका पाप-हारिणी ॥ १ ॥

साक्षान्माया मायाविष्टाऽसामान्याऽपि त्वं सामान्या।
विद्या-न्यूना ग्राम्याऽपि त्वं ब्रह्म-ज्ञानादर्श-प्राणा ॥ २ ॥

शारदे ! सारदात्री त्वं सदा विश्वार्ति-हारिणी।
गूढ़-रूपे ! महा-देवि ! कस्त्वां स्तोतुमिहाऽर्हति ॥ ३ ॥

दीन-वेशा पति-प्राणा सर्व-सहा धरेव तु।

निष्ठा के साथ अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत धारण पूर्वक पति के दिव्य भाव के प्रकाश में परम सहायिका हुई थीं। वही तुम सत्य में ही एक ही साथ देवी, सभी जीवों की सभी समय में जननी, नरश्रेष्ठ, नर-ऋषि स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रतिष्ठित श्रीरामकृष्ण मठ और मिशन रूपी विराट संघ की पालनकर्त्री एवं शरणागत अगणित, त्रितापक्लिष्ट स्त्रियों एवं पुरुषों के सभी प्रकार के पापों को निर्मूल करने वाली महाशक्तिमयी गुरु ! ॥ १ ॥

ओ मां शारदा ! तुम साक्षात् देवी महामाया होकर भी, तुमने अपना स्वरूप अपनी माया के द्वारा सम्यक् रूप से आवृत्त कर गुप्त रखा था। तुम असामान्या जगदीश्वरी होकर भी, अपने तुमने को सामान्य नारी के समान प्रकट किया। तुमने स्वल्पशिक्षिता ग्रामवासिनी होकर भी, सर्वोच्च ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के आदर्श को एकान्त प्राण की वस्तु समझ कर ग्रहण किया था ॥ २ ॥

ओ मां शारदा ! इस असार संसार में तुम शरणागतों को सर्वदा भक्ति, ज्ञान और दिव्य चेतना आदि सार वस्तुयें दान करती हो एव त्रितापजनित समस्त कातरता दूर करती हो। हे आत्म स्वरूप गोपनकारिणी ! हे महादेवि ! सत्य में इस धरामण्डल पर कौन मनुष्य तुम्हारा स्तवन करने में समर्थ है ? अर्थात् मनुष्य शरीरधारी कोई भी स्तवन के द्वारा तुम्हारी अतुलनीय महिमा का वर्णन करने में समर्थ नहीं है ॥ ३ ॥

ओ मां शारदा ! दीन-दरिद्रों का वेश धारण करके भी, वास्तव में तुम राज-राजेश्वरी हो; श्रीरामकृष्ण तुम्हारे प्राण स्वरूप थे (अथवा तुम पति

राजराजेश्वरी हि त्वं कस्त्वां स्तोतुमिहाऽर्हति ॥ ४ ॥
अजनयन्त्यापि स्वीयान् मानवीव तु गर्भजान् ।
जननी सर्वजीवानां कस्त्वां स्तोतुमिहाऽर्हति ॥ ५ ॥
गलित-स्नेह-धाराऽपि बगलारूपधारिणी ।
धृत-जिह्वा प्रमत्तस्य कस्त्वां स्तोतुमिहाऽर्हति ॥ ६ ॥
अकिंचनाऽपि मातस्त्वं त्यक्तवित्तैषणा स्वतः ।
दर्शित-त्याग-निष्ठाऽहो कस्त्वां स्तोतुमिहाऽर्हति ॥ ७ ॥

श्रीरामकृष्ण की प्राण स्वरूपा थीं); और सब कुछ सहन करने वाली पृथ्वी के समान तुमने भी सभी दुःख और कष्ट अम्लान बदन से सहन किया। यहाँ तक कि दुःख और कष्ट में भी तुम्हारे हृदय में आनन्द का पूर्ण घट नित्य ही विराजमान था। अतएव सत्य में तुम्हारी स्तुति करने में इस पृथ्वी पर कोई भी समर्थ नहीं है ॥ ४ ॥

ओ माँ शारदा ! सामान्य स्त्री की भाँति गर्भधारिणी मां न होकर भी, एक भी सन्तान को प्रसव न करके भी, पति श्रीरामकृष्ण के अमोघ आशीर्वाद से तुम सभी जीवों की सत्य-सत्य माँ हुई हो एवं उसी मातृ-मूर्ति में नित्य पूजिता हो रही हो। अतः तुम्हारी स्तुति करने में वस्तुतः इस पृथ्वी पर कोई भी समर्थ नहीं है ॥ ५ ॥

ओ माँ शारदा ! दिन रात तुम्हारी स्नेहधारा सभी जीवों पर कल्याण करने के लिए प्रवाहित होने पर भी एक बार, हरीश नामक किसी उन्मादित व्यक्ति के कल्याण के लिए तुमने उग्रा बगला देवी के भाव में आविष्ट होकर, उस पर कठोर शासन किया था। इस प्रकार की अद्भुत और अतुलनीय कीर्तिमती तुम्हारी स्तुति करने में इस पृथ्वी पर कोई भी समर्थ नहीं है ॥ ६ ॥

ओ माँ शारदा ! अर्थादि वैभव न रहने पर भी तुमने स्वाभाविक भाव से ही वित्त प्राप्ति की इच्छा परिहार पूर्वक को अपूर्व त्याग निष्ठा प्रदर्शित की। अतएव इस पृथ्वी पर कोई भी तुम्हारी स्तुति करने में समर्थ नहीं है ॥ ७ ॥

नारी-रूप-धराऽपित्वं पुं-स्त्री-धर्मोपदेशिनी ।
कामिनीत्याग-वक्त्री च कस्त्वां स्तोतुमिहाऽर्हति ॥ ८ ॥

भार्याऽपि स्वामिनं देवं "काली" ति संलपन्त्यभूः ।
प्रयाण-समये मातः! कस्त्वां स्तोतुमिहाऽर्हति ॥ ९ ॥

योगाश्रमे स्वयं मातरभ्यर्च्याऽहो निजाकृतिम् ।
नाथालेख्येन साकन्त्वभेद-काष्ठां परां गता ॥ १० ॥

शक्तिमता यथा शक्तिस्तादात्म्यरूपतः स्थिता ।

ओ मां शारदा! नारीरूप धारण कर धराधाम में अवतीर्ण होकर भी, तुमने स्त्री और पुरुष दोनों प्रकार के भक्तों को प्रकृत धर्मोपदेश दिया था। किसी-किसी विशेष उपयुक्त अधिकारी पुरुष भक्त को तो तुमने कामिनी त्याग पूर्वक सर्वोच्च सन्यास ग्रहण के आदर्श के प्रति उद्बुद्ध किया था। इस प्रकार की अपूर्व उपदेश देने वाली तुम्हारी स्तुति करने मे इस पृथ्वी पर कोई भी समर्थ नहीं है ॥ ८ ॥

ओ माँ शारदा! लौकिक संपर्क से तुम श्रीरामकृष्ण की पत्नी होकर भी, उन्हीं पति देवता के महाप्रयाण के समय "ओ (गो), मेरी मां काली! तुम कहां गई!" – यह कह कर उच्च स्वर से क्रन्दन कर उठी थीं। अपने पति को इस प्रकार अद्‌भुत भाव से सम्बोधन करने वाली तुम्हारी स्तुति करने में कोई समर्थ नहीं है ॥ ९ ॥

ओ मां शारदा! जयरामबाटी के पास ही स्थित कोयालपाड़ा गाँव में प्रतिष्ठित योगाश्रम में श्रीरामकृष्ण की प्रतिकृतियों के साथ अपनी प्रतिकृति प्रतिष्ठित कर अहो, तुमने स्वयं दोनों प्रतिकृतियों की पूजा की थी। इस प्रकार पहले न सुने गये आचरण करने वाली तुम्हारी स्तुति करने में कोई समर्थ नहीं है ॥ १० ॥

ओ मां शारदा! जिस प्रकार शक्तिमान के साथ तादात्म्य सम्बन्ध के द्वारा शक्ति अविच्छिन्न रूप से अवस्थान करती है, उसी प्रकार तुम भी

तथा त्वं रामकृष्णेण कस्त्वां स्तोतुमिहाऽर्हति ॥ ११ ॥

भार्या देवीश्वरी माता श्रीरामकृष्ण देवतः ।
अमेय भावरूपा त्वं कस्त्वां स्तोतुमिहाऽर्हति ॥ १२ ॥

हे मातः शारदे ! श्री रामकृष्ण-पूजिते !
मां रक्षाऽनाथकं दीनार्त-सेवकं भवे ।
संसार-व्याकुलं भीतं चिरं भवाऽर्णवे ।
मग्नं मोहप्रदे याचे कृपालवं नु ते ॥ १३ ॥

त्वं दुर्गा कालिका चण्डी महा-सरस्वती
देवी विद्या परासृष्टि-स्थिति प्रणाश-कृत् ।

श्रीरामकृष्ण देव के साथ अभिन्न रूप से अवस्थान करती हो। इस प्रकार की महिमान्विता ! तुम्हारी स्तुति करने में कोई समर्थ नहीं है ॥ ११ ॥

ओ मां शारदा ! श्रीरामकृष्ण के संग में तुम्हारा विचित्र संपर्क था, क्या आश्चर्य है ? तुम एक साथ उनकी भार्या, देवी, ईश्वरी और माता थीं। प्रकृत पक्ष में तुम्हारे विचित्र भाव और स्वरूप का परिमाप करना असंभव है। अतएव कोई भी मनुष्य तुम्हारी स्तुति करने में समर्थ नहीं है ॥ १२ ॥

श्रीरामकृष्ण के द्वारा पूजिता, ओ मां शारदा ! अपने गुणों से कृपा करके तुम मेरी रक्षा करो। इस संसार में मैं अनाथ, दैन्य दशा ग्रस्त, अत्यन्त कातर और तुम्हारे प्रति दास्य भाव की भावना करता हूं। हाय मैं इस अनित्य संसार में भोगादि प्राप्त करने के लिए व्याकुल होकर मोहजनक भव समुद्र में दीर्घकाल से निमज्जित हो रहा हूं, पड़ा हुआ हूं। इस दुर्भाग्य जनक अवस्था से मुक्त होने के लिए मैं तुम्हारी कृपा का एक कण (बूंद) पाने की प्रार्थना तुमसे कर रहा हूं ॥ १३ ॥

ओ मां शारदा ! मेरे निकट तुम ही दुर्गा, काली, महासरस्वती, दिव्यगुण धारिणी पराविद्या, सृष्टि-स्थिति विनाशकारिणी आद्याशक्ति, जगद्धात्री एवं

आद्या शक्ति रथो धात्री महा-रमाऽसि मे
तत्त्वं को वेत्ति ते श्रीरामकृष्ण एव वै ॥ १४ ॥

ॐ-ऐं-ह्रीं-बीज-प्रतिपाद्ये ! सर्वदेवदेवी-स्वरूपिणी !
मातस्त्वं को नु प्रणमेन्न क्षौणिमण्डले मंगलक्रमः ।
वक्तुं नालं कोऽपि सुमेधास्ते विचित्रलीला-सुवैभवं
कालग्रस्तं माऽतिविमूढं रक्षदेवि ! सर्वार्थ साधिके ॥ १५ ॥

नूमः सर्वाधारां प्रणतजनसंसार-तरणीं
जगन्मातृत्वे वै फलहरण काल्यर्चन तिथौ ।

महालक्ष्मी उमा (हो) । तुम्हारा तत्व कौन जानता है ? एकमात्र श्रीरामकृष्ण देव ही तुम्हारा तत्व उत्तम रूप से जानते थे ॥ १४ ॥

ॐ, ऐं एवं ह्रीं—इस समष्टिभूत बीज मंत्र की प्रतिपाद्या, सर्व-देव-देवी स्वरूपिणी एवं सर्वार्थ साधिका ओ मां शारदादेवी ! इस पृथ्वी पर मांगलिक कर्म में उत्साही और उद्योगी किसी भी व्यक्ति को तुम्हारे श्री चरण-कमलों में अवश्य ही प्रणत होना चाहिए । कोई अत्यन्त मेधावी व्यक्ति भी प्रकृत पक्ष में तुम्हारी लीला के महान् ऐश्वर्य का वर्णन करने में समर्थ नहीं होते । दुर्भाग्य-क्रम से मैं अत्यन्त मोहग्रस्त और कालकवलित हूं । अतएव तुम कृपापूर्वक मेरी रक्षा करो ॥ १५ ॥

आश्रय रूप से जाने जाने वाले सभी आधार जिनके आश्रित हैं, प्रणत भक्तगणों की संसार वासना को जो दहन करने वाली हैं, पवित्र हैं और विश्रुत फल-हारिणीकाली पूजा की तिथि में एक बार रात में पति श्रीरामकृष्ण के द्वारा स्तुता और पूजिता होकर जो जगन्माता रूप में प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध हुई, जो निखिल प्राणियों का निःश्रेय स्वरूप परम मंगल विधान में समर्थ हैं, दिव्य आचार परायणा हैं, शरणागत प्रार्थियों को उनका सब अभीष्ट देने वाली हैं

स्तुतां देवीं पत्या निखिल मनुजानां पर हिते
रतां दिव्याचारां सकल वरदां शारदा-मणिम् ॥ १६ ॥

इति आशय-अनुवाद सहिता "श्रीश्रीशारदामातृषोड़शिका" समाप्ता।



श्रीश्रीशारदाष्टकम्

अध्यापिका डॉ० (कुमारी) कृष्णा बन्द्योपाध्याया
एम० ए० (डबल) पी-एच० डी० विरचितम्

शारदा वरदा पुण्या सुदिव्यज्योतिर्मण्डिता ।
सार्धं श्रीरामकृष्णेण हृदये मम तिष्ठतु ॥ १ ॥

या शारदा मर्त्यमलं करोति
ज्ञानप्रदा सैव सरस्वती हि ।
ध्येया सदा सा भवभंजनाय
ज्ञेया भवानी जननीति नित्यम् ॥ २ ॥

एवं जो श्रेष्ठ सार वस्तु दान करने वालों में शिरोमणि-स्वरूपा हैं, उन्हीं जगन्माता शारदादेवी को हम लोग भक्ति भरे हृदय से प्रणाम करते हैं ॥ १६ ॥

आशय-अनुवाद सहित "श्रीश्रीशारदामातृषोड़शिका" समाप्त हुई ।



वरदाश्री, पुण्यमयी, सुदिव्य ज्योतिमण्डिता श्री श्रीशारदादेवी श्रीरामकृण के साथ मेरे हृदय में अवस्थान करें ॥ १ ॥

जिन्होंने 'शारदा' रूप में मर्त्यलोक को अलंकृत किया है, वे ही ज्ञानदायिनी सरस्वती हैं। भवबन्धन से मुक्ति पाने के लिए उनका ध्यान करना चाहिए, एवं वे ही जगन्माता भवानी रूप से प्रसिद्ध हैं, ऐसा जानना चाहिए ॥ २ ॥

इत्थं स्तवैः श्रीप्रभु-रामकृष्णो
यामर्चयामास शुभां वरेण्याम् ।
मायावृतां भस्मनिगूढ़ वह्नि
सा मंगला मंगलमातनोतु ॥ ३ ॥

सेवा परं पंकजपाणियुग्मं
श्रीरामकृष्णाय च दत्तचित्तम् ।
यस्याः प्रसन्नास्यसुहास्यबिम्बं
नित्यं जने सा करुणां दधातु ॥ ४ ॥

लज्जावगुण्ठनवती पतिगेहलक्ष्मीः
सा षोड़शीति ललनासु ललामभूता ।
पूजामगृह्णदभया सदया स्वपत्युः
मग्ना समाधि जलधौ खलु भावलीना ॥ ५ ॥

इस प्रकार स्तव के द्वारा प्रभु श्रीरामकृष्ण ने जिन वरेण्या, शुभकारिणी मां शारदादेवी की वन्दना की थी, माया का अवलम्बन करके मानव शरीर धारण करनेवाली, भस्म से आच्छादित अग्नि, वे ही मंगलमयी (मां) सबका मंगल करें ॥ ३ ॥

जिनके दोनों कर कमल सतत सेवा में तत्पर रहते थे, जिनका चित्त श्रीरामकृष्ण के प्रति अर्पित था, जिनका प्रसन्न मुखमण्डल सतत मधुर हास्य से उद्भासित रहता था, वे ही शारदादेवी नित्य सब लोगों के लिये करुणा वितरित करें ॥ ४ ॥

लज्जारूपी अवगुण्ठन से ढकी हुई, पति के गृह में लक्ष्मीस्वरूपा, श्रेष्ठा, लावण्यमयी वे ही दयावती अभयादेवी शारदा षोड़शीरूप में अपने पति श्रीरामकृष्ण की पूजा ग्रहण कर भावसमाधि समुद्र में मग्न हुई थीं। उन्हीं शारदा देवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

या घोषितार्चन परैस्तु नरेन्द्रमुखैः
कालीति कल्मषहरीति जननी च साक्षात् ।
प्रत्यक्षगम्यपरमाद्भुतमूर्तरूपा
सद्यो भयं हरतु सा भवभीतिभीरोः ॥ ६ ॥

तेजः पुंजतपः प्रभावविभया देदीप्यमाना सदा
हस्ताब्जे जपमालिकां धृतवती कल्याणयज्ञे रता ।
शश्वद्भक्तजने त्वनुग्रहकरी पुण्यप्रदा मोक्षदा
गंगात्तोयसमा प्रसादनिलया श्री शारदा पातु नः ॥ ७ ॥

लोलादेहधरी सदा सहचरी श्री रामकृष्णस्य या
देवेशस्य युगप्रयोजनवशात् साक्षात् जगद्धात्रिका ।

मातृ अर्चना में तत्पर नरेन्द्र आदि भक्त शिष्यों ने जिनकी साक्षात् कलमष-हारिणी माता कालिका के रूप में घोषणा की थी, मानव दृष्टि की प्रत्यक्ष गोचर परमआश्चर्य मूर्तिमति वे ही शारदा मां आर्त्तजनों की भवयन्त्रणा तथा भय सद्य (तुरन्त) विदूरित करें ॥ ६ ॥

दिव्यज्योति-उद्भासिता, तप के प्रभाव से दीप्तिमयी मां शारदा अपने कर कमलों में जपमालिका धारण करके अपनी सन्तानों की कल्याण कामना के लिए जप यज्ञ में निरता हैं । वे सतत भक्तजनों पर अनुग्रह करने वाली, पुण्य-दायिनी एवं मोक्षदात्री हैं । गंगाजल के समान पवित्र करने वाली, अनुग्रह की आधार श्रीशारदा देवी हम लोगों की रक्षा करें ॥ ७ ॥

जो लीला करने के उद्देश्य से शरीरधारिणी साक्षात् जगद्धात्री हैं, ईश्वरावतार श्रीरामकृष्ण की जो सदा लीला सहचरी हैं, युग प्रयोजनवश धर्म की स्थापना के लिए, मानव को सत्पथ पर चालित करने के लिए जिन्होंने

धर्मस्थापनहेतवे घृतवपुर्नेतुं जनान् सत्पथं
भक्ति मोक्षफलं सकृद् वितरितुं साम्बा प्रसीदत्वहो ॥ ८ ॥

अध्यापिका डॉ० (कुमारी) कृष्णाबन्द्योपाध्याय विरचित्
"श्रीश्रीशारदाष्टकम्" समाप्तम् ।



श्रीश्रीशारदामातृप्रणामः

काव्यव्याकरणतीर्थ, भागवताचार्य, स्मृतिरत्न, एम० ए०,
श्रीविश्वेश्वरभट्टाचार्यविरचितः

दृष्टान्तं नो जगति महति स्थापनार्थं प्रयत्नो
यस्याश्चायं विमलमतिभिर्मानितः सुष्ठु चास्मिन् ।
सोऽहम्भावग्रहण मनसश्चात्मद्रष्टुर्द्विजस्य
धन्यां भार्यां पतिमनुगतां रामकृष्णैकचित्ताम् ॥ १ ॥
सततमखिललोकैर्वेष्ठिताया न यस्याः
कथमपि बत यातो मानसाद् ब्रह्मभावः ।

मनुष्य शरीर ग्रहण किया है, वे ही मां शारदा प्रसन्न होकर भक्ति एवं मुक्ति वितरित करें ॥ ८ ॥

अध्यापिका डॉ० (कुमारी) कृष्णाबन्द्योपाध्याय द्वारा विरचित
"श्रीश्रीशारदाष्टकम्" समाप्त हुआ ।



जिन्होंने हम लोगों के समक्ष इस विशाल संसार में आदर्श स्थापित करने के लिए प्रयत्न किया है एवं जिनके उस प्रयत्न को निर्मल बुद्धि सम्पन्न मनुष्य ने उत्तम रूप से मान लिया है, जो "सोऽहम्" भाव ग्रहण करने में कुशल हैं, आत्मद्रष्टा रामकृष्ण रूपी पति की तद्गत और एकान्त अनुवर्तिनी धन्या भार्या हैं, उन्हीं श्री श्रीशारदा मां को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

सर्वदा बहुत लोगों से परिवेष्टित रहने पर भी जिनके मन से कभी भी ब्रह्मभाव अपसृत नहीं हुआ, जिन्होंने जगत् का उपकार ही एकमात्र सार जान

जगदुपकृतिसारः स्वीकृतः स्वावतारः
शमदमभजनार्थं शारदां तां नमामि ॥ २ ॥

न जातिभेदो न च वर्णभेदो
न धर्मभेदो न च वान्यभेदः ।
स एव धर्मः परमो मतोऽस्या
यतः खलु तुष्यति चाखिलेशः ॥ ३ ॥

कैलाशनिलयां देवीं शारदां भवगेहिनीम् ।
अवतीर्णां भवेऽस्मिन् वै शारदां तां नमाम्यहम् ॥ ४ ॥

रामकृष्णेन चाख्याता ज्ञानदा त्वं हि केवलम् ।
अतस्त्वां खलु याचेऽहं दिश तज्ज्ञानमुत्तमम् ॥ ५ ॥

संसारोत्तरणं ज्ञानं दातुं शक्या त्वमेव हि ।
कृपया दिश तज्ज्ञानं येन धन्यो भवाम्यहो ॥ ६ ॥

कर जीवों को शम, दम और साधन-भजन की शिक्षा देने के लिए अपना अवतार स्वीकार किया है, उन्हीं श्री श्रीशारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

उनके पास कोई जाति-भेद, वर्ण-भेद, धर्म-भेद या अन्य कोई भेद नहीं था । एवं इस प्रकार भेद शून्य (भेद रहित) धर्म को ही वे श्रेष्ठ समझती थीं । इसी प्रकार के धर्म से अखिलेश्वर सन्तुष्ट होते हैं ॥ ३ ॥

कैलाशवासिनी शिव की पत्नी, देवी शारदा ही (शरत्काल में उपासिता देवी दुर्गा) इस पृथ्वी पर शारदा नाम ग्रहण करके अवतीर्ण हुई हैं । उन्हीं शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

भगवान् श्रीरामकृष्ण देव ने तुमको 'ज्ञानदायिनी' कहा है । अतएव हे मातः ! तुम उसी श्रेष्ठ ज्ञान को मेरे लिये वितरित करो । जिससे मैं मुक्त हो सकूं । यही मेरी एकमात्र प्रार्थना है ॥ ५ ॥

हे मातः ! संसारोद्धारक ज्ञान देने में एकमात्र तुम ही समर्थ हो । अतएव दया करके वही ज्ञान दो जिससे मेरा जीवन धन्य हो जाय ॥ ६ ॥

आश्रित्यामरदेहं त्वमुद्धर्त्तुमाश्रितान् जनान्।
गृहीतासि व्रतं मातः सन्देहो नात्र कस्यचित्॥ ७॥
पत्युर्व्रते स्थिता नित्यं सदा पत्यनुगामिनी।
आज्ञया पतिदेवस्य स्वभक्तोद्धारणे रता॥ ८॥

श्रीविश्वेश्वरभट्टाचार्यविरचित "श्रीश्रीशारदामातृप्रणामः" समाप्तः।



श्रीश्रीशारदादेवीस्तोत्रामृतम्

स्वामीजीवानन्दविरचितम्

ब्रह्मयुक्तनित्यशक्तिसृष्टजीवपालिकां
रामकृष्णशक्तिशुद्धबुद्धिमुक्तिदायिकाम्।
रामकृष्णभावसिक्तरामकृष्ण वल्लभां
तां नमामि शारदां हि विश्वमातृरूपिणीम्॥ १॥

हे मातः! तुमने अमर शरीर धारण करके आश्रित जनगणों का उद्धार करने का महाव्रत ग्रहण किया है, इसमें किसी को भी सन्देह नहीं है॥ ७॥

हे मातः! तुमने सर्वदा पति के व्रत में अनुकूलता की है। सर्वदा तुम पति के निर्देशानुसार ही चली हो एवं उन्हीं पति देवता भगवान् रामकृष्ण की आज्ञानुसार अपने भक्तों का भव-बन्धन से उद्धार करने के लिए सर्वदा तत्पर हो रही हो॥ ८॥

श्री विश्वेश्वर भट्टाचार्य द्वारा विरचित "श्रीश्रीशारदामातृ-प्रणामः" समाप्त हुआ।



जो चैतन्यमयी ब्रह्मशक्ति के साथ अभिन्न हैं एवं उनके द्वारा सृजित जीवों का पालन करने वाली हैं, रामकृष्ण-भावानुरंजिता, रामकृष्णप्रिया एवं जगन्मातृ-रूपिणी उन्हीं शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं॥ १॥

ब्रह्मशक्तिदिव्यरूपसर्वसृष्टि भासिकां
ज्ञानभक्तिपूर्णमूर्तिनित्यसत्यसुस्थिराम् ।
प्रेमभक्तिरागशुद्धिनित्यमोक्षदायिनीं
तां नमामि शारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥ २ ॥
रामकृष्णपूजितां सुपावनीं भवेश्वरीं
दृष्टिपातशुद्धिदान दक्षजन्मघातिनीम् ।
रामकृष्ण शुद्धनित्य भक्तिदानतत्परां
तां नमामि शारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥ ३ ॥
रामकृष्णनाममुग्धतत्सुधाकथाप्रियां
रामकृष्णलुप्तचित्तसर्वकामवर्जिताम् ।
विश्वलोकपूज्य-नित्यसिद्ध-साधिकासतीं
तां नमामि शारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥ ४ ॥
भर्तृदेवरामकृष्ण—शेषकर्मसाधिकां
दीर्घकालपुण्ययोग—पूर्णसिद्धिकारिकाम् ।

जो ब्रह्ममयी पराशक्तिस्वरूपिणी सभी जीवों की आश्रयभूता हैं, पूर्ण ज्ञान और भक्तिरूपा हैं, सनातनी, शाश्वती, नित्य प्रेमभक्ति, अनुराग चित्तशुद्धि एवं मोक्षदायिनी हैं, जगन्मातृरूपिणी उन्हीं शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

श्रीरामकृष्ण के द्वारा आराधिता, अति शुद्धचित्ता, विश्वब्रह्माण्ड की अधिष्ठात्री देवी, केवल दृष्टि मात्र से ही जो पवित्र करने वाली एवं जन्मबन्धन का हरण करने वाली हैं, सदा रामकृष्ण के द्वारा प्रदर्शित शुद्धभक्ति प्रदान करने वाली एवं जगन्मातृरूपिणी उन्हीं शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ।। ३ ।।

श्री रामकृष्ण नाम श्रवण करने में जो सदा आनन्दिता हैं एवं उनका कथामृत जिनको परम प्रिय है, जो निरन्तर तद्गतप्राणा हैं, जिनमें कामना-वासना का लेशमात्र भी नहीं है, जो विश्वपूजिता हैं, नित्यसिद्धा परमा साधिका एवं सती शिरोमणि उन्हीं जगन्मातृरूपिणी शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥

जो पति श्री रामकृष्ण की साधना की उत्तरसाधिका हैं, उनके द्वारा न समाप्त किये गये कर्मों को करने वाली हैं, दीर्घकाल व्यापी पवित्र योगाभ्यास

प्राप्त सर्वयोगसिद्धि - पूर्णकाममातरं
तां नमामि शारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥ ५ ॥

गेहिकृत्य–गेहकर्मनीति धर्मदेशिकां
त्यागिसेव्य–दिव्यधर्म–कायचित्तमण्डिताम् ।
कोटिभक्त–कन्ठगीत–मातृनामवन्दितां
तां नमामि शारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥ ६ ॥

ज्ञानभक्तिमिश्रपूर्ण शौर्यवीर्यदायिकां
क्लैव्यमोह्-दीनहीनभीति भावनाशिकाम् ।
दृष्टविश्वरामकृष्ण भावपूतनन्दितां
तां नमामि शारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥ ७ ॥

सर्वसम्प्रदायहीनसत्यधर्मदेशिनीं
देशकालजातिमध्यतुच्छभावनाशिनीम् ।

में परासिद्धा हैं एवं जिनके हाथों में कर्म, भक्ति, ज्ञान और योग सभी सिद्धियां विद्यमान हैं, उन्हीं आप्तकामा, मातृरूपा जगज्जननी शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

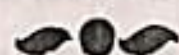
जो गृहस्थाश्रमियों के कर्तव्य एवं संसार में किस प्रकार रहना होगा उस विषय की नीति-निर्देशिका हैं; त्यागियों की आश्रयस्थलभूता हैं; दिव्य-धर्म, दिव्य-देह, द्विव्य-चित्तवृत्ति द्वारा परिशोभिता हैं एवं अगणित भक्तों के कण्ठ से निःसृत मातृ नाम के द्वारा सदा वन्दिता हैं, जगन्मातृरूपिणी उन्हीं शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

ज्ञानमिश्रिता भक्ति के उपदेश में जो शक्ति-सामर्थ्य दानकारिणी हैं; आश्रित सन्तानों की दीनता, मोह, क्लैव्य, भय की भावना दूर करने वाली हैं एवं समग्र विश्व में श्रीरामकृष्ण की भाव धारा का प्रचार करने में परम आनन्दिता हैं, उन्हीं जगन्मातृरूपिणी शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ७ ॥

सत्यधर्म के उपदेश के द्वारा देश-काल, जाति-भेद और साम्प्रदायिकता आदि संकीर्ण भाव जिन्होंने दूर कर दिया है; सभी देशों और सभी कालों के

देशपूज्य-कालपूज्य-कार्यहेतुर्वाजितां
तां नमामि शारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥ ८ ॥
आद्याशक्तिदिव्यमूर्ति-हृद्यशान्तिदायिनीं
वेदमूर्तिसत्यमूर्ति-कल्पवल्लिरूपिणीम् ।
भक्तसूनुचित्तनित्य-वित्तवृद्धिकारिणीं
तां नमामि शारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥ ९ ॥
सर्वभीतिनाशिनीं च पापपुण्यकारिणीं
सपदेशदायिनीं च शोकमोहतारिणीम् ।
रामकृष्ण-भावयुक्तसर्वसिद्धिदायिनीं
तां नमामि शारदां हि विश्वमातृरूपिणीम् ॥ १० ॥

स्वामिजीवानन्दविरचितं 'श्रीश्रीशारदादेवीस्तोत्रामृतम्'' समाप्तम् ।



शुद्ध चित्त व्यक्तियों के द्वारा पूजनीया हैं एवं साधारण जीवों के समान जिनका जन्म प्रारब्धवश नहीं हुआ है, उन्हीं जगन्मातृरूपिणी शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

आद्या शक्ति रूप में दिव्यमूर्ति धारण करके जो सभी हृदय को शान्ति प्रदान करने वाली हैं, वेद प्रतिपाद्य सत्यमूर्ति धारण करके जो कल्पवृक्ष के समान सब जीवों को उनका अभीष्ट देने वाली हैं, भक्त-सन्तानों के हृदय में सदा अध्यात्म सम्पदा बढ़ाने वाली हैं, उन्हीं जगन्मातृरूपिणी शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

जो उपदेशामृत वर्षण करके आश्रित सन्तानों के संसार भय (पाप पुण्य-कारक) को मुक्त करने वाली हैं, शोक-मोह विदूरित करने वाले तत्त्वोपदेश को प्रदान करने वाली हैं एवं श्रीरामकृष्ण के भाव में सर्वदा निमग्न हैं, मुक्ति-दात्री जगन्मातृरूपिणी उन्हीं शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १० ॥

स्वामी जीवानन्द कृत "श्रीश्रीशारदादेवीस्तोत्रामृतम्" समाप्त हुआ ।



श्रीश्रीशारदेवीस्तोत्रम्

अध्यापिका (कुमारी) मितारायचतुर्धुरिण्याविरचितम्

संसारसारभूता या, शारदा मातृरूपिणी।
गाढ़ान्धतमसि सा वै, ज्ञानदीप स्वरूपिणी॥
जनानां हृदिसंस्था या, शोभमाना निरन्तरम्।
शारदां सारदां तां वै शिरसा प्रणमाम्यहम्॥ १॥
अभ्युदयाय नारीणां याऽविर्भूता महीतले।
दुःखार्त्तानां सेवायै या सर्वकालेषु तत्परा॥
तृष्णाप्रशमनार्थं या, कारुण्यामृतवर्षिणी।
करुणार्द्रां शारदां तां भूयो भूयो नमाम्यहम्॥ २॥
अनुभवाय दारिद्र्यदुःखं सम्यक्रूपेण या।
कुटीरे रामचन्द्रस्य सागता धरणीमिह॥
बाल्यात् प्रभृति या गुणैर्जनचित्तापहारिणी।
शारदां स्नेहरूपां तां भक्तितः प्रणमाम्यहम्॥ ३॥

संसार की सारस्वरूपा एवं मातृरूपिणी जो शारदादेवी लोगों के मानसपटल पर अज्ञानरूपी प्रगाढ़ अन्धकार को विदूरित करने के लिए ज्ञान-प्रदीप के रूप में चिर शोभिता हैं; उन्हीं सारतत्त्वदायिनी श्री श्रीशारदादेवी को मैं मस्तक अवनत करके प्रमाण करता हूं॥ १॥

जो धरातल पर नारियों की आत्मोन्नति के लिए अवतीर्ण हैं, दुःखी और आर्त्त प्राणियों की सेवा करने के लिए जो सदा ही तत्पर हैं एवं आश्रित लोगों की सांसारिक कामना-वासना दूर करने के लिए जो करुणा रूपी अमृत का वर्षण करने वाली हैं; दयार्द्रचित्ता उन्हीं श्री श्रीशारदादेवी को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ॥ २॥

दरिद्रता का दुःख सम्यक् रूप से अनुभव करने के लिए जो इस संसार में (जयरामबाटी में) रामचन्द्र की कुटी में आई थीं एवं जिन्होंने बाल्यकाल से ही समस्त सद्गुणों के द्वारा लोगों का चित्त आकर्षित किया था, स्नेहरूपिणी उन्हीं श्री श्रीशारदादेवी को मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूं॥ ३॥

घोषिका नवयुगानां पत्या सम्पूजिता सती ।
रामकृष्णस्य दयिता, तद्भाष्य रूपिणी तु या ॥
महासंघस्य जननी वरेण्या गुरुरूपिणी ।
स्त्री रत्नभूता या देवी शारदां तां नमाम्यहम् ॥ ४ ॥

मर्त्यानां जननीं देवीमखिलार्तिप्रणाशिनीम् ।
सदसच्चेतरे जीवा येऽन्ये कृपाभिलाषुकाः ॥
यत्कृपादृष्टिमात्रेण धन्याः सर्वेऽभवन्निह ।
सर्वजीवप्रसूं देवीं शारदां तां स्मराम्यहम् ॥ ५ ॥

अमृतभाषिणीं देवीं श्रवणसुखदां तथा ।
सुस्मितवदनां चैव, नयनानन्ददायिनीम् ॥
निर्वाणदायिनीं देवीं मोहमेधापहारिणीम् ।
मुक्तिमार्गप्रदात्रीं तां शारदां संस्मराम्यहम् ॥ ६ ॥

जिन्होंने इस संसार में आकर नये युग की घोषणा की थी, पति श्रीराम-कृष्ण के द्वारा जो (बहुत भावों से) सुपूजिता थीं, जो श्रीरामकृष्ण की प्रिया एवं उनके जीवन रूपी वेद पर भाष्यस्वरूपा थीं, जो सदा श्रीरामकृष्ण संघ की जनयित्री थीं, जो गुरु रूप में सबके द्वारा पूजिता हैं; उन्हीं स्त्री रत्नस्वरूपिणी श्री श्रीशारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥

जो मर्त्य लोगों की जननी, ज्योतिर्मयी, सभी आर्त लोगों के दुःख का नाश करने वाली, जिनकी कृपा सत् और असत् (पापी-तापी) सभी प्रार्थियों पर समान भाव से वर्षित होती थी एवं जिनकी कृपाकटाक्ष मात्र से सभी प्राणी धन्य होते हैं; उन्हीं सर्वजीव-जननी श्री श्रीशारदादेवी को मैं श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥

जो सुनने में सुखकर अमृत के समान मधुरभाषिणी हैं, सर्वदा हास्यवदना हैं, नेत्रों को आनन्द देने वाली हैं, मुक्तिदायिनी हैं मोह रूपी (अज्ञान) मेघ का अपसारण करने वाली हैं तथा मुक्ति मार्ग का प्रदर्शन करने वाली हैं, उन्हीं श्री श्रीशारदा देवी का मैं सम्यक् रूप से स्मरण करता हूं ॥ ६ ॥

परमां प्रकृतिं देवीं सर्वकारणरूपिणीम् ।
सच्चिदानन्ददां देवीं क्षमाविग्रहधारिणीं ॥
सर्वेषामादिभूतां तां भवभीतेः प्रणाशिणीम् ।
शारदां ज्ञानदात्रीं तां पुनः पुनर्नमाम्यहम् ॥ ७ ॥

चन्द्रादप्यकलंका या, याष्टासखीसमावृता,
जानकी-राधिका देव्योः या प्रतीकस्वरूपिणी ।
आनन्दघटरूपेण पत्युः स्मृतिं वहन्ति या ।
गृह्णीयात् शारदा माता ममेदं वाक्य संस्तवम् ॥ ८ ॥

अध्यापिका (कुमारी) मितारायचतुर्धुरिण्याविरचितं
"श्रीश्रीशारदादेवीस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



जो शारदा माता परमा प्रकृति के रूप में अवस्थिता हैं, जो समस्त कारणों की भी (सृष्टि, स्थिति, प्रलय) कारणरूपिणी हैं, जो सर्वदा सच्चिदानन्दमयी और मूर्तिमती क्षमा रूप में अवस्थिता हैं, जो सभी की आदिभूता, भव-भयनाशिनी एवं ज्ञानदायिनी हैं, उन्हीं श्री श्रीशारदादेवी को मैं पुनः पुनः प्रणाम करता हूं ॥ ७ ॥

जो चन्द्रमा से भी ज्यादा निष्कलंक हैं, अष्ट सखियों के द्वारा परिवृता हैं, जानकी और राधिकादेवी के प्रतीक रूप में अवस्थिता हैं एवं अपने पति की पुण्य-स्मृति को आनन्दपूर्णघट रूप में अन्तर में वहन करने वाली हैं; वे ही शारदा माता मेरे इस वाक्य रूपी स्तवन को ग्रहण करें ॥ ८ ॥

(कुमारी) मिता राय चौधरी द्वारा विरचित "श्रीश्रीशारदादेवीस्तोत्रम्"
समाप्त हुआ ।



श्रीश्रीशारदास्वरूपव्याख्यानम् *

स्वामिहिरण्मयानन्देनकृतम्

वर्णिता या वाणीरूपेति रामकृष्णेन शाश्वती
स्वस्वरूपं यन्मुखात् कालिकेति प्रकाशितम्।
दुर्गा वगलामुखी चेति विवेकानन्देन घोषिता
सैव ज्ञानेच्छाक्रियामयी श्रीशारदादेवी स्वयम्॥ १॥

या देवी श्रीविद्येत्यागमादिषु संज्ञिता
षोड़शीति च या भगवता रामकृष्णेन पूजिता।
रामकृष्णलीला प्रसारणाय सर्वकल्याणकरणाय च
सा नारीरूपेणेह मातृभूमावाविर्भूता॥ २॥

षोड़शीविद्यायास्त्रिकुटमंत्रमध्ये यो वाग्भवकूटः,
सा देव्याः सरस्वत्या ज्ञापयति स्वरूपं कथितं रामकृष्णपादैः।

जो श्रीरामकृष्ण के द्वारा शाश्वती वाणी स्वरूपा अर्थात् नित्य सरस्वती (स्वरूप) में वर्णित हुई थीं, जिनके अपने मुख से अपना स्वरूप "कालिका" कह कर प्रकाशित हुआ था, स्वामी विवेकानन्द ने "दुर्गा" और "बगलामुखी" कह कर जिनके स्वरूप की घोषणा की थी, वे ही स्वयं ज्ञान-इच्छा-क्रियामयी श्रीशारदादेवी हैं॥ १॥

जो देवी आगमादि में अर्थात् तंत्रादि शास्त्रों में "श्री विद्या" नाम से विख्यात हुई हैं एवं जो भगवान श्रीरामकृष्ण के द्वारा 'षोड़शी" रूप में पूजिता हुई थीं वे ही श्रीरामकृष्ण के लीला विस्तार और सब जीवों का कल्याण साधन करने के लिए नारी मूर्ति में इस मातृभूमि (भारतखण्ड) में आविर्भूता हुई थीं॥ २॥

महाविद्या षोड़शी देवी के 'त्रिकूट' मंत्र में जो 'वाग्भवकूट' है, वही परमाराध्य श्रीरामकृष्ण द्वारा कथित देवी सरस्वती के स्वरूप को ज्ञापित

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक।

त्रिकूटमध्ये कामराजकूट इच्छात्मकं वर्णयति
श्रीकालिकायाः स्वरूपमथ शक्तिकूटेन क्रियात्मकं यत् सूचितं
तदेव दिव्य दृष्ट्या दुर्गा बगला चेति
विवेकानन्दपादैः कीर्तितम् ॥ ३ ॥

भावत्रयविग्रहायाः शारदाया एकैकभावः
प्रकटीकृतो विभिन्नकाले भगवता रामकृष्णेन
स्वयं शारदया विवेकानन्दपादेन च ।
अतः सैव निरतिशयप्रकाशा महाशक्तिर्देवी शारदेति ॥ ४ ॥

यस्यास्त्रिपुरसुन्दर्या विभिन्नरूपाणि महालक्ष्मीरिति
महासरस्वतीति महाकालिकेति च

करता है : 'त्रिकूट' में 'कामराजकूट' श्री कालिकादेवी के इच्छात्मक स्वरूप का वर्णन करता है। इसके अनन्तर 'शक्तिकूट' के द्वारा जो क्रियात्मक स्वरूप सूचित हुआ है, वही दिव्य दृष्टि से "दुर्गा" और 'कालीरूप में परम पूज्यपाद विवेकानन्द के द्वारा कीर्त्तित हुआ है ॥ ३ ॥

ज्ञान, इच्छा और क्रिया—इन तीनों भावों की मूर्त विग्रहस्वरूप शारदा देवी का एक-एक भाव विभिन्न कालों में भगवान् श्री रामकृष्ण, स्वयं देवी शारदा एवं परम पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द के द्वारा प्रकाशित हुआ है। अतएव वे शारदा ही सर्वोत्कृष्ट प्रकाश-समन्विता महाशक्ति की आधारभूता हैं—यह समझना होगा ॥ ४ ॥

जिन त्रिपुरसुन्दरी देवी के महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली ये सभी विभिन्न रूप संसार की उत्पत्ति, संस्थिति और प्रलय साधन करते हैं, श्यामा, वाराही और दण्डनायिका जिनकी प्रधान अमात्य हैं अर्थात् मन्त्रणादायिनी हैं, वे सभी भुवनों की साम्राज्ञी एवं सर्वेश्वरमहादेव की भी ईश्वरी-स्वरूपा हैं।

जगदुद्भव–पालन–लयान् कुर्वते
श्यामा यस्याः प्रधानामात्यो–वाराही च दण्डनायिका
सा सर्वेश्वरेश्वरी सम्राज्ञी भुवनान्नाम्।
तस्या अर्चां विधातुं श्यामां महाविद्यां
प्रथमं पूजयतः सिद्धौ सत्यां
जायतेऽधिकारस्त्रिपुरसुन्दर्याः पूजायाम् ॥ ५ ॥
यस्या महिमानं हरिहरादिदेवताः कदापि–वक्तुमलम्।
सा देवी शारदा सकलभुवनानां सर्वभूताधिवासा–
सर्वदा मामवतु ॥ ६ ॥

स्वामिहिरण्मयानन्देनअमित्राक्षरछन्दसाविरचितं "श्रीश्रीशारदा-स्वरूपव्याख्यानम्" समाप्तम्। *



प्रथमतः महाविद्या श्यामा की पूजा करते-करते सिद्धि प्राप्त करने पर पूजक का उन्हीं त्रिपुरसुन्दरी देवी की अर्चना करने के निमित्त पूजा का अधिकार प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

जिनकी महिमा हरि हर आदि देवतागण कभी भी वर्णन करने में समर्थ नहीं होते, सभी भुवनों के अन्तर्गत सभी जीवों की परम-आश्रयभूता वे ही देवी शारदा मेरी सर्वदा रक्षा करें ॥ ६ ॥

स्वामी हिरण्मयानन्द द्वारा अमित्रासरछन्द में विरचित "श्रीश्रीशारदा-स्वरूपव्याख्यानम्" समाप्त हुआ।



* सम्पादन और बंगलानुवाद अध्यापक श्री पाँचुगोपाल बन्द्योपाध्याय ने किया।

श्रीश्रीशारदाष्टकम्*

पं० श्रीदीनानाथत्रिपाठी-काव्य-व्याकरण-न्याय-तर्क-सांख्य-वेदान्ततीर्थ-विरचितम्

न याचे समृद्धिं न चानित्यमायु-
र्न रूपं न धर्मं यशो वा समित्रम्।
अधर्मं न कार्यं न दैन्यं दिवं वा
मतिर्मे तु भूयात् पदे शारदायाः॥ १॥

स्वदेशे विदेशे भव त्वं दयार्द्रा–
त्वनीचे सुनीचे समाना विधात्री।
जले वा भुवि त्वं प्रजानां शरण्या
नमस्ते नमस्ते पदे शारदायाः॥ २॥

हे मातः शारदे ! मैं समृद्धि, अनित्य आयु, रूप, धर्म, यश, मित्र, अधर्म, कार्य, दैन्य या स्वर्ग कुछ भी नहीं चाहता। केवल प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे ही चरण कमलों में मेरी बुद्धि स्थिर रहे॥ १॥

तुम्हारी करुणा धारा सर्वत्र स्वदेश में या विदेश में समान भाव से प्रवाहित हो रही है। तुम्हारी दृष्टि ऊँच या नीच सभी के प्रति समान है। जल में और स्थल में सर्वत्र तुम शरणागतों को अभय प्रदान करते हुये आश्रय देती हो। इसलिए हे जननी शारदे ! तुम्हारे चरण कमलों में बार-बार प्रणाम॥ २॥

---

* श्री श्री माँ-शतवर्ष-जयन्ती-संख्या। उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक।

अजस्रं यथा ते भजाम्यंघ्रि युग्मं
यथा नाम तेऽहं जपामि सचिन्त्यः
अपूर्वान् गुणांस्ते स्मरामि प्रहृष्ट-
स्तथा शारदा त्वं विधेहि प्रसन्ना ॥ ३ ॥

वृथैव प्रयाति क्षणं मे वरेण्ये !
त्विदानीं प्रबोधो न जातस्त्रिनेत्रे !
यदा शारदा त्वं ममासि प्रपद्या
भयं किं यमात् स्यान्नमः शारदायै ॥ ४ ॥

अहो कः शुभोऽयं प्रवृत्तोऽस्ति कालो
यतः शारदाम्बागताऽस्यां धरित्र्याम ।
विचिन्त्य नरास्तां लीलां पवित्रा
ममर्त्या भवन्त्वप्रमत्ता भवन्तः ॥ ५ ॥

हे जननी । जिससे कि मैं सब समय तुम्हारे चरणों का ध्यान कर सकूं, तुम्हारे रूप की चिन्ता करने के साथ - साथ तुम्हारे नाम का जप कर सकूं। तुम्हारी अलौकिक गुणराशि का आनन्द पूर्वक स्मरण कर सकूं । तुम मुझे प्रसन्नतापूर्वक यह वर दो, यही मेरी एकमात्र प्रार्थना है ॥ ३ ॥

हे पूजनीया जननी ! मेरे जीवन का प्रति मुहूर्त वृथा नष्ट हो रहा है। हे त्रिनयने ! तब भी मेरी चेतना जागृत नहीं हो रही है। हे मातः शारदे ! जब तुम मेरी आश्रयदात्री रूप से विराजिता हो तब मुझे यमराज से भी क्या भय है ? अर्थात् कोई भय नहीं है। इसलिए माँ, तुमको ही प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

आहा ! यह युग कितना पवित्र है, क्योंकि शारदा देवी इस समय पृथ्वी पर अवतीर्ण हुई हैं। हे मातः ! तुम्हारी पवित्र लीला का स्मरण करके सभी जीव सांसारिक चंचलता भूलकर अमरत्व प्राप्त करें ॥ ५ ॥

यथा जानकी सा सरामा समर्च्या ह्यसौ राधिका वा सकृष्णा नमस्या ।
सती सा सशम्भुर्यथाराधनीया तथा शारदा मे सरामासकृष्णा ॥ ६ ॥

रविस्त्वं शशी त्वं त्वमिन्द्रो यमस्त्वं प्रचेतास्त्वमग्निर्विराड्महत्मनास्याः ।
भयानां भयं त्वं करालापि काली धुनीते मनो मे कथं त्वाऽभिवन्दे ॥ ७ ॥

न कोऽप्यस्ति सत्यं मदीयो बिना त्वां विषाक्ते द्वितीये गतिर्यो भवाब्धौ ।
असंख्यानि जन्मानि सन्त्वम्बिके मे सदा चेत् स्मरामि त्वदीये पदाब्जे ॥ ८ ॥

वृथा शब्दं परित्यज्य वद जिह्वे निरन्तरम् ।
शारदे शारदे मातः जयानन्दमयीति च ॥

इतिश्रीदीनानाथत्रिपाठीविरचित "श्रीश्रीशारदाष्टकम्" समाप्तम् ।



हे देवि ! जिस प्रकार श्रीराम के साथ जानकी जी पूजनीया हैं, श्रीकृष्ण के साथ श्री राधा नमस्या हैं शंकर जी के साथ सती आराध्या हैं, उसी प्रकार माँ शारदे, तुम भी श्रीरामकृष्ण के साथ हम सभी की एकमात्र पूज्या हो ॥ ६ ॥

हे मातः ! तुम सूर्य, चन्द्र, इन्द्र, यम, वरुण, अग्नि एवं विराट् पुरुष-हिरण्यगर्भ रूप में अवस्थित हो । तुम भय को भी भयभीत करने वाली एवं कराली काली रूप में विराजिता हो । तुम्हारे इस विराट् रूप की किस प्रकार वन्दना करूंगा यह मैं नहीं समझ पा रहा हूँ ॥ ७ ॥

हे मातः ! विषय रूपी विष से परिपूर्ण इस संसार-समुद्र में तुमको छोड़ कर दूसरी कोई भी मेरी अधिकारिणी नहीं है । हे अम्बिके ! यदि तुम्हारे चरण-कमल मैं सदा स्मरण कर सकूँ तो असंख्य बार जन्म ग्रहण करना भी मेरे लिए दुःखकर नहीं होगा ॥ ८ ॥

हे मेरी रसने ! वृथा की बात छोड़कर सर्वदा केवल "मां शारदे, माँ शारदे, जय मां आनन्दमयी, जय हो, जय हो ?" का उच्चारण करो ॥

श्री दीनानाथ त्रिपाठी कृत "श्रीश्रीशारदाष्टकम्" समाप्त हुआ ।



श्रीश्रीशारदारामकृष्णाष्टकम्*

स्वामिध्यानानन्दविरचितम्

करुणाघनमूर्तिधरौ भवतापहरौ निरवधितृप्तिकरौ।
निरुपमपरमानन्दौ नौमि शारदारामकृष्णौ॥ १॥

सर्वेश्वरौ स्वतन्त्रौ सर्वाश्रयौ सर्वचराचरस्थौ।
समस्तकर्मसाक्षिणौ श्रये शारदारामकृष्णौ॥ २॥

भगवद्भक्तिदायकौ भ्रान्तिकामकर्मक्लेशनाशकौ।
भारूपौ भीतिहरौ भजे शारदारामकृष्णौ॥ ३॥

जयतां क्षमाविग्रहौ कटाक्षपापिनिखिलपापहारिणौ।
सुकृति पुण्यविवर्धनौ शिवदशारदारामकृष्णौ॥ ४॥

करुणाघनमूर्ति धारण करने वाले, संसार का सन्ताप हरण करने वाले, अखण्डतृप्तिकारी और अतुलनीय परम आनन्द देने वाले शारदा और रामकृष्ण को मैं प्रणाम करता हूँ॥ १॥

सर्वेश्वर, सब प्रकार से स्वाधीन, सभी के आश्रय स्वरूप, सब जीवों में और सारे जगत् में व्याप्त तथा सब कर्मों के साक्षी स्वरूप होकर नित्य विद्यमान उन्हीं शारदा-रामकृष्ण की मैंने शरण ली॥ २॥

जो भगवान् के प्रति (जीवों में) भक्ति प्रदान करते हैं, भ्रान्ति एवं काम्य कर्मों के क्लेश का विनाश करते हैं और ज्योतिर्मय रूप से अवस्थान कर संसार-भय दूर करते हैं—उन्हीं शारदा-रामकृष्ण का मैं भजन करता हूं॥ ३॥

क्षमा के मूर्त विग्रह स्वरूप जो दृष्टि मात्र से ही पापियों का पाप हरण कर लेते हैं, शुभ कर्म जनित पुण्य का वर्धन करने वाले और कल्याण करने वाले उन्हीं शारदा-रामकृष्ण की जय हो॥ ४॥

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित हुआ—प्रकाशक।

क्वचित् सीता राघवौ क्वचित् राधिका गोपीप्रियौ।
शारदारामकृष्णौ परमार्थतः परमं ज्योतिरेकम्॥ ५॥
चिरतापितदीनजने कृपया प्राप्त चरणाश्रयेण।
अभाजने मयि नितरां प्रसीदतां शारदारामकृष्णौ॥ ६॥
ईड़े मंगलीलौ कालाबाधितसुखोपास्यरूपौ।
अगणितशुभगुणाकरौ वरदशारदारामकृष्णौ॥ ७॥
सुचारुचरणपंकजे सुरनरविनम्रभावपरिशीलिते।
याचे परमपावनौ रतिं शारदारामकृष्णौ॥ ८॥

जो कभी सीता और राम के रूप में पृथ्वी पर आविर्भूत हुये थे और कभी श्रीमती राधा और गोपीनाथ श्रीकृष्ण के रूप में अवतीर्ण हुये थे एवं जो तत्त्वतः ब्रह्म ज्योति स्वरूप थे उन्हीं एक शारदा-रामकृष्ण के चरणों में मैंने शरण लिया॥ ५॥

हे शारदा-रामकृष्ण! चूंकि तुमने कृपा कर इस संसार-तापित दीन को अपने चरणों में आश्रय दिया, इसलिए इसके फलस्वरूप यह धन्य हुआ। अतएव तुम लोगों के चरणों में एकमात्र प्रार्थना है कि तुम लोग मेरे प्रति प्रसन्न होओ॥ ६॥

मंगल जनक लीला करने वाले, काल के द्वारा बाधित न होने वाले एवं सुखोपास्य-स्वरूप तथा अनन्त शुभगुणान्वित वरदायक शारदा-रामकृष्ण का मैं भजन करता हूं॥ ७॥

हे परम पवित्र शारदा-रामकृष्ण! देवताओं और मनुष्यों के द्वारा परम श्रद्धा के साथ पूजे जाने वाले तुम दोनों के चरण कमलों में मेरी नम्र प्रार्थना है कि मैं इन चरणों में आत्यन्तिक रति प्राप्त करूं॥ ८॥

आर्याष्टकमिदं पुण्यं भक्ताभीष्ट प्रदायकम्।
पठ्यतां गीयतां नित्यं सर्वैः श्रद्धासमन्वितैः॥

. इतिस्वामिध्यानानन्दविरचित "श्रीश्रीशारदारामकृष्णाष्टकम्" समाप्तम्।



श्रीश्रीशारदासुप्रभातम्

स्वामिअचलानन्दसरस्वतीप्रणीतम्

मातः समस्तजगतां परमस्य पुंसः
शक्तिस्वरूपिणि शिवे करुणार्द्रचित्ते।
लोकस्य शोकशमनाय कृतावतारे
श्रीशारदेऽस्तु शिवदे तव सुप्रभातम्॥ १॥
बालो भवस्य तमसः परिहारयित्रे
लीलामनुष्यवपुषेऽथ गदाधराय।

ये पवित्र और भक्तों को अभीष्ट प्रदान करने वाले आठ श्लोक, जो आर्या छन्द में रचित हैं, इनका सभी लोग नित्यप्रति श्रद्धा पूर्वक गाकर पाठ करें।

स्वामी ध्यानानन्द द्वारा विरचित "श्रीश्रीशारदारामकृष्णाष्टकम्" समाप्त हुआ।



परमपुरुषकी शक्तिस्वरूपिणी, समस्त जगत् की मातृरूपा, मंगलमयी, करुणा विगलित चित्त से जीवों की सांसारिक यंत्रणा दूरीभूत करने के लिए तुम पृथ्वी पर अवतार लेकर आयी हो। हे मातः शारदे! कल्याणी! दिशाओं-दिशाओं में तुम्हारा सुप्रभात घोषित हो॥ १॥

अयोनिसम्भवा रूप से आविर्भूता होकर जिन्होंने तमोगुण का परिहार किया, जो लीलामनुष्यदेहधारी गदाधर में अर्पिता हुई थीं एवं उन्हीं में

दत्ते तदर्पितधियाऽप्तसमस्तविद्ये
श्रीशारदेऽस्तु शुभदे तव सुप्रभातम् ॥ २ ॥

बाल्यात् परे वयसि भर्त्तरि सम्प्रवृत्ता-
मुन्मत्त इत्यनुचितामवधूय वार्ताम् ।
तद्दर्शनक्रमितदुर्गमदूरमार्गे
श्रीरामकृष्ण दयिते तव सुप्रभातम् ॥ ३ ॥

सन्यासितं पतिमवेक्ष्य च नोद्विजाने
सेवार्पितत्रिकरणे परिशुद्धचित्ते ।
तत्साधनाचरमसीम्नि समर्पितांघ्रे
श्रीरामकृष्ण परमेश्वरि सुप्रभातम् ॥ ४ ॥

सम्पूर्ण रूप से आत्मनिवेदन करने के कारण जिन्होने समस्त आत्मविद्या अधिगत किया था—इस प्रकार की हे शुभदायिनी मातः शारदे ! दिशाओं-दिशाओं में तुम्हारा सुप्रभात घोषित हो ॥ २ ॥

हे श्री रामकृष्ण प्रिये जननी शारदे ! बाल्यकाल बीतने पर पति श्रीरामकृष्ण के सम्बन्ध में वे उन्माद हुये हैं' इस जनश्रुति की उपेक्षा करके सुदूर दक्षिणेश्वर में आकर उनके चरणों का आश्रय करके दुर्ज्ञेय आत्मतत्व तुमने अधिगत किया। इस प्रकार की माँ, तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में विघोषित हो ॥ ३ ॥

पति श्रीरामकृष्ण को सन्यास लेते देख कर भी अनुद्विग्नचित्त से तुमने सहज भाव से ही अपने को उनकी सेबा में नियोजित किया। तुम्हारा चित्त सदा सुपवित्र था। तुमने सर्वतोभाव से उनकी साधना का अनुसरण किया। हे श्री रामकृष्ण–शक्तिस्वरूपिणी देवी शारदेश्वरी ! तुम्हारा सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में विघोषित हो ॥ ४ ॥

यामेव चात्मजननीं भवतारिणीं च
सेवापरां तु बुबुधे गुरुरस्तभेदः।
तस्याः समस्तजगतोऽस्य शरण्यमूर्तेः
श्रीरामकृष्ण दयिते तव सुप्रभातम् ॥ ५ ॥
आवृण्वती परमिकां प्रकृतिं स्वकीयां
संसारिणीव बहुदुःखजले भवाब्धौ।
सर्वं सहे श्रितजनोद्धरणैकदीक्षे
श्रीरामकृष्णदयिते तव सुप्रभातम् ॥ ६ ॥
गेहस्य मार्जनविधौ मम कर्मशान्ति
नायात्यसंख्यभुजनिष्क्रियमाणमेवम्।

भेदरहित गुरु (पति) रामकृष्णदेव जिन भवतारिणी देवी को अपने मातृ स्वरूप में पाकर सभी विषयों में उन पर निर्भर थे वे ही समस्त जगत् का शरणागत के समान पालन करने वाली श्री रामकृष्ण-लीला संगिनी देवी शारदा थीं। उन्हीं का सुप्रभात दिशाओं-दिशाओं में विघोषित हो ।। ५ ।।

भगवान् श्री रामकृष्णदेव ने विविध दुःखमय इस संसारसमुद्र में शरणागत भक्तों का उद्धार करने के लिए जिनको अपनी शक्ति स्वरूपिणी रूप में वरण किया था। हे सर्वंसहे ! आश्रित जनों का निश्चित उद्धार करने वाली श्री रामकृष्ण-प्रिये-देवी शारदे ! दिशाओं-दिशाओं में तुम्हारा सुप्रभात घोषित हो ॥ ६ ॥

यद्यपि अनेक लोग उनके घर को झाड़ू से साफ करते थे तथापि बिना अपने हाथ से यह कार्य किए उनके हृदय में शान्ति नहीं मिलती थी (अपने घर को देवालय समझकर एवं उस देवालय में श्रीरामकृष्णदेव वास करते हैं यह समझ कर श्री शारदादेवी प्रत्येक गृहस्थ के सामने मन्दिर मार्जन के रूप में गृहमार्जन

आकस्मिकोक्तिविवृताखिलशक्तिरूपे
श्रीरामकृष्णदयिते तव सुप्रभातम् ॥ ७ ॥

श्रीरामकृष्णदयिते त्वदधीनसत्त्वे
त्वद्भक्तवृन्दपरिपालिनि मुक्तिदात्रि।
त्वद्भावरक्तहृदये त्वदभिन्नतत्वे
मातः समस्त जगतां तव सुप्रभातम् ॥ ८ ॥

इतिस्वामिअचलानन्दसरस्वतीप्रणीतं "श्रीश्रीशारदासुप्रभातम्" समाप्तम्।



का एक नया उज्ज्वल आदर्श रख गयी हैं)। तुम जो सर्वशक्तिमयी हो यह तुम्हारी बातचीत के माध्यम से कभी-कभी प्रकाशित होता था। इस प्रकार की हे श्रीरामकृष्ण प्रिये ! दिशाओं-दिशाओं में तुम्हारी जय विघोषित हो ॥ ७ ॥

हे श्री रामकृष्ण प्रिये जननी शारदे ! विश्व जननी रूप में समस्त प्राणियों को तुमने वक्ष में धारण कर रखा है। सब प्राणी तुममें ही अवस्थान कर रहे हैं। अपने भक्तवृन्दों का तुम सदा सर्वदा परिपालन कर रही हो। उन लोगों को तुम मुक्ति भी देती हो। भक्तगण सर्वदा तुम्हारे हृदय में अवस्थित हैं और समग्र चराचर जीवकुल को तुम अपने से अभिन्न समझती हो। इस प्रकार की हे निखिल-विश्वजननी ! दिशाओं-दिशाओं में तुम्हारी जय विघोषित हो ॥ ८ ॥

स्वामी अचलानन्द सरस्वती द्वारा प्रणीत "श्रीश्रीशारदासुप्रभातम्"
समाप्त हुआ।



श्रीमद्विवेकानन्दपञ्चकम् *

स्वामिरामकृष्णानन्दविरचितम्

अनित्यदृश्येषु विविच्य नित्यं तस्मिन् समाधत्तो इह स्म लीलया।
विवेकवैराग्यविशुद्धचित्तं योऽसौ विवेकी तमहं नमामि॥ १॥
विवेकजानन्दनिमग्नचित्तं विवेकदानैकविनोदशीलम्।
विवेकभासा कमनीयकान्ति विवेकिनं तं सततं नमामि॥ २॥
ऋतं च विज्ञानमधिश्रयद् यत् निरन्तरं चादिमध्यान्तहीनम्।
सुखं सुरूपं प्रकरोति यस्य आनन्दमूर्तिं तमहं नमामि॥ ३॥
सूर्यो यथान्धं हि तमो निहन्ति विष्णुर्यथा दुष्टजनाञ्छिनत्ति।
तथैव यस्याखिलनेत्रलोभं रूपं त्रितापं विमुखी करोति॥ ४॥

इस जगत् में अनित्य वस्तु समूहों से नित्य वस्तु को पृथक् कर जो (विवेकी) लीला से विवेक और वैराग्य के प्रभाव से उस नित्य वस्तु में अपने पवित्र चित्त को समाहित कर सके थे। मैं उन्हीं विवेकी विवेकानन्द को प्रणाम करता हूँ॥ १॥

जिनका चित्त विवेक से सम्भूत आनन्द में निमग्न है, जो विवेक दान करने में ही आनन्दित हैं और विवेक ज्योति के द्वारा जो रमणीय रूपवान् हैं उन्हीं विवेकी विवेकानन्द को मैं सदा प्रणाम करता हूँ॥ २॥

जिनका स्वरूप सत्य और विज्ञान का आश्रय कर निरन्तर नित्य सुख प्रदान करता है उन्हीं आनन्दमूर्ति विवेकानन्द को मैं प्रणाम करता हूं॥ ३॥

जिस प्रकार सूर्य देव प्रगाढ़ अंधकार का निःशेष नाश करते हैं और विष्णु दुष्ट जनों का ध्वंस करते हैं उसी प्रकार जिनका नेत्र तृप्तिकर मधुर रूप सभी मनुष्यों की त्रिताप ज्वाला दूर करता है, उन्हीं आनंदमय मूर्ति विवेकानंद को मैं प्रणाम करता हूँ॥ ४॥

---

* उद्बोधन के स्वत्वाधिकारियों की अनुमति से संगृहीत है—प्रकाशक।

तं देशिकेन्द्रं परमं पवित्रं विश्वस्य पालं मधुरं यतीन्द्रम्।
हिताय नृणां नरमूर्तिमन्तं विवेक-आनन्दमहं नमामि ॥ ५ ॥

प्रणाममन्त्रः

नमः श्रीयतिराजाय विवेकानन्दसूरये।
सच्चित्सुखस्वरूपाय स्वामिने तापहारिणे ॥

प्रणाममंत्रसमेतस्वामिरामकृष्णानन्दविरचित "श्रीमद्विवेकानन्दपंचकम्" समाप्तम्।

श्रीस्वामिविवेकानन्दस्तोत्रम्*

श्रीशरच्चन्द्रचक्रवर्तिविरचितम्

प्रकटशरीरमीशं भवभारनिवासं परहितकलितललित लीलाभासम्।
चन्द्रमौलिनटनाथ नरेन्द्रं गुरुमिह शम्भु मीड़े ॥ १ ॥

मनुष्यों के हित के लिये अवतीर्ण, परम पवित्र आचार्य प्रवर, विश्व के पालक और मधुर स्वभाव वाले यतिश्रेष्ठ मनुष्य शरीर धारण करने वाले विवेकानंद को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

विवेकानन्द-प्रणाम-मंत्र

श्रीमान्, सच्चिदानंद स्वरूप, जीवों के संताप का हरण करने वाले यति-राज स्वामी विवेकानंद को मैं प्रणाम करता हूँ ॥

प्रणाममंत्र समेत स्वामी रामकृष्णानंद द्वारा विरचित "श्रीमद्विवेकानंद-पंचकम्" समाप्त हुआ।

ईश्वर स्वयं शरीर धारण कर जिस मूर्ति में अवतीर्ण हुये हैं, जिन्होंने लोगों का दुःख भार दूर किया है, परहित के लिए तथा सुन्दर लीला का आभास देने के लिये जिन्होंने शरीर परिग्रह किया हैं, चन्द्रशेखर ताण्डवनृत्यकारी जो महादेव नरेन्द्र के रूप में आविर्भूत हुये हैं, उन्हीं शिव रूपी गुरु का मैं स्तवन करता हूं ॥ १ ॥

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से गृहीत है—प्रकाशक ।

विवेकविरागघनं श्रुतिविस्फारनेत्रं गलितमिहिरकररंजितगात्रम्।
चन्द्रमौलिनटनाथ नरेन्द्रं गुरुमिह शम्भु मीड़े ॥ २ ॥

छिन्नजन्मजराविनाश पक्षं करुणाकटाक्षविनिक्षेपदक्षम्।
चन्द्रमौलिनटनाथ नरेन्द्रं गुरुमिह शम्भु मीड़े ॥ ३ ॥

गुरुगतजीवितमहो त्यक्तकामकांचनं मायिनमिव कदा व्यक्तमव्यक्तम्।
चन्द्रमौलिनटनाथ नरेन्द्रं गुरुमिह शम्भु मीड़े ॥ ४ ॥

शिरोधृतप्रतिपच्चन्द्रकलं सलीलं ज्ञानभक्तिक्रियोगैकचित्तम्।
चन्द्रमौलिनटनाथ नरेन्द्रं गुरुमिह शम्भु मीड़े ॥ ५ ॥

इतिश्रीशरच्चन्द्रचक्रवर्तिविरचितं "श्रीस्वामिविवेकानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम्।



जिनमें विवेक और वैराग्य घनीभूत है, जिनके नेत्र कान पर्यंत विस्तृत हैं, गलित सूर्य की किरणों की आभा के समान जिनके शरीर का वर्ण है, उन्हीं शिव रूपी गुरु का मैं स्तवन करता हूँ ॥ २ ॥

जन्म, जरा और मृत्यु के प्रवाह को जिन्होंने छिन्न किया है और जो जीवों के प्रति करुणा पूर्ण दृष्टि निःक्षेप करने में सुदक्ष हैं उन्हीं चन्द्रचूड़ शिव रूपी गुरु का मैं स्तवन करता हूँ ॥ ३ ॥

जिनका महान् जीवन गुरु श्रीरामकृष्ण देव का अनुगत था, जिन्होंने काम और कांचन का त्याग किया है और जो मायाधीश्वर ईश्वर के समान कभी व्यक्त और कभी अव्यक्त होते हैं उन्हीं चन्द्रचूड़ शिव रूपी गुरु का मैं स्तवन करता हूं ॥ ४ ॥

चन्द्रमा की प्रथम कला को जिन्होंने लीला के लिये ललाट में धारण किया है और जो एक साथ ही ज्ञान, भक्ति और कर्म योग का अनुष्ठान करने वाले हैं उन्हीं लीलामय चन्द्रचूड़ शिव रूपी गुरु का मैं स्तवन करता हूँ ॥ ५ ॥

श्री शरच्चन्द्र चक्रवर्ती द्वारा रचित "श्रीस्वामिविवेकानन्दस्तोत्रम्" समाप्त हुआ।



श्रीमत्स्वमिविवेकानन्दस्तोत्रम्

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम्

स जयति जगति स्वामी बन्द्यो वीर विजेतृ-विवेकानन्दः ।
मानुषमोहविवर्जितहृदयो गुरुरिह पूर्णः सिद्धः सदयः ॥ १ ॥
भुवनेशी बहुसाधनसिद्धं वीरेश्वरसमुदितचिद्देहम् ।
ईशनिमंत्रित भूतलजातं वन्दे वीर विवेकानन्दम् ॥ २ ॥
भूतपति महादेवनिकायः व्यक्त श्रद्धाभक्ति प्रणयः ।
भारतदुर्गतिदर्शनशीर्णः पारावारोत्तार-विलग्नः ॥ ३ ॥
श्रीशिवसुन्दरदिव्यज्योतिर्गैरिकमण्डितचिद्घनमूर्तिः ।

इस संसार में सर्वश्रेष्ठ वन्दनीय वीर विजेता (उन्हीं) स्वामी विवेकानन्द की जय हो । उनके हृदय में साधारण मनुष्यों के समान मोह नहीं था । वे गुरु रूप में पूर्ण सिद्ध और परम दयालु थे ॥ १ ॥

माता भुवनेश्वरी देवी की बहुत साधनाओं से तुष्ट वीरेश्वर महादेव मानों चैतन्यमय शरीर में (विवेकानन्द रूप से) आविर्भूत हुये हैं । जो ईश्वर के द्वारा आदेश प्राप्त होकर इस भूमण्डल में अवतीर्ण हुये हैं, उन्हीं वीर (सन्यासी) विवेकानंद की मैं वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥

(जगत् के कल्याण के लिये) भूतपति महादेव ही शरीर धारण कर (विवेकानन्द रूप में) आये थे । उनमें श्रद्धा, भक्ति और प्रेम पूर्ण रूप में अभिव्यक्त हुआ था । वे भारत की दुर्गति देख कर अपने अन्दर बहुत क्लेश पाते एवं सदा भारतवासियों को संसार के दुःख सागर से उत्तीर्ण करने के लिये चेष्टा करते थे ॥ ३ ॥

उनका शरीर श्री शिव के समान दिव्य ज्योति से पूर्ण था । वे गैरिक वस्त्र से मंडित होकर चिद्घन मूर्ति में विराजमान थे । इस पृथ्वी के सब सुन्दर मनुष्यों

धरणिनरगणसुमंगलकान्तिः स्वामिविवेकानन्दख्यातिः ॥ ४ ॥
यतिगणनन्दितभास्वरसूर्यं संयमभूषणविक्रमवीर्यम् ।
नवयुगनायकभारतभानुं वन्दे वीर विवेकानन्दम् ॥ ५ ॥
धिक्कृत धनिजन नश्वरभोगं प्रज्ञानिर्जितभवगतिरोगम् ।
शिवधीचेतनसेवावादं नमत स्वामिविवेकानन्दम् ॥ ६ ॥
लोकहितकरसुसाधितकृत्यं कामविवर्जितसंचितसत्यम् ।
दुःखनिसूदनविगतद्वन्द्वं वन्दे वीर विवेकानन्दम् ॥ ७ ॥
दीनजनगणक्लेशविनाशं पतितोत्तारणनीचसनाथम् ।

के सौंदर्य ने एकीभूत होकर एक साथ मानों उनको सुमंगल कांति प्रदान की थी और वे स्वामी विवेकानंद नाम से प्रसिद्ध हुये थे ॥ ४ ॥

जो सदा यति गणों के द्वारा अभिनन्दित होकर उज्ज्वल सूर्य के समान विराजमान थे एवं नवीन युग के नायक और भारत के उदीयमान सूर्य स्वरूप थे, उन्हीं वीर (सन्यासी) विवेकानंद की मैं वंदना करता हूँ ॥ ५ ॥

धनी लोगों के भोग को नश्वर समझकर जो उनका धिक्कार करते थे, आत्मज्ञान रूपी प्रज्ञा के द्वारा जिन्होंने संसार गति रूपी रोग को जीता था और जो जीव मात्र की शिवबुद्धि से सेवा करने का उपदेश देते थे उन्हीं स्वामी विवेकानंद को हम सभी प्रणाम करते हैं ॥ ६ ॥

जिन्होंने लोकहितकर कार्य अति सुन्दर रूप में संपन्न किया था काम का वर्जन करके सत्य, शिव और सुंदर को हृदय में धारण कर रखा था और दुःख को दूर कर सुख-दुःख, राग-द्वेष आदि द्वन्द्वों से जो मुक्त थे, उन्हीं वीर विवेकानंद की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ७ ॥

जिन्होंने दीन जनों का दुःख दूर किया और पतितों का उद्धार किया, सदा दरिद्रों का दुःख निवारण करने के लिये चेष्टा की एवं जो जीव गणों

जीवनदायकतत्त्वालापं वन्दे वीर विवेकानन्द न् ॥ ८॥
शिवमतिपूजा भूतगसेवा सन्ततभक्तया मानवधर्मा।
इति नवभावं जगति लपन्तं वन्दे वीर विवेकानन्दम् ॥ ९ ॥
विवेकवैराग्योभयसाध्यं मायापाशच्छेदनकार्यम् ।
करतलगतसुलभं खलु तत्त्वं स्तौमि नु विवेकानन्द सिद्धम् ॥ १० ॥
गुरुर्बोधिव्याप्तात्समुपगमनेनैव यमिनां
वरेण्यः सम्प्राप्तः श्रुतिगतपदार्थं सुगहनम् ।
प्रसंख्यानाध्यास प्रतिपदसक्तत्त्वविदसौ

के स्वाभाविक, जीवनदायक आत्म तत्व की आलोचना करते, उन्हीं वीर (सन्यासी) विवेकानंद की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ८ ॥

जिन्होंने शिव ज्ञान से जीव सेवा भक्ति पूर्वक करने का तथा मनुष्य की सेवा करने का नया भाव संसार में प्रचलित किया, उन्हीं वीर (संयासी) विवेकानंद की मैं वंदना करता हूं ॥ ९ ॥

जिन्होंने विवेक (ज्ञान) और वैराग्य इन दोनों को ही (संपूर्ण रूप से) आयत्त किया था, लोगों का माया पाश काटना ही जिनका कार्य था और जिनके लिए आत्मज्ञान करतल स्थित आँवले के समान अति सुलभ था उन्हीं सिद्ध (संयासी) विवेकानन्द का मैं स्तवन करता हूँ ॥ १० ॥

ब्रह्मज्ञान रूपी तत्त्वज्ञान में दृढ़ रूप से प्रतिष्ठित रहने के कारण जिनके पास संयमी सन्यासी लोग भी विशेष आकृष्ट हो कर आते एवं गुरु रूप में उनके प्रति भक्ति व श्रद्धा प्रदर्शित करते, जो सभी के लिए वरेण्य थे और अत्यंत निगूढ़ आत्मज्ञान से संपन्न थे, जिन्होंने उपनिषद् के महावाक्यों—"अहं ब्रह्मास्मि" "तत्त्वमसि" आदि का अति गहन अर्थ हृदयंगम किया था, देहात्मबुद्धि दूर कर जिन्होंने वेदांत के महावाक्यों के अंतर्गत पदों का एक बार की

विवेकानन्दो नः शरणमिह भूयात्तनुभृताम् ॥ ११ ॥

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचित "श्रीमत्स्वामिविवेकानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



स्वामिविवेकानन्दस्तुतिः

साहित्याचार्य, एम० ए०, भण्डारकरत्र्यम्बकशर्मणाविरचिता

प्राची तु विस्मृतनिजात्ममयस्वरूपो
रूपादिबाह्यविषयैकपराप्रतीची ।
इत्थं विलोक्य तमसावृतशुद्धभावान्
भावप्रभावमलिनां कलिना धरित्रीम् ॥ १ ॥
वेदान्ततत्त्वमुपदिश्य नवप्रकाशं
विश्वं तमः प्रसरसंगतमुद्दिधीर्षुः ।
यः सप्रभं सुकृतवान् कृतवांश्चिदात्म-
स्नेहान्वितो विजयतां स विवेकदीपः ॥ २ ॥

प्रचेष्टा से अर्थज्ञानजनित तत्त्वज्ञान प्राप्त किया था वे ही विवेकानंद हम लोगों के समान शरीरधारी लोगों के आश्रय-स्थान हों ॥ ११ ॥

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य द्वारा विरचित "श्रीमत्स्वामिविवेकानंदस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



हम लोगों का प्राच्य देश (अंतरतम प्रदेश के) आत्म स्वरूप को भूल गया था और पाश्चात्य देश बाहरी रूप के मोह में तन्मय हो गया था । इस प्रकार सब विशुद्ध भावों को अज्ञान रूपी अंधकार से आच्छन्न एवं धरित्री को पाप के भार के प्रभाव से मलिन देख कर नररूप में प्रकाशमान वेदांत के आत्म तत्त्व का उपदेश देकर अंधकाराच्छन्न विश्व का उद्धार करने की इच्छा से जो पुण्यवान यति उसी चैतन्यमय आत्मभाव रूपी तैल में परिपूर्ण विवेक प्रदीप के समान प्रतिभात हुए थे उन्हीं तेजस्वी विवेकानंद की जय हो ॥ १-२ ॥

संस्थाप्य निर्मलमतिं नवभिक्षुसंघं
निःस्वार्थ भावमिहधर्मसमन्वयार्थम् ।
सेवा नरस्य परमा परमेश्वरस्य
सेवेति सिद्धमकरोन्निजकर्मयोगैः ॥ ३ ॥

श्रीरामकृष्णमयधीरपरोक्षबोधः
संस्थापयन्सदयमुज्ज्वलतामयासीत् ।
लोके तदाश्रमकदम्बकमुन्नतं स्याद्
यावत्क्षपाकरविभाकरभासिता भूः ॥ ४ ॥

साहित्याचार्य, एम० ए०, भण्डारकरत्र्यम्बकशर्मणाविरचिता
"श्रीस्वामिविवेकानन्दस्तुतिः" समाप्ता ।



धर्म-संस्थापन के लिए निःस्वार्थ भावापन्न; निर्मल बुद्धिसम्पन्न सन्यासियों के द्वारा नवीन संघ स्थापित करके जिन्होंने सभी को निर्मल बुद्धि और निःस्वार्थ भाव ग्रहण करने के लिये उपदेश दिया था तथा निष्काम भाव से कर्मयोग के माध्यम से मनुष्य की सेवा ही परमेश्वर की प्रकृष्ट सेवा है यह घोषणा जिन्होंने की थी उन्हीं विवेकानंद को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

श्रीरामकृष्णमय बुद्धिसम्पन्न और अपरोक्ष आत्मज्ञान में प्रतिष्ठित होकर उन्होंने दयापूर्ण भाव से अनुपम ज्ञान का उज्ज्वलमय भावसमूह प्रकाशित किया था। इस पृथ्वी पर उनके द्वारा स्थापित और उनकी भाव धारा से अनुप्राणित आश्रम और प्रतिष्ठान समूह तब तक विद्यमान रहेंगे और उन्नति करेंगे जब तक सूर्य और चन्द्रमा विद्यमान रहेंगे ॥ ४ ॥

साहित्याचार्य, एम० ए०, भण्डारकर त्र्यम्बक शर्मा द्वारा विरचित
"श्रीस्वामिविवेकानंदस्तुतिः" समाप्त हुई ।



स्वामिविवेकानन्दवन्दना*

श्रीशरच्चन्द्रदेवशर्मणाविरचिता

मूर्तमहेश्वरमुज्ज्वलभास्करमिष्टममरनरवन्द्यम् ।
वन्दे वेदतनुमुज्झित गर्हितकांचनकामिनिबन्धम् ॥ १ ॥
कोटिभानुकरदीप्तसिंहमहो कटितटकौपीनवन्तम् ।
अभीरभीहुंकारनादितदिङ्मुखप्रचण्डताण्डवनृत्यम् ॥ २ ॥
भुक्तिमुक्तिकृपाकटाक्षप्रेक्षणमघदलविदलनदक्षम् ।
बालचन्द्रधरमिन्दुवन्द्यमिह नौमि गुरुविवेकानन्दम् ॥ ३ ॥

श्रीशरच्चंद्रदेवशर्मणाविरचिता "स्वामिविवेकानन्दवन्दना" समाप्ता ।



सूर्य सदृश उज्ज्वल, देवताओं और मनुष्यों के पूज्य, निन्दित कामिनी और कांचन रूपी बंधन का वर्जन करने वाले, वेदमूर्ति, नररूप में अवतीर्ण, इष्ट-स्वरूप, महादेव विवेकानंद की मैं वंदना करता हूँ ॥ १ ॥

अहो ! करोड़ों सूर्य की किरणों के समान समुज्ज्वल, सिंह सदृश, कटिदेश (कमर) में कौपीन मात्र धारण करने वाले, "अभी-अभी" रव से दिशा समूहों को निनादित करते हुये प्रचण्ड भाव से ताण्डव नृत्य करने वाले उन्हीं इष्ट स्वरूप विवेकानंद की मै वंदना करता हूँ ॥ २ ॥

कृपा-कटाक्ष से भोग और मोक्ष को देखने वाले, पाप समूहों को विदलित करने में विशेष रूप से दक्ष, बालचन्द्रमा से शोभित मस्तक वाले महादेव स्वरूप इंदु नामक शिष्य की वंदना के द्वारा उन्हीं गुरु विवेकानंद को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

श्री शरच्चन्द्रदेव शर्मा द्वारा विरचित "स्वामिविवेकानंदवंदना" समाप्त हुई ।



---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से लिया गया है—प्रकाशक ।

विवेकपंचकम्

स्वामिअमृतानन्दविरचितम्

वीरेश्वरांशं विबुधावतंसं "वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थम्"।
कारुण्यमूर्ति कमनीयरूपं तं देशिकेन्द्रं सततं नमामि ॥ १ ॥

विवेकसंज्ञं निहतारिषट्कं अद्वैतसिद्धान्तविमर्शदक्षम्।
सर्वाश्रयं सर्वजनैः प्रपूज्यं तं देशिकेन्द्रं सततं स्मरामि ॥ २ ॥

"न्यग्रोधवत् सर्वजनाश्रयस्त्वं भवे"रिति प्रीतगुरुप्रशंस्यम्।
दीनैकबन्धुं दीननाथदीप्तिं तं देशिकेन्द्रं सततं भजामि ॥ ३ ॥

ज्ञानासिना छेदितमोहग्रन्थि निरंजनं निःसृत सर्वभ्रान्तिम्।
अज्ञानमातंग-समूहसिंहं तं देशिकेन्द्रं सततं नमामि ॥ ४ ॥

वीरेश्वर शिव के अंश से उत्पन्न, विद्वत् समाज के अलंकारस्वरूप, "वेदान्ततत्व का निश्चित अर्थ जानने वाले," दयालु और कमनीयरूप विशिष्ट उन्हीं आचार्य प्रवर विवेकानन्द को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

विवेक की संज्ञा से भूषित, काम, क्रोध आदि छः शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाले, अद्वैत सिद्धान्त की व्याख्या करने में सुदक्ष, सभी के आश्रयस्थल एवं सभी के पूजनीय (विवेकानन्द नाम से प्रसिद्ध) उन्हीं आचार्य प्रवर का सर्वदा स्मरण करता हूं ॥ २ ॥

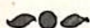
"विशाल वटवृक्ष के समान तुम सभी को आश्रय प्रदान करोगे" इस प्रकार से जिनकी प्रशंसा उनके गुरुदेव ने उन पर प्रसन्न होकर की थी, जो दरिद्रों के एक मात्र बन्धु थे और सूर्य के समान तेजस्वी थे—उन्हीं आचार्य प्रवर विवेकानन्द का मैं भजन करता हूं ॥ ३ ॥

ज्ञान खड्ग के द्वारा मोह ग्रन्थि का छेदन करने वाले, माया से परे, सब प्रकार की भ्रान्ति से रहित एवं अज्ञानरूपी गजराज के लिए सिंह स्वरूप उन्हीं आचार्य प्रवर को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥

"अष्टादशैः शिष्टगुणै" रूपेतं भवाब्धि मग्नस्य जनस्यपोतम् ।
तृणीकृता येन तदष्टसिद्धिस्तं देशिकेन्द्रं सततं स्मरामि ॥ ५ ॥

विश्वकल्याणदक्षाय विवेकानन्दसूरये ।
कृत्वापि मुग्धभावेन स्तुतिरेषा समर्पिता ॥

स्वामिअमृतानन्दविरचितं "विवेकपंचकम्" समाप्तम्



श्रीमद्विवेकानन्दजयाष्टकम्*

प्राध्यापकपाँचुगोपालन्वद्योपाध्यायविरचितम् ।

जयतु जयतु शश्वद् वीरचूड़ामणिर्वै
सकल-मनुज-पंच-क्लेश-हारी विवेकः ।
विजित-निखिल-मोहोब्रह्म-विज्ञान-निष्ठ-
स्त्रिभुवन-मणि-दीपो भास्वरोऽसौ नरेन्द्रः ॥ १ ॥

शिष्ट सुलभ अठारह दैवीशक्ति से समन्वित होकर जिन्होंने संसार समुद्र में पतित लोगों का उद्धार किया, (श्री गुरु प्रस्तावित) आठ प्रकार की सिद्धियों को जो तृण के समान तुच्छ समझते थे, उन्हीं आचार्य प्रवर का मैं सदा स्मरण करता हूँ ॥ ५ ॥

समग्र जगत् का कल्याण करने में दक्ष, विद्वत्वर श्री विवेकानन्द स्वामी महोदय को अपनी अल्पबुद्धि द्वारा रचित यह स्तुति मैंने समर्पित की ।

स्वामी अमृतानन्द द्वारा विरचित "विवेकपंचकम्" समाप्त हुआ ।



जिनकी ब्रह्मज्ञान में बहुत निष्ठा थी, मोह जिनसे भयभीत था, त्रिभुवन में जिनका प्रकाश मणि के समान फैला था, जो मनुष्य शरीर में सब के पाँच प्रकार के क्लेशों का नाश करने वाले थे और जो अपनी महिमा में भास्वर के समान थे, वे ही श्री नरेन्द्र वीर-चूड़ामणि विवेकानन्द हैं, आज से सदैव उनकी जय हो ॥ १ ॥

जयतु जयतु शश्वत्त्यागिचूड़ामणिर्वै
दलित-कनक-कामो गीत-वादित्र-शूरः ।
अखिल-सुगुण-शाली कोष-मुक्तासि-धारः
प्रतिभटकुलभीतिर्वज्रनिर्घोषकारी ॥ २ ॥
जयतु जयतु शश्वन्न्यासि-चूड़ामणिर्वै
त्रिगुण-गलित-रूपो निर्विकल्पो यतीन्द्रः ।
विदित-परम-हंसो विश्व-धर्म-प्रतीकः
कृत-युग-पथिकृन्नूदार-संघातिकर्ता ॥ ३ ॥
जयतु जयतु शश्वज् ज्ञानि-चूड़ामणिर्वै
परिणत-गुरु-भावो ब्रह्मचार्यूर्ध्वरेताः ।
सुगत-बहल-तन्त्रो रामकृष्णैकसारो
नव-युग-वर-नेता विश्व-धर्माध्व-दीपः ॥ ४ ॥

वे नरेन्द्र ही श्री विवेकानन्द हैं जो कनक और काम पर विजय पाने वाले हैं, त्यागियों में चूड़ामणि के समान हैं (श्रेष्ठ हैं), गाने और बजाने में सुनिपुण हैं, सभी गुणों से युक्त हैं। मुक्त तलवार की धार के समान तीक्ष्ण मेधा से युक्त हैं और प्रतिस्पर्धियों को वज्र के नाद के समान शब्द के द्वारा घोर त्रास देने वाले हैं। आज से सदैव उनकी जय हो ॥ २ ॥

तीनों गुणों से रहित निर्विकल्प का ध्यान करने वाले, परमहंस तत्व के अच्छे ज्ञाता, सत्य युग के पथ का प्रदर्शन करने वाले, धर्म की मूर्ति, उदार संघनेता, जीव सेवा का व्रत लेने वाले, सन्यासियों के चूड़ामणि यतिराज वे नरेंद्र ही श्री विवेकानंद हैं जो गुरु महाराज की सहायता करने के लिए उनके एकमात्र सम्बल होकर आये। आज से सदैव उनकी जय हो ॥ ३ ॥

गुरुभाव में महान रूप से आविष्ट, ज्ञानियों में चूड़ामणि, रामकृष्ण-प्राणाराम, बहुत से तंत्रों के ज्ञाता, ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी, ब्रह्म-तेज से प्रकाशमान, नये युग के आचार्य और धर्म पथ को आलोकित करने वाले वे श्री नरेंद्र ही स्वामी विवेकानंद हैं। आज से सदैव उनकी जय हो ॥ ४ ॥

जयतु जयतु शश्वद् वाग्मि-चूड़ामणिर्वै
ह्यमलिन-मत-वादी निर्जिता शेष-दुर्धीः ।
प्रथित-नृ-मणि-मान्यः पश्चिमोर्वी-प्रचारी
त्वशरण-गलदश्रुः प्रेम-भूमि-प्रतिष्ठः ॥ ५ ॥
जयतु जयतु शश्वत् कर्मि-चूड़ामणिर्वै
परम-सुकृत-वर्षी धर्म-संज्ञा-विकासी ।
नरकुल-शुभ-कारी वेद-वेदान्त-वेत्ता
कमल-नयन-वक्त्रो देव-देवप्रभावः ॥ ६ ॥
जयतु जयतु शश्वद् भक्तचूड़ामणिर्वै
विधिहरि-हर-वन्द्य-श्रीमहाकालिकेष्टः ।
अकरुणजनशान्ता मूर्तरुद्रोऽवतीर्ण-
स्त्ववनत-सुसहायः शारदान्यस्त-भारः ॥ ७ ॥

जो नरों में श्रेष्ठ रूप से मान्य हैं, कुमति का संहार करने वाले हैं, पश्चिमी गोलार्ध में धर्म के रहस्य का प्रचार करने वाले हैं, विमल-वेदांतवादी हैं, वाग्मि-चूड़ामणि हैं (वक्ताओं में श्रेष्ठ हैं), आश्रय रहित दीन-दुखियों के लिये प्रेम के आंसू बहाने वाले हैं, वे श्री नरेंद्र ही स्वामी विवेकानंद हैं। आज से सदैव उनकी जय हो ॥ ५ ॥

जो कर्मि चूड़ामणि हैं, पुण्य अश्रु धारा प्रवाहित करने वाले हैं, निगूढ़ धर्म तत्व को प्रकट करने वाले हैं, जिनकी आंखें व शरीर कमल के समान हैं और मानव-कल्याण में जिनका मन नियोजित है; जो वेद और वेदांत सभी के पारगामी हैं उनको मैं देवदेव महादेव के समान मानता हूं। वे श्री नरेंद्र ही स्वामी विवेकानंद हैं। आज से सदैव उनकी जय हो ॥ ६ ॥

जो भक्त-चूड़ामणि हैं; जिन देवी की ब्रह्मा, विष्णु और महेश नित्य अर्चना किया करते हैं उन श्यामादेवी से प्रेम करने वाले, मां शारदा में आत्म भार समर्पित करने वाले, मूर्तिमान् रुद्र के समान धराधाम में विचरण करने वाले, नीचों का शमन करने वाले और दीन-दुखियों की हर क्षण सहायता करने वाले श्री नरेन्द्र ही स्वामी विवेकानंद हैं। आज से सदैव उनकी जय हो ॥ ७ ॥

जयतु जयतु शश्वद् योगिचूड़ामणिर्वै
धृत-चरम-समाधिर्निर्विकल्प-प्रलीनः ।
निभृत-गिरि-विहारी जीव-दुःखासहिष्णू-
र्गत-जल-निधि-पारो भारत-श्रीर्जयिष्णुः ॥ ८ ॥

अथ स्तव-कुसुमांजलिः

आचार्याय प्रभु-गुणवते जीव-दुःखान्तकाय
ब्रह्मज्ञाय श्रुति-रसभुजे-ब्रह्म-विज्ञान-दात्रे ।
निर्मायाय भ्रम-कुल-भिदे ध्यान-सिद्धाय भूम्ने
भक्त्याकीर्णं स्तवन-कुसुमं श्री नरेन्द्राय वौषट् ॥

प्राध्यापकपाँचुगोपाल-वन्द्योपाध्यायविरचितं "श्रीमद्विवेकानन्दजयाष्टकम्" समाप्तम् ।



पर्वत की गुफाओं में विचरण करने वाले, वैराग्य की मूर्ति, चरम समाधि-निर्विकल्प समाधि में स्थित; योगियों में चूड़ामणि, पृथ्वी मण्डल के जीवों का दुःख जिनके उदार अन्तःकरण को द्रवित करता था; विशाल समुद्र को पार कर प्रतीच्य में भारत की महिमा की विजय पताका फहराने वाले श्री नरेन्द्र ही स्वामी विवेकानन्द हैं । आज से सदैव उनकी जय हो ॥ ८ ॥

ध्यानसिद्ध, ब्रह्मज्ञानी, वेद-रस-पायी, मायातीत, महाप्राण, भूम-तत्व-शायी, अगणित भ्रमों का भेदन करने वाले; ब्रह्म-बोध-क्षाता, जीव-दुःख-नाशकारी, प्रभु-गुण-धाता, झंझागति वाले, यतिवर, पूर्ण प्रेमानन्द में विभोर वे श्री नरेन्द्र ही युगाचार्य स्वामी विवेकानन्द हैं । यह स्तवन रूपी प्रसून भक्तिभाव से समाकीर्ण होकर अंजलि में भरकर बार-बार उनके चरणों में अर्पण करता हूँ ।

प्राध्यापक पाँचुगोपालवन्द्योपाध्याय द्वारा विरचित "श्रीमद्विवेकानन्द-जयाष्टकम्" समाप्त हुआ ।



स्वामिविवेकानन्दसंस्तुतिः

स्वामिबलरामानन्दविरचितम्

अखण्डं सच्चिदानन्दं, पूर्णं ब्रह्मसनातनम्।
आविर्भूतं जगत् त्रातुं, स्वामिनं तं नमाम्यहम्॥ १॥
वीरेश्वरः शिवः साक्षात, नररूपेण रूपितम्।
सेवार्थमार्त्तदीनानां, स्वामिनं तं नमाम्यहम्॥ २॥
लीलासहचरश्रेष्ठं, गुरुभक्ति-परायणम्।
ध्यानसिद्धं तपोनिष्ठं, स्वामिनं तं नमाम्यहम्॥ ३॥
योऽस्ति श्रीरामकृष्णस्य, दासो जन्मनि जन्मनि।
आगतस्तस्यकार्यार्थं, स्वामिनं तं नमाम्यहम्॥ ४॥
येनावबोधितं तत्त्वं, शारदा-रामकृष्णयोः।
सारं च सर्वधर्माणां, स्वामिनं तं नमाम्यहम्॥ ५॥

जो वास्तव में अखण्ड सच्चिदानन्द स्वरूप हैं, पूर्ण ब्रह्म हैं, सनातन हैं एवं स्वयं जगत् का त्राण करने के लिए स्वामी विवेकानन्द के रूप में आविर्भूत हुये हैं, उन्हीं स्वामीपाद को मैं प्रणाम करता हूँ॥ १॥

साक्षात् वीरेश्वर शिव ही जिन विवेकानन्द के रूप में आर्त एवं दीन जीवगणों की सेवा के लिए नर शरीर में रूपायित हुए हैं, उन्हीं स्वामीपाद को मैं प्रणाम करता हूँ॥ २॥

जो श्रीरामकृष्ण के लीला सहचरों में श्रेष्ठ एवं गुरु-भक्तिपरायण थे, ध्यानसिद्ध और तपोनिष्ठ थे, उन्हीं स्वामीपाद को मैं प्रणाम करता हूँ॥ ३॥

जो दयाघन श्रीरामकृष्ण के जन्म-जन्म के दास हैं एवं उनका कार्य करने के लिए ही आये हैं, उन्हीं स्वामीपाद को मैं प्रणाम करता हूँ॥ ४॥

जिन्होंने सर्वप्रथम श्रीरामकृष्ण और श्रीशारदादेवी का वास्तविक स्वरूप तथा सभी धर्मों का सार स्पष्ट रूप से समझा था, उन्हीं स्वामीपाद को मैं प्रणाम करता हूँ॥ ५॥

शंकराचार्यवद् यस्मिन्, प्रतिभास्ति तथैव च।
कारुण्यं बुद्धदेवस्य स्वामिनं तं नमाम्यहम् ॥ ६ ॥
देशदेशान्तरं गत्वा, सर्वे धर्माः समन्विताः।
वेदान्त-दीप-द्रष्टारं, स्वामिनं तं नमाम्यहम् ॥ ७ ॥
अत्यन्त प्राकृतस्यापि बोधनार्थं सुखाय च।
व्याख्यातो-वेद-वेदान्तः स्वामिनं तं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥
आत्मनो मोक्षलाभार्थं, जगद्धिताय ह्येव च।
नवसन्यासिसंघस्य, स्थापकं तं नमाम्यहम् ॥ ९ ॥
मूर्तिमन्तं मनुष्यत्वं, नरेन्द्र इति संज्ञितम्।
वन्दे नर ऋषिं दिव्यं, विवेकानन्द-रुपिणम् ॥ १० ॥
विश्वस्य सर्वधर्माणां, धर्मग्लानि-निवारकम्।
युगाचार्य-वरिष्ठं तं, भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ ११ ॥

जिनके अन्त.करण में आचार्य शंकर की प्रतिभा तथा बुद्धदेव की करुणा एक साथ विराजमान थी, उन्हीं स्वामीपाद को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

जिन्होंने देश देशान्तर में जाकर सब धर्मों में समन्वय स्थापित किया है, उन्हीं वेदान्त प्रदीप के दर्शयिता स्वामीपाद को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

जिन्होंने वेद वेदान्त के जटिल तत्वों को सामान्य लोगों के लिए भी बोधगम्य करके उनकी व्याख्या की, उन्हीं स्वामीपाद को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ८ ॥

जिन्होंने "आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च" (अपना कल्याण एवं संसार का हित) इस उद्देश्य को लेकर नवीन सन्यासी संघ की प्रतिष्ठा की एवं जो उसके संस्थापक बने, उन्हीं स्वामीपाद को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ९ ॥

जो मनुष्यत्व के मूर्तिमान स्वरूप तथा नरेन्द्र नाम से विदित हैं, उन्हीं विवेकानन्दस्वरूपी दिव्य नरऋषि को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १० ॥

जिन्होंने विश्व के समस्त धर्मों की ग्लानि का निराकरण किया, उन्हीं युगाचार्य वरिष्ठ को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ ॥ ११ ॥

माता मे शारदादेवी, रामकृष्णः पिता स्वयम्।
विवेकानन्द-आचार्यः, सर्वे भक्ताश्च बान्धवाः ॥ १२ ॥

स्वामिबलरामानन्दविरचिता "विवेकानन्दसंस्तुतिः" समाप्ता।



स्वामिविवेकानन्दप्रणतिः*

श्रीदक्षिणारंजनशास्त्री, एम० ए०, विरचिता

यदा यदा निर्मलधर्मदर्पणे कलंकरेखा निपतत्यहो तदा।
प्रजायते श्री भगवान् दयार्णवो विशोधनार्थं खलु दर्पणस्य च ॥ १ ॥

यदा स्मार्ताचार्याः श्रुतिमतविरोधेन हि पुन-
र्भजन्ते संकीर्णं प्रभवति मतं भेदविषये।
विवेकानन्दोऽयं कथयति कथां चौपनिषदीं
त्वभेदो जीवानां प्रतिघटपटं ब्रह्मवसतिः ॥ २ ॥

शारदादेवी मेरी माँ है, साक्षात् श्रीरामकृष्ण मेरे पिता हैं, विवेकानन्द मेरे आराध्य आचार्य हैं एवं उनके सभी भक्तगण मेरे बान्धव हैं ॥ १२ ॥

स्वामी बलरामानन्द द्वारा विरचित "विवेकानन्दसंस्तुतिः" समाप्त हुई।



जब-जब धर्म के निर्मल दर्पण में कलंक रेखा निपतित होती है, तब-तब ही श्रीभगवान् दर्पण की इस मलिनता (अधर्म का प्रभाव) को विशोधित करने के लिये इस पृथ्वी पर अवतीर्ण होते हैं ॥ १ ॥

जब स्मृतिशास्त्र के आचार्यगण वेदमत के विरोध में भेद वाद रूपी संकीर्ण मत का आश्रय ले रहे थे, तभी (इन) विवेकानन्द ने आविर्भूत होकर उपनिषद् के अभेदवाद का प्रचार किया और इस सत्य का प्रचार किया कि जीव और ब्रह्म अभिन्न हैं एवं प्रत्येक घट-पट-मठ ब्रह्म के ही एक-एक रूप हैं ॥ २ ॥

---

* उद्बोधन पत्रिका के कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक।

न जातिभेदो न च वर्णदुष्टिर्येनापि केनापि तथा भजस्व।
दयार्णवस्ते शरणं तथा स्याद् यथा नदीनां शरणं समुद्रः ॥ ३ ॥
या भेदबुद्धिर्विहिता तु शास्त्रे साज्ञानलाभं विहिता न पश्चात्।
ज्ञाने प्रजाते न हि विद्यते सा समन्वयः सर्वगतो विभाति ॥ ४ ॥
उदारता यस्य हि सार्वभौमिकी न द्वेषलेशोऽपि च यस्य मानसे।
सर्वास्तु नार्यो जननीव पूजिता नराश्च नारायणवत् सुमानिताः ॥ ५ ॥
वेदान्ततंत्रेषु कथाविचारे यस्यैव बुद्धिः कुशवत्सुतीक्ष्णा।
'धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायां' संगृह्य यो यच्छति सर्वजीवे ॥ ६ ॥

उन्होंने कहा, प्रकृत पक्ष में (वस्तुत:) जाति भेद नहीं है, दोष दुष्ट वर्ण भी नहीं है। इसलिए जिस किसी भी उपाय से हो, ईश्वर का भजन करो। जिस प्रकार समस्त नद-नदियों का एक मात्र आश्रय समुद्र है, उसी प्रकार सभी जोवों के आश्रय-एकमात्र दया के सागर भगवान् हैं ॥ ३ ॥

शास्त्र में जो लौकिक भेद वुद्धि की बात कही गयी है, वह ब्रह्म की अपरोक्षानुभूति न होने तक ही है, किन्तु ब्रह्मज्ञान हो जाने पर फिर भेद बुद्धि का स्थान कहाँ है? जीव और ब्रह्म के ऐक्य का बोध उत्पन्न होने पर इस प्रकार का भेद ज्ञान पूर्णतः तिरोहित हो जाता है, तब सर्वत्र ब्रह्म की अनुस्यूति प्रकाश पाती है ॥ ४ ॥

जिनमें सार्वभौम उदारता वर्तमान थी, जिनके अन्तःकरण में बिन्दु मात्र भी द्वेष नहीं था, जिन्होंने समस्त नारियों की जननी के समान पूजा की एवं जो सब मनुष्यों को नारायण के समान समझते थे, श्रीरामकृष्ण के उन्हीं वरणीय श्रेष्ठ शिष्य नरेन्द्रनाथ को हम सभी प्रणाम करते हैं ॥ ५ ॥

वेदान्त शास्त्र के सिद्धान्त की व्याख्या करने में जिनकी बुद्धि कुशाग्र और सुतीक्ष्ण थी, "धर्म का तत्व हृदय रूपी गुफा में निहित है"—यह सिद्धान्त शास्त्र से संग्रह कर जिन्होंने समस्त मनुष्यों को दिया था, श्रीरामकृष्ण के उन्हीं वरणीय श्रेष्ठ शिष्य नरेन्द्रनाथ को हम सभी प्रणाम करते हैं ॥ ६ ॥

दरिद्रनारायण सेवनादि लक्ष्यं हि यस्यैव च नित्यमासीत् ।
श्रीरामकृष्णस्य वरेण्य शिष्यं नरेन्द्रनाथं प्रणता नमामः ॥ ७ ॥

धन्योऽसि हे धर्मसमन्वयार्थिन् ! 'धर्मे गुरुर्भारतवर्षभूमिः ।'
त्वयैव देशान्तरसंस्थितेन संस्थापितं धर्ममहासभायाम् ॥ ८ ॥

वीरा वयं नो यदि शस्त्रयुद्धे श्रेष्ठा वयं धर्ममये च संख्ये ।
सन्देहबिन्दूर्नहि विद्यतेऽस्मिन् भवत्प्रसादादधुना पृथिव्याम् ॥ ९ ॥

श्रीरामकृष्णः खलु धर्मवृक्षस्तस्यापि मूलं श्रुतिवाक् सुनित्या ।
स्कन्धो विवेकः समुदारचेता आनन्दरूपा बहवश्च शाखाः ॥ १० ॥

अस्य प्रशाखाः प्रसृताः पृथिव्यां छायादिदानैः सकलानवन्ति ।

दरिद्रनारायण की (देवबुद्धि से) सेवा परिचर्या आदि सदा ही जिनका लक्ष्य और ध्येय था, श्रीरामकृष्ण के उन्हीं वरणीय श्रेष्ठ शिष्य नरेन्द्रनाथ को हम सभी प्रणाम करते हैं ॥ ७ ॥

हे धर्मसमन्वयेच्छु विवेकानन्द ! तुम धन्य हो । तुमने देशान्तर में अवस्थान कर अमेरिका की विश्वधर्म महासभा में भारत को जगत् के धर्मगुरु के आसन पर प्रतिष्ठित किया ॥ ८ ॥

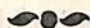
यद्यपि हम लोग अस्त्र-शस्त्र के युद्ध में श्रेष्ठ वीर नहीं हैं तथापि हम लोग धर्म के युद्ध में सर्वश्रेष्ठ वीर हैं, इसमें बिन्दुमात्र भी सन्देह नहीं है । यह बात पृथ्वी पर हम लोग इस समय जिनकी कृपा से जान पाए हैं, श्रीरामकृष्ण के उन्हीं वरणीय श्रेष्ठ शिष्य नरेन्द्रनाथ को हम सभी प्रणाम करते हैं ॥ ९ ॥

श्रीरामकृष्णरूपी धर्म वृक्ष का मूल नित्य सत्य वेद वाक्य है । अत्यन्त उदार चेता विवेक अर्थात् विवेकानंद उसके स्कन्ध एवं आनन्द रूपी अर्थात् परिशेष में आनंद नाम धारण करने वाले श्रीरामकृष्ण के सन्यासी शिष्य सम्प्रदाय उस वृक्ष की बहुत सी शाखाएं हैं ॥ १० ॥

इस वृक्ष की अनेक प्रशाखायें पृथ्वी पर फैल रही हैं एवं अपनी छाया के द्वारा समस्त प्राणियों की रक्षा कर रही हैं । स्कन्ध से निकलने वाली

स्कन्धात् प्रजाताः फलपुष्पवत्यः शाखास्ततः स्कन्धमिमं नमामः ॥ ११ ॥

इति श्रीदक्षिणारंजनशास्त्री, एम० ए०, विरचिता "स्वामिविवेकानन्द-प्रणतिः" समाप्ता ।



स्वामिपादश्रीविवेकानन्दस्मरणम्*

श्रीकालीपदतर्काचार्यविरचितम्

यदा धर्मोग्लानिं बहति बहुधा दुर्गतिवशा-
दधर्मा वर्धन्ते जगतिजनदुःखाय महते ।
तदा दीप्तप्रेमा किमपि वपुराधाय भगवान्
विनेतुं दौर्गत्यं चरति सुचिरं क्षौणिवलये ॥ १ ॥

स्वदेशप्रीत्या यो विमलतमनीत्या प्रथितया
कयाचिद् विख्यातो जगति बहुमानं खलु भजन् ।

फल-फूल-युक्त बहुत सी शाखायें भी हैं। इसलिए हम सभी विवेकानन्द रूपी स्कन्ध को प्रणाम करते हैं ॥ ११ ॥

श्री दक्षिणारंजन शास्त्री, एम० ए०, द्वारा विरचित "स्वामिविवेकानंद प्रणतिः" समाप्त हुई ।



जब संसार में धर्म की अत्यंत हानि होती है एवं जीवों के महादुःख का कारण (अधर्म) वर्धित होता है तब श्रीभगवान् करुणा से आप्लुत होकर लोगों की दुर्गति दूर कर इस पृथ्वी पर धर्म का विस्तार करने के लिए अवतार रूप में अवतीर्ण होते हैं ॥ १ ॥

जो स्वदेश प्रेम रूपी अति विमल नीति के द्वारा संसार में विख्यात और गणमान्य हुये थे, भारतवासियों और तत्वज्ञानी सन्यासियों में श्रेष्ठ रूप से

---

* उद्‌बोधन पत्रिका के स्वत्वाधिकारियों की अनुमति से संगृहीत—प्रकाशक ।

प्रियो नः सौभाग्यादजनि धरणौ भारतनृणां
विवेकानन्दोऽसौ जयति यतिवृत्तान्तविबुधः ॥ २ ॥
विदित्वा वेदान्तं विविधविधिशान्तं सुमनसां
तपः स्मारं स्मारं मुनिनियमसारं परिचरन् ।
चरन् देशे देशे निरदिशदहो तत्त्वमतुलं
विवेकानन्दोऽसौ जयति यतिवृत्तान्तविबुधः ॥ ३ ॥
यदीयो वेदान्तः प्रथमनवसिद्धान्तमहिमा
हिमार्तानां दीप्तो रविरिव ददौ शान्तिमसमाम् ।
य एकः प्रोद्दीप्तः प्रतिभयजड़ं धर्ममतनोद्
विवेकानन्दोऽसौ जयति यतिवृत्तान्तविबुधः ॥ ४ ॥
पवित्रे चारित्रे निरवधिविनीतेन विधिना
सुविज्ञातो लोके विविधविधिमार्गानुपदिशन् ।

प्रतिपन्न हुये ये और जो प्रिय विवेकानंद हम लोगों के परम सौभाग्यवश ही इस जगत् में (नर रूप में) जन्म ग्रहण कर आये, उन्हीं विवेकानंद की जय हो ॥ २ ॥

नाना विधि-विधान के उपशमस्वरूप वेदान्त शास्त्र को जान कर ज्ञानी तपस्वियों के विविध व्रत, नियम और तपस्या स्मरण पूर्वक मुनियों के नियमानुसार आचरण एवं विभिन्न देशों में भ्रमण करके जिन्होंने अनुपम वेदांत तत्व का प्रचार किया, उन्हीं ज्ञानी और यति वृन्दों में श्रेष्ठ विवेकानंद की जय हो ॥ ३ ॥

जिनके प्रथम और नवीन वेदांत सिद्धान्त की महिमा हिमार्त व्यक्तियों के लिए प्रदीप्त सूर्य के समान अतुलनीय शान्ति प्रदान करने वाली थी एवं एकमात्र जिन्होंने ज्ञानालोक से प्रदीप्त होकर लोगों की जड़ता दूर करने में समर्थ धर्म का प्रचार किया, ज्ञानी यतिवृन्दों में श्रेष्ठ उन्हीं विवेकानंद की जय हो ॥ ४ ॥

निरवच्छिन्न भाव से विनीत विधान के द्वारा चरित्र पवित्र रहने के कारण

महामोहध्वान्तं सपदि लयमानीय महसा
विवेकानन्दोऽसौ जयति यतिवृत्तान्तबिबुधः ॥ ५ ॥
गुणानामाधारः शुभचरितसारो यतिवरः।
प्रसारं धर्माणां विदधदपि पारे जलनिधेः।
निधिं शास्त्राम्भोधेरनुगुणगणं यः समतनोद्
विवेकानन्दोऽसौ जयति यतिवृत्तान्तबिबुधः ॥ ६ ॥
बहूनां शिष्याणां गुरुरमरधामातिथिरभूत्
समुद्दिश्यंलोकं सुचिरमुपदेष्टुं व्यवसितः।
तमादर्शीकृत्य प्रचरति सतीशिष्यसमिति
स्ततो जीयादेषा सकल शुभसंपादनपरा ॥ ७ ॥

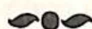
विविध विधि नियमों का उपदेश देकर जो उससे सुविदित हुये थे एवं ब्रह्मतेज के द्वारा तत्क्षण जिन्होंने लोगों के महामोह रूपी अन्धकार को दूर कर दिया एवं जो ज्ञानी यतियों में श्रेष्ठ हैं, उन्हीं (सन्यासी प्रवर) विवेकानन्द की जय हो ॥ ५ ॥

बहुत से गुणों के आधार, शुद्ध चरित्र जिन यतिवर ने सनातन वैदिक धर्म के प्रचार के लिए समुद्र के उस पार जाकर भी नाना प्रकार के धर्म भाव के विस्तार पूर्वक हम लोगों के शास्त्र सागर से बहुत से गुणों से युक्त ज्ञानरूपी धन का वितरण किया, ज्ञानी यतिवृन्दों में श्रेष्ठ उन्हीं विवेकानन्द की जय हो ॥ ६ ॥

बहुत से शिष्यों के गुरु (भगवान्) श्रीरामकृष्ण के अमर धाम में प्रस्थान करने पर उनके आदेश से इस संसार में बहुत समय पर्यन्त उनके शिष्य विवेकानन्द ने लोगों को धर्मोपदेश दिया। श्रीरामकृष्ण के शिष्य विवेकानन्द को आदर्श कर जो शिष्य मण्डली और समिति संगठित हुई है। सब लोगों का मंगल करने वाली वह शिष्य मंडली और वह प्रतिष्ठान बहुत समय पर्यन्त लोगों का कल्याण करे, यही प्रार्थना है ॥ ७ ॥

जीयात् स्वामिवरस्य भूमिवलये धर्मोपदेशावलि-
जीयाद् गौरवदीप्त तत्त्वविभवः प्राचीनशास्त्राश्रयः ।
जीयात् स्वामिविनीतशिष्यसमितिः सर्वोच्चभावप्रिया
जीयाद्भारतभूतलं सुविपुलं जन्मावनिः स्वामिनः ॥ ८ ॥

[इतिश्रीकालीपदतर्काचार्यविरचितं "स्वामिपादश्रीविवेकानन्दस्मरणम्" समाप्तम् ।



श्रीविवेकानन्दस्तोत्रम्*

श्रीदक्षिणारंजनभट्टाचार्य बी० ए०, विरचितम्

जीवसेवाव्रतं यस्य लक्ष्यमासीन्महीतले ।
ज्ञानमात्मगतं यो वै तेन मार्गेण संगतः ॥
कर्मिणे ज्ञानिने चैव भक्ताय स्वामिने पुनः ।
विवेकानन्दरूपाय भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ १ ॥

इस भूमंडल पर स्वामिप्रवर की धर्मोपदेशावली जीवित रहे । प्राचीन शास्त्र के आश्रय से उनका गौरवदीप्त तत्त्व ज्ञान रूपी वैभव चिरस्थायी हो । स्वामी महोदय की सर्वोच्च भाव पूर्ण, विनय गुण युक्त शिष्य समिति बहुत समय तक स्थायी रहे । स्वामी विवेकानन्द की जन्म भूमि यह विशाल भारत अनन्त काल तक जीवित रहे ॥ ८ ॥

श्री कालीपद तर्काचार्य द्वारा विरचित "स्वामिपादश्रीविवेकानन्द-स्मरणम्" समाप्त हुआ ।



इस भूमंडल पर (शिवज्ञान से) जीव सेवा व्रत ही जिनका लक्ष्य था, जो उसी सेवा मार्ग में विचरण करके आत्मज्ञान से सम्पन्न हुये थे, उन्हीं कर्मी ज्ञानी और भक्त स्वामी विवेकानन्द को मैं बार-बार प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

---

* उद्बोधन पत्रिका के स्वत्वाधिकारियों के अनुमति क्रम से संगृहीत है—प्रकाशक ।

यत्सेवाव्रतमामनन्ति मुनयो बुद्धो जिनः शंकरः
श्रीरामः कमनीयकाम्यकवने वृन्दावने माधवः ।
जाह्नव्याः सुतटेषु गौड़गहने गौरांगदेवस्तथा
तत्सेवाव्रतमद्य साधकवरः स्वामी पुनर्घोषते ॥ २ ॥

देवा नागाश्च यक्षाः खगभुजगगनाश्चाप्सरोरंशभूता
गन्धर्वा राक्षसा ये सकलभुवनजाश्चासुरा वृक्षजाताः ।
शत्रुर्मित्रं च ये वा निखिलनरकजा यातनास्थाश्च जीवा
आब्रह्मस्तम्बरूपं जगदिदमखिलं तृप्यतां तृप्यतां भोः ॥ ३ ॥

चण्डालो ब्राह्मणो वा गुरुरुत वयसा लाघवः पण्डितो वा
मूर्खो दीनो धनाढ्यः सकलगुणगणैरन्वितो निर्गुणो वा ।
सर्वे नारायणास्ते वयमपि च तथा यूयमप्यत्र भूता
आत्मा नारायणोऽयं प्रचरति बहुशः सेव्यतामात्मरूपः ॥ ४ ॥

प्राचीन काल में मुनि ऋषियों ने; बुद्ध, जिन शंकराचार्य ने; कमनीय काम्यक वन में श्रीरामचन्द्र ने, वृन्दावन में श्रीकृष्ण ने एवं गौड़ देश में गंगा तट पर गौरांगदेव ने जिस सेवाधर्म की बात कही थी, उसी सेवा व्रत की घोषणा साधकवर स्वामी विवेकानन्द ने आज पुनः किया है ।। २ ।।

(शिव ज्ञान से जीव सेवा व्रत का आचरण कर) देवता, नाग, यक्ष, पक्षी और सर्पगण; अप्सराओं के वंशधर, गन्धर्व और राक्षसगण; समस्त भुवनों के असुर और सभी वृक्ष; शत्रु-मित्र और सभी नरक की यातना प्राप्त जीवगण; ब्रह्मा से लेकर क्षुद्र तृण पर्यंत—यह समग्र जगत् तृप्त हो, तृप्त हो ।। ३ ।।

(उन्हीं) स्वामी विवेकानन्द ने कहा है चण्डाल, ब्राह्मण, गुरु, वयः, कनिष्ठ, पण्डित मूर्ख, समस्त गुणों से मण्डित व्यक्ति अथवा गुणहीन लोग—ये सभी "नारायण" हैं; हम लोग भी नारायण हैं, उसी प्रकार यहां पर अवस्थित तुम लोग भी वही हो । नारायण स्वरूप यह आत्मा संसार में नाना रूपों में विचरण कर रही है । इसलिए उसी आत्मा रूपी नारायण की सेवा करो ।। ४ ।।

द्वारे भिक्षुर्बुभुक्षुः कथयति करुणं "मुष्टिनेयं कदन्नं"
क्षुद्रो मार्जारको मे विलपति नितरां "देहि मे मत्स्यखण्डम्"।
ते सर्वे भूतजाताः सममपि जगतां सेविताश्चेद्भवेयु-
र्नूनं सैवात्मसेवा भवति च सकला नान्यताः सेवनान्मे ॥ ५ ॥

एवं पुत्राश्च दाराः सकलपरिजना बान्धवाश्चार्थराशिः
सर्वं यद्वास्मदीयं भवति च भुवने तत्तु नारायणार्थम्।
वाक्यं कायो मनो मे भवति भगवता चालितं हृद्गतेन
दीनोऽहं भगवन् तवैव नियतं दासोऽस्मि दासाधमः ॥ ६ ॥

दासोऽहं भवतो गृहाण कृपया मत्कर्मलब्धं फल-
मेवं कर्मफलं समर्प्य भगवन्नारायणोद्देशतः।

उन्होंने कहा है—द्वार पर क्षुधार्त भिक्षुक करुण स्वर में कह रहा है, "मुझको एक मुट्ठी निकृष्ट अन्न ही दो," छोटा बिल्ली का बच्चा बार-बार विलाप कर कहता है, "मुझे एक टुकड़ा मछली दो।" लोग यदि खाद्यादि देकर इन सभी प्राणियों की भी सेवा करते हैं तो पूर्ण मात्रा में वह मेरी ही (भगवान् की ही) सेवा होती है, किन्तु परमात्म बुद्धि से रहित होकर सेवा करने से परमात्मा की सेवा नहीं होती ॥ ५ ॥

उन्होंने सिखाया है—इसी प्रकार पुत्र, पत्नी, परिजन, बन्धु-बान्धव, धन-सम्पत्ति आदि जो कुछ भी इस संसार में है, वह सभी नारायण के लिए है। मेरे हृदय में स्थित भगवान् मेरे वाक्य, शरीर और मन को चालित कर रहे हैं। मैं दीन हीन हूँ। हे भगवान्! तुम्हारे दासों में भी अधम दास हूँ ॥ ६ ॥

उन्होंने यह प्रार्थना करना सिखाया है—'हे भगवान्! मैं तुम्हारा दास, हूँ, मेरे कर्मों से प्राप्त फल अनुग्रह करके तुम ग्रहण करो।' उन्होंने कहा है— 'इस प्रकार भगवान नारायण के उद्देश्य से कर्म फल समर्पित करके, कर्म फल

मुक्तः कर्मफलाद्विशुद्धहृदयो योगे मनो दीयतां
मुक्तिं बन्धनतो लभस्व नियतां 'कस्त्वं' पुनश्चिन्त्यताम् ॥ ७ ॥

नाहं कायो जघन्यः कफमलसहितः पंचभूतात्मको वा
नाहं छेद्यो न दाह्यो न च मरणवशो नापि जातः कदाचित् ।
नाहं कर्मी न भक्तो न च सुखमपि वा दुःखलेशो मदीयः
सोऽहं यः षष्ठचक्रे विलसति नियतं 'सच्चिदानन्दरूपः' ॥ ८ ॥

इत्येतत्तत्वजातं नवतरभुवने प्राच्यपाश्चात्यभागे
योऽय नव्यावतारो गुरुकुलतिलको घोषयामास नादैः ।
येनायं धर्मराज्ये सकलजनगुरुर्भारतोऽस्यां धरण्या
इत्येत्यतत् साधितं वै सुनिपुणवचसा पूजितः सर्वथाऽसौ ॥ ९ ॥

से मुक्त होकर विशुद्ध हृदय से युक्त होकर योगाभ्यास में मन लगाओ। हमेशा के लिए बन्धन से मुक्ति प्राप्त करो एवं 'तुम कौन हो' यह हमेशा विचार करो" ॥ ७ ॥

उन्होंने सिखाया है—"मैं कफ और मल से परिपूर्ण यह जघन्य शरीर नहीं हूँ, कर्मफलजनित पंचभूतात्मक भी नहीं हूँ, मैं छेदन करने योग्य अथवा दहन योग्य अथवा मरण के वशवर्ती किम्वा कभी भी पैदा नहीं हुआ हूँ। मैं कर्मी या भक्त नहीं हूं, सुख या दुःख का लेश भी मेरे भीतर नहीं है। (षट् चक्रों में) षष्ठचक्र में जो सदा विलास करते हैं, वही 'सच्चिदानन्द स्वरूप' मैं हूँ" ॥ ८ ॥

नव्यभावापन्न पृथ्वी पर प्राच्य और पाश्चात्य देशों में जिन गुरुकुल-तिलक नवीन अवतार ने इन सभी तत्वों का सिंह के समान नाद करके प्रचार किया, जिन्होंने सुनिपुण वाक्यों में यह मत प्रतिष्ठित किया कि धरणीतल पर धर्मराज्य में यह भारत ही पृथ्वी के सभी लोगों का गुरु है, वही विवेकानन्द सब प्रकार से हम लोगों के पूजनीय हैं ॥ ९ ॥

हे मुक्त ! लोकस्थित–सिद्धसाधो !
भक्ताधमोऽहं न च कर्मलिप्सुः ।
ज्ञानामृतं किं न हि तत् प्रजाने
निराश्रयोऽहं शरणं प्रयाचे ॥ १० ॥

इतिश्रीदक्षिणारंजनभट्टाचार्य, बी० ए०, विरचितं
"श्रीविवेकानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



श्रीविवेकानन्दाष्टकम्*

श्रीकालीपदवन्द्योपाध्यायविद्याविनोदविरचितम्

दधद् दिव्यज्योतिः परमरमणीयं नयनयोः
प्रसन्नास्यः सौम्यो मुनिकनकशोभाधरवपुः ।
सुधीः सत्यद्रष्टा भुवनवरणीयः श्रुतिधरो
विवेकानन्दोऽसौ मनुजतनुधारी स्मरहरः ॥ १ ॥

हे मुक्तपुरुष ! हे दिव्यलोक में अवस्थान करने वाले सिद्ध महात्मा ! मैं भक्ताधम हूँ, कर्म में मेरी लिप्सा नहीं है, ज्ञानामृत क्या वस्तु है वह भी मैं नहीं जानता ? मैं निराश्रय हूँ, तुम्हारे शरण की प्रार्थना करता हूं ॥ १० ॥

श्री दक्षिणारंजन भट्टाचार्य, बी० ए० द्वारा विरचित
"श्रीविवेकानन्दस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



जिनके दो नेत्र परम रमणीय दिव्य ज्योति से उद्भासित थे, जिनका मुखमंडल प्रसन्न और प्रफुल्ल था, जिनके शरीर में मुनियों के समान स्वर्ण की दीप्ति थी, जो सद्बुद्धि सम्पन्न, सत्यद्रष्टा, विश्ववन्द्य एवं श्रुतिधर थे, वे ही विवेकानन्द मनुष्यदेहधारी साक्षात् महादेव हैं ॥ १ ॥

---

* उद्बोधन पत्रिका के स्वत्वाधिकारियों की अनुमति से संगृहीत है—प्रकाशक ।

किशोरो ध्यानस्थो भुजगभयशून्यो ह्यविचलो
युवा दण्डी वैश्वानरसदृशदीप्तिर्भुवि चरन्।
स्वधर्म-भ्रष्टानां कलुषित-धियां त्राणनिरतो
विवेकानन्दोऽसौ गहनतिमिरे भास्वररविः ॥ २ ॥

गुरोरन्तेवासी परमपुरुषस्य प्रियतमो
नरेन्द्रः सर्वेषामवनतजनानामभयदः।
प्रतिज्ञायां भीष्मो विपदि च महीध्रोन्नतशिरो
विवेकानन्दोऽसौ कुसुमललितो वज्रकठिनः ॥ ३ ॥

गृहे वित्ताभावाद्विचलितमनाः शान्तिरहितो
गतो बारं बारं गुरुवचनतो मातृसदनम्।
'धनं मातर्देही' इत्यनुनयवचस्तु प्रतिहतं
विवेकानन्दः किं भवति धनतृष्णावशगतः ? ॥ ४ ॥

जो किशोरावस्था में ध्यानस्थ होने पर सामने से आते हुए उठे हुये फन वाले विषधर सर्प (को देखकर भी) से भी भयशून्य एवं अविचलित थे, यौवन में दण्डधारण कर सन्यासी वेश में अग्नि देव के समान दीप्तिमान होकर जो संसार में विचरण करते, स्वधर्म भ्रष्ट कलुषित चरित्र वाले व्यक्तियों का जो सदा परित्राण करते, वे ही विवेकानन्द अज्ञानान्धकार में उज्ज्वल सूर्य के सदृश थे ॥ २ ॥

परमपुरुष गुरु श्रीरामकृष्ण के प्रियतम शिष्य नरेन्द्रनाथ सभी प्रणतजनों को अभय देने वाले थे। प्रतिज्ञा में भीष्म और विपदा में पर्वत के समान अटल थे। विवेकानन्द फूल के समान कोमल एवं वज्र के समान कठोर थे ॥ ३ ॥

घर में अर्थाभाव होने पर उनका मन विचलित और अशान्त हुआ था। गुरु श्रीरामकृष्ण के आदेश से बारम्बार मां काली के मंदिर में जाकर गुरु की आज्ञानुसार देवी के पास 'मां, धन दो' कह कर प्रार्थना नहीं कर पाये। विवेकानन्द क्या धन के लिए प्रार्थना कर सकते थे (उन्होंने धनरत्न की चाहना न कर मां काली से विवेक, वैराग्य, ज्ञान और भक्ति की प्रार्थना की थी) ? ॥ ४ ॥

गुरोः पादं ध्यात्वा किमपि नवतेजो हृदि वहन्
महासिन्धुं तीर्त्वा निखिलजगतो धर्मसदसि।
नवीनः सन्यासी विजित जयमाल्यो बहुमतो
विवेकानन्दोऽसौ भुवनविजयी भारतनिधिः॥ ५॥

अविद्याया बैरी श्रुतिविहितविद्यामधुकरः
सुखे चानासक्तः परमपदचिन्तास्थिरमतिः।
जगत् सेवा मन्त्रैर्जगदधिपतेः पूजनपरो
विवेकानन्दोऽसौ भुवि सुविरलो मानवगुरुः॥ ६॥

दरिद्राणां बन्धुर्निखिलमनुजानां प्रियकरः
समो ज्ञाने कर्मण्यविचलितभक्त्यां गुरुपदे।
समः शत्रौ मित्रेऽप्रतिममहिमोद्दीप्ततपनो
विवेकानन्दो मे हृदयगगने भातु सततम्॥ ७॥

गुरु के चरण कमल का ध्यान करके अपूर्व तेजोद्दीप हृदय से महासागर के उस पार जाकर समस्त पृथ्वी के विभिन्न धर्ममतों की महासभा में उन्हीं नवीन सन्यासी भुवन-विजयी भारतरत्न विवेकानन्द ने बहुत सम्मान प्राप्त किया और विजयमाला से विभूषित हुये॥ ५॥

अविद्या के शत्रु, वेदविहित आत्मविद्या के मधु पान में रत, सुख में स्पृहा-रहित, परमपद स्वरूप, ब्रह्म की चिन्ता में तन्मय, जगत् की सेवा रूपी मंत्र में संसार के अधिपति, भगवान् की पूजा में रत, ये विवेकानन्द संसार में अत्यन्त विरल श्रेणी के मानव गुरु थे॥ ६॥

दरिद्रों के बन्धु, समग्र मानव समाज के हितकारी, ज्ञान और कर्म योग में समान रूप से कुशल एवं गुरु के चरणों में अविचलित भक्ति वाले शत्रु और मित्र के प्रति समदृष्टि सम्पन्न, अतुलनीय महिमामय, दीप्त सूर्य के समान वे ही विवेकानन्द हम लोगों के हृदयाकाश में सदा विराजित रहें॥ ७॥

अभय वरद मूर्तिःकालिका-विश्वधात्री-
चरणकमल संस्थौ शारदा-रामकृष्णौ।
शरणगत विवेकानन्द सानन्दमूर्तिः
भवभयहरशून्यं पश्य रे मुग्धनेत्रे ! ॥ ८ ॥

इतिश्रीकालीपदवन्द्योपाध्यायविरचित "श्रीविवेकानन्दाष्टकम्" समाप्तम्।



श्रीविवेकानन्दजयगीतम्*

महामहोपाध्यायश्रीकालीपदतर्काचार्यविरचितम्

पुरानन्तध्वान्तैरुपहतशिवज्ञानविभवे
भवे नाना मार्गैरिह समुदिते दूषणशते।
हितं तत्त्वं चेतुं शितमतिरगाद् यः प्रतिदिशं
नरेन्द्राख्यः सोऽसौ जयति-विषयापास्तहृदयः ॥ १ ॥

अभयावरदात्री विश्वजननी कालीदेवी के चरण कमलों में मग्न चित्त, श्रीशारदा-रामकृष्ण के एकान्त शरणागत सदानंद विवेकानन्द की संसार भय का विनाश करने वाली दिव्य मूर्ति का, हे मेरे मुग्ध नयन ! दर्शन करो ॥ ८ ॥
श्री कालीपद वन्द्योपाध्याय द्वारा विरचित "श्रीविवेकानन्दाष्टकम्" समाप्त हुआ।



प्राचीन काल में समस्त पृथ्वी पर अज्ञान के द्वारा कल्याणकारी ज्ञान की महिमा जब विलुप्तप्राय हो गयी थी, बहुत से कुपथगामियों के द्वारा इस संसार में जब शत-शत दोष दीखने लगे थे, उस समय भी तीक्ष्ण बुद्धि वाले नरेन्द्रनाथ नामक जिस युवक ने मंगलजनक तत्व ज्ञान के अन्वेषण में दिशाओं-दिशाओं में भ्रमण किया, उन्हीं विषयवासनारहित परहितव्रती महात्मा की जय हो ॥ १ ॥

---

* उद्बोधन पत्रिका के स्वत्वाधिकारियों की अनुमति से संगृहीत है—प्रकाशक।

ततो गत्वा गत्वा विविधमतमाश्रित्य भजतां
समीपे सन्देहादनुपगतमुक्तिः कथमपि।
श्रितो यः संसिद्धं द्विजमथ जहौ संशयमलं
विवेकानन्दोऽसौ जयति जड़तामुक्तहृदयः॥ २॥

तमेनं विश्वासाद् गुरुमकृत दृष्टार्थमवशः
स चाप्येनं मेने कुशल शरणं भारत-भुवः।
तदादेशाद्धर्मं प्रथयितुमगाद् योऽपरभुवं
विवेकानन्दोऽसौ जयति जनताजाड्यहरणः॥ ३॥

गुरोराशीर्वादाद् समनिजशक्तेरपि बलात्
प्रसादादाद्याया वरुणदिशि संसत् परिगतान्।

सत्यान्वेषी होकर नाना मतावलम्बी साधकों में बहुतों के पास जाकर भी जब उनके मन का सन्देह किसी भी प्रकार दूर नहीं हुआ, तब एक महासिद्ध ब्राह्मण (श्री श्रीरामकृष्ण देव) के पास जाकर अपने हृदय की जड़ग्रन्थि छिन्न हो जाने के फलस्वरूप संदेह रूपी मल से जो मुक्त हुये थे, उन्हीं विवेकानन्द की जय हो॥ २॥

तब उन्हीं परमार्थज्ञानी ब्राह्मण की अनेक अलौकिक क्षमताओं का दर्शन कर उनके प्रति दृढ़ विश्वास हो जाने पर उन्हीं (श्रीरामकृष्ण) को अपने गुरु रूप में स्वीकार किया एवं उनको समग्र भारत के एक मात्र अति निपुण धर्म-रक्षक मान कर उनके पद प्रान्त में बैठकर सनातन वैदिक धर्म की शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद उनका आदेश प्राप्त कर जिसने धर्म का प्रचार करने के लिए विभिन्न देशों में भ्रमण किया, उन्हीं, जनगणों के धर्म की जड़ता और संकीर्णता हरण करने वाले, विवेकानन्द की जय हो॥ ३॥

गुरु के आशीर्वाद से और अपनी अतुलनीय शक्ति के प्रभाव से एवं आद्या शक्ति भगवती की कृपा के प्रसाद से समुद्र पार अमेरिका की एक विशाल धर्म सभा में भाषण देकर क्षण में ही समस्त विद्वज्जनों के मन को जिन्होंने विमुग्ध

क्षणेन व्याख्यानैरकृत परिमुग्धान्मनसि यो
विवेकानन्दोऽसौ जयति जयहेतुर्जनिभुवः ॥ ४ ॥
ततः प्रत्यावृत्तौ ह्यभयमयमंत्रान् प्रतिदिशं
चितालस्यान् संजागरयितुमना भारतजनान् ।
य उच्चार्योदात्तं व्यघटयमदीषां भयचयं
विवेकानन्दोऽसौ जयति भयहृद्भारतभुवः ॥ ५ ॥
दिशन् सेवावृत्तिं परमहितहेतुं जनिमता
मनैषीद् यो निष्ठां दिशिदिशि च सेवाश्रमगणान् !
सुसन्तानः श्रेयः प्रचयजननः सर्वजगतां
विवेकानन्दोऽसौ जयति तिमिरोत्पाततपनः ॥ ६ ॥

इतिमहामहोपाध्यायश्रीकालीपदतर्काचार्येण विरचितं "विवेकानन्दजयगीतम्" समाप्तम् ।



कर दिया था, अपनी जन्म भूमि भारत की विजय के कारण स्वरूप उन्हीं विवेकानंद की जय हो ॥ ४ ॥

उसके बाद पाश्चात्य देश से लौट आकर तमोगुण से अभिभूत भारतीय लोगों के रजोगुण को उद्‌बुद्ध करने की इच्छा मन में रख कर जिन्होंने भारत की दिशाओं-दिशाओं में परिभ्रमण करके 'अभय मंत्र' उदात्त कण्ठ से उच्चारण पूर्वक उनके समस्त भय को दूर कर दिया था, उन्हीं भारतभूमि के भयहारी स्वामी विवेकानंद की जय हो ॥ ५ ॥

जीवों के परमहित साधक सेवा कार्य का प्रचार करके जिन्होंने दिशाओं-दिशाओं में लोगों के अन्दर निष्ठा जागृत की एवं अनेक सेवाश्रमों की स्थापना के द्वारा सेवाधर्म का प्रवर्तन और समस्त संसार के श्रेयोवर्धक कल्याणकार्य की अभिवृद्धि साधन कर त्यागी शिष्यमंडली संगठित की, उन्हीं अज्ञानान्धकार के नाशक सूर्यमय स्वामी विवेकानन्द की जय हो ॥ ६ ॥

महामहोपाध्याय श्री कालीपद तर्काचार्य द्वारा विरचित "श्री विवेकानंद-जयगीतम्" समाप्त हुआ ।



श्रीविवेकानन्दप्रशस्तिः*

भट्टपल्लीनिवासीश्रीश्रीजीवन्यायतीर्थभट्टाचार्यविरचिता

वर्षं भारतमार्षगौरवभरं लब्ध्वापिकालक्रमात्
स्वातंत्र्यापचयाद्विचाररुचिराचारप्रचारात्ययात् ।
दैन्यालस्यविलासदास्यमभजत् त्रासं च संचारयत्
प्राच्याशामुखमन्धकारविधुरी कृत्येव दुःखं दधौ ॥ १ ॥
भ्रातृद्वेषमनैक्यशेषमभितो मोहम्मदाः सम्मदा-
दालोक्याखिल भारतं निजपदाधीनत्वमानिन्यिरे ।
श्वेतांगास्तदनन्तरं प्रहरणप्रावीण्यतो जित्वरा
विश्वग्रासकृतत्वरा भरतभूराज्येश्वरा रेजिरे ॥ २ ॥
प्रातः सूरसमः समस्तभुवनं सम्पूरयन्नोजसा
तत्कालोचितभावविग्रहधरः श्रीरामकृष्णोऽभवत् ।

भारतवर्ष आर्ष (ज्ञान) वैभव समूह का अधिकारी होकर भी कालक्रम से स्वाधीनता लोप होने के कारण विचार और मनोज्ञ आचार का प्रचार रुद्ध होने के कारण दैन्य, आलस्य और विलास के वशीभूत होकर उनका भजन कर रहा था एवं डरे हुये हृदय से प्रतीच्य देश की ओर मुख कर अन्धकार में गुह्यमान हो कर दुःख भोग रहा था ॥ १ ॥

भारत में (हिन्दुओं में) भ्रातृद्वेष एवं चारों तरफ अनैक्य देखकर (फूट देख कर) मुहम्मद के अनुयायी मुसलमान लोग अत्यंत उत्साह के साथ संपूर्ण भारत को अपने पैरों के अधीन कर रहे थे। उसके बाद श्वेतांग (अंग्रेज) लोग अस्त्र-शस्त्र की प्रधानता से बलवान होकर समग्र विश्व को ग्रास करने के लिए त्वरान्वित होकर भारत राज्य के अधीश्वर स्वरूप होकर विराजमान हुए थे ॥ २ ॥

वही युगोपयोगी भाव विग्रह धारण कर श्रीरामकृष्ण प्रातः कालीन सूर्य के समान अपने अध्यात्म तेज के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को पूर्ण करके उदित हुए ।

---

* उद्बोधन पत्रिका के स्वत्वाधिकारियों की अनुमति से संगृहीत है—प्रकाशक ।

हित्वा कांचनकामकांचनरुचिं देवीपदाब्जद्वये
मग्नोऽनग्नयतीन्द्रभातिरकृत श्री सम्भृतं भारतम् ॥ ३ ॥
तत्तोजोभरयोग सुन्दरतरः श्रीमान्नरेन्द्रः सुधीः
शुद्धः श्री गुरुवैभवानुभवतो लब्ध्वा विवेकोदयम् ।
सन्यासव्रतमादधद्दिशि दिशि स्वाधीनचेताःखलु
भ्राम्यनैश्वर भावभास्वररसैरासिचदाशाचयम् ॥ ४ ॥
आनन्दं च विवेकमंडितमहो नामाक्षरं धारयन्
यः पाश्चात्य विपश्चितां मनसि चिद्रूपां द्युतिं दीपयन् ।
सप्तद्वीपा वसुन्धरातलमधि श्री भारतस्याद्भुतं
गौरं गौरवसंगतं शुभयशः प्रकाशयत् सन्ततम् ॥ ५ ॥

काम और कांचन में किसी भी प्रकार से आसक्ति न रखकर, देवी के दोनों चरणों में सम्पूर्ण आत्म समर्पण करके अनग्न (वस्त्र पहनने वाले) परमहंस स्वरूप में भारत को उन्होंने एक अपूर्व भावश्री से समृद्ध किया ॥ ३ ॥

उनके तेजोमय अध्यात्म (ज्ञान) के स्पर्श से अधिकतर दैव सौन्दर्य से विभूषित श्रीमान् नरेन्द्र ने श्री गुरु की महिमा के द्वारा विवेक बुद्धि प्राप्त कर परिशुद्ध होकर सन्यास व्रत ग्रहण करके स्वाधीन चित्त से दिशाओं-दिशाओं में परिभ्रमण करके ऐश्वरिक भावजनित उज्ज्वल आध्यात्मिक भाव समूह के द्वारा दिङ्मंडल को अभिसिक्त किया था (उन्हीं यतिवर स्वामी विवेकानंद के चरणों में हम लोग प्रणाम करते हैं) ॥ ४ ॥

अहो ! विवेक युक्त आनन्द इस नाम को धारण कर जिन्होंने पाश्चात्य विद्वद्वृन्द के चित्त में ज्ञानमयी द्युति उद्दीप्त कर इस सप्तद्वीपा वसुन्धरा पर श्री भारत के अद्भुत गौरवमय निर्मल यश को सतत प्रकाशित किया, (उन्हीं यतिवर स्वामी विवेकानन्द के चरणों में हमलोग प्रणाम करते हैं) ॥ ५ ॥

वेदान्ते च गुरौ दृढ़ स्थितिरपि प्रोद्दामकर्मप्रियो
वैराग्येऽर्पितमर्मधर्मपरमो देशानुरागानुगः ।
वीरत्वे पुरुषोत्तमोऽपि न रुषा ध्वंसक्रियासाधकः
संघं संघटयन्नसौ विजयते संसारसंगच्युतः ॥ ६ ॥

यन्माहात्म्यहिमांशुराशुतिरयंत्रासं तमोभावजं
प्राच्यानां पर श्रृंखलस्खलनकृत् सन्धाय सत्साहसम् ।
स्वैरं कैरव कोरकायितजनस्वापं चकार स्फुटं
सोऽयं भारतगर्व पर्वतसमो जीयाद्विवेको यति ॥ ७ ॥

स्फूर्तिर्मूर्तिमती भिवाद्य मतिदां जाड्यापहां यद्गिरां
व्याप्तां सप्तसमुद्रपारगमनस्फारां जुषन्ते जनाः ।

वेदान्त में एवं गुरु के प्रति अविचल श्रद्धा रख कर भी जो उद्दाम कर्मयोगी थे, वैराग्य में अपना मर्म और धर्म एकान्त भाव से अर्जन करके भी जो देश भक्ति के अनुगामी थे, वीरत्व में पुरुष श्रेष्ठ होकर भी रोषवश जो कभी भी ध्वंस कार्य में प्रवृत्त नहीं हुये, संसारासक्ति विहीन होने पर भी जिन्होंने संसार के कल्याणार्थ एक संघ की स्थापना करके प्रभूत ख्याति प्राप्त की, उन्हीं स्वाधीनता के ऋत्विक स्वामी विवेकानंद को हम लोग प्रणाम करते हैं ॥ ६ ॥

जिनकी महिमारूपी चन्द्रमा ने तमोगुण रूपी अंधकार से उत्पन्न भय को शीघ्र ही तिरोहित किया, जिन्होंने प्राच्यवासियों के अन्तःकरण में पराधीनता की श्रृंखला मोचन करने के लिये सत्साहस का संचार करके तमो भावाच्छन्न निद्रा को अपनी शक्ति के प्रभाव से रजोगुण में उद्बुद्ध और सक्रिय किया, वही भारतवर्ष के महिमोन्नत पर्वत के समान बहुमान्य विवेकानन्द यति मानो जययुक्त हों ॥ ७ ॥

जिनकी वाणी मूर्तिमती होकर जड़ता नाशक स्फूर्ति के समान आज भी लोगों की बुद्धि को उन्मेषित कर रही है एवं सात समुद्र के पार जाकर भी जो प्रसारित हुई है एवं वहां के लोग भी जिसको आग्रह के साथ ग्रहण करके

आनन्दान्तविवेकनाम रचयन् पृथ्वीतले सार्थकं
जीयाज्जीवगणैकजीवनसुधा श्रीधाम सोऽयं सुधीः ॥ ८ ॥

इतिभट्टपल्लीनिवासीश्रीश्रीजीवन्यायतीर्थभट्टाचार्येणविरचिता "श्रीविवेकानंदप्रशस्तिः" समाप्ता ।



श्रीविवेकानन्दस्तोत्रम् *

स्वामिगुणातीतानन्दविरचितम्

यतिसंघ-प्रतिष्ठाता तच्छिरोमणि सत्तमः ।
रामकृष्ण महाशिष्यो नेता भुवि नरोत्तमः ॥
त्वमेव हि नमस्तुभ्यं विवेकानन्द ते नमः ॥ १ ॥

दिगन्तव्याप्तसत्कीर्तिः राष्ट्रोद्धारकमण्डनः ।
'महाराजःगुरु'र्दण्डी भारतोत्कर्षसाधनः ॥
त्वमेव हि नमस्तुभ्यं विवेकानन्द ते नमः ॥ २ ॥

धन्य हुये हैं, उन्हीं सुधी आनन्द सम्बन्ध विवेक अर्थात् श्री विवेकानंद का यह सार्थक नाम प्राणियों के जीवनामृत का उत्कृष्ट आधार होकर मानो जययुक्त हो ॥ ८ ॥

भट्टपल्ली निवासी श्रीश्रीजीवन्यायतीर्थभट्टाचार्य द्वारा विरचित "श्रीविवेकानन्दप्रशस्तिः" समाप्त हुई ।



सन्यासी संघ के प्रतिष्ठाता, उस संघ के शिरोमणि सदृश श्रेष्ठ सन्यासी, रामकृष्ण के महान शिष्य, इस संसार के नेता और सर्वश्रेष्ठ मानव तुम ही हो। सबके प्रणम्य हे विवेकानन्द ! तुमको नमस्कार ॥ १ ॥

जिनकी शुभ कीर्ति दिगन्त में प्रसारित है, जो राष्ट्र के श्रेष्ठ उद्धारक हैं एवं राजन्य वर्ग के भी गुरु हैं, दण्डधारी सन्यासी रूप में जिन्होंने भारत के कल्याण के लिए समग्र पृथ्वी पर परिभ्रमण किया है, वह तुम ही हो। सभी के प्रणम्य, हे विवेकानन्द ! तुमको नमस्कार है ॥ २ ॥

---

* उद्बोधन कर्त्तृपक्ष की अनुमति से लिया गया है—प्रकाशक ।

ज्ञाननेत्रस्फुरत्कारो नाट्यगानसुपारगः ।
व्याख्यानपटुः पूर्णज्ञः सन्यासीश्रेष्ठश्चिद्घनः ।
त्वमेव हि नमस्तुभ्यं विवेकानन्द ते नमः ॥ ३ ॥

तारुण्योज्ज्वलरम्यांगो वेदसिद्धान्तदर्शनः ।
विश्वव्यापकहृत्प्रेमा विशालज्ञानलोचनः ।
त्वत्तो न हि परः कोऽपि विवेकानन्द ते नमः ॥ ४॥

भवरोगमहावैद्यो वेदान्ताभय दायकः
मनोऽमलो महाशुद्धः कमलाक्षो महाशयः ।
त्वमेव हि नमस्तुभ्यं विवेकानन्द ते नमः ॥ ५ ॥

कलिदोषमहावह्निः साक्षाच्छिव विलोचनः

जिनका ज्ञान नेत्र स्फुरित हुआ था, जो नाटक और संगीत में पारदर्शी थे, जो अपूर्व भाषण देने में पटु थे, पूर्ण ज्ञान संपन्न थे और श्रेष्ठ चिद्घन सन्यासी थे वे तुम ही हो। सबके प्रणम्य हे विवेकानन्द ! इसीलिए तुमको नमस्कार है ॥ ३ ॥

जिनका शरीर तारुण्य की दीप्ति से उद्भासित है, वेदों के सिद्धांत जिन्हें उत्तम रूप से परिज्ञात हैं, जिनके हृदय में समग्र विश्व के वासियों के प्रति अनन्त करुणा सदा वर्तमान है और जिनके अति विशाल ज्ञान नेत्र हैं, उनसे श्रेष्ठ और कोई नहीं है। सभी के प्रणम्य हे विवेकानन्द ! इसीलिए तुमको नमस्कार करता हूँ ॥ ४ ॥

संसार-व्याधि के श्रेष्ठ चिकित्सक, वेदान्तज्ञान के द्वारा अभय देने वाले, मनोमल रहित, शुद्धान्तःकरण युक्त पद्मपत्राक्षलोचन और महात्मा तुम ही हो। सभी के प्रणम्य, हे विवेकानन्द ! इसीलिए तुमको नमस्कार करता हूँ ॥ ५ ॥

कलियुग के पाप का दहन करने के लिये वह्नि स्वरूप, साक्षात् शिव के समान विशाल नेत्रों वाले, अलौकिक चरित्रवान्, विवेकहीन तथा अज्ञान से

दिव्यचारित्र्यपूर्णश्च विवेकान्धजनांजनः ।
त्वमेव हि नमस्तुभ्यं विवेकानन्द ते नमः ॥ ६ ॥

राज-राजशिरोरत्न-निघृष्ट-चरणोत्पलः ।
महामतिर्महाभागो भूगर्भव्योमपारगः ।
त्वमेव हि नमस्तुभ्यं विवेकानन्द ते नमः ॥ ७ ॥

निर्विकल्पसमाधिस्थो विचारणविशारदः ।
चिन्मात्रोदिव्यपूर्णांगश्चरमोन्नतिदायकः ।
त्वमेव हि नमस्तुभ्यं विवेकानन्द ते नमः ॥ ८ ॥

भारतोद्धारसंत्यक्तसर्व सौख्याति मानवः ।
धर्मग्लानिमहारात्रिः प्रभात्यैक सुभावनः ।
त्वमेव हि महास्वामिन् विवेकानन्द ते नमः ॥ ९ ॥

अन्धे व्यक्तियों के लिए ज्ञान चक्षु उन्मीलित करने वाले अंजनस्वरूप तुम ही हो । हे विवेकानन्द ! तुमको नमस्कार, तुमको नमस्कार ॥ ६ ॥

राजराजेश्वरों के सिरों में विभूषित रत्नों के द्वारा जिनका चरणकमलो स्पर्श किया जाता था (अर्थात् बड़े-बड़े राजा जिनके चरणों में प्रणाम करते), महाबुद्धिमान्, महाभाग्यवान् एवं पृथ्वी के अन्तराल तथा आकाश में जाने में सक्षम तुम ही विवेकानन्द हो । हे विवेकानन्द ! तुमको नमस्कार, तुमक नमस्कार ॥ ७ ॥

जो निर्विकल्प में समाधिस्थ हैं, विचार विशारद है, चैतन्य से उद्भासित हैं, दिव्य-पूर्णांग युक्त चरम उन्नति को देने वाले हैं, वे ही तुम हो । विश्ववन्द्य हे विवेकानन्द ! तुमको नमस्कार, तुमको नमस्कार ॥ ८ ॥

भारत का उद्धार करने के लिए अपने सभी सुखों का परित्याग करने वाले, पृथ्वी पर धर्मग्लानिरूपी रात्रि को दूर कर अद्वितीय सुप्रभात के आगमन की सूचना देने वाले तुम ही हो । हे महास्वामी विवेकानन्द ! तुमको नमस्कार, तुमको नमस्कार ॥ ९ ॥

सद्योजाताय हे स्वामिन् विश्वैक कमलाबले ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं विवेकानन्द ते नमः ॥ १० ॥

महावीर्यधरो राजा भूपानां यमिनां तथा ।
पराक्रमप्रभावेण जितेन्द्रियो महाबलः ।
त्वमेव हि नमस्तुभ्यं विवेकानन्द ते नमः ॥ ११ ॥

मुनीनां योगिनां चैव पराक्रान्तो महायशाः ।
शब्दे परे च निष्णातः पारमार्थिकदेशिकः ।
त्वत्तो न हि परःकोऽपि विवेकानंद ते नमः ॥ १२ ॥

धर्मग्लान्याप्लुता भूमिः सगौरवाकृता हि या ।
त्वयैव रामकृष्णाब्ज मधुपान धुरन्धर !
त्वत्तो न ही परः कोऽपि विवेकानन्द ते नमः ॥ १३ ॥

हे सन्यासी ! हे विश्व के अद्वितीय विकसित ज्ञान कमल सदृश ! आत्मज्ञान में प्रतिष्ठित सद्योजात (महादेव) के समान होकर तुमने संसार का अशेष कल्याण किया । इस प्रकार के सन्यासी श्रेष्ठ हे विवेकानन्द ! तुमको नमस्कार, तुमको नमस्कार ॥ १० ॥

तुम महाशक्तिशाली राजाओं एवं यमियों के भी राजा हुए हो एवं तुम ही तप के प्रभाव से जितेन्द्रिय और महाबली हो । हे विवेकानन्द ! तुमको नमस्कार, तुमको नमस्कार ॥ ११ ॥

हे विवेकानन्द ! मुनि और योगिगणों में पराक्रमशाली, महायशस्वी, पराविद्या के प्रतिपादक, वेद में पारंगत, परमार्थ विद्या के उपदेशक तुमसे श्रेष्ठ और कोई नहीं है । तुमको नमस्कार, तुमको नमस्कार ॥ १२ ॥

धर्मंग्लानि से आप्लुत भारत भूमि को तुमने ही उसको उसी के पूर्व गौरव के आसन पर फिर से प्रतिष्ठित किया । हे श्रीरामकृष्ण के चरण कमलों का मधु पान करने में निपुण विवेकानन्द ! तुमसे श्रेष्ठ और दूसरा कोई नहीं है । इसीलिए तुमको नमस्कार, तुमको नमस्कार ॥ १३ ॥

यतिसंघमहोद्यान सुखसंचारकारिणे।
नरेन्द्रनाथदत्ताय विवेकानन्दस्वामिने।
त्वत्तो न हि परः कोऽपि विवेकानन्द ते नमः॥ १४॥
नमस्ते पूर्ण प्रज्ञाय दिव्यत्याग महात्मने।
नरेन्द्रनाथदत्ताय विवेकानन्द स्वामिने॥ १५॥

इतिस्वामिगुणातीतानन्दविरचितं "श्रीविवेकानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम्।

श्रीविवेकानन्दवन्दना

(श्रीविवेकानन्द-सप्तमी) डॉ० रमाचतुर्धुरिणा विरचिता
(सप्तर्षि-मण्डलस्य श्रेष्ठर्षि-विवेकानन्दस्य श्रीपादपद्मेषु सप्तश्लोकसमन्वितः
सामान्यातिसामान्यः पूजार्घ्यः)

नमामि वन्द्यं विवेकानन्दं धराहृदयारविन्दम्।
विश्वचन्दनं निःस्वनन्दनं ओंकारनादविन्दम्॥ १॥

हे विवेकानन्द ! सन्यासियों के संघरूपी सुविस्तृत उद्यान में आन्दपूर्वक विचरण करने वाले, पूर्वाश्रम में नरेन्द्रनाथदत्त नाम धारण करने वाले विवेकानन्द स्वामी ! तुम्हारी अपेक्षा श्रेष्ठ और कोई नहीं है। तुमको नमस्कार, तुमको नमस्कार॥ १४॥

पूर्ण प्रज्ञा संपन्न, दिव्यत्यागी ! महात्मा नरेन्द्रनाथदत्त जिनका नाम था वे ही विवेकानन्द स्वामी हैं। हे स्वामीजी ! तुमको नमस्कार, तुमको नमस्कार॥ १५॥

स्वामी गुणातीतानन्द द्वारा विरचित यह "श्रीविवेकानन्दस्तोत्रम्" समाप्त हुआ।

(सप्तर्षिमंडल के श्रेष्ठ ऋषि श्री विवेकानन्द के श्रीचरणकमलों में सप्तश्लोक समन्वित सामान्य से भी सामान्य पूजार्घ्यं)

जो समग्र धराधाम के पूर्ण विकसित शतदल हैं; जो समग्र विश्वब्रह्माण्ड के सुशीतल चन्दन हैं; जो सभी निःस्वजनों के अनिन्द्य आनन्द हैं; जो परम पवित्र प्रणव मंत्र के सार के भी सार हैं—उन्हीं चिरवन्दनीय, नित्य वन्दनीय, युगाचार्य श्रीमत्स्वामी विवेकानन्द को प्रणाम॥ १॥

नवधर्मधुरं भवमर्मचरं मथित मनोमकरन्दम् ।
प्रेमपथकरं क्षेमशतधरं रणित ब्रह्मानन्दम् ॥ २ ॥
स्थिरशान्तितरं चिरभ्रान्तिहरं मर्दितद्वेषद्वन्द्वम् ।
रोचनऋषिवरं मोचनतत्परं कर्तितभवभयबन्धम् ॥ ३ ॥
शोकभंजनं लोकरंजनं परदोषदर्शनानन्दम् ।
गुणिगण-गंजनं मुनिजनखंजनं पूतपारिजातगन्धम् ॥ ४ ॥
न्यायवरदण्डं ध्येयपरचण्डं हसनोत्प्रफुल्लगण्डम् ।

जो नवीन धर्म को निर्भय होकर धारण करने वाले हैं; जो समग्र भुवन मंडल के मर्मों को निर्बाध रूप से जानने वाले हैं, जो समग्र विश्वमानवों के निर्मल मनोमधु हैं, जो प्रेमपथ के नित्य निर्देशक हैं, जो सैकड़ों हजारों मंगलों की निरन्तर वर्षा करने वाले हैं और जो वरेण्य ब्रह्मानन्द की चारो तरफ प्रचार करने वाले हैं–उन्हीं चिरवन्दनीय, नित्यवन्दनीय युगाचार्य श्रीमत्स्वामी विवेकानन्द को प्रणाम ॥ २ ॥

जो स्थिरशान्ति के अमृत-पथस्वरूप हैं, जो समग्र भुवनमंडल के शाश्वत भ्रान्तिहारक हैं, जो सभी हिंसाद्वेष को परिपूर्णरूप से ध्वंस करने वाले हैं; जो परम रमणीय ऋषिप्रवर हैं; जो सभी की मुक्ति के लिए विशेष रूप से तत्पर हैं और जो अनन्त असीम ब्रह्मानन्द को दिशाओं-दिशाओं में ध्वनित करने वाले हैं—उन्हीं चिरवन्दनीय, नित्यवन्दनीय युगाचार्य श्रीमत्स्वामी विवेकानन्द को प्रणाम ॥ ३ ॥

जो अनादि दु:ख-शोक के निर्मल ध्वंसकर्ता हैं; जो सब लोगों को नि:सीम आनन्द देने वाले हैं, जो सर्वदा दूसरों के दोष देखने में अन्धों के समान अक्षम हैं, जो समस्त गुणी लोगों का गौरवपूर्वक पराजय करने वाले हैं, जो मुनियों को भी मधुर लगने वाले गीत गाने वाले हैं और जो पवित्र पारिजात पुष्प के सुमधुर सौरभ हैं—उन्हीं चिरवन्दनीय, नित्यवन्दनीय युगाचार्य श्रीमत्स्वामी विवेकानन्द को प्रणाम ॥ ४ ॥

जो न्याय के श्रेष्ठ दंडस्वरूप हैं; जो अन्याय-अविचार के विरुद्ध वन्दनीय

धृतब्रह्माण्डं हृतमार्तण्डं सप्तर्षिमंडलमंडम् ॥ ५ ॥
शारदानयनं वरदातनयं नरनारायणचन्द्रम् ।
कल्मषकन्टं रामकृष्णकन्ठं वेदवाणीमधुमन्द्रम् ॥ ६ ॥
जीवशिवदासं क्लीवजननाशं नवयुगप्राणस्पन्दम् ।
नमामि वन्द्यं विवेकानन्दं आलोकामृतस्कन्दम् ॥ ७ ॥
॥ ॐ शान्तिः ॥

इति डॉक्टररमाचतुर्धुरिण्याविरचिता "श्रीविवेकानन्दवन्दना" (श्रीविवेकानन्द सप्तमी) समाप्ता ।



प्रचण्ड क्रोध हैं; जो हास्योत्फुल्ल सुन्दर गण्ड धारण करने वाले हैं; जो समग्र ब्रह्माण्ड को धारण करने वाले हैं और जो प्रखर तेज में सूर्य को भी जीतने वाले हैं, सप्तर्षि मंडल के श्रेष्ठ ऋषि हैं—उन्हीं चिरवन्दनीय, नित्यवन्दनीय श्रीमत्स्वामी विवेकानन्द को प्रणाम ॥ ५ ॥

जो श्रीशारदामणि के नयनमणि हैं; जो श्री दुर्गादेवी के परम आदर के पुत्र हैं, जो नरनारायण के अर्थात् नररूपी नारायण दीन–दरिद्रजनों के पाप-तापका निवारण करने वाले सुशीतल चन्द्रमा हैं; जो समस्त कलंक की कालिमा को काटने के लिए सुतीक्ष्ण कंटक हैं; जो अपने परम गुरु श्री श्रीरामकृष्ण के प्रतिध्वनिरूपी सुललित कंठस्वर वाले हैं और जो महामहनीय वेदवाणी के सुगम्भीर निनाद हैं—उन्हीं चिरवन्दनीय, नित्यवन्दनीय युगाचार्य श्रीमत्स्वामी विवेकानन्द को प्रणाम ॥ ६ ॥

जो शिवरूपी जीव के नित्य सेवक हैं; जो दुर्बल आत्मशक्ति में विश्वास करने वाले लोगों का कड़ाई से दमन करने वाले हैं; जो नवयुग के चिरन्तन प्राण स्पंदन हैं, जो अनिर्वाण आलोक एवं अमेय अमृत के मूर्त प्रतीक हैं–उन्हीं चिरवन्दनीय, नित्यवन्दनीय युगाचार्य विवेकानन्द को प्रणाम–शत सहस्र लक्ष कोटि प्रणाम, प्रणाम ॥ ७ ॥

॥ ॐ शान्तिः ॥

डॉक्टर रमा चौधुरी द्वारा विरचित यह ''श्रीविवेकानन्दवन्दना'' (श्रीविवेकानन्द-सप्तमी) समाप्त हुई ।



श्रीविवेकानन्दप्रभातप्रांजलिः

स्वामिहर्षानन्देनविरचितम्

समाधिस्थः शिवः स्वलोके निर्भरं
जनानां क्रन्दनाद् भवाग्नौ भीषणे ।
प्रदग्धानां प्रबोधितस्त्वं ह्यागतः
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ १ ॥

नरेन्द्रः शैशवे नरेन्द्रो यौवने
नरेन्द्रः क्रीड़ने नरेन्द्रः शिक्षणे ।
नरेन्द्रः पालने नरेन्द्राह्यर्पणे
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ २ ॥

हरीन्द्रश्चेष्टितैः कलाज्ञो गायनैः
परिज्ञानैर्बुधो महर्षिर्दर्शनैः ।

हे विवेकानन्द ! तुम स्वयं वीरेश्वर महादेव हो । निदारुण संसार रूपी दावानल में जलते हुए जीवों के कातर क्रन्दन से अपने स्वधाम में गम्भीर समाधि से व्युत्थित होकर तुम जीवों की संसार रूपी दावानल से रक्षा करने के लिए पृथ्वी पर अवतीर्ण हुये हो । इस उषाकाल में इसीलिए हम लोग तुम्हें प्रणाम करते हैं ॥ १ ॥

हे विवेकानन्द ! तुम नरों में इन्द्र के समान श्रेष्ठ हो । शैशवावस्था में, युवावस्था में, खेलकूद में, लिखने-पढ़ने में, दूसरे की रक्षा करने में एवं दूसरे की रक्षा करने के लिये अपने को उत्सर्ग करने में, सर्वत्र तुम अनुपम हो । इसीलिए इस शुभ उषाकाल में हम लोग तुम्हें प्रणाम करते हैं ।। २ ॥

हे विवेकानन्द ! कर्मदक्षता में तुम महावीर के समान हो एवं संगीत में कुशल कलाकार हो । ज्ञान की गम्भीरता में तुम असाधारण पंडित हो एवं प्रज्ञा-दृष्टि में महर्षि के समान हो । अनासक्ति में तुम त्यागियों में श्रेष्ठ हो । तुम

यतीन्द्रोऽसक्तिभिर्भवान् यन्नास्ति किं
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ ३ ॥

मुमुक्षादर्शिताऽभिहंसं धावनैः
विनैकां पादुकां नितान्तोन्मत्तवत् ।
समानां देहि मे मुमुक्षां मद्गुरो
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ ४ ॥

गुरोरंघ्र्यत्पले स्वमात्मानः ददौ
परीक्ष्यानन्तरं बहुप्रश्नैर्भृशम् ।
विशुद्धैः सेवनैर्भवांस्त्वं पिप्रिये
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ ५ ॥

सुगन्धः श्री गुरुर्भवान्वायुः खलु
स तूर्यं त्वं च भो महोच्चैर्घोषकः ।

क्या नहीं हो ? अर्थात् सब कुछ हो । इसीलिये इस शुभ उषा काल में हम लोग तुम्हें प्रणाम करते हैं ॥ ३ ॥

हे विवेकानन्द ! उन्मत्त के समान मात्र एक पादुका पैर में पहनकर परमहंस देव के निकट जाकर तुमने संसार को दिखाया कि मुक्ति के लिए व्याकुलता कितनी तीव्र होती है । हे मेरे गुरुदेव ! तुम मेरे अन्दर भी इस प्रकार से मुक्ति की इच्छा जागृत करो । इसीलिए इस शुभ उषाकाल में हम लोग तुम्हें प्रणाम करते हैं ॥ ४ ॥

हे विवेकानन्द ! तत्वजिज्ञासा के द्वारा गुरु श्रीरामकृष्ण की बहुत तरह से परीक्षा लेकर तब उनके चरण कमलों में तुमने अपने को समर्पित किया एवं अपनी निःस्वार्थ पवित्र सेवा के द्वारा उनकी प्रीति अर्जन किया । इसीलिए इस शुभ उषा काल में हम लोग तुम्हें प्रणाम करते हैं ॥ ५ ॥

हे विवेकानन्द ! यदि तुम्हारे गुरुदेव (श्रीरामकृष्ण) सुगन्ध हैं, तो तुम उस गन्ध को बहन करने वाली वायु हो । यदि वे सिंगावाद्य हैं, तो तुम उस

गुरुस्सूर्यस्तु हे किलादर्शो भवान्
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ ६ ॥

स्वधर्मश्रेष्ठतां सगर्वं शंसतां
जनानां धृष्टता त्वयैवाभाज्यहो ।

स्वधर्मो वैदिको ह्यनर्घो दर्शितः
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ ७ ॥

स्फुलिंगान् स्फोटयन् सुदीप्ताग्निर्यथा
तथैव त्वं यते विकीर्यामानुषीम् ।

परिज्ञानप्रभामचारीर्भारते
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ ८ ॥

अहो आकर्षणं तवास्यास्यातुलं
तवाहो पौरुषं विरागो मुग्धता ।

सिंगा के वज्रनिनादकारी हो । यदि वे सूर्य हैं तो तुम उनके प्रतिफलनकारी दर्पण हो । इसीलिए इस शुम उषा काल में तुमको हम सभी प्रणाम करते हैं ॥ ६ ॥

हे विवेकानन्द ! तुमने निमेष मात्र में उन सबको धूल धूसरित कर दिया जो अपने-अपने धर्म को ही श्रेष्ठ कहने वाले धर्मध्वजी थे । तुमने ही विश्व-वासियों को वैदिक धर्म का महात्मा दिखाया था । इसीलिये इस शुभ उषाकाल में हम सभी तुमको प्रणाम करते हैं ॥ ७ ॥

हे सन्यासी प्रवर विवेकानन्द ! समग्र भारतवर्ष में तुमने अपनी दिव्य ज्ञान की प्रभा से उद्भासित होकर दीप्त वह्नि ज्योति के समान परिभ्रमण किया था । इसीलिये इस शुभ उषा काल में हम सभी तुम्हें प्रणाम करते हैं ॥ ८ ॥

हे विवेकानन्द ! तुम्हारे अतुलनीय मुखमंडल का दिव्य आकर्षण, तुम्हारा पौरुष, त्याग, शिशु सुलभ सरलता, स्नेह एवं सहानुभूति—सभी हमारे हृदय

प्रगाढ़ं प्रेम च ह्यगाधं वेदनं
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ ९ ॥

विमोक्षं स्वात्मनश्चतुर्योगाध्वभिः
पृथग्वा संहतैर्हितं लोकस्य च ।
तवाज्ञा साधयेदिति प्रीत्या नरः
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ १० ॥

यतेऽनुरूस्तव प्रणामं दास्यति
प्रफु लं षट्पदैः प्रसूनं प्रावृतम् ।
तवार्थं कोकिलो मनोज्ञं कूजति
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलिः ॥ ११ ॥

को उद्वेलित करने वाले हैं। इसीलिये इस शुभ उषा काल में तुम्हें हम लोग प्रणाम करते हैं ॥ ९ ॥

हे विवेकानन्द ! यह तुम्हारा ही निर्देश है कि प्रत्येक व्यक्ति जिन चार योगों की सहायता से (एक या समन्वित भाव से) जो अपनी मुक्ति की चेष्टा करता है उतना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु उसके साथ-साथ प्रेमपूर्वक संसार के कल्याण के लिए भी हरेक को नियोजित होना चाहिए। "आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च"। इसीलिये इस शुभ उषा काल में हम लोग भी तुम्हें प्रणाम करते हैं ॥ १० ॥

हे यति विवेकानन्द ! उषा के अधिपति अरुण तुम्हें प्रणाम कर रहे हैं। प्रस्फुटित फूल के ऊपर गुंजार करके भ्रमर तुम्हारी वन्दना कर रहा है। कोयल के कूजने में तुम्हारी ही स्तव गाथा उच्चारित हो रही है। इसीलिये इस शुभ उषा काल में हम सब भी तुम्हें प्रणाम करते हैं ॥ ११ ॥

उषः काले पदे नमस्कृत्याशिषा
लभेरन् धन्यतामिति श्रद्धालवः।
समेता सम्मुखे ददेथा दर्शनं
विवेकानन्द ते प्रभाते प्रांजलि ॥ १२ ॥
हिमाद्रेराश्रमे जयन्त्यां निर्मितः
भुजंगस्त्रग्विणीति वृते नूतने।
स्तवोऽयं यः पठेत् सभक्त्या तं नरः
स शक्ति पौरुषं विरागं चार्जति ॥ १३ ॥

स्वामिहर्षानन्दविरचित "श्रीविवेकानन्दप्रभातप्रांजलिः" समाप्तः।



हे विवेकानन्द ! श्रद्धालु भक्तगण इस उषाकाल में आपके श्री चरणों में प्रणाम करने एवं आपका आशीर्वाद प्राप्त कर कृतकृत्य होने के लिये यहां समवेत हुये हैं। तुम कृपा कर उन लोगों को दर्शन दो। इसीलिए इस शुभ उषा काल में हम लोग तुम्हें प्रणाम करते हैं ॥ १२ ॥

यह स्तोत्र 'भुजंगस्त्रग्विणी' नामके एक छन्द में हिमालय के एक निभृत आश्रम में पवित्र श्री कृष्णजन्माष्टमी के दिन रचित हुआ। जो लोग भक्ति युक्त होकर एकाग्र चित्त से इस स्तव का पाठ करेंगे, उनको शान्ति, पौरुष एवं वैराग्य प्राप्त होगा ॥ १३ ॥

स्वामी हर्षानन्द रचित "श्रीविवेकानन्दप्रभातप्रांजलिः" सम्पूर्ण हुई।



सपार्षदश्रीरामकृष्णप्रणामः*

स्वामिबलरामानन्दविरचितः

नारायणं परं नित्यमजोऽपि चाव्ययोऽपि सन्।
आविर्भूतं जगत् त्रातुं रामकृष्णं नमाम्यहम् ॥ १ ॥
अजाऽपि या न छिन्नापि भिन्नरूपेण रूपिताम्।
जननीं सर्वभूतानां शारदां प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥
लीलासहचरं श्रेष्ठं धर्मचक्रप्रवर्तकम्।
वन्दे तं संघनेतारं विवेकानंद-स्वामिनम् ॥ ३ ॥
संघस्य प्रथमाध्यक्षं गोपालं व्रजवासिनम्।
राखालं मानसं पुत्रं ब्रह्मानन्दं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥
रामकृष्णपदं शान्तं शिवमद्वैतमव्ययम्।
ददर्श सततं यं तं शिवानन्दं नमाम्यहम् ॥ ५ ॥

जो स्वयं नारायण पर और नित्य हैं, जो अज और अव्यय होकर भी जगत् के उद्धार के लिये अवतीर्ण हुये हैं, उन्हीं श्रीरामकृष्णदेव को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

जो अजा हैं एव ब्रह्म शक्तिरूप में अभिन्ना होकर भी भिन्न रूप में प्रतीयमान हुई हैं, सब प्राणियों की माँ हैं, उन्हीं श्री शारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ २ ॥

श्रीरामकृष्णदेव के लीलासहचरों में श्रेष्ठ धर्मचक्र के प्रवर्तक और रामकृष्ण-संघ के अधिनायक स्वामी विवेकानन्दजी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

रामकृष्ण-संघ के प्रथम अध्यक्ष, कृष्णावतार में व्रज में गोपाल रूप से लीला करने वाले श्रीरामकृष्णदेव के मानस पुत्र राखालराज स्वामी ब्रह्मानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

शान्त, शिव, अद्वैत एवं अव्यय श्रीरामकृष्ण के चरणों का मानसपटल पर सर्वदा दर्शन करने वाले स्वामी शिवानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

---

* रचयिता के द्वारा अनूदित्—प्रकाशक ।

नमामि शारदानन्दं 'लीलाप्रसंग'—लेखकम् ।
त त्वतः वर्णितः यस्मिन् रामकृष्णस्य जीवनम् ॥ ६ ॥
रामकृष्णगतप्राणं रामकृष्णस्य पूजकम् ।
लीलाप्रवर्धकं रामकृष्णानन्दं नमाम्यहम् ॥ ७ ॥
लीलासहचरं शुद्धं शारदापदसेवकम् ।
नित्यमुक्तं सदाशान्तं योगानन्दं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥
मातृवत्सर्वभूतेषु प्रेमवात्सल्यविग्रहम् ।
अहेतुकं प्रशान्तं च प्रेमानन्दं नमाम्यहम् ॥ ९ ॥
निरञ्जनं सदा मुक्तं पवित्रं मातृसेवकम् ।
वन्दे निरञ्जनानन्दं रामकृष्णपदाश्रितम् ॥ १० ॥
अनाथेषु तथार्त्तेषु सर्वदा शिवपूजकम् ।
नमामि निर्मलं सुज्ञमखण्डानन्द-स्वामिनम् ॥ ११ ॥

जिसमें श्रीरामकृष्णदेव के जीवन वृत्तान्त की तत्वपूर्ण व्याख्या वर्णित हुई है, उस लीला प्रसंग के रचयिता स्वामी शारदानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

श्रीरामकृष्ण-गत-प्राण एवं श्रीरामकृष्ण के आदर्श पूजक, लीला प्रवर्धक स्वामी रामकृष्णानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

शुद्ध चरित्र, सर्वदा शान्त एवं नित्य मुक्त, श्रीरामकृष्णदेव के लीला सहचर और श्रीशारदादेवी के सेवक स्वामी योगानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

सब जीवों को मातृवत् स्नेह प्रदान करने वाले, प्रेम और वात्सल्य के मूर्त विग्रह, निष्काम, प्रशान्तचित्त स्वामी प्रेमानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

सर्वदा मुक्त, पवित्र एवं निरंजन, शारदादेवी के अनुरक्त सेवक, श्रीरामकृष्ण-पदाश्रित उन्हीं स्वामी निरंजनानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १० ॥

अनाथ एवं आर्त्त जीवों की सर्वदा शिवज्ञान से पूजा करने वाले उन्हीं ब्रह्मज्ञ और निर्मलचित्त स्वामी अखण्डानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ११ ॥

उद्बोधनादिरूपेण कृत्वा जीवप्रबोधनम् ।
वन्दे तं त्रिगुणातीतं येन प्राणार्पणं कृतम् ॥ १२ ॥
वेदान्तशास्त्रमर्मज्ञं योगिनं च मनीषिणम् ।
रामकृष्णानतं वन्दे तुरीयानन्द–स्वामिनम् ॥ १३ ॥
व्याख्यानकुशलं वन्दे सर्ववेदान्तबोधकम् ।
कालीतपस्विनं पूज्यमभेदानन्दस्वामिनम् ॥ १४ ॥
भक्तः सुकर्मयोगी च बालभावसमायुतम् ।
तं भक्तवत्सलं वन्दे सुबोधानन्द–स्वामिनम् ॥ १५ ॥
अज्ञं निरक्षरं चापि ह्यक्षरं येन दर्शितम् ।
वन्दे तमद्भुतानन्दं सरलं शुद्धमानसम् ॥ १६ ॥
नमामि वृद्धगोपालं शारदाप्रियसेवकम् ।
अद्वैतानन्दरूपेण भक्तवृन्दैः सुपूजितम् ॥ १७ ॥

उद्बोधन पत्रिका के माध्यम से प्राणियों के ज्ञान को उन्मेषित करने वाले, श्रीरामकृष्ण की वाणी का विदेश में प्रचार करने के लिए अपना प्राण तक उत्सर्ग करने वाले उन्हीं स्वामी त्रिगुणातीतानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १२ ॥

वेदान्त शास्त्र के मर्मज्ञ, योगी एवं ध्यानपरायण और श्रीरामकृष्ण देव के चरणों में नतसिर उन्हीं स्वामी तुरीयानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १३ ॥

व्याख्यान देने में कुशल एवं वेदान्त के विख्यात प्रचारक काली तपस्वी नाम से परिचित उन्हीं स्वामी अभेदानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १४ ॥

भक्त. उत्तम कर्मयोगी एवं बालक-स्वभाव वाले, भक्तवत्सल उन्हीं स्वामी सुबोधानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १५ ॥

अज्ञ एवं निरक्षर होकर भी अक्षर परब्रह्म का साक्षात्कार करने वाले, शुद्ध मन से युक्त एवं सरल स्वभाव विशिष्ट उन्हीं स्वामी अद्भुतानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १६ ॥

वृद्ध गोपाल नाम से सुप्रसिद्ध एवं शारदा देवी के अनुगत सेवक, अद्वैतानन्द रूप में भक्तगणों द्वारा पूजित उन्हीं सन्यासी प्रवर को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १७ ॥

निर्मितं सुन्दरं येन रामकृष्णस्य मन्दिरम् ।
कर्मवीरमहं वन्दे विज्ञानानन्द-स्वामिनम् ॥ १८ ॥

रामकृष्णांशकान् सर्वान् भिन्नरूपैश्च रूपितान् ।
लीलासहचरान् वन्दे नाना भाव-प्रदर्शकान् ॥ १९ ॥

लीलासहचरान् सर्वान् युगधर्मस्य स्थापकान् ।
शारदा-रामकृष्णौ च भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ २० ॥

स्वामिबलरामानन्दविरचितः "सपार्षदश्रीरामकृष्णप्रणामः" समाप्तः ।



श्रीब्रह्मानन्दस्तोत्रम्

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम्

व्रजेन्द्रनन्दाङ्गनभासकारिणः सखेति वित्तं प्रभुपादभावितैः ।
व्रजस्य राखालमनन्तसौभगं, नमामि शान्तं शिशुभाव सुन्दरम् ॥ १ ॥

श्रीरामकृष्ण देव का सुन्दर मन्दिर निर्माण करने वाले, कर्मवीर उन्हीं स्वामी विज्ञानानन्द जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १८ ॥

श्रीरामकृष्ण देव के अंशस्वरूप एवं भिन्न-भिन्न रूपों में रूपायित, नाना भाव प्रदर्शक अन्यान्य लीला सहचर गणों को भी मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १९ ॥

युग धर्म के प्रचारक उन सभी लीला सहचरों को, श्रीशारदादेवी एवं श्रीरामकृष्ण देव को मैं बारम्बार भक्तिपूर्ण प्रणाम निवेदन करता हूँ ॥ २० ॥

स्वामी बलरामानन्द द्वारा विरचित "सपार्षदश्रीरामकृष्णप्रणामः" समाप्त हुआ ।



प्रभुपाद श्रीरामकृष्ण देव ने जिन्हें व्रजधाम के राजा नन्द के प्रांगण को उज्ज्वल करने वाले श्रीकृष्ण का सखा बतलाया था, अनन्त सौभाग्यवान, सुन्दर शिशुभावापन्न, शान्त, उन्हीं व्रज के गोप, स्वामी ब्रह्मानन्द को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

मुहुर्मुहुः श्रीहरिनामविह्वलं सुनिर्मलं योगसुधाब्धि मज्जनात् ।
दयाघनं नाथमनाथपावनं नमामि दान्तं यतिवृन्दशेखरम् ॥ २ ॥
न रामकृष्णस्य शरीरसम्भवः स मानसाज्जात इतीह कीर्तितः ।
यथैव तातः सुरसंघपूजितस्तथैव पुत्रो नरपाल सेवितः ॥ ३ ॥
अनन्तभावालयदिव्यसागरं बहिः सुशान्तापिहितात्मभावम् ।
गताखिलाध्यात्म्य सुराज्यसम्पदं भजामि देवाद्य मनोजनन्दनम् ॥ ४ ॥
प्रफुल्लपंकेरुहमध्यचारिणा बलानुजेनांग समूहगामिना ।
करैर्धृत नृत्यसुगीतरस्यकं नमो महाराजमतीन्द्रियप्रियम् ॥ ५ ॥

वारम्बार श्रीहरि के नाम में विह्वल एवं योगामृत-सिंधु में मग्न रहने के कारण जो अति निर्मल स्वभाव वाले थे, उन्हीं परम दयालु, अनाथों के रक्षक, प्रभु, जितेन्द्रिय, संन्यासी मण्डली के शिरोमणि स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज को मैं भक्ति पूर्वक प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

वे श्रीरामकृष्ण के शरीर से उत्पन्न पुत्र नहीं थे, वरन् उनके मन से सृष्ट मानसपुत्र रूप में संसार में प्रसिद्ध हुये हैं। अतएव जिस प्रकार पिता श्रीरामकृष्ण देव देवतागणों के द्वारा पूजित थे, उसी प्रकार मानसपुत्र राखाल महाराज भी राजा–महाराजाओं के पूजनीय थे। इस प्रकार के स्वामी ब्रह्मानन्द जी को हम लोग भक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं ॥ ३ ॥

जो अनन्त भावों के आलय एवं दिव्य भाव के समुद्र स्वरूप थे, बाहर से अति शान्त एवं अपने अन्दर समस्त आध्यात्मिक भावों को गुप्त रखते थे, जो समस्त आध्यात्मिक सम्पदा के अधिकारी देवताओं के भी आदि भूत श्रीरामकृष्ण के मानसपुत्र थे, उन्हीं स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज का मैं भजन करता हूँ ॥ ४ ॥

वलदेव के छोटे भाई श्रीकृष्ण का हाथ पकड़कर खिले हुये कमल के ऊपर सुन्दर नृत्य कर गीत गाने वाले, सांगोंपांगों के बीच में अवस्थित, अतीन्द्रिय तत्त्वप्रिय श्रीरामकृष्ण के मानसपुत्र राखाल महाराज को हम लोग प्रणाम करते हैं ॥ ५ ॥

न साधनेनेह गतोऽसि भाविनीं वदन्ति सिद्धिं त्वमसौ गदाधराः ।
य तो भवादृक् कृतनित्यसिद्धिगो वशी क्षमा मंगलकृत्यविग्रहः ॥ ६ ॥

मनुष्यदेहं भजतापि दैवताद् वरीयसा शुद्ध विरागिणा त्वया ।
प्रभोर्नियोगेन सलीलमातनि क्रियातपोज्ञानसमाधिसाधनम् ॥ ७ ॥

गृहाण देव ! प्रणयेन संचितान्योग्यभाजामपि जीवनानि नः ।
अथापि धेयानि मनांसि पादयोस्तवातिशुद्धत्रिदिवेनवन्द्ययोः ॥ ८ ॥

योऽध्यात्म्यसाम्राज्यबलेन लोकान् सम्भूय सर्वान् भगवद्विभावैः ।
आनन्दयत् काममजस्रमिष्टां स्तं देशिकेन्द्रं प्रणमामि भक्त्या ॥ ९ ॥

इस संसार में आपने साधन के द्वारा मंगलमय सिद्धि प्राप्त की, ऐसा नहीं है। क्योंकि आपके समान जितेन्द्रिय महापुरुष नित्य सिद्ध ही थे। पृथ्वी पर कल्याण करने के लिए ही आप लोगों ने शरीर धारण किया। अपनी साधना और जीवनादर्श के द्वारा आपने विश्व के आपामर सभी को आकृष्ट किया, यह बात गदाधर श्रीरामकृष्णदेव स्वयं कहते थे। अतएव आप हम लोगों के लिये गम्भीर श्रद्धा के पात्र हैं ॥ ६ ॥

मनुष्य शरीर धारण करके भी देवता से भी श्रेष्ठ, विशुद्ध वैराग्यवान् आपने प्रभु श्रीरामकृष्ण की आज्ञा से उनके लीला सहचर रूप में कर्म, तपस्या, ज्ञान, समाधि आदि साधनों का संसार में विस्तार किया है (इस प्रकार के आपको बारम्बार प्रणाम करता हूँ) ॥ ७ ॥

हे देव ! अयोग्य होने पर भी हम लोगों के चिर आकांक्षित विषयासक्त जीवन का भार आप कृपा करके ग्रहण कीजिए एवं देववन्दित अपने दोनों चरणों में हम लोगों का यह मलिन मन सर्वतोभाव से लीन कर लीजिए ॥ ८ ॥

जो अपनी आध्यात्मिक शक्ति के प्रभाव से समस्त शरणागतों को भगवद्भाव से अनुप्राणित कर उन्हें दिव्य आनन्द का अधिकारी बनाते थे, उन्हीं श्रेष्ठ उपदेष्टा स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज को मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

वैराग्यज्योतिरिद्धं गुरुगतहृदयं लोकचारिप्रविज्ञं
संघाध्यक्षं विशालं क्षितिपतिसदृशं दिव्यदृष्टिं कृशानुम्।
रामश्रीनामकीर्तिप्रंचरणमनसा दक्षिणस्यां दिशन्तत्,
प्राच्यां भूमौ नमामः सततहितपरं नीतिवन्तं यमीन्द्रं ॥ १० ॥

लोके ख्यातित्वतुल्यां वहुमितविभवं रूपशीलादियुक्तां,
पातिव्रत्येस्थितां स्त्रीं सजनकजननीं स्वास्थ्यतारुण्यमाप्तं।
सन्त्यज्यस्वामशेषामहिविषयसदृशीं तूर्णमायन् विवेकम्,
वैराग्येणैकमीशं शरणमवगतो रामकृष्णं गुरुं त्वम् ॥ ११ ॥

ब्रह्मानन्द्रं वरेण्यं यतिवरमनिशं भावसिन्धौ निमग्नं,
संसारार्त्तान् मनुष्यान् सहजकरुणया चेतयन्तं महान्तम्।

वैराग्य की ज्योति से समुज्ज्वल, गुरुगतचित्त, लोक चरित्र से अभिज्ञ, श्रीरामकृष्ण-संघ के अध्यक्ष, पृथ्वीपति के समान विशाल दिव्य-दृष्टि-सम्पन्न, अग्नि के समान प्रदीप्त, दक्षिण देश से लाकर प्राच्य भूमि बंगदेश में श्रीरामनाम-माहात्म्य एवं श्रीरामनाम का प्रचार करने वाले, सर्वदा जनहित-परायण, संयमी-श्रेष्ठ उन्हीं ब्रह्मानन्द स्वामी को हम लोग प्रणाम करते हैं ॥ १० ॥

इस संसार में अतुलनीय यश, प्रचुर सम्पदा, रूप शील आदि से युक्ता पतिव्रता स्त्री, पिता और माँ सहित स्वास्थ्य और यौवन प्राप्त कर वैराग्य के वशीभूत साँप के विष के समान समस्त वासनाओं का सम्यक् रूप से परित्याग कर अपने एकमात्र गुरु ईश्वर रामकृष्ण की शरण में आये (इस प्रकार के दिव्य चरित्रवान् स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज के प्रति गम्भीर श्रद्धा ज्ञापित करता हूँ) ॥ ११ ॥

वरणीय, संन्यासी श्रेष्ठ, संसार सागर में निमग्न एवं सांसारिक दुःखों से आर्त्त प्राणियों में सहज करुणापूर्वक सर्वदा चेतना का संचार करने वाले, महापुरुष, शुद्ध, अत्यंत शान्त, ज्ञानके प्रकाश में पूर्ण, चिदानन्द आत्मा के स्व-रूपज्ञ,

शुद्धं शान्तं प्रकाशं विदितचितिसुखं रामकृष्णान्तरंगं,
ध्यायेद् दिव्याकृतिं भोः कलिकलुषहरं चिद्घनं मूर्तिमन्तम् ॥ १२ ॥

इति ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितं "श्रीब्रह्मानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम् ।

प्रणाममंत्रः—रामकृष्णस्त्वभूत् येन पुत्रवान् भौममण्डले ।
ब्रह्मानन्दं नमामि त्वां राखालदलनायकम् ॥



श्रीमत्शिवानन्दस्तोत्रम्

अध्यापकपण्डितश्रीकुमुदरंजनगोस्वामीतर्कवेदान्ततीर्थविरचितम्

लीलासहचरं नित्यमीश्वरस्य युगे युगे ।
शिवकल्पं शिवानन्दं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ १ ॥
निर्विकल्प-समाधीप्सा बाल्यादेवाश्रयच्च तम् ।
त्यागमूर्तिं तितिक्षुं यं प्राप्य सिद्धिमिताऽचिरम् ॥ २ ॥

श्रीरामकृष्ण देव के अन्तरंग भक्त, दिव्य शरीरधारी, कलि के पापनाशक, मूर्तिमान चैतन्यघन, ब्रह्मानन्द स्वामी का ध्यान करना चाहिए ॥ १२ ॥

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य द्वारा विरचित "श्रीब्रह्मानन्दस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



युग-युग में भगवान् के लीला-सहचर, वर्तमान् युग में भी भगवान् श्रीरामकृष्णदेव के नित्य-लीला-सहचर रूप में अवतीर्ण, शिवतुल्य उन्हीं शिवानन्द महाराज को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ । १ ॥

निर्विकल्प समाधि लाभ की इच्छा जिनके अन्तःकरण में बाल्यकाल से ही प्रबल भाव में जाग्रत थी एवं उस साधना में जिन्होंने शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त की—उन्हीं त्याग मूर्ति और तितिक्षा परायण (शिवकल्प स्वामी शिवानन्द महाराज को मैं प्रणाम करता हूँ) ॥ २ ॥

अलौकिकान् गुणान् दृष्ट्वा विवेकानन्दरूपिणा ।
'महापुरुष' इत्याख्या यस्मै दत्ता निजेच्छया ॥ ३ ॥

भारतीयानि तीर्थानि परिक्रम्य स्वलीलया ।
सर्वत्रैवेश्वरं रूपं दृष्टवन्तं नमामि तम् ॥ ४ ॥

बहिर्यद् दृश्यते किंच सर्वं तदीश्वरात्मकम् ।
ईशातिरिक्तं नास्तीति मुक्तकन्ठं व्यघोषयत् ॥ ५ ॥

श्रीरामकृष्णदेवं श्रीशारदां जननीं तथा ।
विवेकानन्दमूर्तिं योऽपश्यद् हृदि निरन्तरम् ॥ ६ ॥

मुमुक्षूणामसंख्यानामाध्यात्मिकजलं ददत् ।
न्यपूरयन्मनस्तृष्णां शिवानन्दं नमामि तम् ॥ ७ ॥

जिनकी अलौकिक गुणावली देखकर स्वामी विवेकानन्द महाराज ने स्वेच्छा से जिन्हें 'महापुरुष' नाम दिया था, मैं उन्हीं स्वामी शिवानन्द महाराज को प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

जो परिव्राजक के रूप में निःसम्बल अवस्था में भारत के सभी तीर्थों का परिभ्रमण करके सर्वत्र अपने इष्टदेवता का दर्शन करते थे, मैं उन्हीं स्वामी शिवानन्द महाराज को प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥

जिन्होंने उदात्त कन्ठ से घोषणा की कि इस जगत् में दृश्यमान् समस्त वस्तुएं ही ईश्वरात्मक हैं एवं ईश्वर को छोड़ कर इस जगत् में कुछ नहीं है, उन्हीं स्वामी शिवानन्द महाराज को मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥

जो सर्वदा अपने हृदय में श्रीरामकृष्णदेव, श्री शारदादेवी एवं स्वामी विवेकानन्द का मूर्तिमान रूप में दर्शन करते थे, उन्हीं स्वामी शिवानन्द महाराज को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ६ ॥

तृष्णार्त्त व्यक्ति को जल दान करने के समान जो अपने आश्रित अगणित मुमुक्षुओं को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान कर तृप्त करते थे, उन्हीं स्वामी शिवानन्द महाराज को मैं भक्तिसहित प्रणाम करता हूं ॥ ७ ॥

अनिर्वाणप्रदीपस्य शिखावत् सत्यविग्रहम् ।
शिवानन्दं सदा नौमि धर्ममार्ग प्रदर्शकम् ॥ ८ ॥

श्रीरामकृष्णसंघस्य द्वितीयं नायकं विभुम् ।
शिवकल्पं शिवानन्दमनन्तं प्रणमामि तम् ॥ ९ ॥

शिवानन्दस्य चरितं स्मरन्तः शुद्धमानसाः ।
ब्रह्मस्वरूपतामन्ते यान्ति नास्त्यत्र संशयः ॥ १० ॥

इतिअध्यापकपण्डितश्रीकुमुदरंजनगोस्वामीतर्कवेदान्ततीर्थविरचितं
"श्रीमत्शिवानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम् ।

प्रणाममंत्रः—शिवे यस्य पराभक्तिस्त्यागेऽपि रतिरुत्तमा ।
अहेतुककृपासिन्धुं शिवानन्दं नमाम्यहम् ॥



अनिर्वाण दीप-शिखा के समान मूर्तिमान, सत्य-विग्रह स्वरूप एवं धर्म-मार्ग के प्रदर्शक उन्हीं स्वामी शिवानन्द महाराज को मैं सर्वदा प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

श्रीरामकृष्ण संघ के द्वितीय अधिनायक रूप में विराजित, दिशाओं-दिशाओं में महिमान्वित, बहुमान्य उन्हीं शिवतुल्य स्वामी शिवानन्द महाराज को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

जो लोग पवित्र चित्त से स्वामी शिवानन्द महाराज के पवित्र चरित्र का स्मरण करेंगे, वे अवश्य ही अन्त में ब्रह्म-स्वारूप्य प्राप्त करेंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ १० ॥

अध्यापक पण्डित श्री कुमुदरंजन गोस्वामी, तर्कवेदान्ततीर्थ द्वारा विरचित "श्रीमत्शिवानन्दस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



श्रीरामकृष्णानन्दस्तुतिः

श्री वी० आर० कल्याणसुन्दरशास्त्रिविरचिता

रामकृष्णानन्द-रामकृष्णयोरुभयोः स्मृतिः ।
पुनाति चित्तं सन्मार्ग प्रवृत्तिं वितनोति च ॥ १ ॥

श्रीरामकृष्णांशजनिं स्वकीयां नाम्नैव न स्वाचरणैरपीह ।
लोके जनानां प्रकटां विधाय श्रीरामकृष्णः स्वपदं जगाम ॥ २ ॥

श्रीरामभद्रस्य यथांजनेयस्तथास्य सच्छिष्यगणेषु कश्चित् ।
भक्तः किलासीच्छशिनामधेयः शीलेन वृत्तेन च माननीयः ॥ ३ ॥

श्रीरामकृष्णं परमहंसमाप्त्वा तदीय दृष्ट्या विवशीकृतात्मा ।
तत्पादसेवां विविधां विधाय छायात्मतामस्य जगाम चासौ ॥ ४ ॥

रामकृष्णानन्द एवं रामकृष्ण दोनों की स्मृति ही जीव के चित्त को पवित्र कर रही है एवं उन्हें कल्याण पथ पर जाने की प्रेरणा दे रही हैं। इसीलिए उनकी स्मृति हम लोगों को कल्याण के पथ पर ले जाने में सहायक होती है ॥ १ ॥

रामकृष्णानन्द श्रीरामकृष्ण के काय-व्यूह स्वरूप हैं, उन्हीं के अंश से उत्पन्न हैं। इसको अपने आचरण के द्वारा संसार के समक्ष प्रकाशित कर अन्त में वे श्रीरामकृष्ण के चरणों में ही विलीन हो गये ॥ २ ॥

जिस प्रकार हनुमान श्रीरामचन्द्र के परम भक्त थे, उसी प्रकार श्रीरामकृष्णदेव के श्रेष्ठ शिष्यगणों में शशि महाराज अन्यतम भक्त थे। शील और व्यवहार में वे विशेष माननीय हुए थे। इसीलिये हम लोग आत्मकल्याण के आकांक्षी होकर आज उन्हें प्रणाम करते हैं ॥ ३ ॥

श्रीरामकृष्ण परमहंस को पाकर उनकी कृपादृष्टि के द्वारा अभिभूत होकर विविध प्रकार से उनके श्रीचरणों की सेवा करके यह रामकृष्णानन्द स्वामी श्रीरामकृष्णदेव के छाया स्वरूप हुये थे ॥ ४ ॥

सर्वेषु भूतेषु च तुल्यदृष्टिः शास्त्रार्थसम्पादनसक्तचितः।
श्रीशारदाश्लाघित सच्चरित्रो नामापि लेभे स्वगुरोः पवित्रम् ॥ ५ ॥

अधीतबोधाचरणप्रचारैराचार्यभावं समुपेयिवांसम्।
श्रीरामकृष्णाभिमतं विशुद्धं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ॥ ६ ॥

स्वाचार्यसिद्धान्तनिविष्टचित्तं निरीक्ष्य तं सद्गुण सन्निधानम्।
तन्मित्रवर्गाग्रसरो विवेकानन्दाभिधः प्राप मुदं प्रकृष्टां ॥ ७ ॥

चेतोहरां चेन्नपुरीति लोके विख्यातनाम्नीं नगरीं कदापि।
तं प्रेषयामास हि रामकृष्णराद्धान्तसारं प्रकटं विधातुम् ॥ ८ ॥

शान्त्या च दान्त्या च तितिक्षया च गुरौ च भक्त्यामलयापि मत्या।
सम्मानितः सर्वविदां समाजैः क्रमेण स ख्यातिमिह प्रपेदे ॥ ९ ॥

रामकृष्णानन्द स्वामी समस्त प्राणियों में समदृष्टि सम्पन्न; सभी शास्त्रों के मर्मज्ञ, श्री श्री शारदादेवी के अशेष स्नेहभाजन, पवित्र चरित्र और सर्वोपरि श्रीगुरु सेवापरायण थे। इसीलिए सन्यास के समय स्वामी विवेकानन्द ने उन्हें श्रीगुरु के नाम से भूषित किया था ॥ ५ ॥

उनकी शास्त्रानुमोदित जीवनचर्या एवं प्रचारप्रणाली ने उन्हें विशिष्ट आचार्य के आसन पर अधीष्ठित किया था एवं वे श्रीरामकृष्ण की कृपा से धन्य हुये अन्यान्य लीला पार्षदों में अन्यतम श्रेष्ठ माने गये ॥ ६ ॥

अपने आचार्य के सिद्धान्त में निविष्टचित्त उन रामकृष्णानन्द स्वामी को बहुत से सद्गुणों से भूषित देखकर उनके गुरु भाइयों में अग्रगण्य स्वामी विवेकानन्द विशेष रूप से उल्लसित होते थे ॥ ७ ॥

इस पृथ्वी पर (दक्षिण भारत में) मनोहर चेन्नपुरी (मद्रास) नामक विख्यात नगर में किसी समय नरेन्द्रनाथ ने रामकृष्णानन्द स्वामी को श्रीरामकृष्णदेव के सिद्धान्त के माध्यम से वेदान्त धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा था ॥ ८ ॥

मनोनिग्रह, वहिरिन्द्रियनिग्रह, सहिष्णुता, गुरु के प्रति भक्ति एवं निर्मल बुद्धि द्वारा सर्वज्ञ, साधु समाज में सम्मानित वे रामकृष्णानन्द स्वामी अपने चरित्र बल से क्रम से इस जगत् में पूजनीय हुये थे ॥ ९ ॥

मयूरपुर्यां महिते प्रदेशे साह्येन केषामपि सज्जनानाम् ।
स्वावासमेकत्र मित प्रकल्प्य विद्यालयं कल्पयति स्म कंचित् ॥ १० ॥

नरेन्द्रसंकल्पितमर्थजातं सम्प्राद्यमद्राख्यपुरे समग्रम् ।
स्थानं स्वकीयं पुनरेत्यज पश्चात् तत्या योगेन तनुं स्वकीयाम् ॥ ११ ॥

मङ्गलं रामकृष्णाय परहंसस्वरूपिणे ।
कारुण्यसिन्धवे लोकबन्धवे विजितात्मने ॥ १२ ॥

सौजन्यनिधये रामकृष्णानन्दाय धीमते ।
दीनानामवने बद्धदीक्षायाह्यस्तु मंगलम् ॥ १३ ॥

इति श्री वी० आर० कल्याणसुन्दरशास्त्रिविरचिता "श्रीरामकृष्णानन्दस्तुतिः" समाप्ता ।

प्रणाममंत्रः—रामकृष्णगतप्राणं हनुमद्भाव भावितं ।
नमामि स्वामिनं रामकृष्णानन्देति संज्ञितं ॥



महित प्रदेश में मयूर पुरी में किन्हीं-किन्हीं सज्जन लोगों की सहायता से स्वल्प परिमित स्थान संग्रह करके परदुःखकातर स्वामी रामकृष्णानन्द ने सर्वहारा अनाथ बालकों के लिए एक निःशुल्क छात्रावास और विद्यालय की स्थापना की ॥ १० ॥

नरेन्द्रनाथ के संकल्पित वेदान्त प्रचार का कार्य समस्त मद्रास शहर में तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों में सम्पन्न करके बंगदेश में श्रीगुरु नामांकित मठ में लौट आकर उन्होंने योग के अवलम्बन से शरीर त्याग किया ॥ ११ ॥

करुणासागर, लोकबन्धु, जितेन्द्रिय, परमहंसस्वरूप श्रीरामकृष्ण का मंगल हो ॥ १२ ॥

शिष्टाचार के रत्नस्वरूप, परम ज्ञानी, दरिद्रों के बन्धु और रक्षक, श्रीगुरु के आदर्श में समर्पित प्राण रामकृष्णानन्द स्वामी का मंगल हो ॥ १३ ॥

श्री वी० आर० कल्याणसुन्दर शास्त्री द्वारा विरचित यह "श्रीरामकृष्णानन्द-स्तुतिः" समाप्त हुई ।



श्रीमत्प्रेमानन्दस्तोत्रम्

स्वामिगुणातीतानंदविरचितम्

पवित्रं तेजसा पूर्णं तप्तकांचनसन्निभम्
परकोटि-सुविख्यात-भक्तोत्तम-पुरःस्थितम् ।
प्रेमाम्बुरसपूर्णेन्दुं शुद्धप्रेमैकनिर्भरम्
वन्देऽहं परया भक्त्या प्रेमानन्दं वरोत्तमम् ॥ १ ॥

स्वर्णचम्पकसंकाशं राधा-भावांश-सम्भवम्
ईशकोट्यानुरन्तं सर्वांगसुमहोज्ज्वलम् ।
जीवानां शुद्धिदातारं जीवकल्याणतत्परं
प्रेमानन्दमहं वन्दे दिव्यतेजोमहोज्ज्वलम् ॥ २ ॥

श्रीरामकृष्णशिष्याय शुद्धाधारमताय च
स्वयमेव वृणीताय याचिताय महात्मने ।
बाबूराम-सुभक्ताय मातुः प्रिय सुताय च
प्रेमानन्द-यतीन्द्राय प्रणामः श्रेयसे मम ॥ ३ ॥

पवित्र तेजस्विता से परिपूर्ण, उज्ज्वल स्वर्णकान्ति समन्वित प्रदीप्त चरित्र, अगणित भक्तों के द्वारा सदा परिवृत, विशुद्ध प्रेम से पूर्ण, श्रेष्ठों में श्रेष्ठ, उन्हीं प्रेमानन्द स्वामी की मैं भक्ति सहित वन्दना करता हूं ॥ १ ॥

स्वर्ण और चम्पक पुष्प के समान वर्ण वाले, श्रीमती राधा के अंश से उत्पन्न, ईश्वर कोटि में वर्तमान, सुन्दर, महान्, उज्ज्वल शरीर युक्त, जीवों को शुद्धि प्रदान करने वाले, जीवों के कल्याण में तत्पर, दिव्य आध्यात्मिक तेज से उज्ज्वल, प्रेमानन्द स्वामी की मैं वन्दना करता हूं ॥ २ ॥

श्रीरामकृष्णदेव के अन्यतम प्रधान शिष्य, जिनकी भी पर्यंत विशुद्ध थी, स्वयं श्रीरामकृष्ण ने जिनको पसन्द करके उनकी मां से उनकी याचना की, उन्हीं बाबूराम नामक भक्तश्रेष्ठ एवं श्री शारदामाता के प्रिय पुत्र, यतिराज स्वामी प्रेमानन्द महाराज को मैं आत्म कल्याण के लिये प्रणाम करता हूं ॥ ३ ॥

प्रेमानन्द-दयासिन्धुं वैराग्य वाड़वान्वितम्
रामकृष्णकलापूर्ण चन्द्राकर्षणमुल्लसम् ।
प्रेम-कर्म-त्याग-योग-तुल्य दृष्टि-सुशोभनम्
प्रेमानन्दमहं वन्दे साधकाभीष्टसम्प्रदम् ॥ ४ ॥

यस्य श्रवणमात्रेण मनसो मलमंजसा
सुविदग्ध महो कृत्वा नरो निर्मलतां व्रजेत् ।
तद्‌ध्यान कीर्तनेनाथ सद्यो धन्यो भवाम्यहम्
तत्कृपैकप्रसादेन मुक्ति सौख्यं त्यजाम्यहम् ॥ ५ ॥

स्वामिगुणातीतानन्दविरचितं "श्रीमत्प्रेमानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम् ।

प्रणाममंत्रः—राधाभावप्रमत्ताय प्रेमोज्ज्वलमनस्विने ।
भक्तानां च वरिष्ठाय प्रेमानन्दाय ते नमः ॥



प्रम, आनन्द और दया के सागर, वैराग्यरूपी बड़वाग्नि से प्रदीप्त, श्रीरामकृष्णरूपी (सोलह, कलाओं से परिपूर्ण) चन्द्रमा के आकर्षण से प्रफुल्ल, प्रेम, कर्म, त्याग और योग का समान ज्ञान रखने वाले एवं साधकों को अभीष्ट फल देने वाले प्रेमानन्द स्वामी की मैं वन्दना करता हूं ॥ ४ ॥

जिनका नाम सुनने मात्र से ही मन का मैल उसी समय उत्तम रूप से धुल जाने के कारण मनुष्य निर्मल हो जाता है जिनका ध्यान और नाम का कीर्तन करते ही मैं स्वयं तुरन्त धन्य हो जाता हूँ एवं जिनके एकमात्र कृपा-प्रसाद को मैं मुक्ति के सुख से भी श्रेष्ठतर मानता हूं, उन्हीं प्रेमानंद महाराज के चरणों में मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥

स्वामी गुणातीतानंद द्वारा विरचित "श्रीमत्प्रेमानंदस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



श्रीमत्सारदानन्दस्तोत्रम्

अध्यापकपण्डितश्रीकुमुदरंजनगोस्वामीतर्कवेदांततीर्थविरचितम्

व्यासकल्पं महात्मानं हिमाद्रिस्निग्ध गम्भीरम्।
तं नौमि सारदानन्दं धैर्यशीलं क्षमान्वितम्॥ १॥

सर्वासु नारीरूपेषु 'पश्यात्र जगदम्बिकाम्'।
इत्येवं घोषयन्तं तं मातृमूर्तिदृशं नमः॥ २॥

कृत्स्नं संघं धारयन्तं वासुकिमिव मूर्धनि।
प्रकाशयन्तं नित्यं च लीलाग्रन्थं जनेषु वै॥ ३॥

परिवेश्य तु तल्लीलां जनेषूच्चावचेषु च।
आनन्दयन्तं भक्तांस्तान् भगवत्प्रेमविग्रहाम्॥ ४॥

वेदव्यास कल्प महात्मा, हिमालय के समान स्निग्ध गम्भीर धैर्यशील और क्षमामूर्ति स्वामी सारदानन्द महाराज को मैं प्रणाम करता हूँ॥ १॥

'समस्त नारी मूर्ति में जगन्माता का दर्शन करो' उदात्त कंठ से यह घोषणा करने वाले एवं समस्त स्त्रियों को मातृ स्वरूप में दर्शन करने वाले स्वामी सारदानन्द महाराज को मैं प्रणाम करता हूँ॥ २॥

जिस प्रकार वासुकी नाग समस्त भूमण्डल को अपने मस्तक पर धारण किये हुये हैं, उसी प्रकार श्रीरामकृष्ण संघ का समस्त दायित्व वहन करने वाले एवं "श्रीरामकृष्णलीलाप्रसंग" ग्रंथ का प्रणयन करके सर्वसाधारण में श्रीरामकृष्ण की भाव धारा का नित्य प्रचार करने वाले स्वामी सारदानन्द को मैं प्रणाम करता हूँ॥ ३॥

सर्वसाधरण (उच्च और नीच) में जिन्होंने निर्विशेष रूप से श्रीरामकृष्ण-देव की उसी भावधारा के प्रचार द्वारा भगवत्प्रेम के मूर्तविग्रहस्वरूप होकर भक्तों को आनन्दित किया था, उन्हीं स्वामी सारदानंद महाराज को मैं प्रणाम करता हूँ॥ ४॥

पूरयन्तं च भक्तानां भक्तितृष्णां सुदुर्लभाम्।
तं वन्दे सारदानन्दं शारदामातृसेवकम्॥ ५॥
ज्ञानयोगस्य योगस्य भक्तियोगस्य कर्मणां।
मूर्तं विग्रहरूपं तं नमामि श्रेष्ठपूरुषम्॥ ६॥
करुणासिन्धुरूपं तं सर्वानन्दविवर्धनम्।
तं नौमि सारदानन्दं स्वामिनं भक्तिभावतः॥ ७॥
सारदानन्ददेवं ये स्मरन्ति श्रद्धयान्विताः।
प्राप्नुवन्त्येव ते मुक्ति करामलकवच्छुभाम्॥ ८॥

इतिअध्यापकपण्डितश्रीकुमुदरंजनगोस्वामीतर्कवेदान्ततीर्थविरचितं
"श्रीमत्सारदानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम्।

प्रणाममंत्रः— सारदायाः पदाब्जे वै नित्यं यो भ्रमरायते।
नमोस्तु सारदानन्द स्वामिने ज्ञानदायिने॥



श्रीरामकृष्ण-लीला प्रसंग के प्रचार द्वारा जिन्होंने भक्तगणों की सुदुर्लभ भक्ति पिपासा को तृप्त किया था एवं श्री श्रीशारदामाता की एकनिष्ठ सेवा की, उन्हीं स्वामी सारदानंद महाराज को मैं प्रणाम करता हूँ॥ ५॥

ज्ञानयोग, अष्टांग राजयोग, भक्तियोग और कर्मयोग के मूर्तिमान विग्रहस्वरूप उन्हीं पुरुषश्रेष्ठ स्वामी सारदानंद महाराज को मैं प्रणाम करता हूँ॥ ६॥

करुणासिंधु-स्वरूप एवं समस्त आश्रित जनगणों के आध्यात्मिक आनंद का वर्धन करने वाले उन्हीं स्वामी सारदानंद महाराज को मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ॥ ७॥

जो लोग भक्तिपूर्वक स्वामो सारदानन्द महाराज को निरन्तर स्मरण करते हैं, वे लोग हाथ में स्थित आंवले के फल के समान अनायास मंगलमयी मुक्ति प्राप्त करते हैं॥ ८॥

अध्यापक पण्डित श्री कुमुदरंजन गोस्वामी तर्क वेदान्ततीर्थ द्वारा विरचित यह "श्रीमत्सारदानन्दस्तोत्रम्" समाप्त हुआ।

श्रीमदद्भुतानन्दस्तोत्रम्

अध्यापकपंडितश्रीकुमुदरंजनगोस्वामीतर्कवेदान्ततीर्थविरचितम्

निरक्षरं महाप्राज्ञं भक्तश्रेष्ठं गुणोत्तमम् ।
रामकृष्णप्रभोरेवं रामदत्तस्य सेवकम् ॥ १ ॥

अन्तर्बहिश्च पश्यन्तं भगवन्तं सदामुदा ।
वीक्ष्य श्रीरामकृष्णो यं दीक्षां प्रदात् स्वलीलया ॥ २ ॥

सेवया रामकृष्णस्य शारदाकरुणाबलात् ।
धर्मतत्त्वं निरीक्षन्तं हस्तामलकवच्छिवम् ॥ ३ ॥

तत्त्वान्युपनिषद्गानि स्वानुभूत्या विकासयन् ।
निर्वृतिं यः परां लेभे तन्नमामः सदाद्भुतम् ॥ ४ ॥

निरक्षर होने पर भी परमज्ञानी, श्रेष्ठ भक्त और बहुत से गुणों से युक्त, प्रभु श्रीरामकृष्ण एवं उनके भक्त रामचन्द्र दत्त के सेवक स्वामी अद्भुतानन्द को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

जो श्रीभगवान् का अन्दर और बाहर सर्वदा दर्शन कर दिव्यानन्द में विराज करते एवं जिनको देखकर ही श्रीरामकृष्ण देव ने भावावेश में स्वेच्छा से कृपा-स्पर्श के द्वारा दीक्षा दी थी इस प्रकार के स्वामी अद्भुतानन्द को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

श्रीरामकृष्ण देव की सेवा एवं श्रीमती शारदा देवी की करुणा के प्रभाव से जो परम मंगलमय धर्मतत्व का हाथ में स्थित आँवले के फल के समान दर्शन करते, उन्हीं स्वामी अद्भुतानन्द महाराज को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

उपनिषदों के निगूढ़ तत्व समूहों को अपनी अनुभूति के द्वारा विकसित करके जो परम शान्ति प्राप्त करते; उन्हीं आदर्श स्थानीय विचित्र जीवन स्वामी अद्भुतानन्द महाराज को मैं बार-बार प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥

रामकृष्णस्य महतीं सृष्टिमद्भुतमद्भुताम् ।
मन्यते यं महाभक्तं विवेकानन्दरूपधृक् ॥ ५ ॥
एवं भक्तोत्तमं श्रेष्ठं लीलामानस विग्रहम् ।
अद्भुतंत्वद्भुतानन्दं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ ६ ॥
जगत्यामवतीर्णस्य साधकस्य प्रियस्य च ।
तस्य श्री पादपद्मे नः प्रणामाः सन्तु नित्यशः ॥ ७ ॥
अद्भुतं चरितं नित्यं स्मरेयुर्भयविह्वलाः ।
तेषां सर्वं भयं यायाद् भवोद्भवभयेन च ॥ ८ ॥

अध्यापकपण्डितश्रीकुमुदरंजनगोस्वामीतर्कवेदान्ततीर्थविरचितं "श्रीमदद्भुतानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम् ।

प्रणाम मंत्रः—निरक्षरोऽपि सर्वं यो जानाति गुरुसेवया ।
नमोऽस्त्वद्भुतपादाय पश्चिमोत्तरदेशिनः ॥



स्वयं विवेकानन्द जिनको श्रीरामकृष्णदेव की अपूर्व महान् सृष्टि और महान भक्त मानते थे ऐसे स्वामी अद्भुतानन्द को बार बार प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

इस प्रकार सत्वगुण विशिष्ट, श्रीरामकृष्णदेव के मानसीलीलाविग्रहरूप में प्रकटित, उच्चकोटि के भक्त, अभिनव जीवन स्वामी अद्भुतानन्द महाराज को हम लोग बार-बार प्रणाम करते हैं ॥ ६ ॥

इस संसार में युगावतार श्रीरामकृष्ण देव के पार्षदरूप में अवतीर्ण एवं श्रीरामकृष्ण देव के परम प्रिय, श्रेष्ठ साधक स्वामी अद्भुतानन्द महाराज के चरणकमलों में हम लोगों का भक्तिपूर्वक प्रणाम ॥ ७ ॥

जो लोग इस संसार में जन्म-मृत्यु के भय से भीत होकर उसके काल से मुक्ति पाना चाहते हैं, वे लोग अवश्य ही स्वामी अद्भुतानन्द महाराज की अलौकिक चरित्र कथा का स्मरण करेंगे, जिससे सब प्रकार के भव-भय हमेशा के लिए विनष्ट हो जांय ॥ ८ ॥

अध्यापक पण्डित श्री कुमुदरंजन गोस्वामी तर्कवेदांततीर्थ द्वारा विरचित यह "श्रीमदद्भुतानंदस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।

श्रीमत्स्वामियोगानन्ददशकम्*

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम्

सावर्णवंशे जननं प्रसिद्धे ब्राह्मेऽन्वये शुद्धपवित्रगोत्रे।
तवेश्वरे कोटिगतस्य देव श्रीरामकृष्णप्रिय पार्षदस्य ॥ १ ॥

लीलास्थली सा भगवत्प्रिया या नाम्ना स दक्षेश्वर एव धाम।
तत्रावसस्त्वं सुकृतस्य भक्त्या किं नाम भाग्यं वचनैरवाच्यम् ॥ २ ॥

यदा कथंचिद्विषयस्तवासीच्छ्रीरामकृष्णविषये जनन्याः।
श्रीशारदायाः किमितो गृहं सोऽगमच्च रात्रौ व्यभनक् तवासौ ॥ ३ ॥

दिनेऽपि पश्येरपि रात्रिकाले साधुं तदन्ते सुविनिश्चिनुष्व।
परीक्षया वै ग्रहणार्थमुक्तस्त्वं रामकृष्णेन पुरो जगत्याः ॥ ४ ॥

हे देव ! शुद्ध पवित्र गोत्र में ब्राह्मण कुल में प्रसिद्ध सावर्ण वंश में ईश्वर कोटिगत श्रीरामकृष्ण के प्रिय पार्षद के रूप में तुम्हारा जन्म हुआ ॥ १ ॥

भगवान् श्रीरामकृष्ण की प्रिय लीलास्थली दक्षिणेश्वर नामक धाम में अति पुण्य बल से तुम्हारा वास हुआ। इसी से मालूम पड़ता है कि तुम्हारा कितना अधिक सौभाग्य था ॥ २ ॥

जब श्रीरामकृष्ण के सम्बन्ध में तुम्हारे मन में कुछ सन्देह हुआ कि क्या वे रात में शारदामाता के कमरे में गये हैं ? तब उस सन्देह का भंजन श्रीरामकृष्णदेव ने किया था ॥ ३ ॥

"साधु को दिन में देखोगे, रात में भी देखोगे, देखकर के अन्त में साधु को साधु रूप में निश्चित समझोगे" इस प्रकार से प्रभु श्रीरामकृष्ण ने जगत् के सामने उनको (श्रीरामकृष्ण को) परीक्षा करके ग्रहण करने के लिए तुमसे कहा था ॥ ४ ॥

---

* रचयिता द्वारा अनूदित्—प्रकाशक।

अथैकदा भक्तगणेभ्य आत्तः श्यामा प्रसादो न च काल एतः।
अन्वेषणार्थं प्रतिलोकप्रश्नैर्दृष्ट्वा प्रभूस्तद्गतवान बहिश्च ॥ ५ ॥
शंका तवासीद् बत चित्त एषा यावान् भवेद् याजनिको द्विजातिः।
प्रभूर्हितार्थीकिल रासमण्या आह प्रदिष्टो महते न चौरे॥ ६ ॥
इत्थं परीक्ष्य ग्रहणं करोषि श्रीरामकृष्णं बहुधा स्म देवम्।
न भावविभ्रान्तनृवत् कदाप्यग्रहीरतस्त्वं प्रभुपार्षदोऽसौ ॥ ७ ॥
लोकातिगस्त्वं जित काम इष्टः श्रीरामकृष्णेन सदा गृहीतः।
त्वमीशकोटिस्थित एव तेन प्रोक्तः स्वभक्तेभ्य इतो न वार्ता ॥ ८ ॥
त्वं कामजिदेव पुमान् वरेण्यो नास्त्यत्र सन्देह इति स्म देवैः।
उक्तं युगाचार्य वर्रैविवेकानन्दैर्महात्मप्रवृतैर्जगत्याम्॥ ९ ॥

और एक दिन साधु भक्तों के लिए रासमणि द्वारा बनवाया हुआ मां काली का प्रसाद यथा समय न आ पाने के कारण प्रभु लोगों से पूछते-पूछते अपने कमरे से बाहर चले गये। तब तुम्हारे मन में शंका हुई कि जो भी हो ये भी (श्रीरामकृष्ण भी) तो याजनिक ब्राह्मण हैं। तब रानी रासमणि का हित चाहने वाले प्रभु ने कहा कि साधु या महत्वपूर्ण व्यक्तियों के लिए माँ काली का प्रसाद रानी के द्वारा निर्दिष्ट हुआ है, न कि उनके लिए जो प्रसाद की अमर्यादा करते हों॥ ५-६ ॥

हे यतिवर! तुमने इस प्रकार बहुत तरह से परीक्षा करके श्रीरामकृष्ण देव को ग्रहण किया था, न कि भाव विह्वल मनुष्यों के समान। इसीलिए तुम प्रभु श्रीरामकृष्ण देव के परमप्रिय पार्षद हो ॥ ७ ॥

तुम साधारण लोगों से बहुत ऊपर, जितकाम श्रीरामकृष्ण के अभिलषित रूप में सर्वदा गृहीत हुए हो। उन्होंने भक्तों के निकट कहा था कि तुम "ईश्वरकोटि-स्थित" हो। इस से तुम्हारा श्रेष्ठत्व प्रतिपादित हो रहा है ॥ ८ ॥

तुम श्रेष्ठ कामजित् पुरुष हो। इस विषय में कोई सन्देह नहीं है। यह बात श्रेष्ठ युगाचार्य देव स्वामी विवेकानन्द ने भी कही है ॥ ९ ॥

गृहाण पुष्पांजलिरेष नस्त्वं प्रत्तः पदाब्जे तव भक्तिहेतोः।
याचामहे त्वां वरमेतमेकं भक्तिं प्रयच्छ प्रभुपादयुग्मे ॥ १० ॥

इतिब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितं "श्रीमत्स्वामियोगानन्ददशकम्" समाप्तम् ।

प्रणाममंत्रः—मुक्तात्मानमतिस्थिरं धननिष्ठमहर्निशम् ।
नमामि श्रीयोगानन्दमानन्दकन्दमन्दरम् ॥



स्वामिनिरंजनानन्दषट्कम्*

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम्

निरंजनानन्दयतिर्निरंजनः, किशोरवस्थात इतोऽपि सिद्धिमान् ।
सुरोपमः श्रीभगवत्प्रियावली, य ईशकोटिस्थित एव राजते ॥ १ ॥

समीहितस्वार्थविसर्जनेन हि, प्रबोधवैराग्यबलेन सिध्यता ।
प्रसूक्तते सेवनकर्मपालितं, प्रभोर्दधानेन परं प्रमोदनम् ॥ २ ॥

तुम्हारे चरण कमलों में भक्ति के लिए निवेदित हम लोगों की यह स्तवांजलि ग्रहण करो। तुमसे एकमात्र प्रार्थना है कि तुम यह वर दो कि प्रभु के पादपद्मों में हम लोगों की भक्ति हो ॥ १० ॥

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य द्वारा विरचित यह "श्रीमत्स्वामियोगानंददशकम्" समाप्त हुआ।



कलुषताशून्य; निरजनानन्द स्वामी (सन्यासी) जो शैशव से ही सिद्ध थे, उन्हीं देवता सदृश, श्रीरामकृष्ण के प्रिय, बलवान और ईश्वर कोटि के अन्यतम, वे अब मर्त्यधाम में विराजित हैं, उनको हम लोग श्रद्धापूर्वक प्रणाम करते हैं ॥ १ ॥

अपना स्वार्थ त्याग करके ज्ञान और वैराग्य के बल से सिद्ध होकर, प्रभु श्रीरामकृष्ण का प्रचुर आनन्द विधान करते हुए माता के लिए ही जिन्होंने नौकरी (स्वीकार) की, उन्हीं यतिवर को हम लोग सतत प्रणाम करते हैं ॥ २ ॥

---

* रचयिता द्वारा अनूदित्—प्रकाशक।

गुरोर्जुगुप्साक्षुभितान्तरात्मना, सकर्णधारां तरणिं महत्तराम् ।
निमज्यमानं प्रबलेन तेजसा, त्वया प्रकर्तुं कुशलं प्रयस्तमोम् ॥ ३ ॥
उदारशान्तान्तरदिव्यभावकः, प्रभोस्तु कृत्ये सततं यतेन्द्रियः ।
महोद्यमेनैव कृतक्रियापरो, मुदा महावीर इवारिनाशकः ॥ ४ ॥
प्रियो जनानां प्रियमूर्तिसाधको, वरेण्य एषोऽहृति तीर्थमानसः ।
क्रियासु दक्षः कुशलोऽनुशासने, जयत्यसौ देवगणैः सुपूजितः ॥ ५ ॥
नमोऽस्तु तस्मै यतिवर्यदेहिने, समाय शुद्धाय यथोक्तकारिणे ।
कृतार्थ राजारहटाख्यभूमये, हि रामकृष्णप्रिय पार्षदायते ॥ ६ ॥

इतिब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितं 'श्रीनिरंजनानन्दषट्कम् समाप्तम् ।

प्रणाममंत्रः—नास्ति मायांजनं यस्य, रघुवीरपराक्रमम् ।
न्यासिनां च वरिष्ठं वै वन्दे भक्त्या निरंजनम् ॥



गुरु की निन्दा से क्षुब्ध होकर तुम जो प्रबल तेज में यात्रियों और नाविक के साथ विशाल नौका को जल धारा में निमग्न करने के लिए प्रस्तुत हुए थे, वह शास्त्र सम्मत कार्य ही था इसलिए हम लोग तुम्हारे प्रति श्रद्धान्वित होते हैं ॥ ३ ॥

सरल, शान्तचित्त, दिव्य भाव से पूर्ण, प्रभु श्रीरामकृष्ण के कार्य में सर्वदा यतेन्द्रिय, आनन्दपूर्वक महाउद्यम से अनुष्ठेय पूरा करने में क्रियापरायण एवं महावीर के समान शत्रु (कामादि) के विनाशक उन्हीं यतिवर निरंजनानन्द स्वामी को हम लोग अपने अन्दर की श्रद्धा निवेदन करते हैं ॥ ४ ॥

प्रियदर्शन साधक, वरेण्य, तीर्थाटन के अभिलाषी होकर भ्रमण करने वाले, क्रिया में दक्ष, पर उपदेश में कुशल, देवगणों द्वारा पूजित उनका नाम जययुक्त हो, यही प्रार्थना है ॥ ५ ॥

राजारहाट नामक स्थान को कृतार्थ करने वाले, प्रभु की आज्ञा का यथोक्त रूप से पालन करने वाले, सर्वत्र शुद्ध समभावापन्न, सन्यासी शरीर में अवस्थित श्रीरामकृष्ण के प्रिय पार्षद उन्हीं यतिवर को नमस्कार ॥ ६ ॥

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य द्वारा विरचित यह "स्वामिनिरंजनानन्दषट्कम्" समाप्त हुआ ।



स्वामित्रिगुणातीतानन्दपंचकम्

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम्

आविर्भूत इहाद्य देवशरणे श्रीरामकृष्णाभिधे,
ये ये तस्य सहायकाः प्रियवरा लब्ध्वा जनिं भारते ।
अज्ञानान्धजनान् भवार्णवभयादुद्धृत्य देवं गता
स्तेषामन्यतस्त्वमद्य भगवन् किंचित् किल स्तूयसे ॥ १ ॥

सर्वापि स्तुतिरेति शीलगुणगांस्त्रैगुण्यहीने क्व सा,
त्वं तावत् प्रथितः क्षितौ त्रिगुणतातोताभिधां धारयन् ।
क्षन्तव्यस्तदपीह दोषनिवहो यद् वाच्यतां क्राम्यति
व्यक्तं वै कथितं महिम्नचरणे पुष्येण नाम्ना तथा ॥ २ ॥

यीशूख्रिष्ट महांस्तथापि मनुजैस्तेभ्योऽति विद्धः क्रुशैः
श्रीरामो भगवान् प्रजाप्रियहितः सीताविहीनस्ततः ।

हे स्वामी त्रिगुणातीतानंद ! जगत के आदिकारण, सभी के शरण श्रीरामकृष्णदेव के आविर्भूत होने पर जो लोग उनके प्रिय और वरणीय सहायक होकर संसार में जन्म लेकर भवसमुद्र के भय से अज्ञानान्ध प्राणियों का उद्धार कर श्रीरामकृष्ण के चरणों में लीन हुए हैं, उनमें तुम आज अन्यतम हो। तुम्हारी कुछ स्तुति करूँ ॥ १ ॥

सभी स्तुतियाँ गुण और शीलयुक्त पुरुष के लिए प्रयुक्त होती हैं, त्रैगुण्य रहित पुरुष की स्तुति कैसे सम्भव है ? तुम त्रिगुणातीत नाम धारण कर जगत् में प्रसिद्ध हुए हो। तुम हमारे सब दोषों को क्षमा करो। तुम्हारी महिमा भाषा में प्रकाशित करना असम्भव है। शिवमहिम्नस्तोत्र की रचना में पुष्पदन्त नामक गन्धर्वराज ने भी यह स्पष्ट रूप से कहा है कि परब्रह्म या परमात्मा शब्द के द्वारा प्रकाशित नहीं किया जाता ॥ २ ॥

ईसा मसीह अति महान् होकर भी मनुष्यों का कल्याण करके उन्हीं के हाथों निष्ठुरतापूर्वक सूली में प्रताड़ित किये गये। भगवान् श्रीरामचन्द्र प्रजा के

श्रीकृष्णोऽपि जनान् विवर्धयनतो बिद्धः पदा स्वं जहौ,
त्वं लोकप्रिय मंगलार्थ कृतिमान् प्राणानहासीर्निजान् ॥ ३ ॥
इत्थं स्वार्थविसर्जनेन सुजनाः सर्वेषु कालेष्वसून्
हास्यास्या व्यजहुर्न लिख्यत इह क्वापीतिहासे सदा ।
यद्यप्येतदपेक्षन्ते किमपि नो त्यक्ताखिलाः पारगाः
कर्तव्यं तदपीति वृत्तलिखनं ह्यस्माकमेकं परम् ॥ ४ ॥
आदेशात् कृतसम्मतिर्यति विवेकानन्दवर्यात्मनः
पाश्चात्यं गतवान् भवानुपनिषद्व्याख्यानहेतोर्महान् ।

प्रिय और हितकारी होकर भी उन्हीं के लिए उन्होंने सीता का परित्याग किया । श्रीकृष्ण ने भी मनुष्यों का सब प्रकार से मंगल करके भी पैर में तीर द्वारा बिद्ध होने पर अपना शरीर छोड़ दिया । तुम्हें भी (पाश्चात्य देश में) लोगों का कल्याण करने के लिए वेदान्त प्रचार कर उन्हीं मनुष्यों के द्वारा ही आहत होकर अपना शरीर छोड़ा । इस प्रकार के यतिवर ! तुम्हारी स्तुति करता हूँ ॥ ३ ॥

इसी के समान सज्जन पुरुषों ने सब समय स्वार्थं त्याग कर प्रसन्न चित्त से शरीर छोड़ा है । पृथ्वी के किसी भी इतिहास में इसका उल्लेख नहीं है । यद्यपि सब कुछ परित्याग कर संसार से ऊपर उठ कर उन लोगों ने संसार से यह सब अपेक्षा भी नहीं की, तथापि हम लोगों का यह एक आवश्यक कर्तव्य है कि उन महान आत्म त्यागों को इतिहास में लिपिबद्ध कर रखा जाय ॥ ४ ॥

सन्यासीप्रवर स्वामी विवेकानन्द के आदेश से महानुभव-तुम राजी होकर वेदान्त प्रचार के लिए पाश्चात्य देश गये थे । उस देश के विशिष्ट दार्शनिक, वैज्ञानिक, चिन्ताशील लेखक, वक्ता और धर्माचार्यगण सभी ने तुम्हारे त्याग, वैराग्य, साधुता और पाण्डित्य से मुग्ध होकर तुम्हारे प्रति अपने-अपने अन्तःकरण

श्रद्धासीच्च नृणां यथोचितविदां तद्देशनिष्ठाभृतां
त्वत्पादाब्ज समर्चनेन निरता धन्या भवामो वयम् ॥ ५ ॥

इतिब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितं "स्वामित्रिगुणातीतानन्दपंचकम्" समाप्तम् ।

प्रणाममंत्रः— कर्मिणां च वरिष्ठाय जीवसेवाव्रताय च ।
त्रिगुणाय नमस्तुभ्यं गुणत्रयमुपेक्षिणे ॥



श्रीमद्विज्ञानानन्दनवकम्*

प्राध्यापकपांचुगोपालवन्द्योपाध्यायेनविरचितम्

प्रणमामि महाप्राज्ञं विज्ञानानन्द-नामकम् ।
ज्ञान-विज्ञान-निष्णातं श्रीरामकृष्ण-पार्षदम् ॥ १ ॥
प्रणमामि महावीरं विज्ञानानन्द-नामकम् ।
स्वनाथ रामकृष्णेण मल्ल-क्रीड़ा-रतं भृशम् ॥ २ ॥
प्रणमामि महासत्वं विज्ञानानन्द-नामकम् ।
सर्वैषणा-विनिर्मुक्तं सत्यार्जवादि-भूषितम् ॥ ३ ॥
प्रणमामि तपोयुक्तं विज्ञानानन्द-नामकम् ।
स्त्रीभ्योऽतिसावधानं च प्रयाग-पुर-वासिनम् ॥ ४ ॥

की श्रद्धा अर्पित की थी। हम लोग भी तुम्हारे चरणकमलों की वन्दना और अर्चना कर धन्य होंगे ॥ ५ ॥

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य द्वारा विरचित यह "स्वामित्रिगुणातीतानन्दपंचकम्" समाप्त हुआ ।



महाप्राज्ञ, ज्ञान-विज्ञान-कुशल, महावीर, अपने गुरु-श्रीरामकृष्ण के साथ प्रचण्ड भाव से मल्लक्रीड़ा में निरत, महाबलशाली, सभी प्रकार की वासनाओं से सम्पूर्ण रूप से मुक्त, सत्य-सरलता आदि सद्‌गुणों से मण्डित, तपः परायण,

---

* रचयिता द्वारा अनूदित—प्रकाशक ।

प्रणमामि सु-तत्वज्ञं विज्ञानानन्द-नामकम् ।
पूर्त-शिल्प-कला-दक्षं मन्दिरादि-प्रकल्पकम् ॥ ५ ॥
प्रणमामि मठाध्यक्षं विज्ञानानन्द-नामकम् ।
संघगुरुं कृपा-मूर्ति संसारार्णव-तारकम् ॥ ६ ॥
प्रणमामि गुणातीतं विज्ञानानन्द-नामकम् ।
माया-मोह-विजेतारं परमहंस-लक्षणम् ॥ ७ ॥
प्रणमामि त्रयी-मूर्तिं विज्ञानानन्द-नामकम् ।
मोक्षदं च दयाधारं दिव्य-लीला-प्रकाशकम् ॥ ८ ॥
अन्वर्थ-नामाऽसौ यस्मिन् सदा श्रीहरिः प्रसन्नः
श्रीरामकृष्णो वै साक्षात् इह श्रीहरिर्नृमूर्तिः ।

स्त्रियों से अत्यन्त सावधान, प्रयाग नामक नगर में तपस्यादि के लिए अवस्थान करने वाले, उत्तम ब्रह्म-तत्वज्ञ, पूर्त (गृह-निर्माणादि) शिल्प-कला में पारदर्शी, मन्दिरादि स्थापत्य कर्म की परिकल्पना करने वाले, श्रीरामकृष्ण-मठ के अध्यक्ष, श्रीरामकृष्ण-संघ के गुरु, करुणाघन मूर्ति, संसार-समुद्र से त्राण दिलाने वाले 'विज्ञानानन्द' नामक श्रीरामकृष्ण के अन्यतम पार्षद को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १-६ ॥

गुणातीत, माया-मोह-विजयी, परमहंस-सन्यासियों के लक्षणों से युक्त, वेदमूर्ति, मोक्ष देने वाले, दया के आधार स्वरूप, दिव्यलीला प्रकटनकारी "विज्ञानानन्द" नामक श्रीरामकृष्ण के अन्यतम पार्षद को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ७-८ ॥

श्रीरामकृष्णदेव इस पृथ्वी पर साक्षात् नरमूर्तिधारी श्रीहरि थे। वे ही श्रीहरि सर्वदा जिनसे प्रसन्न रहते थे, उनका 'हरिप्रसन्न' नाम सचमुच सार्थक हुआ था। उन श्रीरामकृष्ण की प्रसन्नता के लिए जो निश्चय ही प्रकृष्ट-बोध में अर्थात् ईश्वर की नित्य और लीलात्मक विज्ञान विषय में--परमानन्द युक्त हुये

तस्य प्रसादात् यो नूनं परानन्द युक् प्रबोधे
तस्माच्च हेतोः सोऽभूत् विश्रुतौ युक्त-पूत-नाम्ना ॥ ९ ॥

इतिप्राध्यापकपांचुगोपालवन्द्योपाध्यायेनविरचितं "श्रीमद्विज्ञानानन्द-नवकम्" समाप्तम् ।

प्रणाममंत्रः—"आजन्म ज्ञान-विज्ञान निष्णाताय महात्मने ।
विज्ञानानन्दपादाय भूयो भूयो नमोऽस्तुते ॥"



श्रीमत्सुबोधानन्दस्तोत्रम्*

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम्

श्री कृष्णदासतनयं सहजातभक्ति,
सम्भू षितांकनयनोत्तरतारबालम् ।
श्रीरामकृष्णकृपया कृतकृत्य बुद्धि,
वन्दे सुबोधपुरुषं विनयाप्तमूर्तिम् ॥ १ ॥
लोकोत्तरार्जवगुणं जितकामभोगं,
दैवाख्यया त्वभिहितं जननीड्यदेवैः ।

थे, वे उसी कारण से यथोपयुक्त और पवित्र 'विज्ञानानन्द' नाम से प्रसिद्ध थे ॥ ९ ॥

प्राध्यापक पांचुगोपाल वन्द्योपाध्याय द्वारा विरचित यह "श्रीमद्विज्ञानानन्द-नवकम्" समाप्त हुआ ।



जन्मजात भक्तिमान, विनीत मूर्ति, श्रीकृष्णदास के पुत्र, नयनतारा की गोद को विभूषित करने वाले बालक श्रीरामकृष्णदेव की कृपा से कृतकृत्य बुद्धि, सुबोधानन्द पुरुष प्रवर की वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

लोकोत्तर सरलतागुण से युक्त, भोगेच्छा जीतने वाले, वन्दनीय, जननी देवी के द्वारा 'देवता' नाम से आख्यात, तेजस्विता और सरलता के व्यवहार में सिद्ध,

---

* रचयिता द्वारा अनूदित्—प्रकाशक ।

तेजस्विता सरलता व्यवहारसिद्धं,
नौमि द्युलोकवसतिं मधुरस्वभावम् ॥ २ ॥
शुद्धान्वयं प्रियजनं चरितेन शुद्ध-
स्त्वाचार शुद्धभजनं धृतशुद्धदेहम् ।
संसारिणां शरणदं, जनदुःखतप्तम्
स्तौमि स्वभावसरलं पुरुषं महान्तम् ॥ ३ ॥
स्वस्यासने तु गुरुणा स्वयमासितं त्वां,
तच्चिह्नितं समदृशं समदुःखहर्षम् ।
प्राप्तोपदेशचरणं निजबोधनिष्ठ-
मीड़े सुबोधतरणिं पतिताघनाशम् ॥ ४ ॥
बाल्ये विरक्तपुरुषं यतिधर्मपालम्,
श्रीरामकृष्णसरणिं सततं प्रविष्टम् ।
तीर्थाटनेन सुखिनं गुरुकर्मनिष्ठम्,
स्वाचार्यसेविनमहं त्वभिवादये त्वाम् ॥ ५ ॥

मधुरस्वभाव वाले, स्वर्ग रूपी देवताओं के दिव्य प्रकाशमान् लोक में वास करने वाले सुबोधानन्द को नमस्कार करता हूँ ॥ २ ॥

शुद्ध वंश में उत्पन्न, सभी लोगों के प्रिय शुद्ध चरित्र, आचार में शुद्ध, भजन करने वाले, शुद्ध शरीर वाले, संसारी लोगों को शरण देने वाले, लोगों के दुःख से दुःखी, सरल स्वभाव युक्त उन महान् पुरुष सुबोधानन्द की मैं स्तुति करता हूँ ॥३॥

अपने आसन पर स्वयं तुम्हारे गुरु ने तुमको बैठाया, तुम उनके द्वारा चिह्नित हो, समदर्शी हो, सुख-दुःख में समान भाव रखने वाले हो एवं उनके उपदेशानुसार आचरण करने में निपुण हो, आत्मज्ञान में निष्ठ हो एवं पतितों के पापों का नाश करने वाले सुबोध सूर्य हो। इसीलिए मैं तुम्हारी स्तुति करता हूँ ॥ ४ ॥

बाल्यकाल से ही वैराग्यवान्, सन्यास धर्म का पालन करने वाले, श्रीरामकृष्ण के उपदिष्ट मार्ग में सर्वदा प्रविष्ट, तीर्थाटन में सुखी, गुरु के कर्म में निष्ठावान् एवं गुरु की सेवा करने वाले तुम्हारा मैं अभिवादन करता हूँ ॥ ५ ॥

क्रोधोपशान्तिरखिला यदवेक्षणेन,
प्रयान्महाजनगता किमुतेतरेषाम् ।
स्निग्धा पवित्रसरला गुणयुक्तमूर्ति-
र्ध्येया तदीयवरदा कलुषापहर्त्री ॥ ६ ॥

खोकाख्यया गुरुसहोदरवाग् दिशन्ती,
यं स त्वमेव तरुणोऽर्भकवन्निषण्णः ।
बाल्यं गतेऽपि कुटिले भवलुब्धमार्गे
धर्मार्घ्यमार्गसुरसे रसिको विदग्धः ॥ ७ ॥

देशे, विदेशगहने भवदुःखतप्ता-
स्त्वामाश्रयन्त इतरे सुकृते तृषार्ताः ।
शान्तं रसं सुमधुरं परिपीय लोका-
स्तृप्ता भवन्ति सुखिनस्तनुवाङ्मनोभिः ॥ ८ ॥

संसारपारपथिकं नियमप्रधानं,
स्वाध्यायपाठनिरतं सततं कृतार्थम् ।

जिन्हें देखकर महान् क्रोधी व्यक्तियों का क्रोध भी शान्त हो जाता, दूसरों की तो बात ही क्या है। उन्हीं स्नेहयुक्त, पवित्र, सरल, कलुष हरण करने वाले' गुणायुक्त, तुम्हारी वही वर देने वाली मूर्ति मेरे ध्यान करने योग्य है ॥ ६ ॥

गुरुभाई लोग तुम्हें तुम्हारी युवावस्था होने पर भी 'खोका' कहकर सम्बोधन करते। वही तुम इस कुटिल और लुब्ध संसार में बालक की तरह अवस्थित थे। बालक होने पर भी तुम पूज्य धर्म के सुरम्य मार्ग के सुचतुर रसिक थे अतएव तुम्हारी वन्दना करता हूँ ॥ ७ ॥

दुर्गम देश-विदेश के संसार-दुःख से तप्त, धर्म-पिपासु मनुष्य तुमको आश्रय कर शान्त सुमधुर रसपान कर तृप्त होकर शरीर से, वाणी से और मन में सुखी होते हैं इसीलिए तुम्हारी वन्दना करता हूँ ॥ ८ ॥

नियम पालन करने में प्रधान, स्वाध्याय में निरत, सर्वदा कृतार्थ,

आचारचारुचतुरं सुविचार-निष्ठम्,
शास्त्रोक्तकर्मनिपुणं प्रणतः सुबोधम् ॥ ९ ॥

बालस्वभावनियमादविरूढ़भावं,
यान्तं स्थलेऽपि कुपथा बहुदूरमेकम् ।
विश्वासदार्ढ्यबलतो शिवबोधयुक्तं
स्वामिन्यपिश्रुतिमति प्रणनाम देवम् ॥ १० ॥

श्रीरामकृष्ण संघस्य नेतृमन्यतमं वरम् ।
सुवोधानन्दनाथाख्यं प्रणमामि कृतांजलिः ॥ ११ ॥

इतिब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितं "श्रीमत्सुबोधानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम् ।

प्रणाममंत्रः—शुद्धबुद्धि प्रशान्ताय वैराग्यज्ञानमूर्तये ।
सुवोधाय नमस्तुभ्यं त्रिलोकं तीर्थी कुर्वते ॥



आचरण में मनोहर और चतुर, सुविचारनिष्ठ, शास्त्रोक्त कर्म में निरत, संसार के उस पार के पथिक, सुबोधानन्द ! तुमको प्रणाम करता हूं ॥ ९ ॥

बालक-स्वभाववश जल के भय से तुमने कभी भी नौका पर आरोहण नहीं किया, वरन् स्थल पथ से ही बहुत दूर के दुर्गम पथ में भी एकाकी पैदल चलकर गये हो । विश्वास की दृढ़ता के कारण तुम ज्ञानवान् स्वामी जी को शिवरूपी समझते थे । उन्हीं देवस्वभाव स्वामी सुबोधानन्द को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १० ॥

श्रीरामकृष्ण-संघ के अन्यतम वरणीय, सुबोधानन्द नाथ को मैं कृतांजलि होकर प्रणाम करता हूँ ॥ ११ ॥

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य द्वारा विरचित यह "श्रीमत्सुबोधानन्दस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



श्रीमदखण्डानन्ददशकम्

स्वामिभावघनानन्दविरचितम्

रामकृष्णगतप्राणमखण्डानन्दनामकम् ।
नमामि स्वामिपादं तं शुद्धसत्वसमन्वितम् ॥ १ ॥
सद्ब्राह्मणकुलोद्भूतं नानागुणविभूषितम् ।
वन्दे गंगाधरंचाहं बाल्यादेव विवेकिनम् ॥ २ ॥
अवतारवरिष्ठेन कृपा यस्मिन् स्वतः कृता ।
नमस्तस्मै कृतार्थाय नैष्ठिकब्रह्मचारिणे ॥ ३ ॥
विषयवीतरागाय संसारत्यागिने तथा ।
नमो मायाविमुक्ताय सन्यासव्रतधारिणे ॥ ४ ॥
साहसेनामितेनैव तीर्थभ्रमेण तत्परम् ।
परिव्राजमहं वन्दे युवानमकुतोभयम् ॥ ५ ॥
भ्रमणदति विज्ञंच दीन-दुःखेन कातरम् ।

शरीर, मन और प्राण श्रीरामकृष्णदेव के चरणों में अर्पित करने वाले, विशुद्ध सत्वगुणयुक्त, उन्हीं अखण्डानन्द स्वामी महोदय को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

सद्ब्राह्मण कुल में उत्पन्न, विविध गुणों से विभूषित एवं बाल्यकाल से ही वैराग्यवान उन्हीं गंगाधर महाराज की मैं वन्दना करता हूँ ॥ २ ॥

अवतार-श्रेष्ठ श्रीरामकृष्णदेव ने स्वभावतः ही जिन पर कृपा की, उन्हीं कृतार्थ नैष्ठिक ब्रह्मचारी (और सन्यासी) अखण्डानन्द स्वामी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

विषय से वैराग्यवान्, संसार-त्यागी, माया रहित एवं सन्यास-व्रत को धारण करने वाले उन्हीं अखण्डानन्द स्वामी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥

अपरिमित साहस से विभिन्न तीर्थों में भ्रमण करने वाले, परिव्राजक, निर्भीक सन्यासी अखण्डानन्द स्वामी की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ५ ॥

दुर्गम तीर्थ-भ्रमण में विशेष अभिज्ञ; दीन-दरिद्रों के दुःख से सदा कातर,

नमामि जीवसेवार्यै सर्वार्थार्पितजीवनम् ॥ ६ ॥
दुर्भिक्ष पीड़ितानां तु बहुधा प्राणरक्षकम् ।
नमामि नित्यं शिरसा अनाथबालसेविनम् ॥ ७ ॥
जीवेषु शिवबुद्धिश्चाप्यासीद् यस्य स्वभावतः ।
तस्य पादद्वयं चापि वन्दे नित्यं विशेषतः ॥ ८ ॥
बहूनामाश्रितानां तु भवव्याधिविनाशकम् ।
नमामि संघाचार्यं तं सर्वेषां च हितैषिणम् ॥ ९ ॥
परिणामिवयस्येव त्यक्तपूतकलेवरम् ।
नौमि गंगाधरं चैव रामकृष्णे समाहितम् ॥ १० ॥

इतिस्वामिभावघनानन्दविरचितं "श्रीमदखण्डानन्ददशकम्" समाप्तम् ।

प्रणाममंत्रः--अखण्डानन्दसिन्धौ यः सततं वै मीनायते ।
कर्म-योगातिनिष्ठायाखण्डानन्दाय ते नमः ॥



जीव-सेवा में अपना सर्वस्व यहां तक कि जीवन उत्सर्ग करने वाले उन्हीं अखण्डानन्द स्वामी को हम लोग प्रणाम करते हैं ॥ ६ ॥

विविध प्रकार से सेवा करके दुर्भिक्ष से पीड़ित लोगों की प्राण रक्षा करने वाले एवं अनाथ बालकों के सेवक, उन्हीं अखण्डानन्द स्वामी को मैं सिर झुका कर प्रणाम करता हूँ ॥ ७ ॥

जिनकी स्वाभाविक मनोवृत्ति के कारण जीव में शिव बुद्धि थी, उन्हीं के दोनों चरणों की मैं सर्वदा विशेष रूप से वन्दना करता हूं ॥ ८ ॥

बहुत से आश्रित भक्तों का संसार भय नाश करने वाले, सभी के परम हितैषी उन्हीं संघाचार्य अखण्डानन्द स्वामी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

श्री गुरुदेव द्वारा आदिष्ट कर्म का समापन करके परिणत उम्र में ही जिन्होंने पवित्र शरीर छोड़ दिया, श्रीरामकृष्ण देव में एकाग्रचित्त उन्हीं गंगाधर महाराज को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १० ॥

स्वामी भावघनानन्द द्वारा विरचित "श्रीमदखण्डानन्ददशकम्" समाप्त हुआ।



स्वामिअभेदानन्दाष्टकम्*

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम्

समाधियोगेन किशोरभूतस्त्वं सिद्धिमास्थाय विरक्तिमूलाम् ।
श्रीरामकृष्णस्य विशुद्ध पादान्तिकं गतोऽसि प्रविविक्तचेताः ॥ १ ॥
कालीतपस्वीति यशोंऽशुमाला विस्तीर्णतां श्रीभगवत्प्रियेषु ।
गता वतेयं धवला मनस्विस्थिता तव श्वेतमहोर्मितुल्या ॥ २ ॥
प्रतीच्यदेशेषु विवेकदेवैराकारितो द्वैधविहीनभावः ।
गतः प्रचारार्थमभयं त्वमेको वेदान्तधर्मस्य महता बलेन ॥ ३ ॥
श्रीरामकृष्णस्तवनं विरच्य प्राप्ता जनन्यास्त्ववचेयमाशीः ।
कन्ठे वसस्त्वस्य सरस्वती सा धन्यः प्रसादेन ततोऽम्बिकायाः ॥ ४ ॥

समाधियोग के द्वारा वैराग्यमूलक सिद्धि के उद्देश्य से जिन्होंने किशोरावस्था में शुद्धचित्त होकर श्रीरामकृष्णदेव के विशुद्ध चरणों में आश्रय ग्रहण किया, उन्हीं अभेदानन्द महाराज के युगल चरणों में मैं प्रणत हूँ ॥ १ ॥

श्रीरामकृष्ण के प्रिय भक्तगणों में एवं मनस्वी गणों में काली-तपस्वी नाम से जिनकी शुभ्र यशोराशि श्वेतमहोर्मि के समान फैली थी, उन्हीं स्वामी अभेदानन्द महाराज के चरणों में मैं प्रणत हूं ॥ २ ॥

स्वामी विवेकानन्द के आह्वान पर जो द्विविधा रहित होकर अकेले ही पूर्ण मनोबल से वेदान्त-धर्म का प्रचार करने के लिए पाश्चात्य देश में गये, उन्हीं स्वामी अभेदानन्द महाराज के चरणों में मैं प्रणत हूँ ॥ ३ ॥

श्रीरामकृष्ण की स्तव रचनाकर जननी शारदा देवी द्वारा 'तुम्हारे कन्ठ में सरस्वती का वास हो' यह आशीर्वाद जिन्होंने पाया, श्रीमती शारदादेवी के अनुग्रह से जो धन्य हुये, उन्हीं स्वामी अभेदानन्द महाराज के चरणों में मैं प्रणत हूँ ॥ ४ ॥

---

* रचयिता के द्वारा अनूदित्--प्रकाशक ।

अद्वैततत्वाधिगमेन देव श्रीरामकृष्णस्य विशेषमारात् ।
माहात्म्यमेत्य क्रियते प्रचार स्त्वया स्म शुद्ध प्रभुदेव सत्यम् ॥ ५ ॥
सत्यश्चिदानन्दमयोऽयमात्माऽभेदोपलक्ष्यो यत एव तत्वम् ।
अन्वर्थनामा जगति प्रसिद्धस्त्वमेव मत्वाऽन्यदपास्य सर्वम् ॥ ६ ॥
नानागुणानां समुपाश्रयोऽपि ज्ञानैरनल्पैः समलंकृतस्त्वम् ।
शक्त्या महत्या विभूषितश्चाऽहंकारलेशे न विवर्जितात्मा ॥ ७ ॥
नमोऽस्तु राजगणार्चिताभ्यां लोकेऽपि दुर्दर्शसुदुर्लभाभ्याम् ।
विराजितारिव्यसनोपमाभ्यां भक्तैः समाराधितपद्युगाभ्याम् ॥ ८ ॥

इतिब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितं "स्वामिअभेदानन्दाष्टकम्" समाप्तम् ।

प्रणाममंत्रः—शास्त्रज्ञाय प्रशान्ताय वेदान्तप्रतिपादिने ।
नमोऽस्त्वभेदपादाय ज्ञानविज्ञानदीप्तये ॥



जिन्होंने अद्वैत तत्व का साक्षात्कार कर एवं श्रीरामकृष्ण देव के विशेष माहात्म्य को जानकर उसका प्रचार किया एवं अति पवित्र प्रभु श्रीरामकृष्ण की अन्तर्देवता रूप से उपलब्धि की उन्हीं स्वामी अभेदानन्द महाराज के चरणों में मैं प्रणत हूँ ॥ ५ ॥

सत्य चिदानन्दात्मक यह आत्मा अभेद के द्वारा उपलक्षित है । तुमने अन्य सब कुछ परित्याग कर इस आत्म तत्व को जान लिया है । इसीलिए अभेदानन्द इस सार्थक नाम से तुम जगत् में प्रसिद्ध हुए हो ॥ ६ ॥

तुम नाना गुणों के आश्रय होकर, प्रचुर ज्ञान के द्वारा अलंकृत होकर एवं महाशक्ति से विभूषित होकर भी अहंकार के लेश मात्र से भी रहित यतिराज थे, उन्हीं स्वामी अभेदानन्द महाराज के दोनों चरणों में मैं प्रणत हूँ ॥ ७ ॥

राजाओं द्वारा अर्चित, संसारी लोगों के लिए दुर्लभ, आश्रितों के लिए सुलभ एवं कामादि शत्रुओं के नाशक तुम्हारे दोनों चरणों में नमस्कार ॥ ८ ॥

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य द्वारा विरचित यह "स्वामिअभेदानन्दाष्टकम्" समाप्त हुआ ।



श्रीमदद्वैतानन्दस्तोत्रम्*

ब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितम्

नमोऽस्तुते देववरार्थित क्रियाकृते समस्तान्मनुजे यशस्विने ।
'बूड़ो तु गोपाल' इति प्रथावृते तीर्थाटने लब्ध सुपुण्य वर्मणे ॥ १ ॥
युवानमेवापि गुरुं प्रियं चिरं विनेय वृद्धा वृणते तपस्विनः ।
तथा त्वमद्वैतपराभिनिष्ठितः क्षमोऽभियाने स्वगुरोरमायया ॥ २ ॥
तपः समाधौ निरतः स सर्वदाप्रिजुर्बलिष्ठः परमाप्तितर्षुकः ।
समाप्य कर्माणि फलेष्वनाश्रयो यतिर्नियम्येन्द्रियकायमानसः ॥ ३ ॥
यताशनः संयतभाषणो व्रती गुरोः क्रियासाधनजागृतिर्यमी ।
अहन्यन्यक्षयसिद्धिहेतवे चकार सर्वं भगवन्नियन्त्रितः ॥ ४ ॥

प्रभु का ईप्सित कर्म करने वाले, मनुष्य समाज में सम्यक् रूप से यशस्वी, तीर्थ पर्यटन के द्वारा लब्ध पुण्यमयविग्रह, 'बूड़ो गोपाल' नाम से प्रसिद्ध तुमको नमस्कार ॥ १ ॥

तपस्वी वृद्ध शिष्यों ने जिस प्रकार युवक शंकराचार्य के रूप में प्रिय गुरु को वरण किया था, उसी प्रकार अद्वैतपरायण निष्ठासम्पन्न तुमने भी अपने गुरु के निकट अमायिक भाव से गमन कर अपना जीवन धन्य किया । इसीलिये तुमको नमस्कार ॥ २ ॥

तुम सरल, बलिष्ठ, परम वस्तु की प्राप्ति के लिये तृष्णा युक्त, श्रेष्ठ सन्यासी देहधारी हो । इन्द्रिय और मन को संयत करके फलाकांक्षा रहित होकर कर्म समर्पण पूर्वक सर्वदा तपस्या और समाधि में निरत रह कर तुमने जीवन धन्य किया । इसीलिए तुमको नमस्कार ॥ ३ ॥

आहार में संयत, वार्तालाप में संयत, साधन में निष्ठासम्पन्न, गुरु के कर्म-साधन में जाग्रत, अक्षय-सिद्धि प्राप्ति के लिए संयतेन्द्रिय होकर प्रतिदिन भगवान् द्वारा यंत्रवत् चालित होकर गुरु-सेवा के माध्यम से समस्त कर्म करने वाले यतिराज को नमस्कार ॥ ४ ॥

---

* रचयिता के द्वारा अनूदित्—प्रकाशक ।

परेयमेव कृतिभिः समादृताऽपरा च विद्या न तथा सुशोभना।
विविच्य साधुः स परां समाददे न चापरस्यां रमते स्म संयमी ॥ ५ ॥
प्रसूनसारग्रहणे समारतो मधुव्रततृप्ततयाऽस्फुटस्वरः।
परात्मनित्याप्तरसालयग्रहो मुनिर्न वाचं वदति प्रियंकरः ॥ ६ ॥
सशारदश्रीभगवद्गदाधरे मनोवचोभिः सहदेहमेव सः।
समर्पयामास विरज्य सर्वतः ससम्पदो बन्धुजनात्ममित्रतः ॥ ७ ॥
स्वपार्षदत्वेन वृतस्त्वमस्यहो स्वयं--प्रभू-श्रीभगवन्महात्मभिः।
न चान्यथात्वं प्रतियाति संसृतौ विधेर्विधानं यदिह प्रधार्यते ॥ ८ ॥
नभो विशाले विततोर्द्ध्ववर्त्मनि ज्वलत्प्रभो मेदुरभास्वरग्रहः।
प्रतीयमानोऽधिविराजसे यथा त्वमात्मनेशेन परेण चिन्मयः ॥ ९ ॥

पराविद्या कृतिगणों के द्वारा समादृत है, अपराविद्या उस प्रकार से शोभनीय नहीं है। इस प्रकार विचार करके जिन संयमी ने पराविद्या को ग्रहण किया और अपराविद्या में जो रत नहीं हुए, उन्हीं यतिवर को नमस्कार ॥ ५ ॥

मधुमक्खी फूल से मधु ग्रहण करके तृप्त होकर अस्फुट गुंजार करती रहती है किन्तु जो प्रियंकर सन्यासी नित्य प्राप्त आनन्द के आश्रय-स्वरूप परमात्मा को ग्रहण कर शान्त हो गये थे उन्हीं यतिवर स्वामी अद्वैतानन्द को नमस्कार करता हूँ ॥ ६ ॥

जिन्होंने सम्पदा के साथ-साथ अपने बन्धु, मित्र और स्वजनों से सब प्रकार से विरक्त होकर श्रीमती मां शारदा के साथ भगवान् श्री गदाधर को मन, वाक्य और शरीर समर्पित कर दिया, उन्हीं यतिराज को नमस्कार ॥ ७ ॥

अहा ! स्वयं प्रभु भगवान् महात्मा श्रीरामकृष्ण ने जिनको अपने पार्षद रूप में वरण किया उन्हीं महासुकृति सम्पन्न-भगवान् द्वारा सार्थक रूप से चिह्नित एवं ईश्वर-कृपा-धन्य-जीवन यतिराज को नमस्कार ॥ ८ ॥

विशाल आकाश में परिव्याप्त, ऊर्ध्व मार्ग में प्रज्ज्वलित प्रभाविशिष्ट स्निग्ध उज्ज्वल ग्रह के समान तुम परमेश्वर के साथ चिन्मय शरीर से सदा विराज रहे हो, इसीलिए तुमको नमस्कार ॥ ९ ॥

अद्वैतानन्दनाथाय नमस्तुभ्यं महाप्रभो।
पुण्यपुंजविपाकेभ्य गृहीतयतिमूर्तये ॥ १० ॥
त्वादृशानां कृपादृष्ट्या त्वत्प्रभूचरणाब्जयोः।
मादृशानां भवेत् स्नानं प्रार्थनेयं प्रपूर्यताम् ॥ ११ ॥

इतिब्रह्मचारिमेधाचैतन्यविरचितं "श्रीमदद्वैतानन्दस्तोत्रम्" समाप्तम्।

प्रणाममंत्रः--प्रौढ़ायाद्वैतपादाय शिवध्यानपराय च।
कारुण्यपूर्णचित्ताय सत्यनिष्ठाय ते नमः ॥



श्रीमत्तुरीयानन्दप्रशस्तिप्रणामांजलिः*

प्राध्यापकपांचुगोपालवन्द्योपाध्यायविरचितः

श्रोत्रियकुलमलंकुर्वाणो हि नैकष्यकुलीनात्मजः स्वयम्।
बभूव किलान्वर्थनामासौ रामकृष्ण-पार्षद-हरिनाथः ॥ १ ॥

हे महाप्रभो ! पुण्यराशि के फलस्वरूप वन्दनीय सन्यासी विग्रह धारण करने वाले स्वामी अद्वैतानन्द, तुमको नमस्कार ॥ १० ॥

तुम लोगों के समान महापुरुषों की कृपा दृष्टि से प्रभु श्रीरामकृष्ण के चरण-कमलों में हम लोगों के समान लोगों को स्थान मिले, यही प्रार्थना पूर्ण करो ॥ ११ ॥

ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य द्वारा विरचित यह "श्रीमदद्वैतानन्दस्तोत्रम्" समाप्त हुआ।



श्रीरामकृष्ण के पार्षद हरिनाथ वेदनिष्ठ ब्राह्मण कुल को अलंकृत कर स्वयं नैकष्यकुलीन के पुत्र रूप में आविर्भूत हुये थे। उनका 'हरिनाथ' नाम सच में ही सार्थक हुआ था ॥ १ ॥

---

* रचयिता के द्वारा अनूदित्—प्रकाशक।

उत्तमः-श्लोकः श्रीहरिरेव रामकृष्ण-मूर्तिर्हि साम्प्रतम् ।
यदीयनाथत्वेनावश्यं सार्थकनामाभूत् स योगिराट् ॥ २ ॥
कलिकातायां लब्धजनुरसौ नैष्ठिकब्राह्मणाचाररतः ।
विद्या-विनय-सम्पन्नश्चैव शास्त्रव्यसनी वै तथानिशम् ॥ ३ ॥
'ब्रह्म सत्यं हि जगन्मिथ्ये' ति श्रुत्वा सर्ववेदान्तसारम् ।
श्रीरामकृष्ण-वक्तृ-निःसृतं प्राभून्नूनं ब्रह्मतत्ववित् ॥ ४ ॥
अत्याश्रमी स जग्राह नाम सदासंगं तु चरमार्थवाची ।
सच्चिदानन्दतत्वे तस्मिन् निमग्नो भृशं नु सुसमाहितः ॥ ५ ॥
सशल्याः कारिता विस्फोटाः सुतरां येन विकारशून्येन ।
चितिर्हि भिन्ना देहादिभ्यः सत्यं खल्विति दृढ़ प्रत्ययात् ॥ ६ ॥

पुंजीभूत अज्ञानान्धकार को दूर करने में समर्थ; महाकीर्ति के द्वारा विश्रुत श्रीहरि ही वर्तमान युग में रामकृष्ण-मूर्ति धारण करके अवतीर्ण होकर उनके अध्यात्मपथ प्रदर्शनकारी गुरु हुये थे। इसीलिए वे योगिराज (हरिनाथ) यथार्थ नाम युक्त थे ॥ २ ॥

कलकत्ता में जन्म ग्रहण कर वे निष्ठावान् ब्राह्मण के समान आचरण करने में परायण, विद्या और विनय से सम्पन्न एवं निरवच्छिन्न भाव से शास्त्र के पाठ, उसकी आलोचना और उसी की चिन्ता में मग्न थे ॥ ३ ॥

सभी वेदान्तों का चरम तात्पर्य है—'ब्रह्म ही सत्य है, जगत् मिथ्या है।' श्रीरामकृष्ण के श्रीमुख से यह सारसिद्धान्त सुनकर वे निश्चय ही प्रकृष्ट रूप में ब्रह्मतत्त्ववित् हुये थे ॥ ४ ॥

सन्यासाश्रम में प्रवेश कर जो सर्वदा सभी विषयों के संग और सम्पर्क से रहित थे, चरम और चतुर्थ रूप में कल्पित 'तुरीय' चैतन्य के बोधक 'तुरीयानन्द' नाम ग्रहण किये थे, उन्हीं सच्चिदानन्द रूपी तुरीय तत्व में सुसमाहित होकर वे गम्भीर भाव में मग्न रहते थे ॥ ५ ॥

चैतन्य पदार्थ निश्चय ही शरीर से उत्पन्न नहीं होता—यह मतवाद अवश्य ही सत्य है—इस प्रकार दृढ़ विश्वासवश जिन्होंने अपने शरीर से उद्गत दूषित और यंत्रणादायक विस्फोटक पदार्थों को शल्यचिकित्सा के द्वारा निर्विकार

आत्मा स्वतन्त्रः पृथग्भूतो देहादिसंघाताद् वै ध्रुवम् ।
इति स्फुटं प्रदर्शितं येन तं नमामि हि तुरीयानन्दम् ॥ ७ ॥

तुरीये पर आनन्दो यस्य तूपाधिवर्जिते चिदात्मके ।
तं तुरीयानन्दमाचार्यं 'विवेक'-प्रियं भक्त्या नमामि ॥ ८ ॥

अद्वैतदृष्ट्या सहि 'नेति' वादीत्यतो जगन्नैवतु वस्तुतः सत् ।
दृष्ट्यान्यया ब्रह्म तथा जगद्वै सत्यं न मिथ्येति सुभाषमाणः ॥ ९ ॥

आसीत् स खलु वेदान्तः प्रमूर्तो रक्तमांसयुक् ।
लीलावादमथाश्रित्य जीवसेवाव्रती महान् ॥ १० ॥

विवेक-स्नेह-सन्नद्धो गत ऊर्व्यास्तु पश्चिमम् ।

चित्त से निर्मूल करा लिया था एवं जिन्होंने यह सत्य आचरण के द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया कि देह के संग के पदार्थ समूह से आत्मा अवश्य ही स्वतंत्र है और सम्पूर्ण पृथक् भाव से अवस्थित है— उन्हीं तुरीयानन्द को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६-७ ॥

अज्ञान और उससे कल्पित सभी उपाधियों से तत्वतः पृथक्, चैतन्यात्मक, तुरीय ब्रह्मवस्तु से जिनका परम आनन्द उद्भासित होता, विवेकानन्द के अत्यंत प्रिय या विवेकानन्द जिनके अत्यंत प्रिय थे उन्हीं आचार्य तुरीयानन्द को मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

अद्वैत दृष्टि से वे 'नेति' वादी थे। अतएव इस दृष्टि से जगत् वस्तुतः सत्य नहीं है, किन्तु अद्वैत से भिन्न अन्य दृष्टि भंगी का आश्रय करके वे स्पष्ट ही कहते थे कि ब्रह्म सत्य है एवं उससे उत्पन्न, उसका अंश और उसी में तन्मय भाव से ओतप्रोत जगत् भी सत्य है, मिथ्या नहीं। इस प्रकार वे थे मानों रक्त-मांस से बने हुये प्रकृष्ट मूर्तिधारी वेदान्त। वे उच्चकोटि के एक अति महान् जीव सेवाव्रती हुये थे ॥ ९-१० ॥

विवेकानन्द के प्रति एकान्त आन्तरिक प्रेमवश अत्यन्त उत्साहान्वित होकर वे पृथ्वी के पश्चिम भाग में (अर्थात् पाश्चात्य देश में) गये एवं वहाँ के

दर्शितवान् स्वकं दिव्यं वैदान्तिकं हि जीवनम् ॥ ११ ॥
धन्य-धन्यः सुधन्योऽसौ यमिनां मूर्ध्नि संस्थितः ।
तं 'तुरीयं' 'सनाथं' वै प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥ १२ ॥

इतिप्राध्यापकपाँचुगोपालवन्द्योपाध्यायविरचितः "श्रीमत्तुरीयानन्द-प्रशस्तिप्रणामांजलिः" समाप्ता ।

प्रणाममंत्रः —फुल्लचित्ताय धीराय गीतानिर्माल्य-मालिने ।
तुरीयाम्बुधिमग्नाय तुरीयाय नमोऽस्तुते ॥

अधिवासियों के निकट अपना दिव्य वेदान्तिक जीवन उन्होंने प्रदर्शित किया ॥ ११ ॥

संयमियों के शिरोदेश में अवस्थान करके वे (तुरीयानन्द) सच में ही धन्य-धन्य, अति धन्य हैं । श्रीरामकृष्ण रूपी जगद्गुरु श्रीहरि द्वारा नाम युक्त (श्री गुरु के अभय आश्रय प्राप्त) उन्हीं तुरीयानन्द को मैं मुहुर्मुहुः प्रणाम करता हूँ ॥ १२ ॥

प्राध्यापक पाँचुगोपाल वन्द्योपाध्याय द्वारा विरचित "श्रीमत्तुरीयानन्द-प्रशस्तिप्रणामांजलिः" समाप्त हुई ।

गणेशप्रणामः

एकदन्तं महाकायं लम्बोदरं गजाननं।
विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम् ॥



गणेशप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातःस्मरामि गणनाथबन्धुं
सिन्दूरपूरपरिशोभित गण्डयुग्मम् ।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्ड-
माखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि चतुराननवन्द्यमान-
मिच्छानुफलमखिलं च वरं ददानम् ।
तं तुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं
पुत्रं विलासचतुरं शिवयोः शिवाय ॥ २ ॥

प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्त-शोक-
दावानलं गणविभुं वरकुंजराजशास्यम् ।

एकदन्त, महाकाय, लम्बोदर, गजानन एवं विघ्नविनाशकारी उन्हीं हेरम्बदेव को मैं प्रणाम करता हूं।



अनाथों के बन्धु, दोनों गण्ड सिन्दूरस्रोत से परिशोभित, प्रबल विघ्न का विनाश करने के लए प्रचण्ड दण्डस्वरूप, इन्द्रादि सुरनायक गणों के द्वारा पूजित उन्हीं गणेश का मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ ।। १ ॥

ब्रह्मा के द्वारा पूजित एवं इच्छानुयायी अखिल वर दान करने वाले, स्थूलोदर, वासुकीनाग को यज्ञोपवीत के समान धारण करने वाले, विलास-निपुण, शिव-दुर्गा के पुत्र गणनायक गणेश को मैं प्रातःकाल मंगल प्राप्ति की कामना करने के लिये प्रणाम करता हूं ॥ २ ॥

अभयदाता, भक्तगणों के शोकों का दहन करने वाले दावाग्निस्वरूप, गण-समूहों के पति, उत्तम गजनानविशिष्ट, अज्ञानस्वरूप अरण्य के विनाशक

अज्ञानकाननविनाशनहव्यवाह-
मुत्साहवर्धनमहं सुतमीश्वरस्य ॥ ३ ॥
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकं।
प्रातरुत्थाय सततं प्रपठेत् प्रयतः पुमान् ॥ ४ ॥

गुरुस्तोत्रम्

विश्वसारतन्त्र

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णू गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुदेव परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ २ ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ३ ॥

दावानलस्वरूप एवं उत्साहवर्धक उन्हीं महेश्वर-पुत्र को मैं प्रातःकाल प्रणाम करता हूँ ॥ ३ ॥

पुण्यदायक ये तीनों श्लोक सर्वदा साम्राज्यदायक हैं। प्रातःकाल गात्रोत्थान कर भक्तिपूर्वक पुरुष को सर्वदा इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ॥ ४ ॥

गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही विष्णु और गुरु ही देव महेश्वर हैं। गुरु ही परब्रह्म हैं (अर्थात् गुरु ही सब देव-देवीस्वरूप हैं)। उन्हीं श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ १ ॥

जिनके द्वारा अखण्डमण्डलाकार चराचर जगत् व्याप्त है उन परब्रह्म के स्वरूप का जिन्होंने (कृपापूर्वक) दर्शन कराया है, उन्हीं श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ २ ॥

(मेरे सदृश) अज्ञानतिमिरान्ध व्यक्ति के चक्षु को जिन्होंने ज्ञानांजनशलाका द्वारा उन्मीलित किया है, उन्हीं श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ ३ ॥

स्थावरं जंगमं व्याप्तं येन कृत्स्नं चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ४ ॥
चिद्रूपेण परिव्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ५ ॥
सर्वश्रुतिशिरोरत्न-समुद्भासितमूर्तये ।
वेदान्ताम्बुज-सूर्याय तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ६ ॥
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनं ।
बिन्दुनादकलातीतं तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ७ ॥
ज्ञानशक्तिसमारूढ़स्तत्वमालाविभूषितः ।
भुक्तिमुक्ति प्रदाता च तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ८ ॥
अनेकजन्मसंप्राप्त-कर्मबन्धविदाहिने ।
आत्मज्ञानाग्निदानेन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ९ ॥

स्थिर या गतिशील, चेतन या अचेतन सब वस्तुएँ जिनके द्वारा परिव्याप्त हैं उन परब्रह्म के स्वरूप का जिन्होंने दर्शन कराया है, उन्हीं श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ ४ ॥

चर या अचर-युक्त तीनों लोक, समस्त जगत् जिन चैतन्य-स्वरूप के द्वारा परिव्याप्त है उसका दर्शन जिन्होंने कराया है, उन्हीं श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ ५ ॥

जिनकी मूर्ति वेदान्त-ज्ञान के द्वारा समुद्भासित है, जो वेदान्तस्वरूप कमल के उन्मेलक सूर्यस्वरूप हैं, उन्हीं श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ ६ ॥

शाश्वत, व्योमातीत, निरंजन चैतन्यस्वरूप, बिन्दु, नाद और कला से अतीत उन्हीं श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ ७ ॥

ज्ञान-शक्ति-समारूढ़ तत्वमाला द्वारा विभूषित एवं भक्ति और मुक्ति को देनेवाले उन्हीं श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ ८ ॥

आत्मज्ञानरूपी अग्नि के द्वारा बहुत जन्मों के संचित कर्मरूपी बन्धन को निःशेष रूप से दग्ध करने वाले उन्हीं श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ ९ ॥

शोषणं भवसिन्धोश्च प्रापणं सारसम्पदः ।
यस्य पादोदकं सम्यक् तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १० ॥

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः ।
तत्वज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ११ ॥

मन्नाथः श्री जगन्नाथो मद्गुरुः श्री जगद्गुरुः ।
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १२ ॥

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम् ।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १३ ॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम् ।।

जिनके चरणामृत का पान करने से भवसमुद्र सम्यक् रूप से शुष्क हो जाता है एवं जिसके फलस्वरूप सार-सम्पदा अर्थात् अमृतत्व की सम्यक् रूप से प्राप्ति होती है, उन्हीं श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ १० ॥

गुरु से बड़ा और कोई तत्त्व नहीं है, गुरु-सेवा सर्वश्रेष्ठ तपस्या है एवं गुरु के सम्बन्ध में जानना ही श्रेष्ठ ज्ञान है । इसका फल कैवल्य मोक्ष है । ऐसे श्री गुरुदेव को नमस्कार ॥ ११ ॥

मेरे ईश्वर ही जगत् के ईश्वर हैं, मेरे गुरु ही श्री जगद्गुरु हैं एवं मेरी आत्मा ही सब प्राणियों की आत्मा है—यह ज्ञान जिन गुरु की कृपा से प्राप्त होता है, उन्हीं गुरु को नमस्कार ।। १२ ॥

गुरु ही मूल कारण हैं किन्तु स्वयं कारणहीन हैं, गुरु ही परमदेवता हैं । गुरु से श्रेष्ठतर और कोई नहीं है । इस प्रकार के श्री गुरुदेव को नमस्कार ।। १३ ।।

ब्रह्मानन्दस्वरूप, परमसुखद, निर्लिप्त, ज्ञानमूर्ति, द्वन्द्वातीत, आकाश के समान सर्वव्यापी, 'तत्वमसि' आदि वाक्यों के लक्ष्य, एक, नित्य, विमल, अचल,

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम् ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥ १४ ॥

शिवस्तोत्रम् *

स्वामिविवेकानन्दविरचितम्

ॐ नमः शिवाय

निखिलभुवनजन्मस्थेमभङ्ग प्ररोहाः
अकलितमहिमानः कल्पिता यत्र तस्मिन् ।
सुविमलगगनाभे त्वीशसंस्थेऽप्यनीशे
मम भवतु भवेऽस्मिन् भासुरो भावबन्धः ॥ १ ॥

निहतनिखिलमोहेऽधीशता यत्र रूढ़ा
प्रकटितपरप्रेम्ना यो महादेवसंज्ञः ।
अशिथिलपरिरम्भः प्रेमरूपस्य यस्य
हृदि प्रणयति विश्वं व्याजमात्रं विभुत्वम् ॥ २ ॥

सबकी बुद्धि के साक्षी, भावातीत एवं त्रिगुणरहित उन्हीं सद्गुरु को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १४ ॥

जिनकी कल्पना से विश्व की सृष्टि, स्थिति और लय होती है, सांसारिक वैभव जिनके मत में अगणित अंकुरों के समान हैं, उन्हीं विमल आकाश के समान परम ईश महादेव से मेरा प्रेम का बन्धन सतत् रूप से समुज्ज्वल रहे ॥ १ ॥

जो ईश्वरस्वरूप हैं, मोह से परे हैं, परमप्रेम के कारण जिन्होंने नीलकंठ की संज्ञा से स्वयं को विभूषित किया, जो प्रेमस्वरूप हैं, जिनके प्रगाढ़ स्नेहालिंगन में संसार के सभी ऐश्वर्य माया के विक्षेप जान पड़ते हैं, उन्हीं महादेव को नमस्कार करता हूं ॥ २ ॥

---

* विवेकानन्द सोसाइटी के स्वत्वाधिकारियों की अनुमति से लिया गया है—प्रकाशक । इसके अनुवादक यशोदाकान्त राय हैं ।

वहति विपुलवातः पूर्व संस्काररूपः
विदलति बलवृन्दं घूर्णितेवोर्मिमाला ।
प्रचलति खलु युग्मं युष्मदस्मत् प्रतीतम्
अतिविकलितरूपं नौमि चित्तं शिवस्थम् ॥ ३ ॥

जनकजनितभावो वृत्तयः संस्कृताश्च
अगणन बहुरूपा यत्र चैको यथार्थः ।
श्रमितविकृतिवाते यत्र नान्तर्बहिश्च
तमहह हरमीड़े चित्तवृत्तेर्निरोधम् ॥ ४ ॥

गलिततिमिरमालः शुभ्रतेजः प्रकाशः
धवलकमलशोभः ज्ञानपुंजाट्टहासः ।
यमिजनहृदिगम्यो निष्कलो ध्यायमानः
प्रणतवतु मां सः मानसो राजहंसः ॥ ५ ॥

जिस प्रकार प्रबल हवा के झोंके से समुद्र की लहरें आघूर्णित होती हैं उसी प्रकार जिनकी विदलनकारी शक्ति से पूर्व के संस्कार समूह विदलित होते हैं, जो मैं और तुम के द्वैतभावरूपी विषम विकार से विचलित नहीं होते, उन महादेव को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ३ ॥

कारण और कार्यभावस्वरूप, नाना प्रकार की वृत्तियों और संस्कारों के स्वरूप, एक ब्रह्मभाव में स्थित, सभी विकारों का प्रशमन करने वाले, अन्दर और बाहर एक ही आकार धारण करने वाले, चित्त-वृत्ति का निरोध करने वाले उन्हीं हर महादेव को मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ ॥ ४ ॥

अज्ञानान्धार के पार शुभ्रतेज में जिनका प्रकाश है, सफेद कमल जिनकी शोभा है, जिनके अट्टहास से ज्ञानपुंज झरित होता है, जो संयमियों के हृदय में निवास करने वाले हैं, अखण्ड भाव से ध्यान में समाहित हैं, वे ही मेरे मानसरोवर के राजहंस मेरी रक्षा करें ॥ ५ ॥

दुरितदलनदक्षं दक्षजादत्तदोषं
कलितकलिकलंकं कम्रकह्लारकान्तम् ।
परहितकरणाय प्राणप्रच्छेदप्रीतं
नतनयननियुक्तं नीलकन्ठं नमामः ॥ ६ ॥

इतिस्वामिविवेकानन्दविरचितं "शिवस्तोत्रम्" समाप्तम् ।

अम्बास्तोत्रम्*

॥ स्वामिविवेकानन्दविरचितम्

का त्वं शुभे शिवकरे सुखदुःखहस्ते
आघूर्णितं भवजलं प्रबलोर्मिभंगैः ।
शान्ति विधातुमिह किं बहुधा विभग्नाम्
मातः प्रयत्नपरमासि सदैव विश्वे ॥ १ ॥

दुरितों (दुष्कर्म करने वालों) का विनाश करने वाले, दक्ष की पुत्री सती के प्राणवल्लभ, कलि के मल का अपहरण करने वाले, कह्लार के फूल के समान कान्ति वाले, परहितार्थ प्राणत्याग करने के लिए सदा उद्यत तथा प्रणत जनों की रक्षा करने वाले उन्हीं नीलकण्ठ को मैं बारम्बार नमस्कार करता हूं ॥ ६ ॥

स्वामी विवेकानन्द द्वारा विरचित "शिवस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।

घोर ऊर्मियों (लहरों की भंगिमा) में, महावर्त (झंझावात) के साथ, इस भवसागर मे 'माँ' तुम खेल रही हो। हे शुभंकरि ! तुम शिवमया मूर्ति धारण कर घोर रूप में सुख-दुःख को साथ लेकर सबको छल रही हो। इस व्यस्त संसार में, अशान्त पृथ्वी पर शान्ति प्रदान करने के इतने से कार्य के लिये तुम सदैव प्रयत्नशील हो ॥ १ ॥

---

* विवेकानन्द सोसाइटी के स्वत्वाधिकारियों की अनुमति से लिया गया है—प्रकाशक । इसके अनुवादक स्वामी रामकृष्णानन्द हैं ।

सम्पादयन्त्यविरतं त्वविरामवृत्ता
या वै स्थिता कृतफलं त्वकृतस्य नेत्री।
सा मे भवत्वनुदिनं वरदा भवानी
जानाम्यहं ध्रुवमियं धृतकर्मपाशा ॥ २ ॥
किं वा कृतं किमकृतं क्व कपाललेखः
किं कर्म वा फलमिहास्ति हि यां विना भोः।
इच्छागुणैर्नियमिता नियमाः स्वतंत्रै-
र्यस्याः सदा भवतु सा शरणं ममाद्या ॥ ३ ॥
सन्तानयन्ति जलधिं जनमृत्युजालं
सम्भावयन्त्यविकृतं विकृतं विभग्नम्।
यस्या विभूतय इहामित शक्तिपालाः
नाश्रित्य तां वद कुतः शरणं व्रजामः ॥ ४ ॥

जिसने कर्मबन्धन को काट दिया है, उसे तुम हमेशा के लिये अपना दास बनाकर शान्तिरूपी अमृत की धारा नित्यप्रति पिला रही हो। जो काम करके फल की आकांक्षा करता है और वह फल तुम्हें अर्पित करना चाहता है उसके लिये, हे हरघरणि ! तुम सदा ही व्याकुल रहती हो। माँ, मैं तुमको जानता हूं। तुम (जीव को) कर्मपाश में बाँधती हो, परन्तु मुझे मत बाँधो, मेरी दुःखरूपी रात्रि का नाश करो ॥ २ ॥

जगत् में प्रकट पाप-पुण्यरूपी कार्य किस कारण से होते हैं अथवा ये ललाट पर लिखे होते हैं इस विषय की कुछ मीमांसा न कर पाने के कारण कुछ लोग अदृष्ट को ही इसका कारण मान लेते हैं और यह समझ लेते हैं कि धर्म-अधर्म या सुख-दुख में कोई निश्चित नियम नहीं है। यह संसार जिनके स्वतंत्र विधान से बँधा हुआ है, मैं उन्हीं मूल शक्ति का सदा ही आश्रित हूँ ॥ ३ ॥

जिनकी विभूति से समुदित लोकपाल अपनी अपरिमित शक्ति का प्रयोग अबाधगति से करते हैं; जिस समुद्र में जन्म-मृत्यु, जरा-व्याधि की लहरें निरन्तर उठती रहती हैं और यह अथाह सागर जिसके द्वारा रचा गया है—प्रकृति में

मित्रे रिपौ त्वविषमं तवपद्मनेत्रम्
स्वस्थेऽसुखे त्ववितथस्तव हस्तपातः ।
छाया मृतेस्तव दया त्वमृतंच मातः
मुंचन्तु मां न परमे शुभदृष्टयस्ते ॥ ५ ॥
क्वाम्बा शिवा क्व गृणनं मम हीनबुद्धेः
दोर्भ्यां विधर्तुमिव यामि जगद्विधात्रीम् ।
चिन्त्यं श्रिया सुचरणं त्वभयप्रतिष्ठं
सेवापरैरभिनुतं शरणं प्रपद्ये ॥ ६ ॥
या मां चिराय विनयत्यतिदुःखमार्गैः
आसिद्धितः स्वकलितैर्ललितैर्विलासैः ।

विकृति पैदा करने वाले ये सब कर्मचारी जिनके बल से बलवान् हैं, उन्हीं की अर्चना करो ॥ ४ ॥

माँ, तुम अपनी कृपादृष्टि से अमृत की वर्षा शत्रु और मित्र सभी पर समान रूप से करती हो। धनवान् और निर्धन दोनों की रात-दिन समान भाव से रक्षा करती हो। मृत्यु या अमरत्व दोनों में तुम्हारी कृपा परिलक्षित होती है। मैं तुम्हारे निरुपम चरणों में याचना करता हूँ कि मुझको भूलना मत। तुम्हारी शुभदृष्टि से मेरे सब प्रकार के ताप दूर हों ॥ ५ ॥

तुम विश्व का प्रसव करने वाली हो एवं मैं क्षुद्र बुद्धि जीव हूँ। मैं तुम्हारी स्तुति करूँगा यह कल्पना ही वृथा है। तुमने स्वयं देश-काल की सीमा से परे होकर मुझे इस विश्वजाल में फँसा रखा है। तुम्हें पाने की मेरी वासना मुझे स्वयं ही उन्मादवत् प्रतीत होती है। मुझ अकिंचन के पास मात्र भक्तिरूपी धन ही है। जिन चरणों की सेवा स्वयं रमा करती हैं, उन्हीं चरणों की शरण पाऊँ यही मेरी एकमात्र कामना है ॥ ६ ॥

अपनी लीला के लिये रचित इस मनोहर संसार में तुम दुःख और सुख को लेकर सदा नाना प्रकार से खेल रही हो। मुझे पूर्ण ज्ञान देने के लिये जन्म से ही मुझे दुःख देकर तुम दुःख के रास्ते से ही मेरा हाथ पकड़कर मुझे ले चल

या मे मतिं सुविदधे सततं धरण्यां
साम्बा शिवा मम गतिः सफलेऽफले वा ॥ ७ ॥

इतिविवेकानंदस्वामिनाविरचितं "अम्बास्तोत्रम्" समाप्तम् ।

श्रीश्रीरामकृष्णध्यानम्*

श्रीउमेशचन्द्रचक्रवर्तिविरचितम्

रामकृष्णं स्मरेन्नित्यं भक्तहृदिविलासिनम् ।
उज्ज्वलताम्रवर्णाभं वस्त्रयज्ञोपवीतिनम् ॥ १ ॥
प्रशस्तोरःस्थलं देवं द्विभुजं सौम्यदर्शनम् ।
सहास्यवदनोपेतं चारुश्मश्रुविभूषितम् ॥ २ ॥

रही हो। सफल या असफल होने पर भी मेरी बुद्धि विचलित नहीं होती। अपनी कृपा से ही तुम सदा मेरी रक्षा करती हो। तुम ही मेरी एकमात्र गति हो। इसीलिये स्नेह से तुम मेरा पालन करती हो ॥ ७ ॥

स्वामी विवेकानन्द द्वारा विरचित यह "अम्बास्तोत्रम्" समाप्त हुआ।

भक्त के हृदय में विराजमान, अति उज्जवल ताम्र वर्ण के समान कान्तिमान् एवं वस्त्र परिहित, यज्ञोपवीत धारण करने वाले उन्हीं श्रीरामकृष्ण का सदा ध्यान करना चाहिए ॥ १ ॥

अत्यन्त प्रशस्त वक्षःस्थल वाले, सौम्यदर्शन, हास्यमय मुखमण्डलयुक्त, सुन्दर श्मश्रु (दाढ़ी) से सुशोभित (उन्हीं) श्रीरामकृष्ण का सदा ध्यान करना चाहिए ॥ २ ॥

---

* उद्बोधन कर्तृपक्ष की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक।

निवेदन—संस्कृत भाषा में अनुवाद करने के लिये रचयिता लिखित "श्रीश्रीठाकुरेरध्यान" को "श्रीश्रीरामकृष्णध्यानम्" में परिवर्तित कर एवं इस स्तोत्र में सात श्लोकों में छन्दानुरोध के साथ बारह स्थानों में नये शब्दों का प्रयोग करके लिखा गया है— संकलनकर्त्ता।

विधृतसहजासनं बालसारल्यसंयुतम् ।
त्रिभिर्गुणैः प्रमुक्तं च सर्वगुणस्वरूपिणम् ॥ ३ ॥
सूक्ष्मादपिमहत् सूक्ष्मं विराजं भौममुत्तमम् ।
लोकाचारमतिक्रान्तं लोककल्याणकारकम् ॥ ४ ॥
प्रेमार्द्रचित्तमक्षोभ्यं सर्वलोकानुकम्पकम् ।
भावसमाधिसन्मग्नं धर्मभेदनिवर्तकं ॥ ५ ॥
अवतीर्णं निरक्षरं ब्राह्मणं मातृसाधकम् ।
कृतदारमपि-नूत्न सन्यासव्रतपालकम् ॥ ६ ॥
व्यक्तमव्यक्तमेव च सच्चिदानन्दविग्रहम् ।
विमलं परमं हंसं गदाधर जगद्गुरुम् ॥ ७ ॥

इतिश्रीउमेशचंद्रचक्रवर्तिविरचितं "श्रीश्रीरामकृष्णध्यानम्" समाप्तम् ।



सहजासन में उपविष्ट, बालक के समान सरलता के मूर्त प्रतीक, त्रिगुण रहित होकर भी सर्वगुण सम्पन्न (उन्हीं) श्रीरामकृष्ण का सदा ध्यान करना चाहिए ॥ ३ ॥

सूक्ष्म से सूक्ष्म होकर भी विराट् भूमास्वरूप, लोकातीत होकर भी संसार का कल्याण करने वाले (उन्हीं) श्रीरामकृष्ण का सदा ध्यान करना चाहिए ॥ ४ ॥

प्रेम से सिक्त चित्त, चंचलता से रहित, विश्ववासियों के प्रति अनुकम्पा करने वाले, भाव समाधि में निमग्न एवं विभिन्न धर्मों के आपसी भेद का निवारण करने वाले (उन्हीं) श्रीरामकृष्ण का सदा ध्यान करना चाहिए ॥ ५ ॥

निरक्षर, मातृसाधक, धराधाम में ब्राह्मण के रूप में अवतीर्ण, स्त्री-परिग्रह करके भी नव संन्यास के व्रत का पालन करने वाले (उन्हीं) श्रीरामकृष्णदेव का सर्वदा ध्यान करना चाहिए ॥ ६ ॥

अव्यक्त रहकर भी व्यक्त, मूर्त सच्चिदानन्द स्वरूप, अत्यन्त विमल, गदाधर रूप में अवतीर्ण, परमहंस, जगद्गुरु (उन्हीं) श्रीरामकृष्ण का सदा ध्यान करना चाहिए ॥ ७ ॥

श्री उमेशचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा विरचित "श्रीश्रीरामकृष्णध्यानम्" समाप्त हुआ ।



श्रीश्रीमातृस्तुतिः*

स्वामिजीवानन्दविरचिता

दिव्या माता सुशुद्धा हृदयसमुदये याचिता वन्दनीया
मायाहीना मदघ्नी परसुखनिलया पावनी विश्वपूज्या ।
नित्या श्रीशारदा सा वितरतु विमलं सत्सुखं मुक्तहस्ता
बुद्धां विज्ञानदात्रीं जनहितनिरतां चिन्तयेत् तां हि नित्यम् ॥१॥
माता सृष्टिलयस्थितौ सुनिपुणा काली सुशान्तिप्रदा
नित्यानन्दमयी हि या सुखकरी दुर्गा विपत्तारिणी ।
शुद्धज्ञानविधायिनी सुपथदा या शारदा मोक्षदा
ध्येया मंगलकारिणी सुतरणी देवी हि सा भारती ॥ २ ॥

परम पवित्रा, दिव्या, निखिल प्राणियों के हृदय में पूजिता माता; मायातीता, दर्प का हरण करने वाली, नित्य सुख का आश्रय देने वाली, भुवन को पावन करने वाली; मुक्तहस्त से कातर प्राणियों में विमल सुख वितरण कर उन्हें अकातर करने वाली विश्ववन्द्या श्री शारदा; दूसरों का हित करने में रत, ज्ञानमयी, ज्ञान देने वाली माँ का प्राणपण से ध्यान करना चाहिए ॥ १ ॥

सृष्टि, स्थिति और प्रलय करने में निपुणा और शान्ति देने वाली काली माता ही देवी माँ शारदा हैं। विपदा से उद्धार करने वाली श्री दुर्गा वे ही हैं। सुख देने वाली सतत आनन्दमयी वे ही माँ शारदा हैं। सत्पथ पर ले चलने वाली एवं शुद्ध ज्ञान देने वाली भारती; सरस्वती ही माँ शारदा हैं। सभी प्रकार से मंगल करने वाली, संसार सागर से उद्धार करने वाली माँ शारदा का शुद्ध चित्त से ध्यान करना चाहिए ॥ २ ॥

---

* उद्बोधन के स्वत्वाधिकारियों की अनुमति से प्रकाशित—प्रकाशक ।
रचयिता द्वारा अनुवादित ।

तन्वा नमामि नितरां मनसा च वाचा
मातः स्मरामि तव देवि पदारविन्दम् ।
हे शारदे जननि विश्वजनस्य मातः
दूरीकुरु त्वमचिरं विपदं च दुःखम् ॥ ३ ॥

प्रेमामृतं तव पदं खलु चिन्तनीयं
भावास्पदं सुविमलं महिमान्वितं वै ।
ध्येयं सदा हृदि महाभयविघ्ननाशं
क्लिष्टा नरा जननि ! सुष्ठु भजन्तु सर्वे ॥ ४ ॥

विश्वेश्वरीं विदितविश्वमनोभिलाषां
सन्तप्तदुःखहरणक्षमभक्तिदात्रीम् ।
श्रुत्यन्तवेद्यपरमाप्रकृतिं भवेशीं
श्री शारदां नमतु ना जननीं सुशान्ताम् ॥ ५ ॥

मैं शरीर, मन और वाणी से तुम्हारे चरणों में प्रणत हूँ । हे विश्वमाता ! तुम्हारे चरण कमलों का मैं नित्य ही स्मरण करता हूँ । अपनी अशेष कृपा से तुम विश्ववासियों का दुःख और उनकी विपदा जल्दी ही दूर करो ॥ ३ ॥

प्रेमामृत से सिक्त आपका चरण चिन्तनीय है, शुद्ध महिमा से पूरित भाव का आस्पद एवं ध्यान करने पर विघ्न के महाभय का नाश करने वाला है । माँ ! इसीलिये आर्त भक्त आपके श्री चरणों का भजन करते हैं ॥ ४ ॥

हे जगदीश्वरी ! आप संसारवासियों के मन की इच्छा जानती हैं । आप तप्त प्राणियों को दुःख हरण करने वाली भक्ति प्रदान करती हैं । आप भवेशी हैं, वेदान्त के द्वारा जानने योग्य परमाप्रकृति हैं । ऐसी सुशान्त शारदा माँ के चरणों में प्रणाम करना चाहिए ॥ ५ ॥

वसतु वसतु नित्यं विश्वमातान्तरे मे
पिब पिब मम चित्तं स्नेहधारां जनन्याः ।
वितरतु विमलां मे शान्तिधारां सदाम्बा
विमलचरणपद्मे भातु पूता सुभक्तिः ॥ ६ ॥

सदा मातुर्मूर्ति विमलहृदये ध्येय चरितं
सुधापूर्णां वाणीं स्मर विपदि मातुर्हि परमाम् ।
भवाब्धौ विक्षुब्धे त्यज च कठिनं भावमसुखं
गृहाण त्वं भावं सहजसरलं शान्तिसुखदं ॥ ७ ॥

शक्तिदात्रीं हि संघस्य श्रीवृद्धिकारिणीं तथा ।
मातरं शारदादेवीं भगवतीं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥

स्वामिजीवानन्दविरचिता "श्रीश्रीमातृस्तुतिः" समाप्ता ।



विश्वमाता नित्य अन्तःकरण में वास करें, माँ के स्नेह सुधा का नित्त पान करें, माँ सुविमल शान्ति बरसाएँ और माँ के चरण कमलों में सदा सर्वदा शुद्धाभक्ति हो ॥ ६ ॥

श्री माँ की मूर्ति का शुद्धचित्त से ध्यान करना चाहिये, उनके विमल चरित्र का नित्यप्रति चिन्तन करना चाहिये, माँ की सुधापूर्ण वाणी हर समय, हर क्षण स्मरण करनी चाहिये । ऐसा करने से सभी विपदाओं में अतुलनीय शान्ति प्राप्त होगी । जब भव पारावार विक्षुब्ध हो जायेगा, तब सब कठिन भाव संग छोड़ देंगे; सहज रूप से, सुखद भाव से ओतप्रोत माँ की शान्तिप्रद वाणी उस समय अविरत रूप से ग्रहण करने लायक होगी ॥ ७ ॥

जो संघ को शक्ति प्रदान करती हैं, संघ की श्री में वृद्धि करती हैं, उन्हीं भगवती माँ श्री शारदा को नित्य ही नमस्कार करता हूँ ॥ ८ ॥

स्वामी जीवानन्द द्वारा विरचित यह "श्रीश्रीमातृस्तुतिः" समाप्त हुई ।



शिवमानसपूजनस्तोत्रम्*

(रचयिता—अज्ञात)

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरम्
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदांकितं चन्दनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥
सौवर्णे मणिखण्डरत्नरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकं ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २ ॥

हे देव ! हे पशुपति करुणासागर ! मैंने अपने हृदय के रत्नसिंहासन पर तुम्हारे ध्यान में आसन की रचना की है। तुम्हारे लिये सुशीतल जल स्नान के लिये निवेदित करूँगा। नाना रत्नों से विभूषित उज्ज्वल वस्त्र श्री अंग में शोभायमान होगा। मृग की नाभि में सुवासित सुरभि चन्दन का तुम्हारे सर्वांग में लेप करूँगा। तुम्हारे चरणों में जाती, चम्पा और बिल्वपत्र की पुष्पांजलि अर्पित करूँगा। उसके साथ ही धूप और दीप भी ग्रहण करना होगा। हे देव ! यह मेरी मानसपूजा के उपकरण हैं ॥ १ ॥

हे प्रभु ! मणि रत्नमय स्वर्ण के पात्र में तुमको हवि के साथ परम अन्न, पाँच प्रकार के भोज्य पदार्थ, दही और दूध के साथ सुपुष्ट केला और मीठा जल एवं बहुत प्रकार के व्यंजनों के साथ तृप्तिकर जल निवेदित करूँगा। भक्तिपूर्वक सुगन्धित ताम्बूल में कपूर मिलाकर निवेदित करूँगा। हे प्रभु ! मन में सुरचित ये सभी नैवेद्य कृपा करके ग्रहण करो ॥ २ ॥

---

* किसी के मत मे वेदव्यास एवं किसी के मत में आचार्य शंकर इस स्तोत्र के रचयिता हैं—संकलनकर्त्ता ।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदंगकाहलकलागीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टांगं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ ३ ॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहम्
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ ४ ॥

इत्थं मानसपूजनं शशिभृतः कुर्वन् त्रिसन्ध्यां नरः
किं वा श्लोकचतुष्टयं प्रतिदिनं पूजावसाने पठन् ।

सिर में छत्र शोभायमान होगा, दोनों पार्श्व में चामर (चँवर) से पंखे द्वारा हवा दी जायेगी, श्री चंद्रमुख की शोभा देखने के लिये निर्मल दर्पण निवेदित करूँगा । सुनने में मधुर तृप्ति करने वाले ललित संगीत सुनाऊँगा । वीणा, भेरी, मृदंगादि गम्भीर वाद्य-यंत्रों के साथ मेरा हृदय भी आनंद से भरकर नृत्य कर उठेगा । उसके साथ ही आपके चरणों में साष्टांग दण्डवत् एवं बहुत से स्तोत्रों का स्तवन करूँगा । हे प्रभो ! कल्पना से इस प्रकार तुम्हारी पूजा कर रहा हूं । इसे ग्रहण करो ॥ ३ ॥

हे शम्भु ! तुम मेरी आत्मा हो, मेरी बुद्धि देवी भगवती हैं । इन्द्रियाँ तुम्हारी भृत्य हैं और यह शरीर तुम्हारा ही वासस्थान (देवालय) है । मैं जो कुछ भी भोग करता हूँ वह तुम्हारी पूजा है । नींद में तुम्हारे ध्यान में समाहित होता हूँ । मैं जो भ्रमवश भ्रमण करता हूँ, विचरण करता हूँ वही तुम्हारी प्रदक्षिणा है । मेरे कण्ठ से जो कुछ भी उच्चारित हो रहा है वह सब तुम्हारी स्तुति है । हे देव ! मैं जो कुछ भी करता हूँ वह तुम्हारी आराधना है ॥ ४ ॥

जो इस प्रकार चन्द्रशेखर की मानस पूजा दिन में तीन बार (त्रिसंध्या के समय) करेगा अथवा पूजा के बाद इन श्लोक चतुष्टय (चार श्लोक) का

प्राप्नोतीह समस्त पार्थिवसुखं चान्ते पदं शूलिनो
व्यासस्तेन महावसानसमये कैलाशलोकं गतः ॥ ५ ॥

इति "शिवमानसस्तोत्रम्" समाप्तम् ।



गंगास्तोत्रम्

शंकराचार्यविरचितम्

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे, त्रिभुवनतारिणि तरलतरंगे ।
शंकरमौलिनिवासिनि विमले, मम मतिरास्तां तव पदकमले ॥ १ ॥
भागीरथि सुखदायिनि मातस्तव जल महिमा निगमे ख्यातः ।
नाहं जाने तव महिमानं, त्राहि कृपामयि मामज्ञानम् ॥ २ ॥
हरि पादपद्मतरंगिनि गंगे, हिमविधुमुक्ताधवलतरंगे ।
दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं, कुरु कृपया भवसागर पारम् ॥ ३ ॥

पाठ करेगा, उसको इस संसार में सब प्रकार का सुख प्राप्त होगा एवं परलोक में भी शिवपद की प्राप्ति होगी अर्थात् मोक्ष मिलेगा । यह निश्चित जानो । महामति व्यास देव इस मानस पूजा के ही फलस्वरूप शरीर त्याग कर कैलाश पर पहुँचे अर्थात् शिव का सान्निध्य प्राप्त किए ॥ ५ ॥

यह "शिवमानसपूजनस्तोत्रम्" समाप्त हुआ ।



सुरेश्वरी भगवती, त्रिभुवनत्राणकारिणी, तरलतरंगयुक्ता, शंकर की जटा में निवास करने वाली, विमला, देवी गंगा, तुम्हारे श्रीचरणकमलों में मेरा सुमति हो ॥ १ ॥

भागीरथी सुखदायिनी माँ ! तुम्हारे जल की महिमा निगम में विख्यात है; मैं तुम्हारी महिमा नहीं जानता । हे कृपामयी माँ गंगे ! मुझ अज्ञानी की रक्षा करो ॥ २ ॥

विष्णु के चरणकमल से तरंग आकार में निर्गत एवं तुषार के चन्द्र और मुक्ता के समान शुभ्र तरंग युक्त, माँ ! मेरे दुष्कर्मों का भार दूरकर कृपापूर्वक भवसागर से मेरा उद्धार करो ॥ ३ ॥

तव जलममलं येन निपीतं, परमपदं खलु तेन गृहीतम् ।
मातर्गङ्गे त्वयि यो भक्तः, किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ॥ ४ ॥
पतितोद्धारिणि जाह्नवि गंगे, खण्डित गिरिवर-मण्डित भंगे ।
भीष्मजननि खलु मुनिवरकन्ये,पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये ॥ ५ ॥
कल्पलतामिव फलदां लोके, प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके ।
पारावारविहारिणि गंगे, विबुधवधूकृततरलापांगे ॥ ६ ॥
तव कृपया चेत् स्रोतःस्नातः, पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः ।
नरकनिवारिणि जाह्नवि गङ्गे, कलुष विनाशिनि महिमोत्तुंगे ॥ ७ ॥
परिलसदङ्गे पुण्यतरंगे जय जय जाह्नवि करुणापांगे ।
इन्द्रमुकुटमणिराजितचरणे, सुखदे शुभदे सेवकशरणे ॥ ८ ॥

जिसने भी तुम्हारे स्वच्छ जल को पिया है, उसने विष्णु का परम पद मोक्ष प्राप्त किया है। माँ गंगा ! तुम्हारे भक्त की ओर यमराज देख भी नहीं सकते तथा स्पर्श भी नहीं कर सकते, मारना तो दूर की बात है, अर्थात् तुम्हारा भक्त अमर है ॥ ४ ॥

हे पतितोद्धारिणी जाह्नवी ! खण्डित गिरिवर के द्वारा मण्डित तरंग से युक्त भीष्म की मां, जह्नु मुनि की कन्या, पतितनिवारिणी, माँ गंगा ! तुम त्रिभुवन में धन्य हो ॥ ५ ॥

हे समुद्रविहारिणी ! देववधुओं के द्वारा चंचल कटाक्ष से देखी जाने वाली गंगा, तुम्हारी कृपावश यदि कोई तुम्हारे स्रोत में स्नान करे तो वह चिरकाल के लिए मुक्त हो जाता है ॥ ६ ॥

हे नरकनिवारिणी, कलुषविनाशिनी ! अपनी महिमा से अतियशस्विनी जाह्नवी गंगा ! तुम्हारी कृपावश कोई यदि तुम्हारे स्रोत में स्नान करे तो वह पुनः मां के गर्भ में नहीं आता ॥ ७ ॥

हे उज्ज्वल अंगविशिष्टा, पवित्रतरंगा, कृपाकटाक्षमयी, इन्द्र के मुकुटमणि की ज्योति द्वारा शोभित चरणोंवाली, सुख देने वाली, शुभ करने वाली, सेवक की आश्रय-स्वरूपा, जाह्नवी ! तुम्हारी जय हो, तुम्हारी जय हो ॥ ८ ॥

रोगं शोकं पापं तापं, हर मे भगवति कुमति कलापं ।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे, त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ॥ ९ ॥
अलकानन्दे परमानन्दे, कुरु मयि करुणां कातरवन्द्ये ।
तव तट निकटे यस्य हि वासः, खलु बैकुन्ठे तस्य निवासः ॥ १० ॥
वरमिह नीरे कमठो मीनः, किं वा तीरे सरटः क्षीणः ।
अथ गव्यूतौ श्वपचो दीनो, न पुनर्दूरे नृपति कुलीनः ॥ ११ ॥
भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये, देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये ।
गंगास्तवमिममलं नित्यं, पठति नरो यः स जयति सत्यम् ॥ १२ ॥
येषां हृदये गंगा भक्तिः, तेषां भवति सदा सुखमुक्तिः ।
मधुरमनोहर पज्झटिकाभिः, परमानन्दकलितललिताभिः ॥ १३ ॥

हे भगवती ! तुम मेरे रोग-शोक, पाप-ताप और कुमति-कलाप दूर करो । त्रिभुवन श्रेष्ठा, वसुधा-हार स्वरूपा ! तुम निश्चय ही संसार में मेरी एकमात्र गति हो ॥ ९ ॥

स्वर्ग के आनन्द का विधान करने वाली, परमानन्दरूपिणी, कातर लोगों के द्वारा वन्दिता ! तुम मुझ पर करुणा करो । तुम्हारे (गंगा के) तट पर जिसका निवास है उसका साक्षात् बैकुण्ठ में ही निवास है ऐसा समझना चाहिए ॥ १० ॥

तुम्हारे जल में कछुआ या मछली, क्षुद्र टिकटिकी अथवा तुम्हारे तट से दो कोस तक भी दीन या कुत्ते के समान रहना श्रेयस्कर है और तुमसे दूर रहने वाले श्रेष्ठ राजागण भी अच्छे नहीं हैं ॥ ११ ॥

हे भुवनेश्वरी, पुण्यमयी, धन्यवादार्हा द्रवमयी मुनिवर-कन्या ! तुम्हारी जय हो । हे देवी ! जो मनुष्य इस अमल गंगास्तोत्र का नित्य पाठ करता है वह अवश्य ही इस संसार में सब कुछ जीत कर सर्वजयी होता है ॥ १२ ॥

जिन लोगों के हृदय में गंगा की भक्ति है, उन लोगों की अनायास ही संसार-बन्धन से मुक्ति हो जाती है । संसार के सारस्वरूप वांछित फलप्रद, विख्यात एवं उदार भावपूर्ण यह गंगास्तोत्र परमानन्द में निबद्ध, सुन्दर, मधुर

गंगास्तोत्रमिमं भवसारं, वांछितफलदं विदितमुदारं।
शंकर सेवक शंकर रचितं, पठतु च विषयीदमिति समाप्तम् ॥ १४ ॥



श्रीशारदादेवीध्यानम्

स्वामिशारदानन्दविरचितम्

ध्यायेच्चित्तसरोजस्थां सुखासीनां कृपामयीम्।
प्रसन्नवदनां देवीं द्विभुजां स्थिरलोचनाम् ॥ १ ॥

आलुलायितकेशार्धवक्षःस्थलविमण्डिताम्।
श्वेतवस्त्रावृतार्धांगां, हेमालंकारभूषिताम् ॥ २ ॥

स्वक्रोड़न्यस्तहस्तां च ज्ञानभक्तिप्रदायिनीम्।
शुभ्रां ज्योतिर्मयीं जीवपाप सन्तापहारिणीम् ॥ ३ ॥

और मन को मुग्ध करने वाले पज्झटिका छन्द में महादेव के सेवक आचार्य शंकर के द्वारा रचा गया है। जो व्यक्ति विषय-भोग में निमग्न हैं, वे भी यदि इस स्तोत्र का (नित्यप्रति भक्तिपूर्वक) पाठ करें तो उनका परम कल्याण होगा ॥ १३–१४ ॥



हृदय कमल में सुखासन में बैठी हुई, कृपामयी, प्रसन्नवन्दना, दो भुजाओं वाली, समाहिता दृष्टि से युक्त देवी का ध्यान करना चाहिए ॥ १ ॥

जिनका वक्षःस्थल फैले हुए बालों से सुसज्जित है, जिनका आधा अंग श्वेत वस्त्र से आवृत्त है एवं जो स्वर्ण और अलंकार से विभूषित हैं, जिनके करकमल अपनी गोद में संस्थापित हैं, जो ज्ञान और भक्ति प्रदान करने वाली हैं, जो शुभ्र-वर्णा, ज्योतिर्मयी, सभी जीवों के सन्ताप का हरण करने वाली, श्रीरामकृष्ण में

रामकृष्णगतप्राणां तन्नामश्रवणप्रियाम् ।
तद्भावरंजिताकारां जगन्मातृस्वरूपिणीम् ॥ ४ ॥
जानकीराधिकारूपधारिणीं सर्वमंगलाम् ।
चिन्मयीं वरदां नित्यां शारदां मोक्षदायिनीम् ॥ ५ ॥
प्रणामः— ॐ यथाग्नेर्दाहिकाशक्तिः रामकृष्णे स्थिता हि या ।
सर्वविद्यास्वरूपां तां, शारदां प्रणमाम्यहम् ॥
इतिशारदानन्दस्वामिविरचितं "श्रीशारदादेवीध्यानम्" समाप्तम् ।



संज्ञानसूक्तम्

(ऋग्वेद १०/१९१/२-४)

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजनाना उपासते ॥ १ ॥

तद्गत चित्त तथा उनसे परम प्रेम करने वाली, श्रीरामकृष्ण के भाव में अनुरंजित, जगन्मातृस्वरूपिणी, जगज्जननी एवं पहले के अवतारों में सीता व राधा का रूप धारण करने वाली हैं, उन्हीं मंगलमयी चैतन्यस्वरूपिणी, वरदात्री, आद्याशक्ति और जीवों की मुक्तिदायिनी श्रीशारदादेवी का हृदय में ध्यान करना चाहिए ॥ २-५ ॥

प्रणामः—अग्नि और उसकी दाहिकाशक्ति के समान परस्पर अंगांगी सम्पर्क युक्त श्रीरामकृष्ण की शक्ति के रूप में उनके साथ अविच्छिन्न भाव से सदा विराजमान परा और अपरा विद्यास्वरूपिणी, ज्ञानदात्री उन्हीं श्रीशारदादेवी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥

शारदानन्द स्वामी द्वारा विरचित "श्रीशारदादेवीध्यानम्" समाप्त हुआ ।



तुम लोग संयुक्त होओ, एक प्रकार का वाक्य प्रयोग करो, तुम लोगों का मन समान रूप में अर्थ जाने । पहले देवता लोगों ने जिस प्रकार एक मत होकर हवि का भाग ग्रहण किया था, तुम लोग भी उसी प्रकार (धर्मादि समान भाग में) ग्रहण करो ॥ १ ॥

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मंत्रमभिमंत्रये वः समानेन वा हविषा जुहोमि ॥ २ ॥
समानी वः आकुतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ ३ ॥

अथर्ववेदीयशान्तिवचनम्
(ऋग्वेद १/८९)

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

इन लोगों की स्तुति एक ही प्रकार की है, प्राप्ति भी एक ही प्रकार की है, अन्तःकरण एक समान है, विचार द्वारा ज्ञान भी एक विषय में एकाग्र हो। मैं भी तुम लोगों के समान एकता स्थापित करने के लिये अपना संस्कार करता हूँ (यज्ञ करता हूँ) । हे देवगण ! साधारण छवि के द्वारा तुम सभी को आहुति प्रदान करता हूँ ॥ २ ॥

तुम लोगों का एक संकल्प हो, एक हृदय हो एवं सबका अन्तःकरण एक समान हो । जिससे तुम लोगों में परम एकता हो-वही हो ॥ ३ ॥

हे देवगण ! हम लोग कान से कल्याणकारी वचन सुनें; हे यजनीय देवगण ! हम लोग आँखों से सुन्दर वस्तु देखें, दृढ़ अंग-प्रत्यंग से युक्त होकर हम लोग तुम्हारे स्तव गान करके देवकर्म में नियुक्त होकर दीर्घायु हों ।

वृद्धश्रवा इन्द्र हम लोगों का मंगल करें; सब ज्ञान के आधार पूषा हम लोगों का कल्याण करें; (सर्पादि द्वारा) हिंसा-निवारक-गरुड़ हम लोगों का कल्याण करें, बृहस्पति हम लोगों का कल्याण करें ।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

शुक्लयजुर्वेदीयशान्तिवचनम्

(बृहदारण्यकोपनिषद् ५/१/१)

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

परोक्षरूप में या कारणरूप में अवस्थित ब्रह्म में पूर्ण अर्थात् सर्वव्यापी है । नाम रूप में स्थित सोपाधिक ब्रह्म भी पूर्णस्वरूप है । कारण ब्रह्म से पूर्णस्वरूप कार्यात्मक ब्रह्म उद्गत होते हैं । कार्यात्मक ब्रह्म का पूर्णत्व विषयक अज्ञान दूर होने पर केवल पूर्णस्वरूप ब्रह्म ही अवशिष्ट रहता है ।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

श्रीरामकृष्णार्पणमस्तु

शुभम्



मुद्रक : नया संसार प्रेस, भदैनी, वाराणसी (उ० प्र०) ।

बारासत रामकृष्ण - शिवानन्द आश्रम से प्रकाशित कुछ ग्रंथ

१–प्रार्थना—(आरात्रिक, स्तवादि और रामनाम संकीर्तन के साथ)	०.७५
२–शिवानन्द-स्मृति-संग्रह—१म भाग (द्वितीय संस्करण)	१०.००
३– ,, ,, ,, २य ,, (द्वितीय संस्करण)	१५.००
४-दिव्य रामायण—(तृतीय संस्करण)	१०.००
५– ,, ,, (हिन्दी-द्वितीय संस्करण)	११.००
६–श्री मद्भगवद्गीता—(अन्वय, अनुवाद और श्री रामकृष्ण एवं स्वामी विवेकानन्द की वाणी के प्रकाश में लिखी टीका सहित) द्वितीय संस्करण	१०.००
७– ,, (हिन्दी-द्वितीय संस्करण)	यंत्रस्थ
८–श्री रामकृष्ण-शारदानामामृतम्—(तृतीय संस्करण)	१.२५
९– ,, ,, (हिन्दी संस्करण)	१.५०
१०–श्री रामकृष्णसहस्रनाम—(संस्कृत)	३.००
११–श्री रामकृष्णसहस्रनामस्तोत्रम् (सहस्रनामार्चना सहितम्) द्वितीय संस्करण (संस्कृत)	७.००
१२–श्री रामकृष्णोपदेशसाहस्री—(संस्कृत)	६.००
१३– ,, ,, (हिन्दी लिपि)	१०.००
१४–दिव्य रामायणम्—(संस्कृत)	१५.००
१५–सपार्षद श्रीरामकृष्णरत्नस्तोत्रमाला—(अनुवाद सहित १०८ स्तोत्र)	१२.००
१६–(,, ,, ,,) हिन्दी अनुवाद सहित	१२.००

प्राप्ति-स्थान : (१) रामकृष्ण-शिवानन्द आश्रम, बारासत
(२) महेश लाइब्रेरी, कलकत्ता
(३) उद्बोधन कार्यालय
(४) बेलूड़ शारदापीठ, शो-रूम, बेलूड़ मठ
(५) रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम, वाराणसी
आदि विविध केन्द्र